Hndi book “marne ke baad kiya hoga ?” मरने के बाद क्या होगा ?: By: Maulana Muhammad Aashique ilahi buland shehri
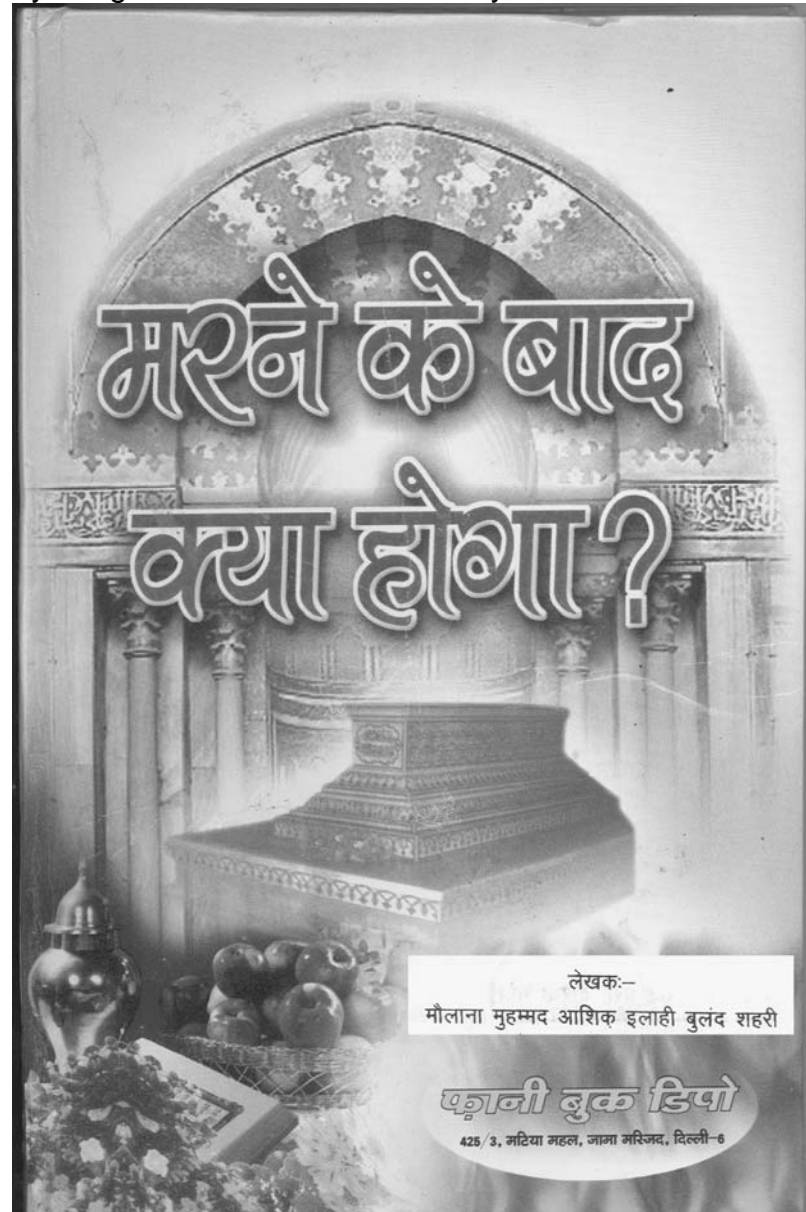
जिस दिन कि भागे मर्द अपने भाई से और अपनी मां और अपने बाप से और अपनी साथ वाली और अपने बेटों से

मरने के बाद क्या होगा?

जिस में बर्ज़ख(क़ब्र) अहले क़ब्र दोज़ख़ अहले दोज़ख़ क़ियामत हिसाब–किताब शफ़ाअत और आराफ़ वालों के पुरे हालात क़ुरआन व हदीस की रोशनी में बयान किए गए हैं आख़िर में जन्नत और जन्नत वालों नेमतें पुरी तफ़सील से बयान की गई हैं

लेखकः–
मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलंद शहरी

प्रकाशक :–
अनवार अहमद
फ़ानी बुक डिपो
425/3 उर्दु मार्किट मटिया महल,
जामा मस्जिद दिल्ली-6

मुल्य

नाम किताबः–
मरने के बाद क्या होगा?

प्रिंटर्स नाहिद ऑफसेट प्रेस, दरिया गंज

विषय-सूची

मरने के बाद क्या होगा ?

क्या?	कहां?
अपनी बात	११
अहवाले बर्ज़ख (१७–५०)	
१. मोमिन का रुत्बा, मौत के वक़्त और मौत के बाद	१७
२. काफ़िर की ज़िल्लत	१६
३. मोमिन का क़ब्र में नमाज़ का ध्यान	२१
४. क़ब्र में मोमिन का बे-खौफ़ होना	२२
५. मोमिन से फ़रिश्तों का कहना कि दुल्हन की तरह सो जाना	२३
६. बर्ज़ख वालों का मोमिन से पूछना	२५
७. बर्ज़ख वालों पर ज़िंदों के अमल पेश होते हैं	२६
८. क़ब्र का मोमिन को दबाना	२६
९. ज़मीन व आसमान का मोमिन से मुहब्बत करना	२७
१०. सदक़ा जारिया और औलाद वग़ैरह की तरफ़ से इस्तग़फ़ार	२८
११. मोमिन को मलकुल मौत का सलाम	२६
१२. मोमिन का दुनिया में रहने से इंकार करना	२६
१३. शहीदों से अल्लाह का खिताब	३०
१४. शहादत की तक्लीफ़	३१
१५. क़ब्र के अज़ाब की तफ़्सीलात	३२
१६. क़ब्र में अज़ाब देने वाले अज़दहे	३३
१७. क़ब्र में अज़ाब की वजह से मय्यत का चीखना	३३
१८. चुग़ली करना और पेशाब से न बचना	३६
१९. कुछ खास कामों पर खास अज़ाब	३६
२०. ज़मीन का मय्यत से बात करना	३६
२१. क़ब्र के अज़ाब से बचे रहने वाले	४०
२२. सूरः मुल्क पढ़ने वाला	४०
२३. पेट के मर्ज़ में मरने वाला	४१
२४. जुमे की रात या जुमे के दिन मरने वाला	४२
२५. रमज़ान में मरने वाला	४२

क्या?	कहां?
२६. जो मरीज़ होकर मरे	४२
२७. मुजाहिद और शहीद	४२
२८. एक शख्स को ज़मीन ने क़ुबूल न किया	४३
२९. बर्ज़ख से सुबह-शाम जन्नत या दोज़ख का पेश होना	४४
३०. आंहज़रत सल्ल० पर उम्मत के आमाल पेश किए जाते हैं	४५
३१. रौज़ा-ए-मुतह्हरा के पास दरूद व सलाम	४५
३२. नबियों की बर्ज़खी ज़िंदगी	४६
३३. उहद के कुछ शहीदों के जिस्म	४६

हालाते जहन्नम (५१–१००)

३४. अपनी बात	५४
३५. दोज़ख की गहराई	५५
३६. दोज़ख की दीवारें	५५
३७. दोज़ख के दरवाज़े	५६
३८. दोज़ख की आग और अंधेरी	५६
३९. दोज़ख के अज़ाब का अंदाज़ा	५६
४०. दोज़ख की सांस	५७
४१. दोज़ख का ईंधन	५७
४२. दोज़ख के तब्के	५९
४३. दोज़ख की एक खास गरदन	६१
४४. आग के स्तूनों में बंद कर दिए जाएंगे	६१
४५. दोज़ख पर मुक़र्रर फ़रिश्तों की तायदाद	६१
४६. दोज़ख का ग़ैज़ व ग़ज़ब	६२
४७. दोज़ख की बागें और उसके खींचने वाले फ़रिश्ते	६२
४८. दोज़ख के सांप और बिच्छू	६५
४९. दोज़ख में मौत न आएगी और अज़ाब हल्का न होगा	६५
५०. दोज़ख की आवाज़ 'हल मिम मज़ीद'	६६
५१. सब्र करने पर भी अज़ाब से रिहाई न होगी	६७
५२. दोज़खियों का खाना-पीना	६७
५३. जरीअ यानी आग के कांटे	६८
५४. ग़िस्लीन (घावों का धोवन)	६८
५५. ज़क़्क़ूम (सेंढ)	६८
५६. ग़स्साक़	७०

क्या?	कहां?
५७. माइन कल मुह्लि (कीट)	७०
५८. माइन सदीद (पीप का पानी)	७१
५९. हमीमुन (खौलता हुआ पानी)	७१
६०. तआमुन ज़ी ग़िस्सतिन (गले में अटकने वाला खाना)	७१
६१. अज़ाब के अलग-अलग तरीक़े	७३
६२. अलग-अलग सज़ाएं	७४
६३. सऊद (आग का एक पहाड़)	७७
६४. सिलसिला (बहुत लंबी-ज़ंजीर)	७८
६५. तौक़	७८
६६. गंधक के कपड़े	७९
६७. दोज़ख के दारोग़ों के ताने	८०
६८. दोज़खियों के हालात	८१
६९. दोज़ख में जाने वालों की तायदाद	८१
७०. दोज़ख में ज़्यादा औरतें होंगी	८२
७१. दोज़खियों की बद-सूरती	८३
७२. पुले सिरात से गुज़र कर दोज़ख में गिरना,	८५
७३. दाखिले की सूरत	८७
७४. दोज़ख वालों से शैतान का खिताब	८९
७५. गुमराह करने वालों पर दोज़खियों का ग़ुस्सा	९०
७६. दोज़खियों की चीख-पुकार	९२
७७. जन्नतियों का हंसना	९४
७८. सोचने की बात	९५
७९. खात्मा	९८
८०. आख़िरी बात	९९

मैदाने हश्र (१०१–२४६)

८१. क़ियामत किन लोगों पर क़ायम होगी ?	११६
८२. क़ियामत की तारीख़ की खबर नहीं दी गयी	११८
८३. क़ियामत अचानक आ जाएगी	११९
८४. सूर और सूर का फूंका जाना	१२०
८५. कायनात का बिखर जाना	१२३
८६. पहाड़ों का हल	१२३
८७. आसमान व ज़मीन	१२५

क्या?	कहां?
८८. चांद, सूरज, सितारे	१२६
८९. इंसानों का क़ब्रों से निकलना	१३१
९०. काफ़िरों की आंखें नीली होंगी	१३४
९१. दुनिया में कितने दिन रहे ?	१३५
९२. क़ियामत के दिन की परेशानी और हैरानी	१३७
९३. चेहरों पर खुशी और उदासी	१३९
९४. महशर में पसीने की मुसीबत	१४१
९५. हश्र के मैदान में मौजूद लोगों की अलग-अलग हालतें	१४२
९६. ज़कात न देने वाला	१४५
९७. क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा भूखे	१४७
९८. दुनिया में दोबारा आने की दरख्वास्त	१५४
९९. लीडरों की बेज़ारी	१५७
१००. हश्र के मैदान में प्यारे नबी सल्ल० के बुलन्द मर्तबे का ज़ुहूर	१५८
१०१. उम्मते मुहम्मदिया की पहचान	१६२
१०२. हौज़े कौसर	१६३
१०३. हज़रत मुहम्मद सल्ल० के हौज़ की खूबियां	१६४
१०४. सबसे पहले हौज़ पर पहुचने वाले	१६५
१०५. हौज़े कौसर से हटाये जाने वाले	१६६
१०६. अपने-अपने बापों के नाम से बुलाये जाएंगे	१६८.
१०७. नेमतों का हाल	१७०
१०८. फ़रिश्तों से खिताब	१७५
१०९. फ़रिश्तों का जवाब	१७६
११०. मुश्रिकों का इंकार	१८०
१११. जिन की पूजा करते थे, वे भी इंकारी होंगे	१८०
११२. हिसाब-किताब, क़िसास, मीज़ान	१८२
११३. नमाज़ का हिसाब और नफ़्लों का फ़ायदा	१८४
११४. बे-हिसाब जन्नत में जाने वाले	१८५
११५. सख्त हिसाब	१८६
११६. मोमिन पर अल्लाह का ख़ास करम	१८७
११७. किसी पर ज़ुल्म न होगा	१८८
११८. बन्दों के हक़	१८९
११९. क़ियामत के दिन सबसे बड़ा ग़रीब	१९०
१२०. जानवरों के फ़ैसले	१९१

क्या?	कहां?
१२१. मालिकों और ग़ुलामों का इंसाफ़	१९३
१२२. जिन्नों से खिताब	१९५
१२३. जुर्म न मानने पर गवाहियां	१९७
१२४. ज़मीन की गवाही	१९८
१२५. आमालनामे	१९८
१२६. आमालनामों की तक़सीम	२००
१२७. आमालनामों के मिलने पर	२०१
१२८. अमल का वज़न	२०३
१२९. एक बन्दे के अमल का वज़न	२०५
१३०. सबसे ज़्यादा वज़नी अमल	२०६
१३१. काफ़िरों की नेकियां बे-वज़न होंगी	२०७
१३२. अल्लाह की रहमत से बख्शे जाएंगे	२१०
१३३. हर एक शर्मिन्दा होगा	२११
१३४. शफ़ाअत	२१२
१३५. तंबीह	२१६
१३६. मोमिनों की शफ़ाअत	२१६
१३७. मुजाहिद की शफ़ाअत	२१७
१३८. ना-बालिग़ बच्चों की शफ़ाअत	२१८
१३९. क़ुरआन के हाफ़िज़ की शफ़ाअत	२१९
१४०. रोज़ा और क़ुरआन की शफ़ाअत	२२०
१४१. तजल्ली-ए-साक़, पुल सिरात, तक़सीमे नूर	२२०
१४२. नूर की तक़सीम	२२१
१४३. साक़ की तजल्ली	२२४
१४४. प्यारे नबी जन्नत खुलवाएंगे	२३०
१४५. जन्नत व दोज़ख़ में गिरोह-गिरोह जाएंगे	२३०
१४६. दोज़खियों की आपस में एक दूसरे पर लानत	२३२
१४७. दोज़खियों की अनोखी हैरत	२३३
१४८. अपने मानने वालों के सामने शैतान की सफ़ाई	२३३
१४९. मालदार जन्नत में जाने से अटके रहेंगे	२३५
१५०. दोज़ख में अक्सर औरतें और मालदार जाएंगे	२३६
१५१. दोज़ख और जन्नत दिखायी जाएगी	२३८
१५२. दोज़ख में जाने वालों का अन्दाज़ा	२३९
१५३. क़ियामत के दिन की लम्बाई	२४०

क्या?	कहां?
१५४ आराफ़ वाले	२४२

खुदा की जन्नत (२४७—३४२)

क्या?	कहां?
१५५.जन्नत किस चीज़ से बनी है?	२५१
१५६.जन्नत का फैलाव	२५१
१५७.जन्नत के दरवाज़े	२५२
१५८.जन्नत में दाख़िल होने वाले लोगों की दो जमाअतें	२५५
१५८ दाख़िले के बाद मुबारकबादी	२५९
१६०.जन्नतियों के शुक्रिए के लफ़्ज़	२६०
१६१.जन्नतियों का पहला नाश्ता	२६१
१६२.जन्नतियों का जिस्म और ख़ूबसूरती	२६३
१६३.जन्नतियों की तन्दुरूस्ती और जवानी	२६५
१६४.जन्नतियों की उम्रें	२६६
१६५.जन्नतियों के बाग़ और पेड़	२६६
१६६.जन्नत के फल और मेवे	२७०
१६७.जन्नत में खेती	२७५
१६८.जन्नत की लहरें	२७५
१६९.नहरे कौसर	२७७
१७०.जन्नत के चश्मे	२७८
१७१.जन्न्त में पीने की चीज़ें	२७९
१७२.जन्नत के परिन्दे	२८२
१७३.जन्न्ती पूरी इज़्ज़त से खाएं—पिएंगे	२८२
१७४.जन्नतियों के बर्तन	२८४
१७५.जन्नत की शराब से नशा न होगा	२८५
१७६.जन्नतियों की सवारियां.	२८७
१७७.जन्नतियों की आपस में मुहब्बत	२८७
१७८.जन्नतियों की दिल्लगी	२८९
१७९.जन्नतियों का कपड़ा—गहना	२८९
१८०.जन्नतियों के ताज	२९२
१८१.जन्नतियों के बिछौने	२९३
१८२.जन्नतियों के तख़्त	२९४
१८३.विल्दान और ग़िल्मान	२९६
१८४.जन्नत में पाकीज़ा बीबियां	२९८

क्या?	कहां?
१८५. जन्नती बीवियों की ख़ूबसूरती और दूसरी बातें	२९९
१८६. हूरे ईन	३०२
१८७. जन्नत में हूरों का तराना	३०५
१८८. मर्दों के लिए बहुत सी बीवियां	३०५
१८९. मर्दाना क़ूवत	३०६
१९०. जन्नत का बाज़ार	३०८
१९१. जन्नत की सबसे बड़ी नेमत	३११
१९२. गुनाहगार मुसलमानों का दोज़ख़ से निकलना	३१३
१९३. जन्नत में सबसे आख़िर में जाने वाला	३१६
१९४. जन्नत में हमेशा रहेंगे	३२१
१९५. जन्नत में वह सब कुछ होगा, जिसकी चाह होगी	३२३
१९६. जन्नती न जन्नत से निकाले जायेंगे	३२३
१९७. अल्लाह की तरफ़ से रज़ामन्दी का एलान	३२४
१९८. जन्नत के दर्जे	३२५
१९९. जन्नत के बालाख़ाने	३२७
२००. जन्नत के ख़ेमे और क़ुब्बे	३२८
२०१. जन्नत का मौसम	३२९
२०२. जन्नत में आराम ही आराम है	३३१
२०३. जन्नतियों की मज्लिसें	३३२
२०४. तहीयतुहुम फ़ीहा सलाम	३३४
२०५. जन्नत की नेमतों को दुनिया में नहीं समझा जा सकता	३३५
२०६. जन्नत की ख़ुश्बू	३३७
२०७. क्या कोई जन्नत के लिए तैयारी करने वाला है ?	३३७

तजरीद

सहीह बुख़ारी शरीफ़

मुसन्निफ़

इमामुल मुहद्दिसीन हुज्जतुल इस्लाम
हज़रत अल्लामा शेख़ मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रह०

अनुवादक
कौसर यज़्दानी नदवी एम. ए.

मरने के बाद क्या होगा ?

विषय-सूची

क्या?	कहां?
१. मोमिन का रुत्बा, मौत के वक़्त और मौत के बाद	१७
२. काफ़िर की ज़िल्लत	१९
३. मोमिन का क़ब्र में नमाज़ का ध्यान	२१
४. क़ब्र में मोमिन का बेख़ौफ़ होना	२२
५. मोमिन से फ़रिश्तों का कहना कि दुल्हन की तरह सो जाना	२३
६. बर्ज़ख़ वालों का मोमिन से पूछना	२५
७. बर्ज़ख़ वालों पर ज़िंदों के अमल पेश होते हैं	२६
८. क़ब्र का मोमिन को दबाना	२६
९. ज़मीन व आसमान का मोमिन से मुहब्बत करना	२७
१०. सदक़ा जारिया और औलाद वग़ैरह की तरफ़ से इस्तग़फ़ार	२८
११. मोमिन को मलकुल मौत का सलाम	२९
१२. मोमिन का दुनिया में रहने से इंकार करना	२९
१३. शहीदों से अल्लाह का ख़िताब	३०
१४. शहादत की तक्लीफ़	३१
१५. क़ब्र के अज़ाब की तफ़्सीलात	३२
१६. क़ब्र में अज़ाब देने वाले अज़दहे	३३
१७. चुग़ली करना और पेशाब से न बचना	३६
१८. कुछ ख़ास कामों पर ख़ास अज़ाब	३६
१९. ज़मीन का मय्यत से बात करना	३९
२०. क़ब्र के अज़ाब से बचे रहने वाले	४०
२१. पेट के मर्ज़ में मरने वाला	४१
२२. जुमे की रात या जुमे के दिन मरने वाला	४२
२३. रमज़ान में मरने वाला	४२
२४. मुजाहिद और शहीद	४२
२५. एक शख़्स को ज़मीन ने क़ुबूल न किया	४३
२६. बर्ज़ख़ से सुबह-शाम जन्नत या दोज़ख़ का पेश होना	४४
२७. आंहज़रत सल्ल० पर उम्मत के आमाल पेश किए जाते हैं	४५
२८. नबियों की बर्ज़ख़ी ज़िंदगी	४६
२९. उहद के कुछ शहीदों के जिस्म	४९

अपनी बात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ هُدَاةِ الدِّيْنِ الْمَتِيْنِ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला ख़ैरि खल्क़िही सय्यिदिना मुहम्मदिन सय्यिदिल मुर्सलीन व अला आलिही व सह्बिही हुदातिद्दीनिल मतीनि व मन तबि अ हुम बिएहसानिन इला यौमिद्दीनि०

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की हदीसों को पढ़ने से साफ़ मालूम होता है कि मरने वाले को देखने में हम भले ही मुर्दा समझते हैं, लेकिन सच तो यह है कि वह ज़िंदा होता है। यह दूसरी बात है कि उसकी ज़िंदगी हमारी इस ज़िंदगी से बिल्कुल अलग होती है।

प्यारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया है कि मुर्दे की हड्डी तोड़ना ऐसा ही है, जैसे ज़िंदगी में उस की हड्डी तोड़ी जाए। एक बार प्यारे नबी सल्ल० ने हज़रत अम्र बिन हज़्म रज़ि० को एक क़ब्र से तकिया लगाये हुए बैठे देखा, तो फ़रमाया कि इस क़ब्र वाले को तक्लीफ़ न दो।[1]

जब इंसान मर जाता है, तो इस दुनिया से निकल कर बर्ज़ख की दुनिया में चला जाता है, चाहे अभी उसे क़ब्र में भी न रखा जाए या आग में भी न जलाया जाये। उसमें समझ होती है। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि जब मुर्दा (चारपाई वग़ैरह) पर रख दिया जाता है और उसके बाद क़ब्रस्तान ले जाने के लिए लोग उसे उठाते हैं तो अगर वह नेक था तो कहता है कि मुझे जल्द ले चलो और अगर वह नेक न था

१. मिश्कात शरीफ़,

तो घर वालों से कहता है कि हाय मेरी बर्बादी! मुझे कहां ले जाते हो? (फिर फ़रमाया) कि इंसान के सिवा हर चीज़ उस की आवाज सुनती है। अगर इंसान उस की आवाज़ सुन ले तो ज़रूर बेहोश हो जाये।[1]

मौत के बाद से क़ियामत क़ायम होने तक हर आदमी पर जो ज़माना गुज़रता है, उस को बर्ज़ख कहा जाता है। बर्ज़ख का मतलब है पर्दा और आड़। चूंकि यह ज़माना दुनिया और आख़िरत के दर्मियान एक आड़ होता है, इसलिए उसे बर्ज़ख कहते हैं।

चूंकि आप इंसान अपने मुर्दों को दफ़न किया करते हैं, इस लिए हदीसों में बर्ज़ख के आराम या अज़ाब के बारे में क़ब्र ही के लफ़्ज़ (शब्द) आते हैं। इस का यह मतलब नहीं कि जिन इंसानों को आग में जला दिया जाता है या पानी में बहा दिए जाते हैं, वे बर्ज़ख में ज़िंदा नहीं रहते। सच तो यह है कि अज़ाब व सवाब का ताल्लुक़ रूह से है और यह बात भी याद रहे कि अल्लाह तआला जले हुए ज़र्रों (कणों) को भी जमा करके अज़ाब व सवाब देने की ताक़त रखता है। हदीस शरीफ़ में आया है कि (पहले ज़माने में) एक आदमी ने बहुत ज़्यादा गुनाह किये। जब वह मरने लगा तो उसने अपने बेटों को वसीयत की कि जब मैं मर जाऊं, तो मुझे जला देना और मेरी राख को आधी धरती में बिखेर देना और आधी समुद्र में बहा देना। यह वसीयत करके उसने कहा कि अगर ख़ुदा मुझ पर क़ादिर हो गया और उसने इसके बावजूद भी मुझे ज़िंदा कर लिया तो मुझे ज़रूर ही ज़बरदस्त अज़ाब देगा जो (मेरे अलावा) सारी दुनिया में और किसी को न देगा। जब वह मर गया तो उसके बेटों ने ऐसा ही किया, जैसा कि उस ने वसीयत की थी, फिर अल्लाह तआला ने समुद्र को हुक्म दिया कि इस आदमी के जिस्म के सारे ज़र्रों को जमा कर दो। समुद्र ने अपने अंदर के सारे ज़र्रों को जमा कर दिया और इसी तरह धरती को भी हुक्म दिया। उसने भी उस आदमी के जिस्म के सारे ज़र्रों को जमा कर दिया। सारे ज़र्रे जमा फ़रमा कर अल्लाह तआला ने उसे ज़िंदा फ़रमा दिया। फिर उस से फ़रमाया कि तू ने ऐसी वसीयत क्यों की? उसने अर्ज़ किया, ऐ मेरे पालनहार! तेरे डर से मैं ने ऐसा किया और आप ख़ूब जानते हैं। इस पर अल्लाह तआला ने उसे बख़्श दिया।[2]

हदीस शरीफ़ की रिवायतों से यह भी मालूम होता है कि मोमिन बंदे बर्ज़ख में एक दूसरे से मुलाक़ात भी करते हैं और इस दुनिया से जाने वाले से यह भी पूछते हैं कि फ़्लां का क्या हाल है और किस हालत में है।

१. बुख़ारी शरीफ़, २. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़,

हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रह० फ़रमाते हैं कि जब मरने वाला मर जाता है तो बर्ज़ख में उस की औलाद उस का इस तरह स्वागत करती है जैसे दुनिया में किसी बाहर से आने वाले का स्वागत किया जाता है। और हज़रत साबित बनानी रह० फ़रमाते थे कि जब मरने वाला मर जाता है तो बर्ज़ख की दुनिया में उसके रिश्तेदार-नातेदार, जो पहले मर चुके है, उसे घेर लेते हैं और वे आपस में मिल कर उस ख़ुशी से भी ज़्यादा ख़ुश होते हैं जो दुनिया में किसी बाहर से आने वाले से मिल कर होती है।[1]

हज़रत क़ैस बिन क़बीसा रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि जो आदमी ईमान वाला नहीं होता, उसे मुर्दों से बात-चीत करने की इजाज़त नहीं दी जाती। किसी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या मुर्दे बात-चीत भी करते हैं ? फ़रमाया, हां एक और दूसरे से मुलाक़ात भी करते हैं।[2]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि जो आदमी अपने (मुसलमान) भाई की (क़ब्र की) ज़ियारत (दर्शन) करता है और उनके पास बैठता है, तो वह क़ब्र वाला उसके सलाम का जवाब देता है और उससे मानूस (परिचित) होता है, यहां तक कि ज़ियारत करने वाला उठकर चला जाता है।[3]

हज़रत उम्मे बिश्र रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० से मैंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या मुर्दे आपस में एक दूसरे को पहचानते हैं ? आपने फ़रमाया, तेरा भला हो ! रूहे मुतमइन्ना (वह रूह जिसे इत्मीनान हासिल हो) जन्नत में हरे परिंदों की शक्ल में होती है। (अब तू ख़ुद समझ ले) कि परिंदे अगर आपस में एक दूसरे को पहचानते हैं तो रूहें भी आपस में एक दूसरे को पहचानती हैं।[4]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि जो आदमी क़ुरआन मजीद पढ़ना शुरू करे और पूरा किये बिना ही मर जाए तो क़ब्र में एक फ़रिश्ता उसे क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाता है, चुनांचे वह अल्लाह से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसे पूरा क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ (याद) होगा।[5]

जो लोग भले कामों में जीवन बिताते हैं और वे मरने के बाद की ज़िंदगी का यक़ीन रखते हैं, इस दुनिया में उन का मन नहीं लगता

---

१. इब्ने अबिद्दुन्या २. इब्ने हब्बान ३. इब्ने अबिद्दुन्या,
४. इब्ने साद, ५. शौक़े वतन,

और मौत को यहां की ज़िंदगी के मुक़ाबले में बढ़ावा देते हैं। और जो लोग यहां की ज़िंदगी को बुराइयों में गुज़ारते हैं, वे मौत से घबराते हैं। सुलैमान बिन अब्दुल् मलिक ने अबू हाज़िम रह० से पूछा कि यह बताइए कि हम मौत से क्यों घबराते हैं ? उन्होंने फ़रमाया, इसलिए घबराते हो कि तुमने दुनिया को आबाद और आख़िरत को बर्बाद किया है, इस लिए आबादी से वीराने में जाना पसन्द नहीं करते। सुलैमान ने कहा, सही है, आप सच कहते हैं।

जिस आदमी को क़ब्र की ज़िंदगी का यक़ीन हो और अपने अच्छे कामों के बदले वहां अच्छे हाल में रहने की उम्मीद हो और यह समझता हो कि इस दुनिया के दोस्त-साथी-रिश्तेदारों को छोड़कर चला जाऊंगा तो बर्ज़ख में रिश्तेदार और जान-पहचान वाले मिल जाएंगे तो फिर मौत से क्यों घबराये और इस ज़िंदगी को बर्ज़ख की ज़िंदगी पर क्यों बढ़ावा दे ? अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया—

يُحِبُّ الْإِنْسَانُ الْحَيٰوةَ وَالْمَوْتُ خَيْرٌ لِّنَفْسِهٖ ؕ

युहिब्बुल इंसानुल हया त वल मौतु ख़ैरुल्लि नफ़्सिही

'इंसान ज़िंदगी को प्यारा रखता है, हालांकि मौत उसके लिए बेहतर है (शर्त यह कि वह ईमान वाला हो और उसके काम अच्छे हों।')

कुछ रिवायतों में यह भी है कि प्यारे नबी सल्ल० ने मौत को मोमिन का तोहफ़ा बताया है[1] और यह भी फ़रमाया कि इंसान मौत को नापसंदीदा समझता है, हालांकि मौत फ़ित्नों से बेहतर है कि जितनी जल्दी मौत आ जाएगी, उतनी ही जल्दी दुनिया के फ़ित्नों से बच जायेगा।[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि इंसान के दुनिया से इंतिक़ाल करने की मिसाल ऐसी है, जैसे बच्चा मां के पेट की तंगी और अंधेरे से निकल कर दुनिया के आराम व राहत में आ जाता है।[3] मतलब यह कि मोमिन के लिए मौत बड़ी अच्छी चीज़ है, बस शर्त यह है कि नेक अमल करने वाला हो और उस ने अपने और अल्लाह के दर्मियान मामला ठीक रखा हो। जो बंदे नेक कामों में ज़िंदगी गुज़ारते हैं, वे मौत को इस ज़िंदगी पर बढ़ावा देते हैं और यहां मुसीबतों और परेशानियों से निकल कर जल्द से जल्द अम्न व अमान और राहत व चैन वाली हमेशा की ज़िंदगी में जाना चाहते हैं।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० ने एक बार किसी से पूछा कि कहां जा

---

१. मिश्कात, २. अहमद, ३. हकीम तिर्मिज़ी,

रहे हो ? उन्होंने जवाब दिया कि बाज़ार का इरादा है। फ़रमाया, हो सके तो मेरे लिए मौत खरीदते लाना। मतलब यह था कि हमें इस दुनिया में रहना पसंद नहीं है। अगर. क़ीमत से भी मौत मिले तो ख़रीद लें।

हज़रत ख़ालिद बिन मादान रज़ि० फ़रमाते थे कि अगर कोई आदमी यह कहे कि जो आदमी सबसे पहले फ़्लां चीज़ छू ले तो वह उसी वक़्त मर जाएगा, तो मुझ से पहले कोई भी उस चीज़ को नहीं छू सकता। हां, अगर मुझ से ज़्यादा कोई दौड़ सकता हो और मुझ से पहले पहुंच जाए तो और बात है।[1]

اَللّٰهُمَّ حَبِّبِ الْمَوْتَ اِلَیَّ وَاِلٰی مَنْ یَّعْلَمُ اَنَّ سَیِّدَنَا
مُحَمَّدًا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ،

अल्लाहुम्म हब्बिबिल मौ त इलय्य व इला मंय्यअ़लमु अन्न सय्यि-दना मुहम्मदन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अब्दु क व रसूलु क

शुरू की इन बातों के बाद अब बर्ज़ख़ के हालात लिखना शुरू करते हैं।

واللہ ولی التوفیق وھو خیر عون وخیر رفیق۔

वल्लाहु वलीयुत्तौफ़ीक़ि व हु व ख़ैरु औनिन व ख़ैरु रफ़ीक़िन

1. शहूर स्दूर,

अह्वाले बर्ज़ख़

मोमिन का रुत्बा, मौत के वक़्त और मौत के बाद

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि एक दिन हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ एक अंसारी के जनाज़े में क़ब्रस्तान गये। जब क़ब्र तक पहुंचे तो देखा कि अभी क़ब्र नहीं बनायी जा सकी है, इस वजह से नबी सल्ल० बैठ गये और हम भी आपके आस-पास (अदब के साथ) इस तरह बैठ गये कि जैसे हमारे सरों पर परिंदे बैठे हैं।[1]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ में एक लकड़ी थी, जिससे ज़मीन कुरेद रहे थे (जैसे कोई दुखी आदमी किया करता है।) आप ने मुबारक सर उठा कर फ़रमाया कि क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो। दो या तीन बार यही फ़रमाया, फिर फ़रमाया कि बेशक जब मोमिन बंदा दुनिया से जाने और आख़िरत का रुख़ करने को होता है, तो उसकी तरफ़ आसमान से फ़रिश्ते आते हैं, जिनके सफ़ेद चेहरे सूरज की तरह रोशन होते हैं। उनके साथ जन्नती कफ़न होता है और जन्नत की ख़ुशबू होती है। ये फ़रिश्ते इतने होते हैं कि जहां तक उसकी नज़र पहुंचे, वहां तक बैठ जाते हैं। फिर (हज़रत) मलकुल मौत (मौत का फ़रिश्ता) अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाते हैं, यहां तक कि उस के पास बैठ जाते हैं और फ़रमाते हैं कि ए पाक रूह! अल्लाह की मग़्फ़िरत और उसकी रज़ामंदी की तरफ़ निकल कर चल। चुनांचे उसकी रूह इस तरह

1. यानी इस तरह ख़ामोश, दम साधे बैठ गये जैसे कि हम में हरकत ही नहीं रही। परिंदा बे-हरकत चीज़ों पर बैठता है। सहाबा किराम रज़ि० की यह हालत हदीस पाक सुनने के वक़्त ऐसी ही होती थी।

आसानी से निकल आती है जैसे मशकीज़ा (छोटी मशक) 'में से (पानी का) क़तरा बहता हुआ बाहर आ जाता है। तो उसे हज़रत मलकुल मौत अलैहिस्सलाम ले लेते हैं। उनके हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते (जो दूर तक बैठे होते हैं) पल भर भी उनके हाथ में नहीं छोड़ते, यहां तक कि उसे लेकर उसी कफ़न और ख़ुश्बू में रख कर आसमान की तरफ़ चल देते हैं। इस ख़ुश्बू के बारे में इर्शाद फ़रमाया कि ज़मीन पर जो कभी अच्छी से अच्छी ख़ुश्बू मुश्क की पायी गयी है, उस जैसी वह ख़ुश्बू होती है।

फिर फ़रमाया कि उस रूह को लेकर फ़रिश्ते (आसमान की तरफ़) चढ़ने लगते हैं और फ़रिश्ते की जिस टोली पर भी इनका गुज़र होता है, वह कहते हैं कि यह कौन पाक रूह है, वह उसका अच्छे से अच्छे नाम लेकर जवाब देते हैं, जिससे दुनिया में बुलाया जाता था कि फ़्लां का बेटा फ़्लां है। इसी तरह पहले आसमान तक पहुंचते हैं और आसमान का दरवाज़ा खोलते हैं। चुनांचे दरवाज़ा खोल दिया जाता है और वे इस रूह को लेकर ऊपर चले जाते हैं, यहां तक कि सातवें आसमान पर पहुंच जाते हैं, हर आसमान के क़रीबी फ़रिश्ते दूसरे आसमान तक उसे विदा करते हैं। जब सातवें आसमान तक पहुंच जाते हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरे बन्दे को 'इल्लीयीन की किताब' (नेकों के दफ़्तर) में रख दो और उसे ज़मीन पर वापस ले जाओ, क्योंकि मैंने इंसान को ज़मीन ही से पैदा किया है, और उसी में उसको लौटा दूंगा और उसी से उनको दोबारा निकाल लूंगा। चुनांचे उसकी रूह उसके जिस्म में वापस कर दी जाती है। इसके बाद दो फ़रिश्ते उसके पास आते हैं, जो आकर उसे बिठाते हैं और उस से सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है। वह जवाब देता है, मेरा रब अल्लाह है। फिर उस से पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है ? वह जवाब देता है, मेरा दीन इस्लाम है। फिर उससे पूछते हैं कि यह कौन साहब हैं, जो तुम्हारे अन्दर भेजे गये ? वह कहता है कि वह अल्लाह के रसूल हैं (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)। फिर उससे दर्याफ़्त करते हैं कि तेरा अमल क्या है ? वह कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी, सो उस पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक़ की। इसके बाद एक मुनादी (आवाज़ देने वाला) आसमान से आवाज़ देता है (जो अल्लाह का मुनादी होता है) कि मेरे बन्दे ने सच कहा, सो उसके लिए जन्नत के बिछौने बिछा दो और उसको जन्नत के कपड़े पहना दो और उसके लिए जन्नत की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो, चुनांचे जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है, जिसके ज़रिये जन्नत का आराम और ख़ुश्बू भीतर आती

रहती है और उसकी क़ब्र इतनी फैला दी जाती है कि जहां तक उसकी नज़र पहुंचे।

इसके बाद बहुत ही ख़ूबसूरत चेहरे वाला, बेहतरीन कपड़ों वाला, (और) पाक ख़ुश्बू वाला एक आदमी उसके पास आ कर कहता है कि ख़ुशी की चीज़ों की ख़ुशख़बरी सुन ले। यह तेरा वह दिन है जिसका तुम से वायदा किया जाता था, वह कहता है तुम कौन हो ? तुम्हारा चेहरा सच में चेहरा कहने के क़ाबिल है और इस क़ाबिल है कि अच्छी ख़बर लाए, वह कहता है कि मैं तेरा भला अमल हूं।

इसके बाद वह (ख़ुशी में) कहता है कि ऐ रब ! क़ियामत क़ायम फ़रमा। ऐ रब ! क़ियामत फ़रमा, ताकि मैं' अपने बाल-बच्चों और माल में पहुंच जाऊं।

काफ़िर की ज़िल्लत

और बिला शुबहा जब काफ़िर बन्दा दुनिया से जाने और आख़िरत का रुख़ करने को होता है तो स्याह चेहरों वाले फ़रिश्ते आसमान से उसके पास आते हैं, जिनके साथ टाट होते हैं और उसके पास इतनी दूर तक बैठ जाते हैं जहां तक उसकी नज़र पहुंचती है। फिर मलकुलमौत तशरीफ़ लाते हैं, यहां तक कि उसके सर के पास बैठ जाते हैं, फिर कहते हैं कि ऐ ख़बीस (दुष्ट) जान, अल्लाह की नाराज़ी की तरफ़ निकल। मलकुल मौत का यह हुक्म सुनकर रूह उसके जिस्म में इधर उधर भागी फिरती है, इसलिए मलकुलमौत उसकी रूह को जिस्म से इस तरह निकालते हैं कि जैसे बोटियां भूनने की सीख भीगे हुए ऊन से साफ़ की जाती हैं (यानी काफ़िर की रूह को जिस्म से ज़बरदस्ती इस तरह निकालते हैं जैसे भीगा हुआ ऊन कांटेदार सीख पर लिपटा हुआ हो और उसको ज़ोर से खींचा जाए) फिर उसकी रूह को मलकुलमौत (अपने हाथ में) ले लेते हैं और उनके हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते पल झपकने के बराबर भी उनके पास नहीं छोड़ते, यहां तक कि फ़ौरन उससे लेकर उसको टाटों में लपेट देते हैं (जो उनके पास होते हैं) और उन टाटों में ऐसी बदबू आती है जैसी कभी किसी बहुत ज़्यादा सड़ी हुई मुर्दा लाश से धरती पर बदबू फूटी हो। वे फ़रिश्ते उसे लेकर आसमान की तरफ़ चढ़ते हैं। और

१. इससे जन्नत की हूरें और जन्नत की नेमतें मुराद हैं (मिर्क़ात)

फ़रिश्तों के जिस गिरोह पर भी पहुंचते हैं, वे कहते हैं कि यह कौन ख़बीस रूह है ? वे उसका बुरे से बुरा वह नाम लेकर कहते हैं, जिससे वह दुनिया में बुलाया जाता था कि फ़्लां का बेटा फ़्लां है, यहां तक कि वे उसे लेकर पहले आसमान तक पहुंचते हैं और दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं, मगर उसके लिए दरवाज़ा नहीं खोला जाता है, जैसा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया है—

لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ
فِي سَمِّ الْخِيَاطِ (سورة اعراف)

ला तुफ़त्तहु लहुम अब्वाबुस्समाई व ला यद्ख़ुलून्नल जन्न त हत्ता यलि जल ज मलु फ़ी सम्मिल ख़ियाति० —सूरः आराफ़

'उनके लिए आसमान के दरवाज़े न खोले जाएंगे, और न वे कभी जन्नत में दाख़िल होंगे, जब तक ऊंट सुई के नाके में न चला जाए (और ऊंट सुई के नाके में जा नहीं सकता इसलिए वे भी जन्नत में नहीं जा सकते।)'

फिर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि इसको सिज्जीन की किताब (बुरे आमाल नामे के दफ़्तर) में लिख दो, जो सबसे नीची ज़मीन में है। चुनांचे उसकी रूह (वहां से) फेंक दी जाती है। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी—

وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي
بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ (سورة حج)

व मंय्युशिरक फ़ क अन्नमा ख़र्र मिनस्समाइ फ़ तख़्त फ़ुहुत्तैर अव तह्वी बिहिर्री ह फ़ी मकानिन सहीक़० —सूरः हज

'और जो आदमी अल्लाह के साथ शिर्क करता है, गोया वह आसमान से गिर पड़ा, फिर चिड़ियों ने उसकी बोटियां नोच लीं या हवा ने उसको बहुत दूर की जगह में ले जाकर फेंक दिया।'

फिर उसकी रूह उसके जिस्म में लौटा दी जाती है और उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं और उसे बिठा कर पूछते हैं कि तेरा रब कौन है ? वह कहता है, हाय ! हाय ! मुझे पता नहीं। फिर उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है ? वह कहता है, हाय ! हाय ! मुझे पता नहीं। फिर उससे पूछते हैं कि यह आदमी कौन हैं, जो तुम्हारे अन्दर भेजे गये ? वह कहता है, हाय ! हाय ! मुझे पता नहीं। जब यह सवाल व जवाब हो चुकते हैं तो आसमान से एक मुनादी आवाज़ देता है कि हमने झूठ

कहा।[1] इसके नीचे आग बिछा दो और इसके लिए दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और दोज़ख़ की गर्मी और गर्म लू आती रहती है और क़ब्र उस पर तंग कर दी जाती है, यहां तक कि उसकी पसलियां भिचकर आपस में इधर की उधर चली जाती हैं और उसके पास एक आदमी आता है जो बद-सूरत और बुरे कपड़े पहने हुए होता है। उसके जिस्म से बुरी बदबू आती है। वह आदमी उससे कहता है कि मुसीबत की ख़बर सुन ले। यह वह दिन है जिसका तुझ से वायदा किया जाता था। वह कहता है, तू कौन है ? सच में, तेरी शक्ल ऐसी है कि तू बुरी ख़बर सुनाये। वह कहता है कि मैं तेरा बुरा अमल हूं। यह सुनकर वह (इस डर से कि मैं क़ियामत में यहां से ज़्यादा अज़ाब में गिरफ़्तार हूंगा) यों कहता है कि ऐ रब क़ियामत क़ायम न कर।[2]

एक रिवायत में है कि जब मोमिन की रूह निकलती है तो आसमान व ज़मीन के बीच का हर फ़रिश्ता और वे सब फ़रिश्ते जो आसमान में हैं, सब के सब उस पर रहमत भेजते हैं और उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और हर दरवाज़े वाले अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसकी रूह को हमारी तरफ़ ले कर चढ़ाया जाय और काफ़िर के बारे में फ़रमाया कि उसकी जान रगों समेत निकाली जाती है और आसमान व ज़मीन के बीच का हर फ़रिश्ता और वे सब फ़रिश्ते जो आसमान में हैं, सब के सब उस पर लानत भेजते हैं और उस के लिए आसमान के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और हर दरवाज़े वाले अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसकी रूह को हमारी तरफ़ से लेकर न चढ़ाया जाए।[3]

मोमिन का क़ब्र में नमाज़ का ध्यान

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब मोमिन को क़ब्र में दाख़िल

१. यानी इसको अपने रब की ख़बर है, लेकिन यह उसको मानता न था और जिस दिन (धर्म) पर था उसे भी जानता है और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के नबी होने को भी जानता है, लेकिन अज़ाब से बचने के लिए अपने को अनजाना ज़ाहिर कर रहा है।

२. मिश्कात शरीफ़, ३. मिश्कात,

'कर दिया जाता है तो उसको ऐसा मालूम होता है, जैसे सूरज छिप रहा हो, तो जब उसकी रूह लौटायी जाती है, तो आंखें मलता हुआ उठ कर बैठता है और (फ़रिश्तों से) कहता है कि मुझे छोड़ दो, मैं नमाज़ पढ़ता हूं।'[1]

मुल्ला अली क़ारी लिखते हैं कि गोया वह उस वक़्त अपने आप को दुनिया में ही समझता है कि सवाल व जवाब को रहने दो, मुझे फ़र्ज़ अदा करने दो, वक़्त ख़त्म हुआ जा रहा है, मेरी नमाज़ जाती रहेगी।

फिर लिखते हैं कि यह बात वही कहेगा जो दुनिया में नमाज़ का पाबंद था और उसको हर वक़्त नमाज़ का ख्याल लगा रहता था।

इससे बे-नमाज़ियों को सबक़ हासिल करना चाहिए और अपने हाल का इससे अन्दाज़ा लगायें और इस बात को ख़ूब सोचें कि जब अचानक सवाल होगा तो कैसी परेशानी होगी।

क़ब्र में मोमिन का बे-ख़ौफ़ होना और उसके सामने जन्नत पेश होना

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि बे-शुबहा मुर्दा अपनी क़ब्र में पहुंच कर बे-ख़ौफ़ और इत्मीनान के साथ बैठता है, फिर उस से सवाल किया जाता है कि (तू दुनिया में) किस दीन में था? वह जवाब देता है कि मैं इस्लाम में था। फिर उस से सवाल होता है कि (तेरे अक़ीदे में) यह कौन हैं, (जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गये)? वह जवाब देता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जो हमारे पास अल्लाह के पास से खुले-खुले मोजज़े लेकर आये, तो हमने उनकी तस्दीक़ की। फिर उससे पूछा जाता है कि क्या तूने अल्लाह को देखा है? वह जवाब देता है कि (दुनिया में) कोई आदमी अल्लाह को नहीं देख सकता (फिर मैं कैसे देख लेता?)

फिर उसके सामने दोज़ख की तरफ़ एक रोशनदान खोला जाता है (जिस के ज़रिए) वह दोज़ख को देखता है कि आग के अंगारे आपस में एक दूसरे को खाये जाते हैं। (जब वह दोज़ख का मंज़र देख लेता

१. इब्ने माजा,

है) तो उससे कहते हैं कि देख, अल्लाह ने तुझ किस मुसीबत से बचाया? फिर उसके सामने जन्नत की तरफ़ एक रोशनदान खोला जाता है (जिस के ज़रिए) वह जन्नत की रौनक़ और जन्नत की दूसरी चीज़ें देख लेता है। फिर उससे कहा जाता है कि यह (जन्नत) तेरा ठिकाना है, तू यक़ीन ही पर ज़िंदा रहा और यक़ीन ही पर तुझे मौत आयी और यक़ीन ही पर तू क़ियामत के दिन (क़ब्र से) उठेगा, इनशाअल्लाह तआला (अगर अल्लाह ने चाहा)।

फिर फ़रमाया कि ना-फ़र्मान आदमी डरा और घबराया हुआ अपनी क़ब्र में बैठता है। उससे सवाल होता है कि तू दुनिया में किस दीन में था? वह जवाब देता है कि मुझे पता नहीं। फिर उससे (हुज़ूर सल्ल० के बारे में) सवाल होता है कि (तेरे अक़ीदे में) ये कौन हैं? वह कहता है कि इस बारे में मैंने वही कहा जो और लोगों ने कहा। फिर उसके सामने जन्नत की तरफ़ एक रोशनदान खोला जाता है, जिसके ज़रिए वह उसकी रौनक़ और उसके अंदर की दूसरी चीज़ें देख लेता है। फिर उससे कहा जाता है कि देख, (तूने ख़ुदा की नाफ़रमानी की) ख़ुदा ने तुझ किस नेमत से महरूम किया। फिर उसके सामने दोज़ख की तरफ़ एक रोशनदान खोला जाता है जिस के ज़रिए वह दोज़ख को देख लेता है कि आग के अंगारे एक दूसरे को खाये जाते हैं, फिर उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है। तू शक ही पर ज़िंदा रहा और शक ही पर तुझे मौत आयी। और अगर अल्लाह ने चाहा तो क़ियामत को भी इसी शक पर उठेगा।'[1]

मोमिन से फ़रिश्तों का कहना कि दुल्हन की तरह सो जा और मुनाफ़िक़ व काफ़िर को ज़मीन का भींचना

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मय्यत को क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, जिनका

१. मिश्कात

रंग स्याह और आंखें नीली होती हैं, जिन में से एक को मुन्किर दूसरे को नकीर कहा जाता है। वे दोनों उससे पूछते हैं कि तू क्या कहता है उन साहब के बारे में (जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गये ?) वह अगर मोमिन है तो जवाब देता है कि वह अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (जिसकी इबादत की जाए) नहीं और बे-शुबहा मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। यह सुन कर वे दोनों कहते हैं कि हम तो जानते थे कि तू ऐसा ही जवाब देगा। फिर उसकी क़ब्र सत्तर हाथ वर्ग चौड़ी कर दी जाती है, फिर रोशन कर दी जाती है। फिर उससे कह दिया जाता है कि (अब तू) सो जा। वह कहता है कि मैं तो अपने घर वालों को (अपना हाल) बताने के लिए जाता हूं। वे कहते हैं कि (यहां आकर जाने का क़ानून नहीं है!) तू सो जा जैसा कि दुल्हन सो जाती है, जिसे उसके शौहर के सिवा कोई नहीं उठा सकता। (चुनांचे वह आराम से क़ब्र में रहता है) यहां तक कि अल्लाह उसे क़ियामत के दिन उस जगह से उठायेगा।

और अगर मरने वाला मुनाफ़िक़ (या काफ़िर) होता है तो वह मुन्किर-नकीर को जवाब देता है कि मैं ने जो लोगों को कहते सुना, वही कहा (इस से ज़्यादा मैं नहीं जानता) वे दोनों कहते हैं कि हम तो ख़ूब जानते थे कि तू ऐसा ही जवाब देगा। फिर ज़मीन से कहा जाता है कि उसको भींच दे। चुनांचे ज़मीन उसको भींच देती है, जिससे उसकी पसलियां इधर की उधर चली जाती हैं। फिर वह क़ब्र के अंदर अज़ाब में रहता है, यहां तक कि (क़ियामत को) ख़ुदा ही उसे वहां से उठायेगा।'[1]

इन हदीसों से मालूम हुआ कि ईमान वाले बर्ज़ख की दुनिया में इत्मीनान से होंगे और उनके होश व हवास सही रहेंगे, यहां तक कि उन को नमाज़ का ध्यान होगा और फ़रिश्तों के सवाल का जवाब देने में बेख़ौफ़ होंगे और जब अपना अच्छा हाल देख लेंगे तो घर वालों को ख़ुशख़बरी देने के लिए फ़रिश्तों से कहेंगे कि 'मैं अभी नहीं सोता। घर वालों को ख़बर करने जाता हूं।' और बहुत ज़्यादा ख़ुशी में अपना भला अंजाम देख कर फ़ौरन ही क़ियामत क़ायम होने का सवाल करेंगे, ताकि जल्द से जल्द जन्नत में पहुंचें। जिस पर अल्लाह का करम हो, उसके होश व हवास बाक़ी रहते हैं और उससे अल्लाह जल्ल शानुहू सही जवाब दिलाते हैं, जैसा कि सूरः इब्राहीम में फ़रमाया—

१. तिर्मिज़ी शरीफ़,

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ،

युसब्बितुल्लाहुल्लज़ी न आमनू बिल क़ौलि स्साबिति फ़िलहयाति-द्दुन्या व फ़िल आख़िरति०

'ईमान वालों को अल्लाह इस पक्की बात यानी (कलमा तैयबा) से दुनिया व आख़िरत में मज़बूत रखता है।'

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ उमर! उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा, जबकि लोग तुम को क़ब्र में रख कर और मिट्टी डाल कर चले आएंगे, फिर तुम्हारे पास क़ब्र के मुम्तहिन (इम्तिहान लेने वाले) आएंगे, जिन की आवाज़ सख़्त गरज की तरह होगी और जिनकी आंखें नज़र उचक लेने वाली बिजली की तरह होंगी, सो वे तुम को हिला डालेंगे और तुम से हाकिमों जैसी बात-चीत करेंगे, बताओ उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उस वक़्त हमारी अक़्ल हमारे साथ होगी? आप ने इर्शाद फ़रमाया, हां इसी तरह तुम्हारी अक़्लें तुम्हारे पास होंगी, जैसी आज हैं! यह सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि बस तो मैं निमट लूंगा।'

बर्ज़ख़ वालों का मोमिन से पूछना कि फ़्लां का क्या हाल है?

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब फ़रिश्ते मोमिन की रूह को लेकर (उन) मोमिनों की रूहों के पास ले जाते हैं (जो पहले से जा चुके हैं) तो वे रूहें उसके पहुंचने पर ऐसी ख़ुश होती हैं कि (इस दुनिया में) तुम भी अपने किसी ग़ायब के आने पर इतना ख़ुश नहीं होते। फिर उससे पूछते हैं कि फ़्लां का क्या हाल है? फ़्लां का क्या हाल है? फिर वे (ख़ुद ही आपस में) कहते

१. तबरानी वग़ैरह, शौक़े वतन के हवाले से,

हैं कि अच्छा अभी ठहरो, फिर पूछ लेना, छोड़ दो ज़रा आराम करने दो, चूंकि दुनिया के ग़म में मुब्तला था। फिर (वह बताने लगता है कि फ़्लां इस तरह है, फ़्लां इस तरह है और) वह किसी शख़्स के बारे में कहता है, जो उससे पहले मर चुका था कि वह तो मर गया, क्या तुम्हारे पास नहीं आया ? यह सुन कर वे कहते हैं कि (जब वह दुनिया से आ गया और हमारे पास नहीं आया तो) ज़रूर उसको दोज़ख़ में पहुंचा दिया गया।[१]

बर्ज़ख़ वालों पर ज़िन्दों के अमल पेश होते हैं

तबरानी की रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुबहा तुम्हारे अमल तुम्हारे रिश्तेदारों और ख़ानदान वालों के सामने पेश किये जाते हैं, जो आख़िरत में पहुंच चुके हैं, अगर तुम्हारा अमल नेक हो, तो वे ख़ुश होते हैं और ख़ुदावन्द करीम से दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह ! यह आप का फ़ज़्ल और रहमत है, सो आप अपनी नेमत इस पर पूरी फ़रमा दीजिए और इसी पर इस को मौत दीजिए और अगर बुरा अमल उन के सामने पेश होता है तो कहते हैं कि ऐ अल्लाह ! इस के दिल में नेकी डाल दे जो तेरी रिज़ा (ख़ुशी) और तेरे क़ुर्ब[२] की वजह बन जाए।[३]

क़ब्र का मोमिन को दबाना ऐसा होता है जैसे मां बेटे का सर दबाती है

हज़रत सईद इब्नुल मुसय्यिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! जब से आप ने मुन्किर-नकीर की (डरावनी) आवाज़ और क़ब्र के भींचने का ज़िक्र फ़रमाया है, उस वक़्त से मुझे किसी चीज़ से तसल्ली नहीं होती है (और दिल की परेशानी दूर नहीं होती)। आपने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ आइशा ! मुन्किर-नकीर की आवाज़ मोमिन के कानों में ऐसी होगी जैसे (एक सुरीली आवाज़ कानों

---

१. अहमद, नसई, २. क़रीब होना ३. शौक़े वतन,

में भली मालूम होती है जैसे) आंखों में सुरमा लगाने से आंखों को लज़्ज़त महसूस होती है और मोमिन को क़ब्र का दबाना ऐसा होता है जैसे किसी के सर में दर्द हो और उसकी ममता भरी मां धीरे-धीरे अपने बेटे का सर दबाती है और वह उससे आराम व राहत पाता है, और (याद रख) ऐ आइशा! अल्लाह के बारे में शक करने वालों के लिए बड़ी ख़राबी है और वे क़ब्र में इस तरह भींचे जाएंगे जैसे अंडे पर पत्थर रख कर दबा दिया जाए।[१]

ज़मीन व आसमान का मोमिन से मुहब्बत करना और उसकी मौत पर रोना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हर इंसान के लिए आसमान के दो दरवाज़े हैं। एक दरवाज़े से उसका अमल चलता है और दूसरे दरवाज़े से उसकी रोज़ी उतरती है। जब मोमिन मर जाता है तो दोनों दरवाज़े उसके (मरने पर) रोते हैं।[२]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया बेशक जब मोमिन मर जाता है तो उसको मरने पर क़ब्रस्तान अपने आप को सजा लेते हैं, इसलिए इनमें का कोई हिस्सा ऐसा नहीं होता, जो यह तमन्ना न करता हो कि यह मुझ में दफ़न हो।[३]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते थे कि मोमिन के मरने पर ४० दिन तक ज़मीन रोती है।[४]

हज़रत अता अल-ख़ुरासानी रह० फ़रमाते थे कि जो बंदा ज़मीन के किसी हिस्से में सज्दा करता है, यह हिस्सा क़ियामत के दिन उसके हक़ में गवाही देगा और उसके मरने के दिन रोयेगा।[५]

---

१. शौक़ वतन के हवाले से,
२. तिर्मिज़ी शरीफ़,
३. इब्ने असाकिर,
४. हाकिम वग़ैरह,
५. अबू नुऐम, शौक़े वतन के हवाले से

सदक़ा जारिया[1] और औलाद वग़ैरह की तरफ़ से इस्तग़फ़ार का नफ़ा

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहा मरने के बाद जो चीज़ें मोमिन को उसकी नेकियों से पहुंचती हैं, उनमें से एक इल्म है, जिसको उसने फैलाया हो या नेक औलाद छोड़ी हो या कोई क़ुरआन शरीफ़ वरसे[2] में छोड़ गया हो या मस्जिद बनवा गया हो या कोई मुसाफ़िरख़ाना बना गया, हो या नहर जारी कर गया हो या अपनी ज़िंदगी व तन्दुरुस्ती की हालत में अपने माल में से ऐसा सदक़ा कर गया हो जिसका सवाब मरने के बाद भी पहुंचता हो।[3]

और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से यह भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहा अल्लाह तआला नेक बन्दे का दर्जा जन्नत में बुलंद फ़रमा देगा। वह कहेगा कि ऐ ख़ुदा ! यह दर्जा मुझे कैसे मिला ? अल्लाह जल्ल शानुहू इर्शाद फ़रमायेंगे, तेरी औलाद ने तेरे लिए इस्तग़फ़ार की जिसकी वजह से यह मर्तबा तुझ को मिला।[4]

एक रिवायत में है कि क़ियामत के दिन कुछ आदमियों के साथ पहाड़ों के बराबर नेकियां होंगी। वह यह देखकर अर्ज़ करेगा कि ये मुझे कहां से मिलीं ? इर्शाद होगा, तेरी औलाद के इस्तग़फ़ार की वजह से तुझे यह दी गयी हैं।[5]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैयत अपनी क़ब्र में बस ऐसी ही (मुहताज) होती है, जैसे कोई डूबता हुआ। (फिर फ़रमाया कि) वह दुआ के इन्तिज़ार में रहती है जो उसके बाप या मां या भाई या दोस्त की तरफ़ से उसे पहुंच जाए। जब उसे (इनमें से किसी की) दुआ पहुंचती है तो सारी दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, इस सब से ज़्यादा उसको वह दुआ प्यारी होती है और

१. ऐसा सद्क़ा या भला काम, जिससे लोग बराबर फ़ायदा उठाते रहें,
२. विरासत, ३. मिश्कात, ४. मिश्कात, ५. शौक़े वतन के हवाले से,

बेशक ज़मीन वालों की दुआ से अल्लाह तआला क़ब्र वालों पर पहाड़ों के बराबर सवाब दाख़िल फ़रमाते हैं और बेशक ज़िंदों का हदिया मुर्दों के लिए उनके वास्ते इस्तग़फ़ार[1] करना है।[2]

मोमिन को मलकुल मौत का सलाम

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मलकुलमौत ख़ुदा के मक़्बूल बन्दे के पास आते हैं तो उसको सलाम करते हैं और यों इर्शाद फ़रमाते हैं—

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ قُمْ فَاخْرُجْ مِنْ دَارِكَ الَّتِيْ خَرَّبْتَهَا
اِلٰى دَارِكَ الَّتِيْ عَمَّرْتَهَا۔

अस्सलामु अलैक या वलीयल्लाह क़ुम्म फ़ख़्रुज मिन दारिकल्लती ख़र्रब्तहा इला दारिकल्लती अम्मर्तहा। (शर्हुस्सुदूर)

'तुम पर सलाम हो ऐ अल्लाह के दोस्त ! उठो और इस घर से निकलो, जिसे तुम ने (नफ़्स की ख़्वाहिशों को क़ुर्बान करके) बर्बाद किया है और उस घर को चलो जिसे तुम ने (इबादत करके) आबाद किया है।'

मोमिन का दुनिया में रहने से इन्कार करना और उसको बशारत मिलना

हज़रत इब्ने जुरैज रज़ि० से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन (मरते वक़्त) फ़रिश्तों को देखता है तो फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि क्या हम तुम को दुनिया में वापस कर दें और रूह क़ब्ज़ न करें ? वह कहता है, क्या मुझे ग़मों और फ़िक्रों की जगह छोड़ जाना चाहते हो ? अब मैं तो नहीं रहता, मुझे अल्लाह तआला के पास ले चलो।[3]

१. मग़्फ़िरत चाहना, २. मिश्कात,
३. इब्ने जरीर वग़ैरह.

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रज़ि० फ़रमाते हैं कि मौत के वक़्त मोमिन के पास फ़रिश्ते आकर उसे ख़ुशख़बरी सुनाते हैं और उससे कहते हैं कि तुम जहां जा रहे हो, वहां जाने से डरो नहीं। इस लिए उस का डर जाता रहता है और उस से यह भी कहते हैं कि दुनिया और दुनिया वालों (से जुदा होने) पर रंज न करो और जन्नत की ख़ुशख़बरी सुन लो, इसलिए वह इस हाल में मरता है कि इस दुनिया में ख़ुदा उसकी आंखें ठंडी कर देता है।'

शहीदों से अल्लाह का ख़िताब

हज़रत मसरूक़ (ताबई रह०) रिवायत करते हैं कि हमने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इस आयत की तफ़्सीर[2] पूछी—

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَآءٌ
عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۝

व ला तह्सबन्नल्लज़ी न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वाता बल् अह्याउन अिन्द रब्बिहिम युर्ज़क़ून०

'और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गये उनको मुर्दा मत समझो, बल्कि ज़िंदा हैं, अपने रब के क़रीबी लोग हैं, उनको रोज़ी मिलती है।'

तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हम इसकी तफ़्सीर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मालूम कर चुके हैं, फिर फ़रमाया कि शहीद की रूहें हरे रंग के परिंदों के पोटों में हैं। उनके लिए अर्श इलाही के नीचे क़न्दील लटके हुए हैं। वे जहां चाहें जन्नत में चलती-फिरती हैं, फिर इन क़न्दीलों में आकर ठहर जाती हैं। अल्लाह तआला ने उनसे फ़रमाया कि तुम कुछ चाहते हो? उन्होंने अर्ज़ किया कि हम क्या चाहें? हालांकि जहां चाहते हैं, जन्नत में चलते-फिरते हैं। चुनांचे तीन बार ख़ुदा ने उनसे यही सवाल व जवाब फ़रमाया, सो जब उन्होंने यह समझ लिया कि जब तक हम जवाब न देंगे, सवाल ही होता रहेगा, तो उन्होंने यह अर्ज़ किया कि हम

१. इब्ने अबी हातिम,
२. व्याख्या, टीका,

यह चाहते हैं कि हमारी रूहें हमारे जिस्मों में वापस कर दी जाएं, यहां तक कि हम दोबारा तेरी राह में क़त्ल कर दिए जाएं। सो जब दुनिया के परवरदिगार ने उन से मालूम कर लिया कि उनको कोई ज़रूरत नहीं, तो छोड़ दिए गए (और फिर उन से सवाल नहीं किया गया) यानी वहां की कोई चीज़ उन्होंने तलब न की, और सवाल किया तो दुनिया में वापसी का सवाल किया, जो क़ानून के ख़िलाफ़ है, इसलिए फिर उन से सवाल न किया गया।'

रूहों का हरे परिंदों के पोटों में होना शहीदों के साथ ख़ास नहीं है, बल्कि दूसरे मोमिनों की रूहें भी उन परिंदों के पोटों में जन्नत की सैर करती हैं, जैसा कि हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि—

اِنَّ اَرْوَاحَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِيْ طَيْرٍ خُضْرٍ تَعْلُقُ بِشَجَرِ الْجَنَّةِ (مشکوٰۃ)

इन्न अर्वाहल मुअ्मिनीन फ़ी तैरिन ख़ुज़्रिन तअ्लुक़ु बि श ज रिल-जन्नति०

—मिश्कात

'बिला शुबहा ईमान वालों की रूहें हरे परिंदों के अंदर होती हैं, जो जन्नत के पेड़ों से खाती-पीती हैं।'

मुल्ला अली क़ारी रह० 'मिर्क़ात-शरहे मिश्कात' में लिखते हैं कि एक हदीस में है कि बिला शुबहा ईमान वालों की रूहें परिंदों के पोटों में जन्नत के फल खाती और पानी पीती फिरती हैं और अर्श के नीचे सोने की क़न्दीलों में आराम करती हैं।

शहादत की तक्लीफ़ चूंटी के काटे के बराबर होती है।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि शहीद क़त्ल होने की तक्लीफ़ बस इतनी ही महसूस करता है जैसे तुम चूंटी के काटे की तक्लीफ़ महसूस करते हो।'

१. मुस्लिम शरीफ़,
२. मिश्कात शरीफ़,

क़ब्र के अज़ाब की तफ़्सीलात

अह्ले सुन्नत वल जमाअत के अक़ीदे में क़ब्र का अज़ाब हक़ है, जिस तरह सालेह (नेक, भले) ईमान वालों को क़ब्र में आराम मिलता है और ख़ुशी के साथ क़ियामत तक रहना होता है। उसी तरह काफ़िरों और बदकारों को क़ब्र में अज़ाब होता है। बहुत सी हदीसों से ये बातें साबित होती हैं—

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पास एक यहूदी औरत आयी, और उसने उनके सामने क़ब्र के अज़ाब का ज़िक्र किया और कहा कि—

अ आज़किल्लाहु मिन अज़ाबिल क़ब्रि०

(यानी तुझे अल्लाह क़ब्र के अज़ाब से पनाह में रखे) हज़रत आइशा रज़ि० ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसके बारे में सवाल किया तो आप ने फ़रमाया—

न अम अज़ाबुल क़ब्रि हक़्क़ुन०

(हां क़ब्र का अज़ाब हक़ है)। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि इसके बाद हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब भी नमाज़ पढ़ी, क़ब्र के अज़ाब से ज़रूर अल्लाह की पनाह मांगी।[1]

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो इतना रोते कि मुबारक दाढ़ी तर हो जाती थी। सवाल किया गया कि आप जन्नत व दोज़ख का ज़िक्र कर के नहीं रोते और क़ब्र को देख कर (इतना) रोते हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया है कि बेशक क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है, सो अगर उससे निजात पायी तो इसके बाद की मंज़िलें इससे ज़्यादा आसान हैं और अगर इससे निजात न पायी तो इसके बाद की मंज़िलें इससे ज़्यादा सख़्त हैं।[2] क़ब्र के अज़ाब की कुछ तफ़्सीलात गुज़र चुकी हैं और कुछ अब ज़िक्र की जाती हैं।

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम,

२. तिर्मिज़ी शरीफ़,

क़ब्र में अज़ाब देने वाले अज़दहे

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवयता फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ब्र में काफ़िर पर ज़रूर ९९ अज़दहे मुक़र्रर कर दिए जाते हैं, जो क़ियामत तक उसे डसते रहते हैं। उनके ज़हर का यह हाल है कि अगर उनमें से एक भी ज़मीन पर फुंकार मार दे तो ज़मीन बिल्कुल सब्ज़ी न उगाये।[1]

यानी उनके ज़हर का यह असर है कि उनमें से एक अज़दहा भी अगर एक बार ज़मीन की तरफ़ फुंकार मार दे, तो उसके ज़हर के असर से ज़मीन में घास का एक तिन्का भी उगने के क़ाबिल न रहे। आजकल के लड़ाई के सामान जैसे एटमबम वग़ैरह देख कर, नबी सल्ल० के इस इर्शाद के समझने में ज़रा भी झिझक महसूस करने की गुंजाइश नहीं रहती।

क़ब्र में अज़ाब की वजह से मय्यत का चीख़ना और लोहे के गुर्ज़ों से उसका मारा जाना

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब काफ़िर जवाब देता है कि हाय! हाय!! मुझे पता नहीं! तो आसमान से मुनादी[2] आवाज़ देता है कि इसने झूठ कहा, इसके नीचे आग बिछा दो और इसे आग का पहनावा पहना दो और इसके लिए दोज़ख का एक दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे दरवाज़ा खोल दिया जाता है, जिस से दोज़ख की गर्मी और सख़्त गर्म लू आती रहती है और उसकी क़ब्र तंग कर दी जाती है, यहां तक कि उसकी पसलियां

---

१. दारमी,

२. निदा (आवाज़) देने वाला,

इधर से उधर हो जाती हैं, फिर उसके अजाब देने के लिए एक (अजाब देने वाला) मुक़र्रर कर दिया जाता है जो अंधा और बहरा होता है। उसके पास लोहे का गुर्ज होता है, जिसकी हक़ीक़त यह है कि अगर वह पहाड़ पर मार दिया जाए तो पहाड़ ज़रूर मिट्टी हो जाए। (फिर इर्शाद फ़रमाया कि) उस गुर्ज को एक बार मारता है तो उसकी आवाज़ को इन्सान और जिन्नात के अलावा पूरब-पश्चिम के दर्मियान की सारी मख़्लूक़ सुनती है। एक बार मारने से वह मिट्टी हो जाता है फिर रूह लौटा दी जाती है।'[1]

बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि इस गुर्ज के मारे जाने से वह इस ज़ोर से चीख़ता है कि इंसान और जिन्नात के सिवा उसके क़रीब की हर चीज़ उसकी चीख़ व पुकार सुनती है।

सवाल—यहां यह बात मालूम करने की है कि इंसानों और जिन्नों को मैयत के मारने और उसके चीख़ने की आवाज़ क्यों नहीं सुनायी जाती ?

तो इसका जवाब यह है कि इंसानों और जिन्नों को बर्जख़ की दुनिया से वास्ता पड़ता है। अगर उनको क़ब्र का अज़ाब दिखा दिया जाए या कानों से वहां के मुसीबत के मारे हुओं की चीख़ व पुकार की आवाज़ सुना दी जाए तो ईमान ले आयें और नेक अमल करने लगें, हालांकि ख़ुदा के यहां ग़ैब पर ईमान मोतबर (जिस पर भरोसा किया जाए) है कि सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्ल० की बात सुन कर मान लें और समझ में आए या न आए, बहरहाल आपकी बात सही मानें, इसी को ईमान फ़रमाया गया है।

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ

इन्नल्लज़ी न यख़्शौ न रब्बहुम बिल ग़ैबि लहुम मग़्फ़ि र तुंव्व अज्रुन कबीर०

'बिला शुबहा जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए मग़्फ़िरत है और बड़ा अज्र है।'

अगर दोज़ख़ व जन्नत और बर्जख़ के हालात आंखों से दिखा दिए जाएं तो फिर 'ग़ैब पर ईमान' न रहे और सब मान लें और मोमिन हो जायें मगर ख़ुदा के यहां आंखों से देखे हुए पर ईमान लाना मोतबर नहीं है, इसी वजह से मरते वक़्त ईमान लाने का एतबार नहीं है, क्योंकि उस

१. अहमद व अबूदाऊद,

वक़्त अज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आ जाते हैं—

فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا. (مومن)

फ़ लम यकु यनफ़अुहुम ईमानुहुम लम्मा रऔ बा स ना०

—मोमिन

'सो उनको उनका ईमान लाना फ़ायदेमंद न हुआ, जबकि उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया।'

जब क़ियामत को उठ खड़े होंगे और फिर जन्नत-दोज़ख़ आंख से देख लेंगे तो सब ही ईमान ले आएंगे और रसूलों की बातों की तस्दीक़ कर लेंगे, मगर उस वक़्त का ईमान और तस्दीक़ मोतबर नहीं है।

इंसानों को क़ब्र के अज़ाब के न दिखाने और उसकी आवाज़ न सुनाने में यह मस्लहत भी मालूम होती है कि इंसान उसकी बरदाश्त नहीं कर सकते, अगर क़ब्र के अज़ाब का हाल आंखों से देख लें या कानों से सुन लें तो बेहोश हो जाएं, जैसा कि हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि ना-फ़रमान की मय्यत को जब लोग उठाकर चलते हैं तो वह कहता है, हाय मेरी बरबादी ! मुझे कहां ले जा रहे हो ? उसकी इस आवाज़ को इंसान के सिवा हर चीज़ सुनती है और अगर इंसान सुन ले तो बेहोश हो जाए।'[1]

हां, अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० को बर्जख़ की चीज़ें न सिर्फ़ बतादीं, बल्कि दिखा भी दीं। चूंकि आप में उन्हें देखकर बर्दाश्त करने की ताक़त मौजूद थी यहां तक कि दोज़ख़ के मंज़र को देखकर भी आपके हँसने-बोलने और सहाबा रज़ि० के साथ उठने-बैठने और खाने-पीने में फ़र्क़ न आता था। हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार सूरज डूबने के बाद (मदीना मुनव्वरा से) बाहर तशरीफ़ ले गये। आपने एक आवाज़ सुनी (जो भयानक आवाज़ थी) उसको सुनकर फ़रमाया कि यहूदियों को उनकी क़ब्रों में अज़ाब हो रहा है।'[2]

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा अपने ख़च्चर पर सवार होकर क़बीला बनू नज्जार के एक बाग़ में तशरीफ़ ले जा रहे थे

१. बुख़ारी शरीफ़,
२. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़,

और हम भी आपके साथ थे कि अचानक आपका खच्चर बिदक गया और ऐसा बिदका कि क़रीब था कि आपको गिरा दे। वहीं पांच या छः क़ब्रें थीं। उनके बारे में रसूलुल्लाह सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि इन क़ब्र वालों को कौन पहचानता है ? एक शख़्स ने अर्ज़ किया, मैं पहचानता हूं। आपने उससे पूछा, यह कब मरे थे ? उसने कहा कि शिर्क के ज़माने में मरे थे। आपने इर्शाद फ़रमाया कि इंसान को क़ब्रों में अज़ाब दिया जाता है, सो अगर मुझे डर न होता कि तुम आपस में दफ़्न करना छोड़ दोगे तो ख़ुदा से ज़रूर दुआ करता कि तुमको (भी) इस क़ब्र के अज़ाब का कुछ हिस्सा सुना दे, जिसे मैं सुन रहा हूं।'

चुग़ली करने और पेशाब से न बचने से अज़ाबे क़ब्र होता है

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दो क़ब्रों पर गुज़र हुआ। आपने इर्शाद फ़रमाया, इनको अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े मुश्किल काम की वजह से अज़ाब नहीं हो रहा है (बल्कि ऐसी मामूली बातों पर, जिनसे बच सकते थे।)

फिर आपने उन दोनों के गुनाहों की तफ़्सील बतायी कि इन दोनों में एक पेशाब करने में पर्दा नहीं करता था (और एक रिवायत में है कि पेशाब से बचता न था) और यह दूसरा चुग़्ली करता फिरता था। फिर आपने एक तर टहनी मंगा कर बीच में से उसको चीर कर आधी उस क़ब्र में गाड़ दी और आधी दूसरी क़ब्र में, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! आपने ऐसा क्यों किया ? इर्शाद फ़रमाया कि शायद इन दोनों का अज़ाब उनके सूखने तक हल्का कर दिया जाए।²

कुछ ख़ास कामों पर ख़ास अज़ाब

बुख़ारी शरीफ़ में एक लंबी रिवायत है, जिस में अल्लाह के रसूल

१. मुस्लिम,

२. मिश्कात शरीफ़, इसकी तश्रीह (व्याख्या) में कुछ उलेमा ने फ़रमाया है

सल्ल० का एक ख़्वाब रिवायत किया गया है, जिसमें बर्ज़ख की दुनिया में ख़ास-ख़ास अज़ाबों का ज़िक्र है। आपने फ़रमाया कि मैंने आज रात ख़्वाब देखा है कि दो आदमी मेरे पास आये और मेरा हाथ पकड़ कर मुझको एक मुक़द्दस (पाक) ज़मीन की तरफ़ ले चले। देखता क्या हूं कि एक आदमी बैठा हुआ है और दूसरा खड़ा है और उसके हाथ में लोहे का जंबूर है। उस बैठे हुए शख़्स के कल्ले को उसमे चीर रहा है, यहां तक कि गुद्दी तक जा पहुंचता है, फिर दूसरे कल्ले के साथ भी यही मामला करता है और पहला कल्ला उसका ठीक हो जाता है, वह फिर उस पहले कल्ले के साथ ऐसा ही करता है। मैंने पूछा, यह क्या बात है ? वे दोनों आदमी बोले, आगे चलो। हम आगे चले, यहां तक कि एक ऐसे शख़्स पर गुज़र हुआ जो लेटा हुआ है और उसके सर पर एक शख़्स भारी पत्थर लिए खड़ा है। यह खड़ा हुआ शख़्स उस पत्थर से उस लेटे हुए आदमी का सर बहुत ज़ोर से फ़ोड़ता है, जब वह पत्थर उसके सर पर दे मारता है, तो पत्थर लुढ़क कर दूर जा गिरता है। जब वह उसको उठाने के लिए जाता है, तो अभी तक लौटकर उसके पास आने नहीं पाता कि उसका सर जैसा था, वैसा ही हो जाता है और फिर उसको उसी तरह फोड़ता है। मैंने पूछा, यह क्या है ? वे दोनों बोले, आगे चलो, यहां तक कि हम एक ग़ार पर पहुंचे जो तनूर की तरह था और ऊपर से तंग था, नीचे से चौड़ा था। उसमें आग जल रही थी और उसमें बहुत से नंगे मर्द और औरतें भरे हुए थे, जिस वक़्त वह आग ऊपर को उठती, तो उसके साथ वे सब ऊपर को उठ आते थे, यहां तककि क़रीब निकलने को हो जाते। फिर जिस वक़्त आग बैठती तो वे भी सब नीचे चले जाते। मैंने पूछा यह क्या है ? वे दोनों बोले, आगे चलो। हम दोनों आगे चले, यहां तककि एक ख़ून की नहर पर पहुंचे। उसके बीच में एक शख़्स खड़ा है और नहर के किनारे पर एक शख़्स है, जिसके सामने बहुत से पत्थर पड़े हैं। वह नहर के अंदर वाला शख़्स नहर के किनारे की तरफ़ आता है, जिस वक़्त वह निकलना चाहता है, यह किनारे वाला शख़्स उसके मुंह पर पत्थर इस ज़ोर से मारता है कि वह फिर अपनी पहली जगह पर जा पहुंचता है, फिर जब भी वह किनारे की तरफ़ आना चाहता है, इसी तरह पत्थर मारकर हटा देता है। मैंने पूछा यह क्या है। वे दोनों बोले, आगे चलो। हम आगे चले, यहां तककि एक हरे-भरे बाग़ में आ पहुंचे। उसमें एक

कि तर टहनी के तस्बीह ख़ुदावंदी में लगे रहने की वजह से अज़ाब हल्का होने की उम्मीद पर आपने ऐसा किया,

बड़ा पेड़ है और उसके नीचे एक बूढ़ा आदमी है और बच्चे हैं। उस पेड़ के क़रीब एक और आदमी बैठा हुआ है और उसके सामने आग जल रही है, जिसे वह धौंक रहा है, फिर वह दोनों मुझको चढ़ाकर पेड़ के ऊपर ले गये। वहां एक घर पेड़ के बीच में बहुत उम्दा था, उसमें मुझे दाखिल कर दिया। मैंने उस घर से अच्छा घर कभी नहीं देखा। उसमें बहुत से मर्द, बूढ़े, जवान, औरतें और बच्चे थे, फिर उससे बाहर लाकर और ऊपर ले गये, वहां एक घर पहले घर से भी उम्दा था। उसमें ले गये। उसमें बूढ़े और जवान थे। मैंने उन दोनों आदमियों से कहा कि तुमने मुझको तमाम रात फिराया। अब बताओ कि ये सब क्या भेद की बातें थीं। उन्होंने कहा, वह जो तुमने देखा था, जिसके कल्ले चीरे जाते थे, वह आदमी झूठा है, जो झूठी बातें बयान करता था और वे बातें दुनिया में मशहूर हो जाती थीं। उसके साथ क़ियामत तक यों ही करते रहेंगे और जिसका सर फोड़ते हुए देखा, वह आदमी है कि अल्लाह तआला ने उसको क़ुरआन का इल्म दिया। रात को उससे ग़ाफ़िल होकर सो रहा था और दिन को उस पर अमल न किया। क़ियामत तक उसके साथ यही मामला रहेगा और जिनको तुमने आग के ग़ार में देखा, वे ज़िना करने वाले लोग हैं और जिनको ख़ून की नहर में देखा, वे सूद खाने वाले हैं और पेड़ के नीचे जो बूढ़े शख्स थे, वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे और उसके आस-पास जो बच्चे थे, वह लोगों की ना-बालिग़ औलाद हैं और जो आग धौंक रहा था, वह मालिक दारोग़ा दोज़ख का है और पहला घर, जिसमें आप दाखिल हुए, वह आम मुसलमानों का है और दूसरा घर शहीदों का है और मैं जिब्रील हूं और यह मीकाईल हैं। फिर बोले, सर ऊपर उठाओ। मैंने सर उठाया तो मेरे ऊपर एक सफ़ेद बादल नज़र आया, बोले कि यह तुम्हारा घर है। मैंने कहा कि मुझे छोड़ दो, मैं अपने घर में दाखिल हो जाऊं। बोले, अभी तुम्हारी उम्र बाक़ी है, पूरी नहीं हुई। अगर पूरी हो चुकी होती तो अभी चले जाते।'

फ़ायदा—जानना चाहिए कि नबियों का ख्वाब बह्य होता है। ये तमाम वाक़िए सच्चे हैं। इस हदीस में कई चीज़ों का हाल मालूम हुआ। एक झूठ का कि कैसी सख्त सज़ा है, दूसरे बे-अमल आलिम का, तीसरे ज़िना, चौथे सूद का। ख़ुदा सब मुसलमानों को इन कामों से बचाये रखे।

१. मिश्कात शरीफ़,

ज़मीन का मय्यत से बात करना

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूले ख़ुदा सल्ल० बाहर तशरीफ़ लाये, तो आपने लोगों को देखा कि खिलखिला कर हंस रहे हैं, जिसकी वजह से उनके दांत बाहर निकले हुए हैं। उनका यह हाल देखकर आपने इर्शाद फ़रमाया कि ख़बरदार! बिला शुबहा अगर तुम लज़्ज़तों को काटने वाली चीज़ यानी मौत को बहुत ज़्यादा याद करते तो तुमको मैं इस हाल में न देखता, इस लिए तुम लज़्ज़तों को काटने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद किया करो, क्योंकि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता, जिस दिन वह यह न कहती हो कि मैं परायेपन का घर हूं और मैं तंहाई का घर हूं और मैं मिट्टी का घर हूं और मैं कीड़ों का घर हूं।

फिर फ़रमाया कि जब मोमिन बन्दा दफ़न कर दिया जाता है, तो उस से क़ब्र कहती है कि मुबारक हो, तू अपने ही घर आया, समझ ले, बेशक तू मुझे उन सबसे ज़्यादा महबूब था, जो मुझ पर चलते हैं, सो जब तू आज मेरे सुपुर्द कर दिया गया है और मेरे पास आ गया है, तो अब मेरा सुलूक देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या अच्छा सुलूक करती हूं। इसके बाद जहां तक नज़र पहुंचती है, वहां तक क़ब्र फैल जाती है और उसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है और जब फ़ाजिर या काफ़िर बंदा दफ़न कर दिया जाता है, तो उससे क़ब्र कहती है कि तेरा आना बुरा आना है और तू बुरी जगह आया, समझ ले कि मुझ पर चलने वालों में तू मुझे सबसे मब्ग़ूज़ (नापसंदीदा, दुश्मन) था, सो अब जब तू मेरे सुपुर्द कर दिया गया है और आज मेरे बस में आ गया है, अब तू देखेगा कि तुझसे क्या मामला करती हूं। इसके बाद वह उसे इस तरह भींचती है कि उसकी दायीं पसलियां बायीं पसलियों में और बायीं पसलियां दायीं पसलियों में घुस जाती हैं। इसको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह ज़ाहिर फ़रमाया कि अपने मुबारक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ की उंगलियों में दाखिल फ़रमायीं।'

१. मिश्कात,

क़ब्र के अज़ाब से बचे रहने वाले

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जब मय्यत को क़ब्र में रख दिया जाता है तो दफ़न करने के बाद जब लोग वापस होते हैं, तो वह उनके जूतों की आवाज़ सुनता है, सो अगर वह मोमिन होता है तो नमाज़ उसके सिरहाने आ जाती है और रोज़े उसके दाहिनी तरफ़ आ जाते हैं और ज़कात उसके बायीं तरफ़ आ जाती है और (नफ़्ल काम जो किए थे, जैसे) सद्क़ा, नफ़्ल नमाज़ और लोगों के साथ जो नेकी और भलाई की, वह उसके पैरों की तरफ़ आ जाती है। अगर उसके सिरहाने की तरफ़ से अज़ाब आता है तो नमाज़ कहती है कि मेरी तरफ़ से जगह न मिलेगी, फिर उसकी दाहिनी तरफ़ से अज़ाब आता है तो रोज़े कहते हैं कि हमारी तरफ़ से जगह न मिलेगी, फिर बायीं तरफ़ से अज़ाब आता है, तो ज़कात कहती है कि मेरी तरफ़ से जगह न मिलेगी, फिर पैरों की तरफ़ से अज़ाब आता है, तो भले काम, सदक़ा और एहसान के काम जो लोगों के साथ किये थे, वे कहते हैं कि हमारी तरफ़ से जगह न मिलेगी।[1]

सूर: मुल्क और अलिफ़-लाम-मीम सज्दा पढ़ने वाला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि प्यारे नबी सल० के एक सहाबी रज़ि० ने एक क़ब्र हर खेमा लगाया और उनको पता न था कि यह क़ब्र है। (खेमे में बैठे-बैठे) अचानक देखते क्या हैं कि इसमें एक इंसान है जो सूर: तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्कु पढ़ रहा है। पढ़ते-पढ़ते उसने पूरी सूर: ख़त्म कर दी। यह वाक़िआ उन्होंने हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया तो आपने फ़रमाया कि यह सूर: अज़ाब रोकने

१. तर्ग़ीब

वाली है (और) इसको अल्लाह के अज़ाब से बचा रही है।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बिला शुबहा क़ुरआन में एक सूर: है, जिसकी ३० आयतें हैं। उसने एक शख़्स की सिफ़ारिश की, यहां तक कि वह बख़्स दिया गया, फिर फ़रमाया कि वह सूर: तबार कल्लज़ी बियदिहिल मुल्कु है।[2]

हज़रत ख़ालिद बिन मेदान (ताबई) रह० सूर: तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्कु और सूर: अलिफ़-लाल-मीम सज्दा के बारे में फ़रमाया करते थे कि ये दोनों सूरतें अपने पढ़ने वालों के लिए क़ब्र में अल्लाह से झगड़ेंगी और दोनों में से हर एक कहेगी कि ऐ अल्लाह! अगर मैं तेरी किताब में से हूं तो इसके हक़ में मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमा और अगर मैं तेरी किताब में से नहीं हूं तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। यह भी फ़रमाते थे कि यह परिंदों की तरह अपने पढ़ने वाले पर फैला देंगी और उसे क़ब्र के अज़ाब से बचा लेंगी।[3]

इन दोनों सूरतों को क़ब्र के अज़ाब से बचाने में बड़ा दख़ल है, जैसा कि इस रिवायत से ज़ाहिर हुआ। आंहज़रत सैयदे आलम सल्ल० इन दोनों सूरतों को पढ़े बग़ैर न सोते थे।[4]

फायदा—जिस तरह सूर: अलिफ़-लाम-मीम सज्दा और सूर: मुल्क क़ब्र के अज़ाब से बहुत ज़्यादा बचाने वाली हैं, उसी तरह चुग़ल-ख़ोरी करना और पेशाब से न बचना, दोनों काम क़ब्र के अज़ाब में बहुत ज़्यादा डाल देने वाले हैं।

पेट में मर्ज़ में मरने वाला

हज़रत सुलेमान बिन सरूर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसको उसके पेट (के मर्ज़) ने क़त्ल किया, उसको क़ब्र में अज़ाब न दिया जाएगा[5]।

पेट के कई मर्ज़ हैं। इनमें से जो भी मौत की वजह बन जाए,

१. मिश्कात शरीफ़,
२. मिश्कात, ३. मिश्कात,
४. मिश्कात शरीफ़, ५. अहमद व तिर्मिज़ी,

उसको क़ब्र में अज़ाब न होगा। हर एक की हदीस का मज़मून शामिल है, जैसे प्यास का मर्ज़, हैज़ा, पेट का दर्द वग़ैरह।

जुमे की रात या जुमे के दिन मरने वाला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो भी मुसलमान जुमा के दिन या जुमा के रात में मरता है, उसको ख़ुदा क़ब्र के फ़ित्ने से बचाये रखता है।[1]

रमज़ान में मरने वाला

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि बिलाशुब्हा रमज़ान के महीनों में मुर्दों से क़ब्र का अज़ाब उठा लिया जाता है।[2]

जो मरीज़ हो कर मरे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो मर्ज़ की हालत में मरा, वह शहीद मरा या (फ़रमाया) वह क़ब्र के फ़ित्ने से बचा दिया जाएगा और सुब्ह-शाम उसे जन्नत की रोज़ी मिलती रहेगा।[3]

मुजाहिद और शहीद

हज़रत मिक़दाम बिन मादी कर्ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह के पास शहीद के लिए छः इनाम हैं—

१—ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही बख़्श दिया जाता है और जन्नत में जो उसका ठिकाना है, वह उसे दिखाया जाता है,

१. अहमद व तिर्मिज़ी, २. बैहक़ी,
३. मिश्कात शरीफ़, ४. जिहाद करने वाला,

२—और वह क़ब्र के अज़ाब से बचा दिया जाता है,

३—और वह बड़ी घबराहट से बचा रहेगा (जो सूर फूंके जाने के वक़्त लोगों को होगी) और,

४—उसके सर पर इज़्ज़त का ताज रखा जाएगा, जिसका (एक-एक) याक़ूत दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, उस सबसे बेहतर होगा, और,

५—बहत्तर हूरे ऐन[1] उसके जोड़े के लिए दी जाएंगी,

६—और सत्तर रिश्तेदारों के हक़ में उसकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी।[2]

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआला के रास्ते में इस्लामी मुल्क की सरहद तक हिफ़ाज़त एक रात व दिन करना एक महीने के (नफ़्ली) रोज़े रखने और रातों-रात नमाज़ में एक माह तक खड़े रहने से बेहतर है और यह हिफ़ाज़त करने वाला अगर (इसी हालत में) मर गया, तो जो अमल वह करता था, उसका सवाब उसके लिए बराबर (क़ियामत तक) जारी रखा जाएगा और उसकी रोज़ी जारी रहेगी (जो शहीदों के लिए जारी रहती है) और क़ब्र में फ़ित्ना डालने वालों से अम्न में रहेगा।[3]

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स दुश्मन से लड़ा और फिर क़दम जमाये रहा यहां तक मक़्तूल हो गया (यानी मारा गया) या ग़ालिब हो गया, तो क़ब्र के अन्दर फ़ित्ने में न डाला जायेगा।[4]

एक शख़्स को ज़मीन ने कुबूल न किया

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का कातिब[5] था, वह इस्लाम से फिरकर मुश्रिकों से जा मिला, तो हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि

१. बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें,
२. तिर्मिज़ी, इब्नेमाजा, ३. मिश्कात शरीफ़,
४. नसई व तबरानी, ५. लिखने वाला,

व सल्लम ने उसके हक़ में बद-दुआ फ़रमायी कि उसको ज़मीन क़ुबूल न करेगी। इसके बाद जब वह मर गया तो हज़रत अबू तल्हा रजि० उस क़ब्र की तरफ़ तशरीफ़ ले गये तो उसे क़ब्र से बाहर पड़ा हुआ पाया। यह देखकर उन्होंने वहां के लोगों से यह मालूम फ़रमाया कि माजरा क्या है, तो उन्होंने बताया कि उसको हमने कई बार दफ़न किया, मगर हर बार उसको ज़मीन ने बाहर फेंक दिया, इसलिए हमने बाहर ही छोड़ दिया।[1]

कुछ उस्तादों से इस किताब के लिखने वाले ने यह वाक़िआ सुना है कि एक आलिम की क़ब्र किसी ज़रूरत से खोदी गयी जो मदीना मुनव्वरा में थी, तो उसमें एक लड़की की लाश निकली। देखने वालों में से कुछ लोग उस लड़की को पहचानते थे और उनको मालूम था कि यह फ़्लां ईसाई की लड़की है। चुनांचे उन्होंने वहां पहुंच कर उसके मां-बाप से उसका हाल पूछा और क़ब्र मालूम की, तो उन्होंने क़ब्र भी बतायी और यह भी फ़रमाया कि दिल से मुसलमान थी और मदीना मुनव्वरा में मरने की ख्वाहिश रखती थी। फिर उसकी क़ब्र खुदवा कर देखी गयी, तो उस में उस आलिम की लाश निकली, जिसकी क़ब्र में वह लड़की मदीना मुनव्वरा में देखी गयी थी। फिर उस आलिम की बीवी से उनका अमल मालूम किया तो उसने बताया कि वह बड़े नेक आदमी थे। यह बात ज़रूर थी कि वे यों कहा करते थे कि ईसाई मज़हब में यह बात बड़ी आसानी की है कि उनके यहां जनाबत का ग़ुस्ल[2] ज़रूरी नहीं है, इसी वजह से वह उस लड़की की क़ब्र में पहुंचाये गये।

बर्ज़ख में सुबह-शाम जन्नत या दोज़ख का पेश होना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करते हैं कि आं हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहा जब तुम में से कोई मर जाता है तो सुबह-शाम उसका ठिकाना जन्नत या दोज़ख उसके सामने पेश किया जाता है, अगर वह जन्नती है तो सुबह-शाम उस के सामने जन्नत पेश की जाती है और

१. बुखारी व मुस्लिम शरीफ़,
२. बीवी के साथ सोहबत करने की नापाकी का नहान,

अगर वह दोज़खी है तो सुबह-शाम उसके सामने दोज़ख पेश की जाती है और उसका ठिकाना दिखा कर उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है (फिर फ़रमाया कि) क़ियामत के दिन तक जब कि ख़ुदा उसे (क़ब्र से) उठायेगा, हर सुबह-शाम ऐसा ही होता रहेगा।[1]

आं हज़रत सल्ल० पर उम्मत के आमाल पेश किये जाते हैं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी ज़िंदगी तुम्हारे लिए बेहतर है और मेरी वफ़ात तुम्हारे लिए बेहतर है, तुम्हारे आमाल मुझ पर पेश होंगे, पस जो भलाई (तुम्हारी तरफ़ से पेश की जाएगी, जिसे) मैं देखूंगा तो उस पर अल्लाह की तारीफ़ करूंगा और जो कोई बुराई देखूंगा (जो तुम्हारी तरफ़ से पेश की जाएगी) तो तुम्हारे लिए अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की दुआ करूंगा।[2]

रौज़ा-ए-मुतह्हरा के पास दरूद व सलाम पढ़ा जाये तो आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद सुनते हैं और जो कोई दूर से दरूद व सलाम भेजे, उसको फ़रिश्ते पहुंचा देते हैं

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आं हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो कोई मुझ पर मेरी क़ब्र के पास दरूद पढ़े, मैं उसको सुनूंगा और जो कोई मुझ पर दूर से दरूद भेजे, वह दरूद मुझे पहुंचा दिया जाता है[3]।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आं हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बिला शुबहा अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते हैं, जो ज़मीन में गश्त लगाते फिरते हैं (और) मेरी उम्मत का सलाम मेरे पास पहुंचाते हैं।[4]

दुनिया में क़ायदा है कि मौजूद लोग आपस में एक दूसरे को सलाम

१. बुखारी व मुस्लिम
२. जमउल फ़वाइद, ३. बैहक़ी,
४. हाकिम, नसई शरीफ़ वग़ैरह,

करते हैं और जो दूर होते हैं, उनको डाक से या आदमी के ज़रिए सलाम भेजते हैं। अल्लाह तआला ने अपनी कामिल (पूर्ण) रहमत से यह सिल-सिला जारी रखा है कि जो मुसलमान अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दूर से सलाम भेजें, तो उसको फ़रिश्तों के ज़रिए पहुंचा देते हैं।

इन हदीसों से जहां यह मालूम हुआ कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को बर्ज़खी ज़िंदगी में भी अपनी उम्मत से ताल्लुक़ बाक़ी है, और यह कि अल्लाह तआला ने इस उम्मत को यह शर्फ़ (बुज़ुर्गी) बख्शा है कि फ़रिश्तों को इस बड़े काम के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है कि उम्मतियों का सलाम फ़ख़्रे कायनात मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को पहुंचा दें। वहां यह भी मालूम हुआ कि गो हज़रात अंबिया-ए-किराम ज़िंदा हैं, लेकिन ख़ुदा की पनाह, हर जगह न हाज़िर हैं, न सब कुछ देख रहे हैं और न दूर की बात को सुनते हैं। जब नबियों अलै० के बारे में यह साबित है कि हर जगह न हाज़िर हैं, न देख सकते हैं और न हर आवाज़ सुनने वाले हैं, तो उन औलियाअल्लाह के बारे में ऐसा ख्याल करना तो बिल्कुल ही ग़लत और बिद्अत होगा, जो अल्लाह के चुने हुए, बुज़ुर्ग पैग़म्बरों के सहाबियों (साथियों) से भी कम दर्जे के हैं।

नबियों की बर्ज़खी ज़िन्दगी

हज़रात अंबिया किराम अलै० इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद भी ज़िंदा ही हैं, माना कि शहीदों के बारे में क़ुरआन शरीफ़ में आया है कि इनको मुर्दा मत कहो, लेकिन नबियों के बारे में भी हदीस की बहुत-सी रिवायतों से साबित है कि इस दुनिया से चले जाने के बाद ज़िन्दा ही हैं।

मशहूर मुहद्दिस[1] अल्लामा बैहक़ी रह० और मशहूर मुसन्निफ़[2] अल्लामा सुयूती रह० ने इस मौज़ू[3] पर एक-एक रिसाला (किताब) लिखा है और 'हयातुल अंबिया' (नबियों की ज़िंदगी) को साबित किया है।

---

१. हदीस के माहिर,
२. लेखक, ३. विषय

अल्लामा सुयूती रह० ने अपने फ़तावा में लिखा है कि—

'प्यारे नबी सल्ल० और दूसरे तमाम अंबिया किराम के क़ब्रों में ज़िंदा होने की दलीलों के साथ हमको क़तई जानकारी है और इस बारे में तवातुर[1] के दर्जे को हदीसें पहुंच चुकी हैं।

इमाम क़ुर्तबी ने अपनी किताब 'तज़्किरा' में फ़रमाया है कि हज़रात अंबिया-ए-किराम की मौत का हासिल इतना समझो कि वे हमारी नज़रों से छिपा दिए गये हैं और उनका हाल हमारी निस्बत ऐसा है जैसे फ़रिश्तों का हाल है (कि हम फ़रिश्तों को देख नहीं सकते हैं।)

मुहद्दिस बैहक़ी रह० ने फ़रमाया कि हज़रात अंबिया-ए-किराम की रूहें क़ब्ज़ करने के बाद फिर वापस कर दी गयीं, इस लिए वे अपने रब के हुज़ूर में ज़िंदा हैं जैसा कि शहीद हैं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अंबिया अलै० ज़िंदा है, अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ते हैं,[2] यह नमाज़ तक्लीफ़े शरई की वजह से नहीं है, बल्कि लज़्ज़त हासिल करने के लिए है।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्ल० ने फ़रमाया कि जुमा के दिन मुझ पर दरूद ज़्यादा से ज़्यादा भेजा करो, क्योंकि यह दिन मशहूद है, जिसके मानी यह हैं कि इसमें फ़रिश्तों का आना (ज़्यादा से ज़्यादा) होता है, (फिर इर्शाद फ़रमाया कि) बेशक तुम में से जो भी आदमी मुझ पर दरूद भेजता है, उसका दरूद मेरे सामने पेश होता रहता है जब तक कि वह उसमें लगा हुआ हो। सवाल किया गया है कि या रसूलल्लाह! वफ़ात के बाद क्या होगा? इर्शाद हुआ कि वफ़ात के बाद मुझ पर दरूद पेश किया जाता रहेगा, क्योंकि उस आलम (दुनिया) में जा कर भी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ज़िंदा रहते हैं और यह ज़िंदगी रूहानी नहीं होती, बल्कि जिस्मानी होती है (क्योंकि) बेशक अल्लाह ने ज़मीन पर यह हराम फ़रमा दिया है कि नबियों के जिस्मों को खा जाये, इस लिए अल्लाह का नबी ज़िंदा रहता है और उसको रोज़ी भी दी जाती है।[3]

इस मुबारक हदीस से मालूम हुआ कि हज़रात अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु इस दुनिया से इन्तिक़ाल फ़रमा कर जिस्मानी

---

१. बीच की कड़ियों में से किसी रावी को छोड़े बग़ैर,
२. अबूयाला ३. इब्नेमाजा,

ज़िंदगी के साथ ज़िंदा हैं और रोज़ी भी पाते हैं। यह रोज़ी उसी दुनिया के मुनासिब है। शहीदों के बारे में भी रोज़ी का मिलना आया है, लेकिन हज़रात अंबिया-ए-किराम अलै० की ज़िंदगी और उनका रोज़ी दिया जाना शहीदों के मुक़ाबले में कामिल (पूर्ण) है। हज़रत शाह अब्दुलहक़ साहब मुहद्दिस देहलवी रह० ने 'अश्अतुल्लम आत', शरह मिश्कात में लिखा है—

'नबियों की ज़िंदगी का ऐसा मस्अला है, जिस पर सबका इत्तिफ़ाक़ (सहमत) है, किसी को इसमें इख़्तिलाफ़ नहीं और यह हयाते जिस्मानी है जैसा कि दुनिया में थी, उनकी ज़िंदगी रूहानी या मानवी (अर्थ निरूपित) न समझी जाए।'

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि एक बार हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मक्के और मदीने के बीच सफ़र कर रहे थे, आप ने एक वादी (घाटी) के बारे में पूछा कौन सी वादी है ? मौजूद लोगों ने जवाब दिया कि यह 'वादी-ए-रिज़्क़' (यानी रोज़ी की घाटी) है। आपने इर्शाद फ़रमाया कि गोया मैं देख रहा हूं मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़, यह फ़रमा कर उनके रंग और बालों की हालत कुछ बयान फ़रमायी (और फ़रमाया कि वह) इस हाल में (नज़र आ रहे) हैं कि अपनी दोनों उंगलियां दोनों कानों में दिए हुए हैं (और) अपने रब के नाम का तल्बिया[1] ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते हुए इस वादी से गुज़र रहे हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि इसके बाद हम और आगे चले, यहां तक कि एक वादी आयी। उसके बारे में फ़ख़्रे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सवाल फ़रमाया कि यह कौन सी वादी है ? हाज़िर लोगों ने जवाब दिया कि यह वादी 'हरशा' (नामी) है या बजाए हरशा के लुफ़्त कहा। आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि गोया मैं यूनुस (अलैहिस्सलाम) को देख रहा हूं कि सुर्ख़ ऊंटनी पर सवार हैं, उनके जिस्म पर उनका जुब्बा है और उनकी ऊंटनी की लगाम पेड़ की छाल की है, तल्बिया पढ़ते हुए उस घाटी से गुज़र रहे हैं।[2]

इस मुबारक हदीस से साबित हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मूसा और हज़रत यूनुस अलै० को बेकारी की हालत

१. लब्बैक व सादैक कहना,
२. मुस्लिम शरीफ़,

में तल्बिया पढ़ते हुए देखा, मालूम हुआ कि हज़रात अंबिया किराम की बर्ज़खी ज़िंदगी इतनी कामिल और इतनी बुलंद है कि इस दुनिया में तश्रीफ़ ला सकते हैं और हज की ज़रूरी रस्में अदा कर सकते हैं और उनका देखा जाना भी मुम्किन है। कुछ बुज़ुर्गों से जो यह नक़ल किया गया है कि उन्होंने आंहज़रत सल्ल० को बेदारी में देखा, तो यह झुठलाने की चीज़ नहीं है। अगर कोई तस्दीक़ न करे तो झुठलाना भी मुनासिब नहीं है। मेराज शरीफ़ का वाक़िया जो हदीस की किताबों में आया है, उस में यह भी है कि सैयदे आलम सल्ल० ने फ़रमाया कि मैंने मूसा और ईसा और इब्राहीम अलै० को खड़े हुए नमाज़ पढ़ते देखा, इतने में नमाज़ का वक़्त आ गया, तो मैं उनका इमाम बना।[1]

उस वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी दुनियावी ज़िन्दगी ही में थे और जिन नबियों को आप ने नमाज़ पढ़ायी, वे बर्ज़खी ज़िंदगी में थे। हज़रत ईसा अलै० गो इस दुनिया में नहीं हैं, मगर बर्ज़खी ज़िंदगी में भी नहीं हैं, बल्कि उनकी यही दुनिया की ज़िंदगी उस वक़्त तक जारी मानी जाएगी, जब तक कि दोबारा तश्रीफ़ ला कर वफ़ात न पा जाएं।

उहद के कुछ शहीदों के जिस्म वर्षों के बाद भी सही—सालिम पाये गये

मुअत्ता इमाम मालिक रह० में है कि अम्र बिन जमूह रज़ि० और अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० की क़ब्र को पानी के बहाव ने खोद दिया था। ये दोनों अंसारी थे और उहद की लड़ाई में शहीद हुए थे और एक ही क़ब्र में दोनों को दफ़्न कर दिया गया था। जब पानी ने क़ब्र खोद डाली तो दूसरी जगह दफ़्न करने के लिए उनकी क़ब्र खोदी गयी तो इस हालत में पाये गये कि उनके जिस्मों में ज़रा भी फ़र्क़ न आया था और ऐसा लगता था कि जैसे कल ही वफ़ात पायी है। यह वाक़िआ उस वक़्त का है जबकि उहद की लड़ाई को ४६ साल गुज़र चुके थे।

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने अमीर होने के ज़माने में मदीना तैयबा में नहर निकालने का इरादा फ़रमाया तो उसकी गुज़रगाह में उहद का क़ब्रस्तान पड़ गया, हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एलान फ़रमा दिया कि अपने-अपने रिश्तेदारों की लाशें यहां से उठा कर दूसरी जगह कर लें। जब इस मक़सद से लाशें निकाली

१. मुस्लिम शरीफ़,

गयीं तो बिल्कुल अपनी असली हालत पर तर व ताज़ा मालूम होती थीं। उसी वक़्त यह वाक़िआ भी पेश आया कि खुदवाई करते हुए हज़रत हमज़ा रज़ि० के मुबारक क़दम में कुदाल लग गया तो उसी वक़्त ख़ून जारी हो गया। यह वाक़िआ उहद की लड़ाई से पचास साल बाद का है।'[1]

उहद के शहीदों के अलावा और भी उम्मत के दूसरे बुज़ुर्गों के बारे में सियर[2] व तारीख़ की किताबों से यह साबित है कि दफ़्न करने के बाद जब वर्षों के बाद देखे गये, तो उनके जिस्मों में कोई तबदीली न हुई थी। हज़रात अंबिया-ए-किराम अलै० के बारे में तो हदीस शरीफ़ में क़तई फ़ैसला है कि उनके जिस्मों को ज़मीन गला नहीं सकती, लेकिन किसी ग़ैर नबी को भी अल्लाह तआला यह शर्फ़ बख़्शें तो उनकी रहमत और क़ुदरत कुछ ना-मुम्किन नहीं है—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَ الْحَیَاتِ وَخَیْرَ الْمَمَاتِ وَاَنْ تَغْفِرَ
لِیْ وَتَرْحَمَنِیْ وَاَنْ تَتُوْبَ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ رَبِّیْ.
اَنْتَ مَوْلَایَ وَاَنْتَ لِیْ نِعْمَ الْوَکِیْلُ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی
عَلٰی خَیْرِ خَلْقِهٖ سَیِّدِنَا وَسَنَدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ
وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِیْنَ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु क ख़ैरल हयाति व ख़ैरल ममाति व अन् तग़्फ़ि र ली व तर्हम्नी व अन त तू ब अलय्य इन्न क अन्त रब्बी अन्त मौला य व अन्त ली निअ्मल व की ल व सल्लल्लाहु तआला अ ला ख़ैरि ख़ल्क़िही सय्यिदिना व स न दिना व मौलाना मुहम्मदिव्व आलिही व सह्बिही अज्मईन०

१. मुख़्तसर तज़्करा अल-कुर्तबी,

२. सीरत, जीवन-चरित्र,

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا

'ऐ ईमान वालो!' अपने आपको और अपने अह्ल व अयाल (यानी बाल-बच्चों) को आग (यानी दोज़ख़) से बचाओ।

मरने के बाद क्या होगा? (२)

दोज़ख़ के हालात

इसमें क़ुरआनी आयतों और मुस्तनद हदीसों की रोशनी में आसान उर्दू ज़बान (हिंदी) में आख़िरत के क़ैदख़ाने यानी जहन्नम के हालात लिखे गये हैं और आख़िर 'में सोचने-समझने की बातें' के नाम से एक अहम मज़्मून है जिसमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचने की दुआ और तरीक़ा बताया गया है।

लेखक :

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्द शहरी

अनुवादक :

कौसर यज़दानी नदवी एम. ए.

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली–6

फ़ोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272836 (घर) 25702399

विषय-सूची

क्या?	कहां?
१. अपनी बात	५४
२. दोज़ख की गहराई	५५
३. दोज़ख की दीवारें	५५
४. दोज़ख के दरवाज़े	५६
५. दोज़ख की आग और अंधेरी	५६
६. दोज़ख के अज़ाब का अंदाज़ा	५७
७. दोज़ख की सांस	५७
८. दोज़ख का ईंधन	५९
९. दोज़ख के तब्क़े	६९
१०. दोज़ख की एक खास गरदन	६१
११. आग के स्तूनों में बंद कर दिए जाएंगे	६१
१२. दोज़ख पर मुक़र्रर फ़रिश्तों की तायदाद	६२
१३. दोज़ख का ग़ैज़ व ग़ज़ब	६२
१४. दोज़ख की बागें और उसके खींचने वाले फ़रिश्ते	६५
१५. दोज़ख के सांप और बिच्छू	६५
१६. दोज़ख में मौत न आएगी और अज़ाब हल्का न होगा	६६
१७. दोज़ख की आवाज़ 'हल मिम मजीद'	६७
१८. सब्र करने पर भी अज़ाब से रिहाई न होगी	६७
१९. दोज़खियों का खाना-पीना	६८
२०. ज़रीअ यानी आग के कांटे	६८
२१. ग़िस्लीन (घावों का धोवन)	६८
२२. ज़क्क़ूम (सेंढ)	६८
२३. ग़स्साक़	७०
२४. माइन कल मुह्लि (कीट)	७०
२५. माइन सदीद (पीप का पानी)	७१
२६. हमीमुन (खौलता हुआ पानी)	७१
२७. तआमुन ज़ी ग़िस्सतिन (गले में अटकने वाला खाना)	७१
२८. अज़ाब के अलग-अलग तरीक़े	७३
२९. सह्र (गर्म पानी)	७३
३०. मकामिअ (गुर्ज)	७३
३१. खाल पलट दी जाएगी	७४

क्या?	कहां?
३२. अलग-अलग सज़ाएं	७४
३३. इल्म छिपाने वाले की सज़ा	७४
३४. शराब पीने वाले की सज़ा	७५
३५. बे-अमल वाइज़ों की सज़ा	७५
३६. सोने-चांदी के बरतन इस्तेमाल करने वाले की सज़ा	७६
३७. फ़ोटो ग्राफ़र की सज़ा	७६
३८. खुदकुशी करने वाले की सज़ा	७६
३९. घमंडी की सज़ा	७७
४०. दिखावटी आबिदों की सज़ा	७७
४१. सऊद (आग का एक पहाड़)	७७
४२. सिलसिला (बहुत लंबी जंजीर)	७८
४३. तौक़	७८
४४. गंधक के कपड़े	७९
४५. दोज़ख के दारोग़ों के ताने	८०
४६. दोज़खियों के हालात	८१
४७. दोज़ख में जाने वालों की तायदाद	८१
४८. दोज़ख में ज्यादा औरतें होंगी	८२
४९. दोज़खियों की बद-सूरती	८३
५०. दोज़खियों के आंसू	८४
५१. दोज़खियों की ज़ुबान	८४
५२. दोज़खियों के जिस्म	८४
५३. पुले सिरात से गुज़र कर दोज़ख में गिरना,	८५
५४. दाखिले की सूरत	८७
५५. दोज़ख वालों से शैतान का ख़िताब	८९
५६. गुमराह करने वालों पर दोज़खियों का ग़ुस्सा	९०
५७. दोज़खियों की चीख़-पुकार	९२
५८. जन्नतियों का हंसना	९४
५९. सोचने की बात	९५
६०. ख़ात्मा	९८
६१. आख़िरी बात	९९

अपनी बात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ، نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिरहीम० नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम० अम्मा बअ्द—

इस किताब में ना-चीज़ ने जहन्नम के हालात क़ुरआन की आयतों और नबी सल्ल० की हदीसों से लेकर उर्दू (और अब हिंदी) में क़लमबंद[1] किये हैं। लिखने की वजह यह है कि मुसलमानों की ज़ुबान पर यों तो दोज़ख़ का ज़िक्र आता ही रहता है, मगर इससे बचने और महफ़ूज़ रहने के कामों और हरकतों से इस लिए ग़ाफ़िल हैं कि इसके दिल हिला देने वाले अज़ाब और उन मुसीबतों से बे-ख़बर हैं जो दोज़ख़ियों पर गुज़रेंगी।

मुझे यक़ीन है कि जो मुसलमान इन पन्नों को ध्यान से पढ़ेंगे और क़ुरआन की आयतों और नबी की हदीसों को सच्चा जानते हुए दोज़ख़ के हालात का मुराक़बा (अवलोकन) करेंगे, वे आसानी से गुनाहों से बच सकेंगे और फिर उनका नफ़्स नेकियों के करने में ज़्यादा रोक भी न बनेगा। ख़ुदा करे दीन की दूसरी किताबों की तरह यह किताब भी मुसलमानों को दीनदार बनने में मदद दे और उनमें ज़्यादा से ज़्यादा मक़्बूल हो।

इसके साथ अगर आप जन्नत वालों के ऐश व आराम और हश्र के मैदान के वाक़िआत भी मालूम करना चाहें तो हमारी मशहूर किताबें 'मैदान हश्र' और 'ख़ुदा की जन्नत' को ज़रूर पढ़ें।

पढ़ने वालों से दरख़्वास्त है कि अपनी नेक दुआओं में इस ना-चीज़ को भूलेंगे नहीं।

—मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलंद शहरी
अफ़ल्लाहु अन्हु

1. लिख दिए हैं,

दोज़ख़ के हालात

इस किताब को दो हिस्सों में लिखता हूं, एक 'दोज़ख़ के हालात', दूसरे 'दोज़ख़ियों के हालात'। पहले दोज़ख़ के हालात लिखता हूं, फिर दोज़ख़ियों के हालात लिखे जाएंगे। व लिल्लाहिल मुवफ़्फ़िक़ु व हु व यह्दिस्सबील०

दोज़ख़ की गहराई

हज़रत अबूमूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने (दोज़ख़ की गहराई बयान करते हुए) फ़रमाया, अगर एक पत्थर जहन्नम में डाला जाए तो दोज़ख़ की तह में पहुंचने से पहले सत्तर साल तक गिरता चला जाएगा। —तर्ग़ीब

और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का बयान है कि हम रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बरकती ख़िदमत में बैठे हुए थे कि हमने किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनी। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि यह (आवाज़) क्या है ? हमने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आपने फ़रमाया, यह एक पत्थर है, जिसको ख़ुदा ने जहन्नम के मुंह पर (तह में गिरने के लिए) छोड़ा था और वह सत्तर साल तक गिरते-गिरते अब दोज़ख़ की तह में पहुंचा है। यह उसके गिरने की आवाज़ है।
—मुस्लिम

दोज़ख़ की दीवारें

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ को चार दीवारें घेरे हुए हैं, जिनमें हर दीवार की चौड़ाई

चालीस साल चलने की दूरी रखती है। —तिर्मिज़ी

यानी दोज़ख की दीवारें इतनी मोटी हैं कि सिर्फ़ एक दीवार की चौड़ाई तै करने के लिए चालीस साल ख़र्च हों।

दोज़ख़ के दरवाज़े

क़ुरआन शरीफ़ में दोज़ख के दरवाज़ों के बारे में फ़रमाया—

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ

व इन्न जहन्न म ल मौअिदुहुम अज्मईन लहा सब्अतु अब्वाबिन लिकुल्लि बाबिम मिन्हुम जुज़्उम मक़्सूम०

'और उन सबसे जहन्नम का वायदा है, जिसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं।'

—सूरः हिज्र, पारा १४

ख़ुद रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख के सात दरवाज़े हैं, जिनमें से एक उसके लिए है, जो मेरी उम्मत पर तलवार उठाये। —मिश्कात

दोज़ख़ की आग और अंधेरी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख को एक हज़ार वर्ष तक धौंका गया, तो उसकी आग लाल हो गयी, फिर एक हज़ार वर्ष तक धौंका गया तो उसकी आग सफ़ेद हो गयी, फिर एक हज़ार वर्ष तक धौंका गया तो उसकी आग काली हो गयी, चुनांचे दोज़ख अब काली अंधेरे वाली है। —तिर्मिज़ी

एक रिवायत में है कि वह अंधेरी रात की तरह तारीक है और दूसरी रिवायत में है कि उसकी लपट से उसमें रोशनी नहीं होती। —तर्ग़ीब

यानी हमेशा अंधेरा ही रहता है।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारी यह आग (जिसको तुम जलाते हो) दोज़ख की आग का सत्तरवां हिस्सा है। सहाबा रज़ि० ने

अर्ज़ किया (जलाने को तो) यही बहुत है। आपने फ़रमाया, (हां इसके बावजूद) दुनिया की आगों से दोज़ख की आग गर्मी में ६९ दर्जा बढ़ी हुई है और एक रिवायत में है कि दोज़ख़ी अगर दुनिया की आग में जाएं तो उनको नींद आ जाए। —तर्ग़ीब

क्योंकि दोज़ख की आग के मुक़ाबले में दुनिया की आग बहुत ही ज़्यादा ठंडी है। इसलिए उसमें उनको दोज़ख के मुक़ाबले में आराम मालूम होगा।

दोज़ख़ के अज़ाब का अंदाज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दोज़ख़ियों में सबसे हल्का अज़ाब उस शख़्स पर होगा, जिसकी दोनों जूतियां और तस्मे आग के होंगे, जिनकी वजह से हांडी की तरह उसका दिमाग़ खौलता होगा, वह समझेगा कि मुझे ही सबसे ज़्यादा अज़ाब हो रहा है, हालांकि उसको सबसे कम अज़ाब होगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, क़ियामत के दिन एक ऐसे दोज़ख़ी को, जो दुनिया में तमाम इन्सानों से ज़्यादा लज़्ज़त और ऐश में रहता था, पकड़ कर एक बार दोज़ख में ग़ोता दिया जाएगा, फिर उससे पूछा जाएगा, ऐ इब्ने आदम (आदम की औलाद!) क्या तूने कभी नेमत देखी है? क्या कभी तुझे आराम नसीब हुआ है? इस पर वह कहेगा, ख़ुदा की क़सम! ऐ रब नहीं! (मैंने कभी आराम नहीं पाया) फिर फ़रमाया कि क़ियामत के दिन एक ऐसे जन्नती को जो दुनिया में तमाम इन्सानों से ज़्यादा मुसीबत में रहा था, उसे पकड़ कर जन्नत में ग़ोता दिया जायेगा फिर उससे पूछा जाएगा, ऐ इब्ने आदम? कभी तूने मुसीबत देखी है? क्या कभी तुझ पर सख़्ती गुज़री है? वह कहेगा, ख़ुदा की क़सम, ऐ रब! मुझ पर कभी सख़्ती नहीं गुज़री और मैंने कभी मुसीबत नहीं देखी?

दोज़ख़ की सांस

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब बड़ी गर्मी हो तो ज़ुह्र की नमाज़ देर से पढ़ा करो क्योंकि गर्मी की सख़्ती

दोज़ख़ की तेज़ी की वजह से होती है। (फिर फ़रमाया कि) दोज़ख़ ने अपने रब के दरबार में शिकायत की कि (मेरी तेज़ी बहुत बढ़ गयी है, यहां तक कि) मेरे कुछ हिस्से दूसरे हिस्सों को खाये जाते हैं (इस लिए मुझे इजाज़त दी जाए कि किसी तरह अपनी गर्मी हल्की करूं) चुनांचे अल्लाह तआला ने उसको दो बार सांस लेने की इजाज़त दी, एक सांस सर्दी के मौसम में और एक गर्मी के मौसम में, इस लिए गर्मी जो तुम महसूस करते हो, दोज़ख़ की लू का असर है (जो सांस के साथ बाहर आती है) और सख़्त सर्दी जो महसूस करते हो, दोज़ख़ के ठंडे हिस्से का असर है।

—बुख़ारी शरीफ़

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि दोपहर को हर दिन दोज़ख़ दहकाया जाता है।

फ़—दोज़ख़ के सांस लेने से गर्मी बढ़ जाना तो समझ में आता है, लेकिन सर्दी का बढ़ना, देखने में समझ में नहीं आता। सच बात तो यह है कि गर्मी में दोज़ख़ सांस बाहर फेंकती है और इस तरह दुनिया में गर्मी बढ़ जाती है और सर्दी में सांस अन्दर लेती है और इस तरह दुनिया की तमाम गर्मी खींच लेती है, इस वजह से सर्दी बढ़ जाती है।

कुछ उलेमा ने इसकी यह तश्रीह[1] की है कि दोज़ख़ में जलाने ही का अज़ाब नहीं है, बल्कि ठंडक का अज़ाब भी है। उम्मते मुहम्मदी सल्ल० के मशहूर अह्ले कश्फ़ बुज़ुर्ग[2] हज़रत अब्दुलअज़ीज़ दब्बाग़ रह० का बयान है कि जिन्नात को आग का अज़ाब नहीं दिया जाएगा, क्योंकि आग उनकी तबीयत है, बल्कि उनको बेहद ठंडक का अज़ाब दिया जाएगा। जिन्नात दुनिया में भी सर्दी से बेहद डरते हैं और सर्द हवा से जंगली गधों की तरह बद-हवास होकर भागते हैं। फ़रमाते थे कि पानी में न शैतान दाख़िल हो सकता है, न कोई जिन्न जा सकता है। अगर कोई उनको पानी में डालदे, तो बुझकर फ़ना हो जाएंगे। यह भी फ़रमाते थे कि क़ातिलों को शैतान के साथ ठंडक का अज़ाब दिया जाएगा। यहां पहुंच कर ज़रा सबक़ हासिल करने वाली आंख खोलिए कि इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी को इन्सान नहीं बर्दाश्त कर सकता जो दोज़ख़ की सांस से पैदा होती है, फिर भला दोज़ख़ की असली गर्मी और सर्दी कैसे बर्दाश्त करेगा। फ़अ़तबिरू या उलिल अब्सार। कितने अफ़सोस की जगह है कि करोड़ों

---

१. व्याख्या,

२. ऐसे बुज़ुर्ग, जो कश्फ़ व करामात वाले हों, (ग़ैर मामूली तरीक़े से कुछ ऐसी बातें जान लेना जो आम इन्सान न समझ सके, उसे कश्फ़ कहते हैं)

इन्सान ऐसे हैं, जो इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी से बचने का एहतमाम करते हैं, मगर दोज़ख़ से बचने का उनको कुछ ध्यान नहीं।

दोज़ख़ का ईंधन

क़ुरआन हकीम फ़रमाता है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (تحریم)

وَالْحِجَارَةُ (تحریم)

या ऐयुहल्लज़ी न आमनू क़ू अन्फ़ु स कुम व अह्लीकुम नारा वक़ूदुहन नासु वल् हिजारतु०

—सूरः तहरीम

'ऐ ईमान वालो ! अपने आपको और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाओ, जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं।'

फ़—पत्थरों से क्या मुराद है ? इसके मुताल्लिक़ हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है कि पत्थर जो दोज़ख़ का ईंधन हैं, वह किब्रीत (यानी गंधक) के पत्थर हैं, जो ख़ुदा ने क़रीब वाले आसमान में उस दिन पैदा किये थे, जिस दिन आसमान व ज़मीन पैदा फ़रमाये थे। फिर फ़रमाया, ये पत्थर कुफ़्फ़ार (के अज़ाब) के लिए तैयार फ़रमाये हैं।

—हाकिम

इन पत्थरों के अलावा मुश्रिकों की वे-मूर्तियां भी दोज़ख़ में होंगी, जिनकी वह पूजा किया करते थे। चुनांचे सूरः अंबिया में है—

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ط أَنتُمْ لَهَا

وَارِدُونَ ط

इन्नकुम व मा तअ़्बुदून मिन दूनिल्लाहि ह स बु जहन्न म अन्तुम लहा वारिदून०

'ऐ मुश्रिको ! बेशक तुम और तुम्हारे वे माबूद, जिनकी ख़ुदा के सिवा पूजा करते हो, सब दोज़ख़ में झोंके जाओगे और तुम सब उसमें दाख़िल होगे।'

दोज़ख़ के तब्क़े

पहले गुज़र चुका है कि दोज़ख़ के सात दरवाज़े हैं। चुनांचे

फ़रमाया—

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۖ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ط -

लहा सब् अ़तु अब्वाबिन लिकुल्लि बाबिम मिन्हुम जुज़्उम मक़्सूम०

इस आयत की तफ़्सीर में मुअल्लिफ़[1] 'बयानुल क़ुरआन' क़द्दस सिर्रहू लिखते हैं कि कुछ लोगों ने कहा है, सात तब्क़े मुराद हैं, जिनमें तरह-तरह के अज़ाब हैं। जो जिस अज़ाब का हक़दार होगा, उसी तब्क़े में दाख़िल होगा, चूंकि हर तब्क़े का दरवाज़ा अलग-अलग है, इस लिए 'सात दरवाज़ों' के नाम से याद किया। और कुछ लोगों ने कहा है कि सात दरवाज़े ही मुराद हैं और मक़्सद यह बयान करना है कि दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों की ज़्यादती की वजह से एक दरवाज़ा काफ़ी न होगा, इसलिए सात दरवाज़े बनाये गये हैं।

अल्लामा इब्ने कसीर क़द्दस सिर्रहू ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद नक़ल किया है कि आपने सब् अ़तु अब्वाबिन' (सात दरवाज़ों) के मुताल्लिक़ हाथों से इशारा करके फ़रमाया कि दोज़ख़ के दरवाज़े इस तरह हैं यानी ऊपर नीचे हैं। इस इर्शाद से भी यही मालूम होता है कि नीचे-ऊपर जहन्नम के सात तब्क़े हैं और हर तब्क़े का अलग-अलग दरवाज़ा है और क़ुरआन हकीम की आयत—

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ط (نساء)

इन्नल मुनाफ़िक़ी न फ़िद्दर्किल अस्फ़लि मिनन्नारि०   —निसा

'बिला शुब्हा मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सबसे नीचे के तब्क़े में जाएंगे' से भी यही बात मालूम होती है कि जहन्नम के कई तब्क़े हैं। बुज़ुर्गों ने इन तब्क़ों के नाम और इन तब्क़ों वालों की तफ़्सील इस तरह बतायी है कि सबसे नीचे का तब्क़ा, मुनाफ़िक़ों, फ़िरऔन और उसके मददगारों का है, जिसका नाम 'हाविया' है और दूसरा तब्क़ा जो हाविया के ऊपर है, मुश्रिकों के लिए है, जिसका नाम 'जहीम' है। फिर जहीम के ऊपर तीसरा तब्क़ा 'सक़र' जो बे-दीन फ़िर्क़ा 'साइबीन' के लिए है। चौथा तब्क़ा जो सक़र से ऊपर है 'नतय' है, वह इब्लीस और उसके ताबेदारों के लिए है और उसके ऊपर पांचवां तब्क़ा यहूद के लिए है, जिसका नाम 'हुत्मा' है और छठा तब्क़ा 'सईर' है जो ईसाइयों के लिए है और सबसे ऊपर सातवां तब्क़ा जहन्नम है जो गुनाहगार मुसलमानों के लिए है, उसी पर पुल सिरात क़ायम होगी और गो सब तब्क़ों के लिए लफ़्ज़ 'जहन्नम' आता

[1] लिखने वाले, लेखक

है लेकिन असल में इसी तब्क़े का नाम जहन्नम है। यह भी लिखा है कि जहन्नम के तब्क़ों के हर दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक सात सौ वर्ष की दूरी है।

दोज़ख़ की एक ख़ास गरदन

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन दोज़ख़ से एक गरदन निकलेगी, जिसकी दो आंखें होंगी और दो कान होंगे, जिनसे सुनती होगी और एक ज़ुबान होगी, जिससे बोलती होगी, वह कहेगी, मैं तीन शख़्सों पर मुसल्लत की गई हूं—(१) हर सरकश ज़िद्दी पर, (२) हर उस शख़्स पर जिसने अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद ठहराया, (३) तस्वीर बनाने वाले पर।   —तिर्मिज़ी

आग के स्तूनों में बन्द कर दिए जाएंगे

نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ط إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ
فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ط (همزه)

नारुल्लाहिल मू क़ द तुल्लती तत्तलिअ़ु अलल अफ़्इदः इन्नहा अलैहिम मू स द तुन फ़ी अ म दिम मुमद्दः०   —सूरः हुमज़ा

'(हुत्मा) सुलगायी हुई अल्लाह की वह आग है, जो दिलों तक जा पहुंचेगी, वह आग, उन पर लम्बे-लम्बे स्तूनों मैं बन्द कर दी जायेगी।'

दुनिया में किसी को आग लगती है, तो दिल तक पहुंचने से पहले ही उसकी रूह निकल जाती है, लेकिन दोज़ख़ में चूंकि मौत ही न आयेगी, इसलिए सारे बदन के साथ दिलों पर भी आग चढ़ी बैठी होगी और ख़ूब जलायेगी, आग बन्द कर दी जाएगी यानी दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में भर कर आगे से दरवाज़े बन्द कर दिए जाएंगे, क्योंकि उसमें उनको हमेशा रहना होगा। निकलना तो नसीब ही न होगा। लम्बे-लम्बे स्तूनों का मतलब यह है कि आग के इतने-इतने बड़े शोले होंगे, जैसे स्तून होते हैं और दोज़ख़ी उसमें बन्द होंगे।   —बयानुल क़ुरआन

दोज़ख़ पर मुकर्रर फरिश्तों की तायदाद

अलैहा तिस् अ त अ श र०

'दोजख पर उन्नीस फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे ।' —मुद्दस्सिर

फ़—इन उन्नीस में से एक मालिक है और बाक़ी खाज़िन (खज़ान-ची) हैं और गो दोज़खियों को सज़ा देने के लिए उनमें का एक फ़रिश्ता भी काफ़ी है, मगर तरह-तरह के अज़ाब देने और अज़ाब के इन्तिज़ाम के लिए १९ फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जिनके मुताल्लिक़ सूरः तह्रीम में है—

عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ط

अलैहा मलाइकतुन ग़िलाजुन शिदादुल ला यअ्सूनल्ला ह मा अ म र हुम व यफ़ अ़लू न या यु अ् म रू न०

'उस पर सख़्त और मज़बूत फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह की (ज़रा), नाफ़रमानी उसके हुक्म में नहीं करते और जो हुक्म होता है, वही करते हैं।'

'बयानुल क़ुरआन' में दुर्रे मंसूर' से नक़ल किया है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख पर मुक़र्रर फ़रिश्तों में से हर एक की तमाम जिन्नों व इन्सानों के बराबर ताक़त है।

दोज़ख का ग़ैज़ व ग़ज़ब, चीख़ना चिल्लाना और दोज़ख़ियों को आवाज़ देकर बुलाना और दोज़ख़ियों का तंग जगहों में डाला जाना।

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ، اِذَآ
اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ
الْغَيْظِ ط (سورہ ملک پ۲۹)

व लिल्लज़ी न क फ़ रू बिरब्बिहिम अज़ाबु जहन्नम म व बिअ्सल मसी० इज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिअू ल हा शहीक़ंव्व हि य तफ़ूरु तकादु तमय्यज़ु मिनल ग़ैज़ि० —सूरः मुल्क, पारा २९

'और जो लोग अपने रब का इन्कार करते हैं, उनके लिए दोज़ख

का अज़ाब है और वह बुरी जगह है। जब ये लोग उसमें डाले जाएंगे, तो उसकी एक बड़ी ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह इस तरह जोश मारता होगा जैसे अभी ग़ुस्से की वजह से फट पड़ेगा।'

हज़रत हकीमुल उम्मत क़द्दस सिर्रहू 'बयानुल क़ुरआन' में लिखते हैं कि या तो अल्लाह तआला उसमें समझ और ग़ुस्सा[1] पैदा कर देगा। हक़ का ग़ज़ब जिन पर हुआ है, उन पर उसको भी ग़ुस्सा आयेगा और या मिसाल देकर समझाना मक़सूद है कि ऐसा मालूम होगा जैसे दोज़ख को ग़ुस्सा आ रहा है—

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا
وَّزَفِيْرًا ط وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا
مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ط (فرقان)

इज़ा रअतहुम मिम मकानिम बईद समिअू लहा तग़य्युज़ंव्व ज़फ़ीरा व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मकानन ज़य्यिक़म मुक़र्रनी न दओ हुनालि कसुबूरा० —फ़ुर्क़ान

'जब वह (दोज़ख) उनको दूर से देखेगा तो (वह देखते ही इतना ग़ज़बनाक होकर जोश मारेगा कि) वे लोग (दूर ही से) उसका जोश व खरोश सुनेंगे और जब वह उसकी किसी तंग जगह में हाथ-पांव पकड़ कर डाल दिए जाएंगे तो वहां मौत ही मौत पुकारेंगे।'

फ़—अभी जहन्नम दोज़खियों से सौ साल के फ़ासले पर होगा कि उसकी नज़रें उन पर पड़ेंगी और उनकी नज़रें उस पर पड़ेंगी। वह देखते ही पेच व ताब खायेगा और जोश व खरोश से आवाज़ें निकालेगा, जिनको वे सुन लेंगे और जब उसमें धकेल दिये जाएंगे तो मौत को पुकारेंगे यानी जैसे दुनिया में किसी मुसीबत के वक़्त कहते हैं, हाय मर गये।

इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने 'इज़ा रअतहुम' को पढ़कर दोज़ख की दो आंखें साबित फ़रमायीं। —इब्ने कसीर

अगरचे दोज़ख बहुत बड़ी जगह है, लेकिन अज़ाब के लिए दोज़ख़ियों को तंग-तंग जगहों में रखा जाएगा। कुछ रिवायतों में ख़ुद

---

१. दूसरी बहुत सी रिवायतों से भी मालूम होता है कि दोज़ख और जन्नत को अल्लाह पाक समझ दे देंगे। (अल्लाह ही बेहतर जानता है)

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसकी तफ़्सीर नक़ल की गयी है कि जिस तरह दीवार में कील गाड़ी जाती है, उसी तरह दोज़खियों को दोज़ख में ठूंसा जाएगा। —इब्ने कसीर

تَدْعُوا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۙ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى

(معارج)

तद्अू मन अद्‌ब र व तवल्ला व ज म अ फ़ औआ○ —मआरिज

'दोज़ख उस शख़्स को (ख़ुद) बुलायेगा, जिसने (दुनिया में हक़ से) पीठ फेरी होगी (इताअत) से बे रुखी की होगी और (माल) जमा किया होगा, फिर उठा-उठा रखा होगा।'

इब्ने कसीर में है कि जिस तरह जानवर दाना खोज करके चुगता है उसी तरह दोज़ख हश्र के मैदान से बुरे लोगों को एक-एक करके देख-भाल के चुन लेगा। इस आयत में माल जमा करने वालों का ज़िक्र है। हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु इसकी तफ़्सीर में फ़रमाते थे कि जिसने जमा करने में हलाल व हराम का ख्याल न रखा और ख़ुदा के फ़रमान के बावजूद ख़र्च न करता था, वह शख़्स मुराद है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हकीम इस आयत के डर की वजह से कभी थैली का मुंह ही बंद न करते थे। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि ऐ इब्ने आदम! तू ख़ुदा का डरावा सुनता है और फिर माल समेटता है। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'क़ियामत के दिन इंसान को बकरी के बच्चे की तरह (यानी ज़िल्लत की हालत में) लाकर ख़ुदा के सामने खड़ा कर दिया जाएगा, अल्लाह जल्लशानुहु उससे फ़रमायेंगे, क्या मैंने तुझको माल नहीं दिया, मवेशी और ग़ुलाम व ख़ादिम नहीं दिए, तुझ पर इनामात नहीं किए? बता तूने (उसके शुक्रिए में) क्या किया? इस पर वह जवाब देगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने जमा किया और ख़ूब बढ़ाया और जितना था उससे कहीं ज़्यादा छोड़ा, इसलिए मुझे इजाज़त दीजिए कि इस सबको ले आऊं—ग़रज़ यह कि वह बंदा ऐसा होगा कि उसने कुछ ख़ैर आगे न भेजी होगी, इसलिए उसको दोज़ख में पहुंचा दिया जाएगा। —तिर्मिज़ी

और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया उसका घर है, जिसका कोई घर नहीं है और उसका माल है जिसका कोई माल नहीं और दुनिया के लिए वह जमा करता है जिसके पास कुछ भी अक़्ल न हो।

—मिश्कात शरीफ़

बैहक़ी ने शोबुल ईमान में मर्फ़ूअ'[1] हदीस नक़ल की है जब मरने वाला मर जाता है, तो फ़रिश्ते कहते हैं कि उसने आख़िरत में क्या भेजा है और इंसान कहते हैं कि उसने दुनिया में क्या छोड़ा है?

दोज़ख़ की बागें और उसके खींचने वाले फ़रिश्ते

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस दिन दोज़ख को लाया जाएगा, जिसकी सत्तर हजार बागें होंगी और हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे जो उसको खींच रहे होंगे।

—मुस्लिम शरीफ़

हाफ़िज़ अब्दुल अज़ीज मुन्ज़री रह० ने 'अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब' में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इर्शाद नक़ल फ़रमाया है कि मान लीजिए अगर इस वक़्त फ़रिश्ते दोज़ख की बागें छोड़ दें तो हर नेक व बद को अपने घेरे में ले लें।

दोज़ख़ के सांप और बिच्छू

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक दोज़ख में बड़ी लम्बी गरदनों वाले ऊंटों के बराबर सांप हैं (जिनके ज़हरीले माद्दे की हक़ीक़त यह है कि) एक बार जब उनमें से एक सांप डसेगा तो दोज़खी चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। (फिर फ़रमाया) और बेशक दोज़ख में पालान से लदे हुए खच्चरों की तरह बिच्छू हैं (जिनके ज़हरीले माद्दे की हक़ीक़त यह है कि) एक बार जब उनमें से एक बिच्छू डसेगा तो दोज़खी चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। —अहमद

क़ुरआन शरीफ़ में है—

زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ الآيه जिद्नाहुम अज़ाबन फ़ौक़ल अज़ाबि

---

१. ऐसी हदीस जिसके सब रावी मोतबर हों और कहीं कोई रावी छूटता न हो।

'यानी हम उनके लिए अज़ाब बढ़ा देंगे, उस शरारत के बदले जो वे करते थे।'

हज़रत इब्ने मस्अद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि आग के आम अज़ाब के अलावा उनके लिए यह अज़ाब बढ़ा दिया जाएगा कि इन पर बिच्छू मुसल्लत किए जाएंगे, जिनके कीले (बड़ दांत) लम्बी-लम्बी खजूरों के बराबर होंगे। —तर्गीब

दोज़ख़ में मौत न आयेगी और अज़ाब हल्का न होगा

क़ुरआन हकीम में इर्शाद है—

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝ (زخرف)

ला युफ़त्तरु अन्हुम व हुम फ़ीहि मुब्लिसून० —ज़ुख़्रुफ़

उनका अज़ाब हल्का न किया जाएगा और वे उसी में मायूस पड़े रहेंगे।'

दूसरी जगह इर्शाद है—

لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۝

(فاطر)

ला युक्ज़ा अलैहिम फ़ यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुम मिन अज़ा-बिहा० —फ़ातिर

'न तो उनकी क़ज़ा (मौत) आयेगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जायेगा।'

यानी दोज़ख़ में यह भी नहीं हो सकता कि अज़ाब में पड़े-पड़े मौत ही आ जाए और अज़ाब से बच जाएं, बल्कि वहां बे इंतिहा तक्लीफ़ होने पर भी ज़िंदा रहेंगे। हदीस में है कि जब जन्नती जन्नत में पहुंच जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में जा चुकेंगे (और दोज़ख़ से कोई जन्नत में जाने वाला बाक़ी न रहेगा,) तो दोज़ख़ और जन्नत के दर्मियान (मेंढे की सूरत में) मौत लायी जाएगी। इसके बाद एक पुकारने वाला पुकारेगा कि ऐ जन्नत वालो! अब मौत न आयेगी। और ऐ दोज़ख़ वालो! अब मौत न आयेगी। इस एलान के सुनने से जन्नत वालों की ख़ुशी में बढ़ौती होगी और दोज़ख़ वालों का रंज अर बढ़ जाएगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

दोज़ख़ की आवाज़ 'हल मिम मज़ीद'

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝ (قٓ)

यौम नक़ूलु लिजहन्न म हलिम तलअ्ति व तक़ूलु हल मिम् मज़ीद० —क़ाफ़

'जिस दिन हम कहें दोज़ख़ से, क्या तू भर चुकी? वह कहेगी कि क्या कुछ और भी है?' (तर्जुमा शेख़ुल हिंद रह०)

हदीस शरीफ़ में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जहन्नम में दोज़ख़ी डाले जाते रहेंगे और दोज़ख़ 'हलमिम मज़ीद' (क्या और भी है?) कहता जाएगा और सब दोज़ख़ी दाख़िल हो जाएंगे, जब भी न भरेगा, यहां तक कि अल्लाह उस पर अपना क़दम शरीफ़ रख देंगे, जिसकी वजह से दोज़ख़ सिमट जाएगा और यों अर्ज़ करेगा—क़त क़त बिअिज़्ज़तिक व क र मिक (बस, बस आप की इज़्ज़त और करम का वास्ता देता हूं।) —मिश्कात

सब्र करने पर भी अज़ाब से रिहाई न होगी

दुनिया में तरीक़ा है कि सब्र करने से मुसीबत के बाद राहत नसीब हो जाती है मगर दोज़ख़ के अज़ाब के बारे में इर्शाद है—

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ
اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ (طور)

इस्लौहा फ़स्बिरू अव ला तस्बिरू सवाउन अलैकुम इन्नमा तुज्ज़ौ न मा कुन्तुम तअ्मलून, —तूर

'दोज़ख़ियों से कहा जाएगा, इसमें दाख़िल हो जाओ, फिर सब्र करो या न करो, तुम्हारे हक़ में दोनों बराबर हैं, जैसा कि तुम करते थे, वैसा ही तुम्हें बदला दिया जाएगा।'

दोज़ख़ियों का खाना-पीना

ज़रीअ यानी आग के कांटे--

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۚ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۙ
لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۚ

तुस्क़ा मिन अैनिन आनियतिन लै स लहुम तआमुन इल्ला मिन ज़रीअिल्ला युस्मिन व ला युग़्नी मिन जूअ॰

'दोज़ख़ियों को खौलते हुए चश्मे का पानी मिलेगा और सिवाए झाड़-कांटों वाले खाने के इन के लिए कुछ खाना न होगा, जो न ताक़त देगा, न भूख दूर करेगा।'

साहिबे 'मिर्क़ात' लिखते हैं कि 'ज़रीअ' हिजाज़ में एक कांटेदार पेड़ का नाम है, जिसकी ख़बासत (बे-मज़ा बदबूदार होने) की वजह से जानकर भी पास नहीं फटकते। अगर जानवर खा ले तो मर जाए। फिर लिखते हैं, यहां 'ज़रीअ' से आग के कांटे मुराद हैं जो एलवे से कड़ुवे, मुर्दा से ज़्यादा बदबूदार और आग से ज़्यादा गर्म होंगे और जिनको बहुत ज़्यादा खाने के बाद भी भूख दूर न होगी।

ग़िस्लीन (घावों का धोवन)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۙ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا
مِنْ غِسْلِيْنٍ ۙ لَّا يَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ ۝ (حاقہ)

फ़लै स लहुमु ल्यौ म हाहुना हमीमुंव्व ला तआमुन इल्ला मिन ग़िस्लीन ला यअ्कुलुहू इल्ललख़ातिऊन॰

—हाक़्क़ा

'आज उसका कोई दोस्त नहीं और न कुछ खाने को ही है सिवाए घावों के धोवन के जिसे सिर्फ़ गुनाहगार खाते हैं।'

ज़क़्क़ूम (सेंढ)--

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ۛ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ
فِى الْبُطُوْنِ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ۚ

इन्न श जर तज़्ज़क़्क़ूमि तआमुल असीम कल्मुह्लि यग़्ली फ़िल बुतूनि [illegible] हमीम॰

—दुख़ान

'बेशक गुनाहगार का खाना पिघले हुए तांबे जैसा ज़क़्क़ूम का पेड़ है जो पेटों में गरम पानी की तरह खौलेगा।'

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ
فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۚ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۚ فَشٰرِبُوْنَ
شُرْبَ الْهِيْمِ ۚ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۚ (واقعہ)

सुम्म इन्नकुम अय्युहज़्ज़ाल्लून मुकज़्ज़िबून ल आकिलून मिन श ज रतिम मिन ज़क़्क़ूम फ़ मालिऊ न मिनहल बुतून फ़ शारिबू न अलैहि मिनल हमीमि फ़ शारिबून शुर्बलहीमि हाज़ा नुज़ुलुहुम यौमद्दीनि॰

—सूरः वाक़िअः

'फिर ऐ झुठलाने वाले-गुमराह लोगो! तुम ज़क़्क़ूम के पेड़ खाओगे और उससे अपने पेट भर लोगे, फिर ऊपर से खौलता हुआ पानी पियोगे जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं, क़ियामत के दिन इस तरह उनकी मेहमानी होगी।'

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْۤ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۙ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ
رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ۚ (صافات)

इन्नहा श जर तुन तख़रुजु फ़ी अस्लिल जहीमि तल्अुहा क अन्नहू रऊसुश्शयातीनि॰

—साफ़्फ़ात

'असल में वह (ज़क़्क़ूम) एक पेड़ है जो दोज़ख़ में जड़ में से निकलता है। इसके फल ऐसे हैं जैसे सांपों के फन।'

फ़—ज़क़्क़ूम का तर्जुमा सेंढ किया जाता है जो मशहूर कड़ुवा पेड़ है। लेकिन यह सिर्फ़ समझाने के-लिए है, क्योंकि वहां की हर चीज़ कड़ुवाहट और बदबू वग़ैरह में यहां की चीज़ों से कहीं ज़्यादा बुरी है और क्या ही बुरा मंज़र होगा जबकि उस पेड़ से खायेंगे और फिर ऊपर से खौलता हुआ पानी पियेंगे और वह भी थोड़ा बहुत नहीं, बल्कि प्यासे ऊंटों की तरह ख़ूब ही पियेंगे।

اَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى مِنَ الزَّقُّوْمِ وَالْحَمِيْمِ وَسَائِرِ اَنْوَاعِ عَذَابِ الْجَحِيْمِ.

अआ ज़ नल्लाहु तआला मिनज़्ज़क़्क़ूमि वल हमीमि व साइरि अन्वाअि अज़ाबिल जहीमि॰

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अगर

ज़क्क़ूम का एक क़तरा (बूंद) भी दुनिया में टपका दिया जाए तो वह यक़ीनी तौर पर तमाम दुनिया वालों के खाने बिगाड़ डाले (यानी सब कड़ुवे हो जाएं) अब बताओ कि उसका क्या हाल होगा जिस का खाना ही ज़क्क़ूम होगा। —तिर्मिज़ी व इब्ने हब्बान वग़ैरह

हाकिम की रिवायत में है कि ख़ुदा की क़सम ! अगर ज़क्क़ूम का एक क़तरा दुनिया के दरियाओं में डाल दिया जाए तो वह यक़ीनन तमाम दुनिया वालों की ग़िज़ाएं कड़ुवी कर दे, तो बताओ उसका क्या हाल होगा जिसका खाना ही ज़क्क़ूम होगा। —तर्ग़ीब

ग़स्साक़

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۝ (سورہ نبا)

ला यज़ूक़ू न फ़ीहा बर्दव्व ला शराबन इल्ला हमीमंव्व ग़स्साक़ा०
—सूरः नबा

'वह उस दोज़ख़ में खौलते हुए पानी और ग़स्साक़ के अलावा किसी ठंडक और पीने की चीज़ का मज़ा तक न चख सकेंगे।'

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर ग़स्साक़ का एक डोल दुनिया में डाल दिया जाए, तो तमाम दुनिया वाले सड़ जाएं। —तिर्मिज़ी व हाकिम

ग़स्साक़ क्या चीज़ है ? इसके बारे में उम्मत के बुज़ुर्गों के अलग-अलग क़ौल हैं। साहिबे मिर्क़ात ने चार क़ौल नक़ल किए हैं—

१. दोज़ख़ियों के पीप और उन का धोवन है।

२. दोज़ख़ियों के आंसू मुराद हैं,

३. दोज़ख़ का ठंडक वाला अज़ाब मुराद है।

४. ग़स्साक़ सड़ी हुई और ठंडी पीप है जो ठंडक की वजह से पी न जा सकेगी (मगर भूख की वजह से मजबूरन पीनी पड़ेगी) बहरहाल ग़स्साक़ बड़ी बुरी चीज़ है।

अल्लाहुम्मा अजिरना मिन्हु०

माइन कल् मुहलि (कीट)

وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ۝

بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ (سورہ کہف)

व इंय्यस्तग़ीसू युग़ासू बिमाइन कल् मुह्लि यश्विल वुजूह बिअसश्शराबि व साअत मुर्तफ़क़ा० —सूर कहफ़

'और अगर प्यास से तड़प कर फ़रियाद करेंगे तो उनको ऐसा पानी दिया जाएगा जो तेल की तलछट (कीट,) की तरह होगा, जो चेहरों को भून डालेगा, क्या ही बुरा पानी होगा और दोज़ख़ क्या ही बुरी जगह है ?'

माइन सदीद (पीप का पानी)

وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۝ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۝ (ابراہیم)

व युस्क़ा मिम माइन सदीद० य त जर्रअुहू व ला यकादु युसीग़ुहू व यातीहिल मौतु मिन कुल्लि मकानिन व माहु व बिमय्यतिन०
—इब्राहीम

'इस (दोज़ख़ी) को पीप का वह पानी पिलाया जायेगा, जिसको वह घूंट-घूंट कर के पियेगा और उसको गले से मुश्किल से उतार सकेगा और उसको हर तरफ़ से मौत (आती हुई) नज़र आयेगी, मगर वह मरेगा नहीं।'

यानी हर तरफ़ से तरह-तरह के अज़ाब देखकर समझेगा कि अब मैं मरा, अब मरा, मगर वहां मौत न होगी कि मरकर ही पाप कट जाए और अज़ाब से रिहाई हो सके।

हमीमुन (खौलता हुआ पानी)

وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ۝ (سورہ محمد)

व सुक़ू माअन हमीमन फ़ क़ त्त अ अम् आअहुम० —मुहम्मद

'और दोज़ख़ियों को खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा जो उनकी आंतों के टुकड़े कर डालेगा।

तआमुन ज़ी गुस्सतिन (गले में अटकने वाला खाना)

اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا وَّطَعَامًا
ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا۔ (سورہ مزمل)

इन्न लदैना अन्कालंव्व जहीमन व तआमन ज़ा गुस्सतिव्व अज़ाबन अलीमा०

—सूरः मुज़्ज़म्मिल

'बेशक (इन काफ़िरों के लिए) हमारे पास बेड़ियां और आग का ढेर और गले में अटक जाने वाला खाना और दर्दनाक अज़ाब है।'

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते थे कि 'तआमुन ज़ी ग़ुस्सतिन' एक कांटा होगा जो गले में अटक जाएगा, न बाहर निकलेगा, न नीचे उतरेगा।

—तर्ग़ीब

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत फ़रमाते हैं कि आपने फ़रमाया, दोज़ख़ियों को (इतनी ज़बरदस्त) भूख लगा दी जाएगी जो अकेली ही उस अज़ाब के बराबर होगी जो उनके भूख के अलावा हो रहा होगा, इसलिए वे खाने के लिए फ़र्याद करेंगे, इस पर उनको ज़ीराअ का खाना दिया जायेगा, जो न मोटा करे, न भूख दूर करे, फिर दोबारा खाना तलब करेंगे तो उनको 'तआमुन ज़ी ग़ुस्सतिन' (गले में अटकने वाला खाना) दिया जाएगा जो गलों में अटक जाएगा, उसके उतारने के लिए उपाय सोचेंगे, तो याद करेंगे कि दुनिया में पीने की चीज़ों से गले की अटकी हुई चीज़ें उतारा करते थे इसलिए पीने की चीज़ को मांगेंगे, चुनांचे खौलता हुआ पानी लोहे की संडासियों के ज़रिए उनके सामने कर दिया जायेगा, वे संडासियां जब उनके चेहरों के क़रीब होंगी, तो उनके चेहरों को भून डालेंगी, फिर जब पानी पेटों में पहुंचेगा, तो पेट के अन्दर की चीज़ों (यानी आंतों वग़ैरह) के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। —मिश्कात

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने 'युस्क़ा मिम माइन सदीदिय्य त जर्र अ़ु हू' पढ़कर फ़रमाया, 'माइन सदीद' (पीप का पानी) जब दोज़ख़ी के मुंह के क़रीब किया जाएगा तो वह उससे नफ़रत करेगा, फिर और क़रीब किया जायेगा तो चेहरे को भून डालेगा और उसके सर की खाल गिर पड़ेगी। फिर जब उसे पियेगा, तो अंतड़ियां काट डालेगा और आख़िर में पाख़ाना की जगह से बाहर निकल जायेगा। इसके बाद रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यह आयतें पढ़ीं।

अज़ाब के अलग-अलग तरीक़े

दोज़ख़ की आग और उसकी कड़ी गर्मी, सांप, बिच्छू, खाने-पीने की चीज़ें, अंधेरा यह सब कुछ अज़ाब ही अज़ाब होगा, मगर यह जो कुछ अब तक ज़िक्र किया गया, दोज़ख़ के अज़ाब का थोड़ा-सा हिस्सा है, क़ुरआन व हदीस से मालूम होता है कि इन तरीक़ों के अलावा और भी बहुत से तरीक़ों से अज़ाब दिया जाएगा, जिनमें से कुछ नीचे लिखे जाते हैं।

सह (गर्म पानी)

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ٥ يُصْهَرُ
بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ٥ (حج)

युसब्बु मिन फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल हमीम युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम वल् जुलूद०

—सूरः हज

'उनके सरों पर जलता जलता पानी डाला जाएगा, जिसकी तेज़ी से उनके पेट में से और खाल में से सब कुछ गलकर बाहर निकल आयेगा।'

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, बेशक खौलता हुआ पानी ज़रूर दोज़ख़ियों के सरों पर डाला जाएगा जो उनके पेटों में पहुंच कर उन तमाम चीज़ों को काट देगा जो उनके पेटों के अन्दर हैं और आख़िर में क़दमों से निकल जाएगा। इसके बाद फिर दोज़ख़ी को वैसा ही कर दिया जाएगा जैसा था। फिर इर्शाद फ़रमाया कि आयत में जो लफ़्ज़ 'युस्हरु' है, उसका यही मतलब है।

—तिर्मिज़ी, बैहक़ी

मक़ामिअ़ु (गुर्ज़)

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ط كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا
مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ط
(سورہ حج)

व लहुम मक़ामिअ़ु मिन हदीद कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा

मिन ग़म्मिन उग्रीदू फ़ीहा व ज़ूक़ू अज़ाबल हरीक़० —सूरः हज

'और दोज़ख़ियों (के मारने के लिए) लोहे के गुर्ज़ हैं। वे लोग जब भी दोज़ख की घुटन से निकलना चाहेंगे, फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि जलने का अज़ाब चखते रहो।'

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि, (दोज़ख का) लोहे का एक गुर्ज़ ज़मीन पर रख दिया जाए, तो अगर उसको तमाम जिन्न और इंसान मिलकर उठाना चाहें तो नहीं उठा सकते। —अहमद, अबूयाला

और एक रिवायत में है कि जहन्नम के लोहे का गुर्ज़ अगर पहाड़ पर मार दिया जाए तो वह यक़ीनी तौर पर रेज़ा-रेज़ा[1] होकर राख हो जाएगा। —तर्ग़ीब

खाल पलट दी जायेगी

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا
غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ط (سورہ نساء)

कुल्लमा नज़िजत जुलूदुहुम बद्दलनाहुम जुलूदन ग़ैरहा लियज़ूक़ुल अज़ा ब० —सूरः निसा

'जब एक बार उनकी खाल जल चुकेगी तो हम उसकी जगह दूसरी नयी खाल पैदा कर देंगे ताकि अज़ाब चखते ही रहें।'

हज़रत हसन बसरी रज़ि० से नक़्ल किया गया है कि दोज़ख़ियों को हर दिन सत्तर हज़ार बार आग जलायेगी। हर बार जब आग जलायेगी तो कहा जायेगा, जैसे थे, वैसे ही हो जाओ। चुनांचे वे हर बार वैसे ही हो जाएंगे। —तर्ग़ीब व तर्हीब

अलग-अलग सज़ाएं

इल्म छिपाने वाले की सज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिससे कोई इल्म की बात पूछी गयी और उसने जानते हुए (न बतायी बल्कि) उसको छिपा लिया तो उसके मुंह में आग की लगाम लगायी जाएगी। —मिश्कात शरीफ़

---

१. कण-कण

शराब या नशा वाली चीज़ पीने वाले की सज़ा

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे रब ने क़सम खायी है कि मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम है, मेरे बन्दों में से जो भी बन्दा शराब का कोई घूंट पियेगा तो इसको इतनी ही पीप मिलाऊंगा और जो बन्दा मेरे डर से शराब छोड़ेगा, उसको पाक-साफ़ हौज़ों से पिलाऊंगा। —अहमद

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ख़ुदा ने अपने ज़िम्मे यह अह्द कर लिया है कि जो कोई नशेदार चीज़ पिएगा, क़ियामत के दिन ज़रूर उसको 'तीनतुल ख़बाल' में से पियालेगा। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया 'तीनतुल ख़बाल' क्या है ? इर्शाद फ़रमाया, दोज़ख़ियों का पसीना या फ़रमाया, दोज़ख़ियों के जिस्मों का निचोड़। —मिश्कात

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसकी आदत शराब पीने की थी, और वह इसी हाल में मर गया तो अल्लाह तआला उसको 'नहरुल ग़ोता' से पिलाएंगे। अर्ज़ किया गया 'नहरुल ग़ोता' क्या है ? इर्शाद फ़रमाया, एक नहर है जो ज़िना कराने वाली औरतों की शर्मगाहों से जारी होगी। —अहमद व इब्ने हब्बान

बे-अमल वाइज़ों की सज़ा

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जिस रात मुझको मेराज करायी गयी, मैंने ऐसे लोग देखे, जिनके होंठ आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे। मैंने पूछा, ऐ जिब्रील ! ये कौन लोग हैं ? उन्होंने कहा, ये आपकी उम्मत की वे वाइज़[1] हैं, जो लोगों को भलाई का हुक्म करते हैं और अपने आप को भूल जाते हैं और अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, लेकिन अमल नहीं करते। —मिश्कात शरीफ़

बुख़ारी और मुस्लिम में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जायेगा, फिर उसको दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा, उसकी अंतड़ियां आग में जल्दी से निकल पड़ेंगी, फिर वह उसमें इस तरह घूमेगा जिस तरह गधा चक्की

---

१. वाज़ व नसीहत करने वाले,

को लेकर घूमता है। उसका हाल देखकर दोज़खी उसके पास जमा हो जाएंगे और उससे कहेंगे कि ऐ फ़्लां ! तुझे क्या हुआ है ? क्या तू हमको भलाई का हुक्म न करता था और बुराई से न रोकता था, वह कहेगा, हां, तुम को भलाई का हुक्म करता था मगर खुद न करता था और तुम को बुराई से रोकता था, मगर उसको खुद करता था।

सोने-चांदी के बर्तन इस्तेमाल करने वालों की सज़ा

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने सोने या चांदी के बर्तन में या किसी ऐसे बर्तन में कुछ खाया-पिया, जिसमें सोने या चांदी का हिस्सा हो, वह अपने पेट में दोज़ख की आग भरता है।

—दारे कुत्नी

फ़ोटो ग्राफ़र की सज़ा

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह के नज़दीक सबसे ज्यादा सख्त अज़ाब तस्वीर बनाने वालों को होगा।

—बुखारी व मुस्लिम

और इर्शाद फ़रमाया है कि तस्वीर बनाने वाला दोज़ख में होगा, उस की बनायी हुई हर तस्वीर के बदले एक जान बना दी जाएगी जो उसको दोज़ख में अज़ाब देगी।

—बुखारी व मुस्लिम

इस रिवायत के बाद हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, अगर तुझे बनानी ही हो तो पेड़ और बे-जान चीज़ की तस्वीर बना ले।

—मिश्कात शरीफ़

खुद कुशी करने वाले की सज़ा

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने पहाड़ से गिरकर खुद कुशी कर ली तो वह दोज़ख की आग में होगा, उसमें हमेशा-हमेशा[1] (चढ़ता और गिरता) रहेगा। और जिसने ज़हर पीकर खुद कुशी कर ली तो उसका ज़हर उसके हाथ में होगा, जिसके दोज़ख की आग में हमेशा-हमेशा पीता रहेगा और जिसने किसी लोहे की चीज़ से

---

१. आत्म हत्या, २. यह काफ़िर के मुताल्लिक़ है। मुसलमान खुदकुशी करने वाला खुदकुशी की सज़ा पूरी कर लेने के बाद दूसरे गुनाहगार मुसलमानों की तरह जन्नत में दाखिल हो जाएगा।

खुद कुशी कर ली तो उसकी वह लोहे की चीज़ उसके हाथ में होगी जिस को हमेशा-हमेशा दोज़ख की आग में अपने पेट में घोंपता रहेगा।

—बुखारी

घमंडी की सज़ा

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, घमंड करने वाले चूंटियों के बराबर जिस्मों में उठाये जाएंगे, जिनकी शक्लें इंसानों की होंगी। फिर फ़रमाया, हर तरफ़ से उनको ज़िल्लत घेर लेगी। (फिर फ़रमाया) वे दोज़ख के जेलखाने की तरफ़ इसी तरह हंकाये जाएंगे। इस जेलखाने का नाम बोल्स है। उन पर आगों को जलाने वाली आग चढ़ी होगी और उनको 'तीनतुल ख्याल' यानी दोज़खियों के जिस्मों का निचोड़ मिलाया जाएगा।

—मिश्कात शरीफ़

तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि बेशक जहन्नम में एक वादी है जिसको 'हब-हब' कहा जाता है, उसमें हर जब्बार (सरकश) रहेगा।

दिखावटी आबिदों की सज़ा

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जुब्बुल हुज़्न (ग़म के कुएं) से पनाह मांगो। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि जुब्बुल हुज़्न क्या है ? इर्शाद फ़रमाया दोज़ख में एक गढ़ा है, जिससे हर दिन खुद दोज़ख चार सौ बार पनाह चाहता है। अर्ज़ किया गया, इसमें कौन जाएगा ? फ़रमाया, अपने आमाल का दिखलावा करने वाले आबिद (इबादत करने वाले) जाएंगे।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

इब्ने माजा की रिवायत में यह भी है कि इसके बाद आपने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह के नज़दीक सबसे बद-तरीन इबादत गुज़ारों में वे भी हैं जो (ज़ालिम) अमीरों (सरदारों) के पास जाते हैं यानी उनकी खुशामद और चापलूसी के लिए।

—मिश्कात शरीफ़

सऊद (आग का एक पहाड़)

क़ुरआन शरीफ़ में है—

स उर्हिक़ुहू सऊदन

'बहुत जल्द मैं उसको सऊद पर चढ़ाऊंगा (जो दोज़ख में आग का पहाड़ है)'

—मुद्दस्सिर

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

कि 'सऊद' आग का एक पहाड़ है, जिस पर दोज़खी को सत्तर साल तक चढ़ाया जाएगा, फिर सत्तर साल तक ऊपर से गिराया जाएगा यानी ७० साल तक तो वह पऊर चढ़ा था, अब सत्तर साल तक गिरते-गिरते नीचे पहुंचेगा और हमेशा उसके साथ ऐसा ही होता रहेगा। —तिर्मिज़ी

सिलसिला (बहुत लंबी ज़ंजीर)

क़ुरआन शरीफ़ में है—

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝ ثُمَّ
فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ط (سورہ الحاقہ)

ख़ुज़ूहु फ़ ग़ुल्लूहु सुम्मल जही म सल्लूहु सुम्म फ़ी सिलसिल तिन ज़अ्'हा सब्'ऊ न ज़िराअन फ़स्लुकूहु० —सूरः हाक़्क़ा

'(फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) उसको पकड़ो फिर उसको तौक़ पहना दो, फिर दोज़ख़ में दाखिल कर दो, फिर ऐसी ज़ंजीर में जकड़ दो जिसकी नाप सत्तर गज़ है।'

हज़रत हकीमुल उम्मत क़द्स सिर्रहू बयानुल क़ुरआन में लिखते हैं कि उस गज़ की मिक़्दार ख़ुदा को मालूम है, क्योंकि यह गज़ वहां का होगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर रांग का एक टुकड़ा ज़मीन की तरफ़ आसमान से छोड़ दिया जाए तो रात के आने से पहले ज़मीन तक पहुंच जाए जो पांच सौ साल की दूरी है और अगर वह टुकड़ा दोज़ख़ी की ज़ंजीर के सिरे से छोड़ा जाए तो दूसरे तक पहुंचने से पहले चालीस साल तक चलता रहेगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़ इससे मालूम हुआ कि दोज़ख़ियों के जकड़ने की ज़ंजीरें आसमान और ज़मीन के बीच की दूरी से भी लंबी होंगी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि ये ज़ंजीरें उसके जिस्म में पिरो दी जाएंगी, पाख़ाने के रास्ते से डाली जाएंगी, फिर उसे आग में इस तरह भूना जाएगा जैसे सीख़ में कबाब और तेल में टिड्डी भूनी जाती है। —इब्ने कसीर

तौक़

अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है—

إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَأَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۝

इन्ना अअ्तद्ना लिल काफ़िरी न सला सिलंव्व अग़लालंव्व सऔरा०

—सूरः दह्र

'और हमने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें, तौक़ और धधकती आग तैयार कर रखी है।'

सूरः मोमिन में है—

فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝ إِذِ الْأَغْلٰلُ فِيْٓ أَعْنَاقِهِمْ وَ
السَّلٰسِلُ يُسْحَبُوْنَ فِي الْحَمِيْمِ ثُمَّ فِي النَّارِ
يُسْجَرُوْنَ ۝

फ़ सौफ़ यअ्लमू न इज़िल अग़लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम व स्सलासिलु युस्हबू न फ़िल हमीभि सुम्म फ़िन्नारि युस्ज रू न०

'उनको अभी मालूम हो जाएगा, जबकि तौक़ उनकी गरदनों में होंगे और (उन तौक़ों में) ज़ंजीरें (पिरोयी हुई होंगी और इस तरह वह) घसीटते हुए गर्म पानी में ले जाए जाएंगे, फिर आग में झोंक दिए जाएंगे।'

इब्ने अबी हातिम की एक मर्फ़ूअ हदीस में है कि एक तरफ़ से काला बादल उठेगा जिसे दोज़ख़ी देखेंगे, उनसे पूछा जाएगा, तुम क्या चाहते हो ? वह दुनिया पर सोच करके कहेंगे, हम यह चाहते हैं कि बादल बरसे ! चुनांचे उस में से तौक़ और ज़ंजीरें और आग के अंगारे बरसने लगेंगे, जिनके शोले उन्हें जलायेंगे और उनके तौक़ों व ज़ंजीरों में और बढ़ती हो जाएगी। —इब्ने कसीर

जिस खौलते पानी में दोज़ख़ी डाले जाएंगे, उसके मुताल्लिक़ हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि गुनाहगार के बाल पकड़ कर उस पानी में ग़ोता दिया जाएगा तो उसका तमाम गोश्त गल कर गिर जाएगा और हड्डियों के ढांचे और दो आंखों के सिवा कुछ न बचेगा।

गंधक के कपड़े

सूरः इब्राहीम में इर्शाद है—

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝

सराबीलुहुम मिन क़ति रानिव्व तग़्शा वुजूहहुमुन्नारु०

'उनके कुरते गंधक के होंगे और उनके चेहरों पर आग लिपटी

हुई होगी।'

फ़—हज़रत हकीमुल उम्मत रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं कि चीड़ के तेल को क़तिरान कहते हैं (जिसका तर्जुमा गंधक किया गया है) और उसके कुरते का मतलब यह है कि सारे बदन को क़तिरान लिपटी होगी ताकि उसमें जल्दी और तेज़ी के साथ आग लग सके।

—बयानुल क़ुरआन

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि 'क़तिरान' पिघले हुए तांबा को कहते हैं। इस तांबे के दोज़ख़ियों के कपड़े होंगे जो सख़्त गर्म आग जैसे होंगे।

—इब्ने कसीर

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

मय्यत पर चीख़-पुकार करके रोने वाली औरत अगर मौत से पहले तौबा न करेगी तो क़ियामत के दिन इस हाल में खड़ी की जाएगी कि उस का एक कुरता क़तिरान (गंधक[1] या पिघले हुए तांबे) का होगा और ख़ुजली का होगा, यानी उसके जिस्म पर ख़ारिश (ख़ुजली) पैदा कर दी जाएगी और ऊपर से क़तिरान लपेट दिया जाएगा। सूरः हज में इर्शाद है—

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ط

फ़ल्लज़ी न क फ़ रू क़ुत्ति अत लहुम सियाबुम मिनन्नारि०

'सो जो लोग काफ़िर थे उनके (पहनने के लिए) आग में कपड़े तराशे जाएंगे।'

दोज़ख़ के दारोग़ों के ताने

तरह-तरह की जिस्मानी तक्लीफ़ों और अलग-अलग क़िस्म के अज़ाब के तरीक़ों के अलावा एक बड़ी रूहानी तक्लीफ़ दोज़ख़ियों को यह पहुंचेगी कि दोज़ख़ के दारोग़े उनको ताने देंगे, जिसको क़ुरआन हकीम में अलग-अलग अन्दाज़ में बयान किया गया है। चुनांचे सूरः अलिफ़-लाम-

---

१. अगर क़तिरान से मुराद गंधक ही है तो यह गंधक इसलिए न होगी कि उसकी ख़ुजली को आराम हो जाए, बल्कि इसलिए ताकि जिस्म पर और ज़्यादा जलन हो, क्योंकि ख़ुजली में गंधक लगाने से बहुत जलन होती है। (वल्लाहु तआला अअलमु)

मीम-सज्दा में इर्शाद है—

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ

व क़ी ल लहुम ज़ूक़ू अज़ाबन्नारि ल्लज़ी कुन्तुम बिही तुकज़्ज़िबून०

'और उनसे कहा जाएगा, अब चखो इस आग का अज़ाब, जिसको तुम झुठलाते थे।'

सूरः अह्क़ाफ़ में है—

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ج
فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ۵ (سورہ احقاف)

अज़्हब्तुम तय्यिबातिकुम फ़ी हयातिकुमुद्दुन्या वस्तम्तअ्तुम बिहा फ़ल यौ म तुज्ज़ौ न अज़ाबल हूनि बिमा कुन्तुम तस्तक्बिरू न फ़िल अर्ज़ि बिग़ैरिल हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम तफ़्सुक़ून०

—सूरः अह्क़ाफ़

'तुमने दुनिया की ज़िंदगी में अपने मज़े पूरे कर लिए, उन्हें तो हासिल कर चुके (अब ज़रा संभल जाओ, क्योंकि) आज तुम ज़िल्लत के अज़ाब की सज़ा पाओगे, अपनी उस अकड़ के बदले कि तुम ख़ामख़ाह ज़मीन में बड़े बनते थे और ख़ुदा की ना-फ़र्मानी करते थे।'

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी तलब फ़रमाया, चुनांचे आप की ख़िदमत में शहद में मिलाया हुआ पानी पेश किया गया, तो आप ने नहीं दिया और फ़रमाया यह है तो बहुत अच्छा, मगर नहीं पियूंगा, क्योंकि मैं क़ुरआन शरीफ़ में पढ़ता हूं कि अल्लाह तआला ने ख़्वाहिशों पर अमल करने वालों की निंदा करते हुए फ़रमाया है कि उनसे आख़िरत में कहा जाएगा कि तुमने दुनिया की ज़िंदगी में मज़े उड़ाये, इसलिए मैं डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि हमारी नेकी के बदले में दुनिया ही में लज़्ज़तें मिल जाएं।

—मिश्कात

दोज़ख़ियों के हालात

दोज़ख़ में जाने वालों की तादाद

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ख़िताब करके फ़रमायेंगे, ऐ

आदम ! वे अर्ज़ करेंगे—

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ

लब्बैक व सअ्दैक वल खैरकुल्लुहू फ़ी यदैक०

यानी, 'मैं हाज़िर हूं और हुक्म का ताबेअ हूं और सारी बेहतरी आप ही के हाथ में है,' अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमायेंगे (अपनी औलाद में से) दोज़खी निकाल दो। वे अर्ज़ करेंगे, दोज़खी कितने हैं ? इर्शाद होगा, हर हज़ार में ९९९ हैं। यह सुन कर औलादे आदम सख्त परेशान होगी और (रंज व ग़म की वजह से) उस वक्त बच्चे-बूढ़े हो जाएंगे और हामिला औरतों का हमल गिर जाएगा और लोग बद-हवास हो जाएंगे और हक़ीक़त में बे-होश न होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख्त होगा (जिसकी वजह से बद-हवासी होगी)।

—मिश्कात

यह सुन कर हज़रात सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह वह एक जन्नती हम में से कौन-कौन होगा ? आपने फ़रमाया कि (घबराओ नहीं) खुश हो जाओ, क्योंकि यह तायदाद इस तरह है कि एक तुम में से और हज़ार याजूज माजूज हैं।

मतलब यह है कि याजूज-माजूज की तायदाद बहुत ज़्यादा है, अगर तुम में और उन में मुक़ाबला हो तो तुम में से एक शख्स के मुक़ाबले में याजूज-माजूज एक हज़ार आएंगे और चूंकि वे भी आदम ही की नस्ल से हैं, उनको मिलाकर हर हज़ार ९९९ दोज़ख में जाएंगे।

दोज़ख़ में ज़्यादा औरतें होंगी

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मैंने जन्नत में नज़र डाली तो अक्सर बे-पैसे वाले देखे और मैंने दोज़ख में नज़र डाली तो अक्सर औरतें देखीं।

—मिश्कात

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक बार ईद या बक़र ईद की नमाज़ के लिए ईदगाह तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में औरतों पर गुज़र हुआ तो आपने (उनको खिताब करके) फ़रमाया, ऐ औरतो ! सदक़ा किया करो, क्योंकि मैंने दोज़खियों में ज़्यादातर औरतें

१. लानत का मतलब है अल्लाह की रहमत से दूर होना। आपका मतलब यह था कि औरतें चूंकि अक्सर दूसरी औरतों पर लानत करती रहती हैं, इस वजह से वे खुद ही अल्लाह की रहमत से दूर होती रहती हैं और रहमत से दूर होने का मतलब ही दोज़ख में जाना है।

देखी हैं। औरतों ने अर्ज़ किया, क्यों ? आपने फ़रमाया कि लानत[1] बहुत करती हो और शौहर की ना-शुक्री करती हो। —बुखारी व मुस्लिम

दोज़ख़ियों की बद-सूरती

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۢ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَاۤ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ (سورہ یونس)

वल्लज़ी न क स बुस्सय्यिआति जज़ाउ सय्यिअतिम बिमिस्लिहा व तर्हक़ुहुम ज़िल्लतुन मा ल हु म मिनल्लाहि मिन आसिम क अन्नमा उग़्शियत वुजूहुहुम क़ि त अम मिनल्लैलि मुज़्लिमन० —सूरः यूनुस

'और जिन लोगों ने बुरे काम किये बदी की सज़ा उस बुराई के बराबर मिलेगी और उन पर ज़िल्लत छा जाएगी, उनको अल्लाह (के अज़ाब) से कोई न बचा सकेगा (उनकी बद-सूरती का यह हाल होगा कि) गोया उनके चेहरों पर अंधेरी रात के परत के परत लपेट दिये गये हैं।'

इस आयत से मालूम हुआ कि दोज़खियों के चेहरे बेहद स्याह होंगे। हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, अगर दोज़खियों में से कोई शख्स दुनिया की तरफ़ निकाल दिया जाए, तो उसकी जंगली सूरत के मंज़र और बदबू की वजह से दुनिया वाले ज़रूर मर जाएंगे। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० बहुत रोये।

—तर्ग़ीब

सूरः मूमिनून में है—

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ۝ (مومنون)

तल्फ़हु वुजूहहुमुन्नारु व हुम फ़ीहा कालिहून० —मूमिनून

'आग उनके चेहरों को झुलसती होगी और उसमें उनके मुंह बिगड़े होंगे।'

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने 'कालिहून' की तफ़्सीर फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि दोज़खी को आग जलायेगी, जिसकी वजह से उसका ऊपर का होंठ सुकड़ कर बीच सर तक पहुंच जाएगा और नीचे का होंठ लटक कर नाफ़ तक पहुंच जाएगा।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

दोज़ख़ियों के आंसू

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा सल्ल० ने हज़रत सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, ऐ लोगो ! रोओ और रो न सको तो रोने की सूरत बनाओ, क्योंकि दोज़ख़ी दोज़ख़ में इतना रोयेंगे कि उनके आंसू उनके चेहरों पर नालियां-सी बना देंगे, रोते-रोते आंसू निकलने बंद हो जाएंगे तो ख़ून बहने लगेंगे, जिस की वजह से आंखें ज़ख़्मी हो जाएंगी (मतलब यह कि आंसू और ख़ून की इतनी ज़्यादती होगी कि) अगर उनमें कश्तियां छोड़ दी जाएं तो वे भी चलने लगें।

—शर्हुस्सुन्न:

दोज़ख़ियों की ज़ुबान

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बेशक काफ़िर अपनी ज़ुबान एक फ़र्सख़[1] और दो फ़र्सख़ तक खींच कर बाहर निकाल देगा जिस पर लोग चल कर जाएंगे। —तर्ग़ीब-तर्हीब

दोज़ख़ियों के जिस्म

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दोज़ख़ में काफ़िर के दोनों मोंढों के दर्मियान का हिस्सा तीन दिन के रास्ते के बराबर लम्बा होगा, जबकि कोई तेज़ रफ़्तार सवार चल कर जाए और काफ़िर की दाढ़ उहद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी खाल की मोटाई तीन दिन के रास्ते के बराबर होगी। —मुस्लिम शरीफ़

तिर्मिज़ी की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, काफ़िर की दाढ़ क़ियामत के दिन उहद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी रान बैज़ा पहाड़ के बराबर होगी और दोज़ख़ में उसके बैठने की जगह तीन दिन के रास्ते के बराबर लम्बी-चौड़ी होगी, जितनी दूर मदीना से रबज़ा गांव है। —मिश्कात

और एक रिवायत में है कि दोज़ख़ियों के बैठने की जगह इतनी लम्बी होगी जितना मक्का और मदीना के दर्मियान का फ़ासला है।

—मिश्कात शरीफ़

फ़—कुछ रिवायतों में है कि काफ़िर की खाल की मोटाई ४२

---

१. एक फ़र्सख़ तीन मील का होता है। मालूम हुआ कि काफ़िर की ज़ुबान इतनी लम्बी हो जाएगी।

हाथ होगी, और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में गुज़र चुका है कि तीन दिन की दूरी के बराबर होगी, मगर कोई यह मुश्किल बात नहीं, क्योंकि मुख़्तलिफ़ काफ़िरों को मुख़्तलिफ़ सज़ाएं होंगी, किसी को कम किसी को ज़्यादा।

कुछ रिवायतों में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी उम्मत के कुछ लोग दोज़ख़ में इतने बड़े कर दिए जाएंगे कि एक ही आदमी दोज़ख़ के पूरे एक कोने को भर देगा।

—तर्ग़ीब व तर्हीब

हज़रत मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि मुझ से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, दोज़ख़ कितना चौड़ा है ? मैंने कहा नहीं। फ़रमाया, हां! ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा की क़सम!! तुम नहीं जानते, बेशक दोज़ख़ी के कान की लौ और मोंढे के दर्मियान सत्तर साल चलने का रास्ता होगा, जिसमें ख़ून और पीप की वादियां (नाले) जारी होंगी।

—तर्ग़ीब

पुले सिरात से गुज़र कर दोज़ख़ में गिरना

दोज़ख़ की पीठ पर पुल क़ायम किया जाएगा, जिसको पुले सिरात कहते हैं। तमाम नेक और बद लोगों को उस पर होकर गुज़रना होगा।

क़ुरआन हकीम में इर्शाद है—

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا (مریم)

व इन् मिन्कुम इल्ला वारिदुहा का न अला रब्बि क हत्मम मक़्ज़ीया०

—मर्यम

'और तुम में ऐसा कोई भी नहीं, जिसका इस दोज़ख़ पर गुज़र न हो (क़ियामत के दिन)'

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ की पीठ पर पुले सिरात क़ायम किया जाएगा और मैं नबियों में सबसे पहले अपनी उम्मत को लेकर उस पर से गुज़रूंगा और उस दिन सिर्फ़ रसूल ही बोलेंगे और उनका कलाम (बोल) सिर्फ़ यह होगा—

अल्लाहुम्म सल्लिम सल्लिम०

'ऐ अल्लाह ! सलामत रख, सलामत रख।' फिर फ़रमाया कि

जहन्नम में सादान[1] के कांटों की तरह मुड़ी हुई कीलें हैं, जिन की बड़ाई अल्लाह ही को मालूम है। वे कीलें पुल सिरात पर चलने वालों को बद-आमालियों की वजह से घसीट कर दोज़ख में गिराने की कोशिश करेंगी, जिसके नतीजे में कुछ हलाक होकर (दोज़ख में) गिर जाएंगे (और कभी भी न निकल सकेंगे, ये काफ़िर होंगे) और कुछ कट-कटा कर दोज़ख में गिरेंगे और फिर निजात पा जाएंगे (ये फ़ासिक़ होंगे)।

दूसरी रिवायत में है कि कुछ मोमिन पलक झपकने में गुज़र जाएंगे और कुछ बिजली की तरह जल्दी से गुज़र जाएंगे। और कुछ हवा की तरह और कुछ तेज़ घोड़ों और ऊंटों की तरह, इन रफ़्तारों में कुछ सलामती के साथ निजात पा जाएंगे और कुछ (कीलों से) छिल-छिला कर छूट जाएंगे और कुछ दोज़ख में औंधे धकेल दिए जाएंगे।

—बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत काब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि जहन्नम अपनी पीठ पर तमाम लोगों को जमा लेगा। जब सब नेक व बद जमा हो जाएंगे तो अल्लाह तआला का इर्शाद होगा कि तू अपनों को पकड़ ले, जन्नितियों को छोड़ दे। चुनांचे जहन्नम बुरों का निवाला कर जाएगा, जिन को वह इस तरह पहचानता होगा जैसे तुम अपनी औलाद को पहचानते हो, बल्कि उस से भी ज़्यादा। —इब्ने कसीर

हासिल[2] यह है कि जन्नत वाले पार होकर जन्नत में पहुंच जाएंगे जिन के लिए जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले हुए होंगे और दोज़ख़ी दोज़ख में झोंक दिए जाएंगे, जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने यों बयान फ़रमाया है—

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۝ (مریم)

सुम्म नुनज्जिल्लज़ी न त्त क़ौ व न ज़ रुज़्ज़ालिमीन फ़ीहा जिसीया०

—सूरः मरयम

'फिर हम उनको निजात देंगे जो डरा करते थे और ज़ालिमों को उस (दोज़ख) में ऐसी हालत में रहने देंगे कि घुटनों के बल गिर पड़ेंगे।'

१. एक कांटेदार पेड़ का नाम है, जिसके कांटे बड़े-बड़े होते हैं,

२. ख़ुलासा, सार,

दाख़िले की सूरत

कुरआन शरीफ़ की आयतों में दोज़ख़ियों के दाख़िले की सूरत कई जगह बयान की गयी हैं, जिनमें यह भी है कि दोज़ख़ी प्यास की हालत में जहन्नम रसीद किये जाएंगे और दोज़ख में जाने से पहले दरवाज़े पर खड़ा करके उनसे फ़रिश्ते सवाल व जवाब भी करेंगे। नीचे की आयतों से ये मज़्मून ख़ूब साफ़ साफ़ समझ में आते हैं—

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا ۝ (مریم)

व नसूक़ुल मुज्रिमी न इला जहन्नम विर्दा० —सूरः मरयम

'और हम मुज्रिमों को दोज़ख की तरफ़ प्यासा हांकेंगे।'

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ (سورہ قمر)

यौ म युस्हबू न फ़िन्नारि अला वुजूहिहिम ज़ूक़ू मस्स स क़र०

—सूरः क़मर

'जिस दिन मुज्रिम मुंह के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे, तो उन से कहा जाएगा कि दोज़ख की आग का मज़ा चखो।'

فَكُبْكِبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ۝ وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ۝ (شعراء)

फ़ कुब्किबू फ़ीहा हुम वल् ग़ाऊन व जुनूदु इब्लीस अज्मऊन०

—सूरः शुअरा

'फिर वे और गुमराह लोग और इब्लीस का लश्कर सब के सब दोज़ख में औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे।'

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ۝ (سورہ رحمٰن)

युअ्रफ़ुल मुज्रिमू न बिसीमाहुम फ़ युअ्ख़ज़ु बिन्नवासी वल् अक़्दाम०

—सूरः रहमान

'मुज्रिम लोग अपने हुलिए से पहचाने जाएंगे। (क्योंकि उनके चेहरे स्याह और आंखें नीली होंगी), फिर उनके सर के बाल और पांव

पकड़ लिए जाएंगे (और उनको घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जायेगा)।'

तर्गीब व तर्हीब में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल इस आयत की तफ़्सीर में नक़ल किया गया है कि मुजिरम के हाथ और पैर मोड़ कर इकट्ठे कर दिए जाएंगे। फिर लकड़ियों की तरह तोड़-मरोड़ दिया जाएगा (और जहन्नम में झोंक दिया जाएगा)।

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۙ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ۝ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ۙ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ۝ بَلْ هُمُ
الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ۝ (صافات)

उह्शुरुल्लज़ी न ज़ ल मू व अज़्वा जुहुम व मा कानू यअ्बुदू न मिन. दूनिल्लाहि फ़ह्दूहुम इला सिरातिल जहीम व क़िफ़ूहुम इन्नहुम मस्ऊलू न मा लकुम ला तना स रू न बल हुमुल यौ म मुस्तस्लिमून०

—साफ़्फ़ात

'(फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) जमा कर लो ज़ालिमों को और उनके जोड़ों को और उनके माबूदों को, जिन को वे लोग ख़ुदा को छोड़ कर पूजा करते थे, फिर इन सब को दोज़ख का रास्ता दिखाओ। (और फिर हुक्म होगा अच्छा ज़रा) उनको ठहराओ, उन से सवाल किया जाएगा (चुनांचे यह सवाल होगा) कि अब तुम को क्या हुआ, एक दूसरे की मदद नहीं करते। (इस पर भी वे एक दूसरे की कुछ मदद न करेंगे) बल्कि सब के सब सर झुकाये खड़े रहेंगे।'

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَا
اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۝ (احزاب)

यौ म तुक़ल्लबु वुजूहुहुम फ़िन्नारि यक़ूलूना या लै तना अ तअ्नल्ला ह व अ त अ्नर्रसूला०

—सूरः अह्ज़ाब

'जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख में उलट-पलट किये जाएंगे, वे यों कहते होंगे, ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअत की होती और हमने रसूल की इताअत की होती।'

दोज़ख़ वालों से शैतान का ख़िताब

इधर तो दोज़खी शैतान पर पछताते होंगे और अल्लाह की ओर से ऊपर के खिताब के ज़रिये उन पर डांट पड़ेगी, उधर शैतान इस तकरीर से उनको लताड़ेगा—

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِىَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ
وَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ لِىَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا
اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِىْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِىْ وَ لُوْمُوْٓا
اَنْفُسَكُمْ ؕ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِىَّ ؕ اِنِّىْ
كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ (سورہ ابراہیم)

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल अम्रु इन्नल्ला ह व अ द कुम वअ्दल हक़्क़ि व वअत्तुकुम फ़ अख़्लफ़्तुकुम व मा का न लि य इल्ला अन् दअौतुकुम फ़स्तजब्तुम ली फ़ ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ुसकुम मा अना बिमुस्रिख़िकुम व मा अन्तुम बिमुस्रिख़ी य इन्नी कफ़र्तु बिमा अश्रक्तुमूनि मिन क़ब्लु इन्नज़्ज़ालिमी न लहुम अज़ाबुन अलीम०

—सूरः इब्राहीम

'और (क़ियामत के दिन) जब सब मुक़दमे फ़ैसला हो चुकेंगे तो शैतान कहेगा (मुझे बुरा-भला कहना ना-हक़ है, क्योंकि) बिला शुबहा अल्लाह ने तुम से सच्चे वायदे किये थे और मैंने भी कुछ वायदे किये थे, सो मैंने वे वायदे खिलाफ़ किये थे और तुम पर मेरा इससे ज़्यादा ज़ोर न चलता था कि मैंने तुमको (गुमराही की) दावत दी, सो तुमने (ख़ुद ही) मेरा कहना मान लिया। तुम मुझ पर मलामत मत करो और अपने आप को मलामत करो, न मैं तुम्हारा मददगार हूं और न तुम मेरे मददगार हो। मैं तुम्हारे इस काम से ख़ुद बेज़ार हूं कि तुम इससे पहले (दुनिया में) मुझे (ख़ुदा का) शरीक क़रार देते थे। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।'

दोज़खियों को वाक़ई बड़ी हसरत होगी, जबकि शैतान अपना अलगाव ज़ाहिर करेगा और हर क़िस्म की मदद और तसल्ली से अलग हो जाएगा। उस वक़्त दोज़खियों के ग़ुस्से की जो हालत होगी, ज़ाहिर है।

गुमराह करने वालों दोज़ख़ियों का गुस्सा

जो लोग गुमराह करने वाले थे, उन पर दोज़ख़ियों को गुस्सा आयेगा और उनसे कहेंगे—

إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ط (ابراہیم)

इन्ना कुन्ना लकुम त ब अन फ़हल अन्तुम मुग़्नून अन्ना मिन अज़ाबिल्लाहि मिन शैइन०

—इब्राहीम

'हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम खुदा के अज़ाब का कुछ हिस्सा हम से हटा सकते हो ?

वे जवाब देंगे—

لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ط سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِن مَّحِيصٍ ط (ابراہیم)

लौ हदानल्लाहु ल हदैनाकुल सवाउन अलैना अ ज ज़िअ्ना अम सबर्ना मा लना मिम् महीस०

—इब्राहीम

'(तुम्हें क्या बचाएं हम तो ख़ुद ही नहीं बच सकते) अगर अल्लाह हमको बचने की कोई राह बताता तो तुम को भी वह राह बता देते। हम सब के हक़ में दोनों शक्लें बराबर हैं, चाहे हम परेशान हों, चाहे ज़ब्त करें। हमारे बचने की कोई शक्ल नहीं।'

वह लोग गुस्से और जलन से भर कर गुमराह करने वालों के बारे में अल्लाह के दरबार में अर्ज़ करेंगे। सूरः हाम्मीम सज्दा में है—

رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ط

रब्बना अरिनल्लज़ै नि अज़ल्लाना मिनल जिन्नि वल इंसि नज्अलहुमा तह्त अक़्दामिना लियकूना मिनल अस्फ़लीन०

'ऐ हमारे परवरदिगार! हमें वह शैतान और इंसान दिखा दे, जिन्होने हमें गुमराह किया, हम इनको पैरों के नीचे कुचल डालेंगे, ताकि वे ख़ूब ज़लील हों।'

दोज़ख़ के दारोग़ों और मालिक से अर्ज़-मारूज़

दोज़ख़ी अज़ाब से परेशान होकर अर्ज़-मारूज़ का सिलसिला शुरू करेंगे कि—

ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ . (مومن)

उद्ऊ रब्बकुम युख़फ़्फ़िफ़ अन्ना यौमम मिनल अज़ाबि०

—मोमिन

'तुम ही अपने पालनहार से दुआ करो कि किसी एक दिन तो हम से अज़ाब हल्का कर दे।'

वे जवाब देंगे—

أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُم بِالْبَيِّنَاتِ . (مومن)

अ व लम तकु तातिकुम रुसूलुकुम बिल बय्यिनाति०　—मोमिन

'क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर मोज्जे लेकर नहीं आते रहे थे, (और दोज़ख़ से बचने का तरीक़ा नहीं बतलाया था)

इस पर दोज़ख़ी जवाब देंगे कि 'बला' यानी हां आते तो थे, लेकिन हमने उनका कहना न माना, फ़रिश्ते जवाब में कहेंगे—

فَادْعُوا ۚ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ط (مومن)

फ़द्ऊ व मा दुआउल काफ़िरी न इल्ला फ़ी ज़लाल०　—मोमिन

'तो फिर (हम तुम्हारे लिए दुआ नहीं कर सकते, तुम ही दुआ कर लो और वह भी बे-नतीजा होगी) क्योंकि काफ़िरों की दुआ (आख़िरत में) बिल्कुल बे-असर है।'

इसके बाद मालिक यानी दोज़ख़ के अफ़्सर के दरबार में दरख़्वास्त पेश करके कहेंगे—

या मालिकु लियक़्ज़ि अलैना रब्बु क० يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ

यानी ऐ मालिक! (तुम ही दुआ करो कि) तुम्हारा परवरदिगार (हम को मौत देकर) हमारा काम तमाम कर दे।'

वे जवाब देंगे—

إِنَّكُم مَّاكِثُونَ ه

इन्नकुम माकिसून०

'तुम हमेशा इस हाल में रहोगे (न निकलोगे, न मरोगे)।'

हज़रत आमश रह० फ़रमाते थे कि मुझे रिवायत पहुंची है कि मालिक अलै० के जवाब और दोज़ख़ियों की दरख़्वास्त में हज़ार वर्ष की

मुद्दत का फ़ासला होगा।

इसके बाद कहेंगे कि आओ अपने रब से सीधे-सीधे दरख़्वास्त करें और उससे दुआ करें, क्योंकि इस से बढ़ कर कोई नहीं है। चुनांचे अर्ज़ करेंगे—

رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۝ رَبَّنَا
أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۝ (المؤمنون)

रब्बना ग़ल ब त अलैना शिक़्वतुना व कुन्ना क़ौमन ज़ाल्लीन रब्बना अख़्रिज्ना मिन्हा फ़ इन्अुद्ना फ़ इन्ना ज़ालिमून० —मोमिनून

'ऐ हमारे रब! (वाक़ई) हमारी बद-बख़्ती ने हमको घेर लिया था और हम गुमराह हो गये थे, ऐ हमारे रब! हमको इससे निकाल दीजिए, फिर हम अगर दोबारा (ऐसा) करें तो हम बेशक क़सूरवार हैं।'

अल्लाह तआला जवाब में फ़रमायेंगे—

इख़्सऊ फ़ीहा व ला तुकल्लिमून०   اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ

'इसी में फिटकारे हुए पड़े रहो और मुझसे बात न करो।'

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि अल्लाह जल्लशानुहू के इस इर्शाद पर हर क़िस्म की भलाई से नाउम्मीद हो जाएंगे और गधों की तरह चीख़ने-चिल्लाने और हसरत व दुख में लग जाएंगे। —मिश्कात शरीफ़

इब्ने कसीर में है कि उनके चेहरे बदल जाएंगे, शक्लें बिगड़ जाएंगी, यहां तक कि कुछ मोमिन शफ़ाअत लेकर आयेंगे, लेकिन दोज़ख़ियों में से किसी को पहचानेंगे नहीं, दोज़ख़ी उनको देख कर कहेंगे कि फ़लां हूं, मगर वे कहेंगे कि ग़लत कहते हो हम तुमको नहीं पहचानते। 'इख़्सऊ फ़ीहा' के जवाब के बाद दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिए जाएंगे और वे उसी में सड़ते रहेंगे।

दोज़ख़ियों की चीख़-पुकार

सूरः हूद में अल्लाह तआला का इर्शाद है—

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا
زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ۝ خَالِدِينَ فِيهَا

फ़ अम्मल्लज़ी न शक़ू फ़ फ़िन्नारि लहुम फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्व शहीक़ुन ख़ालिदी न फ़ीहा०

'जो लोग शक़ी (बद-बख़्त) हैं, वे दोज़ख़ में इस हाल में होंगे कि गधों की तरह चिल्लाते होंगे।'

क़ामूस में है कि 'ज़फ़ीर' गधे की शुरू की आवाज़ को कहते हैं और 'शहीक़' उसकी आख़िरी आवाज़ को कहते हैं।

दोज़ख़ के अज़ाब से छुटकारे के लिए फ़िदया देना गवारा होगा

अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है—

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا
بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ (زمر)

व लौ अन्न लिल्लज़ी न ज़ ल मू मा फ़िल अर्ज़ि जमीअंव्व मिस्लहू म अहू लफ़्तदौ बिही मिन सूइल् अज़ाबि यौमल क़ियामति० —ज़ुमर

'और अगर ज़ुल्म (यानी शिर्क व कुफ़्र) करने वालों के पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और इन चीज़ों के साथ और भी इतनी चीज़ें हों तो वे लोग क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब से छूट जाने के लिए (बे-झिझक) उन सबको देने लगें।

सूरः मआरिज में इर्शाद है कि, 'उस दिन मुज्रिम यह तमन्ना करेगा कि आज के अज़ाब से छूट जाने के लिए अपने बेटों को और अपनी बीवी को और भाई को और कुन्बे को, जिन में वह रहता था और तमाम ज़मीन की चीज़ों को अपने बदले में दे दे, और फिर यह बदला उसको बचा ले।'

लेकिन वहां न तो माल होगा, न कोई किसी के बदले में आना मंज़ूर करेगा और मान लो, ऐसा हो भी जाए, तो मंज़ूर न किया जाएगा, जैसा कि सूरः माइदः में ज़िक्र है—

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

इन्नल्लज़ी न क फ़ रू लौ अन्न लहुम मा फ़िल अर्ज़ि जमी अंव्व मिस्लहू म अ हू लियफ़्तदू बिही मिन अज़ाबि यौमल क़ियामति मा

तुक़ुब्बि ल मिन्हुम व लहुम अज़ाबुन अलीम०

'यक़ीनन जो लोग काफ़िर हैं अगर उनके पास तमाम दुनिया की चीज़ें हों और उतनी चीज़ों के साथ उतनी चीज़ें और भी हों ताकि वे उनको देकर क़ियामत के दिन के अज़ाब से छूट जाएं, तब भी वे चीज़ें उन से हरगिज़ क़ुबूल न की जाएंगी और उनको दर्दनाक अज़ाब होगा।'

जन्नतियों का हंसना

क़ुरआन हकीम में फ़रमाया गया है कि जन्नती दोज़ख़ियों के हाल पर हंसेंगे। सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन में है—

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ۙ عَلَى
الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۙ

फ़ल यौ मल्लज़ी न आ म नू मिनल कुफ़्फ़ारि यज़्हकून अलल अराइकि यन्ज़ुरून०

'आज ईमान वाले काफ़िरों पर हंसते होंगे, मसहरियों पर बैठे उनका हाल देख रहे होंगे।'

तफ़्सीर दुर्रे मंसूर में हज़रत क़तादा रज़ि० से रिवायत की है कि जन्नत में कुछ दरीचे और झरोखे ऐसे होंगे जिनसे जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को देख सकेंगे और उनका बुरा हाल देखकर 'बदले के तौर पर' उन पर हंसेंगे जैसा कि दुनिया में मोमिनों को देख कर ख़ुदा के मुजरिम हंसते थे और कनखियों के इशारों से उनका मज़ाक़ उड़ाते थे और घरों में बैठ कर भी दिल्लगी के तौर पर ईमान वालों का ज़िक्र करते थे—

قَالَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ

क़ालल्लाहु अज़्ज़ व जल्ल—इन्नल्लज़ी न अज्रमू कानू मिनल्लज़ी न आमनू यज़्हकून०[1]

सूरः मुअ्मिनून में है कि दोज़ख़ियों से अल्लाह तआला शानुहू का इर्शाद होगा कि मेरे बंदों में एक गिरोह (ईमान वालों का) था जो (हम से) अर्ज़ किया करते थे कि, 'हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आये, सो हमको बख़्श दीजिए और हम पर रहमत फ़रमाइए और आप

१. अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फ़रमाया, 'बेशक मुजरिम मोमिनों का मज़ाक़ उड़ाया करते थे।'

सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाले हैं।'—तुमने उनका मज़ाक़ बना रखा था और यहां तक तुम उनका मज़ाक़ बनाने में मश्ग़ूल रहे कि उनके मश्ग़ले ने तुमको मेरी याद भी भुला दी। आज मैं ने उनको उनके सब्र का बदला यह दिया कि वही कामियाब हुए।

सोचने की बात

दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात जो अब तक आपने पढ़े हैं, यह इसलिए नहीं लिखे गये कि सरसरी नज़र से पढ़ कर किताब अलमारी के सुपुर्द कर दी जाए और दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात को पढ़ कर दूसरे क़िस्सों और कहानियों की तरह भुला दिया जाए।

हक़ीक़त यह है कि पिछले वाक़िए और हालात जो बयान किए गये है, चूंकि क़ुरआन की आयतों और नबी की हदीसों का तर्जुमा हैं, इसलिए बिलाशक सही और वाक़ई हैं। अगर इनको बार-बार पढ़ा जाए और अपनी बद-आमालियों पर नज़र की जाए तो सख़्त से सख़्त दिल वाला इंसान भी अपनी ज़िंदगी को बहुत आसानी से पलट सकता है और अपने नफ़्स को दोज़ख़ के हालात समझा कर नेकियों के रास्ते पर डाल सकता है, बशर्ते कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को सच्चा समझता हो और उनके बताये हुए दोज़ख़ के हालात को सही और वाक़ई मानता हो। मोमिन बंदे हमेशा अपनी ज़िन्दगी का हिसाब करते रहते हैं और अल्लाह तआला शानुहू के दरबार में दोज़ख़ से पनाह में रहने की दुआ करते रहते हैं, भला हो सकता है कि जो शख़्स इन हालात को सही समझता हो, वह अपनी ज़िंदगी को दुनिया की लज़्ज़तों और फ़ना हो जाने वाली इज़्ज़त और दौलत के हासिल करने में गंवा दे। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ लज़्ज़तों में छिपा दिया गया है, जन्नत ना-गवारियों में छिपा दी गयी है।

—बुख़ारी व मुस्लिम

यानी लज़्ज़तों में पड़ कर ज़िंदगी गुज़ारने वाले वे काम कर रहे हैं जिनके पर्दे में दोज़ख़ है और नफ़्स को ना-गवारियों में फंसाकर अच्छे अमल करने वाले वह काम कर रहे हैं, जिनके पर्दे में जन्नत है। आह! उन लोगों को जहन्नम के हालात का पता ही नहीं जो ख़ुदकुशी करके यह समझते हैं कि मुसीबत से छुटकारा हो जाएगा और जो दुनिया की सख़्ती और मशक़्क़त से घबराकर यों कह देते हैं क्या ख़ुदा के यहां मेरे लिए

दोज़ख में भी जगह नहीं है।

हक़ीक़त यह है कि अगर दोज़ख की आग, उसके सांप, बिच्छू, आग के कपड़े, अज़ाब के तरीक़े, दोज़ख की ख़ूराक वग़ैरह का ध्यान रहे तो म्युनिसिपैलटी और एसमबलियों की कुर्सियों के एज़ाज़ हासिल करने वाले, रुपया जमा करने और बिल्डिंग व जायदाद बनाने वाले हरगिज़-हरगिज़ उन चीज़ों में पड़ कर और बड़े-बड़े गुनाहों में मुब्तला होकर अपनी आख़िरत ख़राब नहीं कर सकते।

भला जिसे दोज़ख की भूख की ख़बर हो, वह रोज़ा छोड़ सकता है? और जो दोज़ख की बेचैनी को जानता हो, वह ज़रा-सी नींद और फ़ानी आराम के लिए नमाज़ बर्बाद कर सकता है? और जो दोज़ख के सांप, बिच्छुओं के डसने की जलन की ख़बर रखता हो, वह यों कह सकता है कि दाढ़ी रखने से खुजली होती है? जिन्हें 'जुब्बुल हुज़्न' की ख़बर हो, वे दिखावे की इबादत कैसे कर सकते हैं और जिसको तस्वीर बनाने का अंजाम मालूम हो, वे तस्वीर बना सकते हैं? जिनको यह यक़ीन हो कि शराब पीने की सज़ा में दोज़खियों के जिस्मों का धोवन या निचोड़ पीना पड़ेगा, वे शराब के पास जा सकते हैं? हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं।

हक़ीक़त यह है कि जन्नत और दोज़ख के हालात सिर्फ़ ज़ुबानों तक ही महदूद (सीमित) रह गये हैं और यक़ीन के दर्जे में नहीं रहे, वरना बड़े गुनाह तो दूर की बात, छोटे गुनाहों के पास जाना भी सोचा नहीं जा सकता। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते थे कि अगर जन्नत और दोज़ख मेरे सामने रख दिए जाएं तो मेरे यक़ीन में ज़रा-सी भी बढ़ती नहीं होगी यानी मेरा ग़ैब पर ईमान इतना मज़बूत है कि आंखों से देख कर भी उतना ही यक़ीन हो सकता है जितना बग़ैर देखे है, जिनको दोज़ख के हालात की ख़बर हो, वे गुनाह तो क्या करते इस दुनिया में न हंसते, न ख़ुशी मनाते।

अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब में एक रिवायत नक़ल की है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलामु से दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या बात है, मैंने मीकाईल को हंसते हुए नहीं देखा? अर्ज़ किया, जब से दोज़ख की पैदाइश हुई है, मीकाईल नहीं हंसे।

—अहमद

सही मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा इर्शाद फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुमने वह मंज़र देखा होता जो मैंने देखा है, तो तुम ज़रूर कम हंसते और ज़्यादा रोते! सहाबा रज़ि०

ने अर्ज़ किया, आपने क्या देखा? इर्शाद फ़रमाया, मैंने जन्नत और दोज़ख देखे।

—तर्ग़ीब

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, मुझे ताज्जुब है कि लोग हंसते हैं, हालांकि उनको दोज़ख से बचने का यक़ीन नहीं है। हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक बार (मकान से) बाहर तशरीफ़ लाये और देखा कि लोग खिलखिला कर हंस रहे हैं, यह देखकर आप ने फ़रमाया कि अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली चीज़ (यानी मौत) को कसरत से याद करते तो तुम्हें इसकी फ़ुर्सत नहीं मिलती, जिस हाल में तुमको देख रहा हूं।

—मिश्कात शरीफ़

ग़रज़ यह कि होशियार वही है, जो अपनी आख़िरत की ज़िंदगी बनाये और दो-चार दिनों के माल व दौलत, इज़्ज़त व आबरू, ओहदा व हुकूमत के फंदों में पड़ कर अपनी जान को दोज़ख के हवाले न करे, जब अज़ाब से फंसेगा तो पछताने और—

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ۚ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ (الحاقہ)

या लै तहा कान्तिल क़ाज़ियः मा अग्नी अन्नी मालियः ह ल क अन्नी सुल्तानियः०

—अल-हाक़्क़ा

'हाय, काश! वह मौत ही ख़त्म कर देती, मेरे काम कुछ न आया मेरा माल, जाती रही मेरी हुकूमत, कहने और हाथ मलने से कुछ हासिल न होगा। जन्नत जैसी आराम की जगह की तलब से लापरवाही और दोज़ख जैसे बे-मिसाल अज़ाब के घर से बचने की चिंता से ग़फ़लत बे-अक़्लों ही का काम हो सकता है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जन्नत को तलब करो, जितना तुमसे हो सके और दोज़ख से भागो जितना तुमसे हो सके, क्योंकि जन्नत का तलबगार और दोज़ख से भागने वाला (लापरवाही की नींद) सो नहीं सकता।

—अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

हज़रत यह्या बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि आदमी बेचारा जितना तंगदस्ती से डरता है, अगर जहन्नम से उतना डरे तो सीधा जन्नत में जाए।

हज़रत मुहम्मद बिन मुंकदिर जब रोते थे तो आंसुओं को अपने मुंह और दाढ़ी से पोंछते थे और इसकी वजह यह बताते थे कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि उस जगह जहन्नम की आग न पहुंचेगी जहां आंसू पहुंचे होंगे।

एक अंसारी ने तहज्जुद पढ़ा और बैठ कर बहुत रोये और कहते रहे कि जहन्नम की आग के बारे में अल्लाह ही से फ़रियाद करता हूं। उनका हाल देख कर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आज तुमने फ़रिश्तों को रुला दिया।

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक मर्तबा नमाज़ पढ़ रहे थे कि घर में आग लग गयी, मगर आप नमाज़ में मशग़ूल रहे। लोगों ने पूछा कि आपको ख़बर न हुई? फ़रमाया कि दुनिया की आग से आख़िरत की आग ने ग़ाफ़िल रखा।

एक साहब का क़िस्सा है कि रात को सोने के लिए बिस्तर पर जाते और सोने की कोशिश करते, मगर नींद न आती थी, इसलिए उठ कर नमाज़ शुरू कर देते थे और अल्लाह के दरबार में अर्ज़ करते थे कि ऐ अल्लाह! आपको मालूम है कि जहन्नम की आग के ख़ौफ़ ने मेरी नींद उड़ा दी, फिर सुबह तक नमाज़ में मशग़ूल रहते।

हज़रत अबू यज़ीद रह० हर वक़्त रोते रहते थे। इसकी वजह पूछी गयी तो फ़रमाया कि अगर ख़ुदा का यों इर्शाद हो कि गुनाह करोगे तो हमेशा के लिए हम्माम (ग़ुस्लख़ाना) में क़ैद किये जाओगे, तो उसके डर से मेरा आंसू हरगिज़ न रुकेगा, फिर जबकि गुनाह करने पर दोज़ख़ से डराया जिसकी आग तीन हज़ार साल तक गर्म की गयी है, तो मेरे आंसू कैसे रुकें?

फ़अतबिरू या उलिल अब्सार०

ख़ात्मा

दोज़ख़ से बचने की कुछ दुआयें

१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस तरह सहाबा रज़ि० को क़ुरआन की सूरः सिखाते थे, उसी तरह यह दुआ सिखाते थे—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ —— (ترغیب عن مسلم)

अल्लाहुम इन्नी अऊज़ुबि क मिन अज़ाबि जहन्न म व अऊज़ुबिक मिन अज़ाबिल क़ब्रि व अऊज़ुबिक मिन फ़ित्नतिल मसीहिद्दज्जालि व अऊज़ुबिक मिन फ़ित्नतिल मह्या वल ममाति० —तर्ग़ीब

२. हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अक्सर यह दुआ फ़रमाया करते थे—

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (بخاری)

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह स न तंव्व फ़िल आख़िरति ह स न तंव्व क़िना अज़ाबन्नारि० —बुख़ारी

३. हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी 'मुस्लिम' रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बतलाया था कि मग़रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर किसी से बात करने से पहले सात मर्तबा—

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म अजिर्नी मिनन्नारि०

कहा करो। अगर इसको कह लोगे और अगर उसी रात में मर जाओगे तो दोज़ख़ से तुम्हारी ख़लासी कर दी जाएगी और जब सुबह को नमाज़ पढ़ चुको और उसको इसी तरह (सात मर्तबा किसी से बोलने से पहले) कह लोगे और उसी दिन मर जाओगे तो दोज़ख़ से तुम्हारी ख़लासी ज़रूर कर दी जाएगी। —अबूदाऊद शरीफ़

४. रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है जो शख़्स तीन बार ख़ुदा से जन्नत का सवाल करे तो जन्नत उसके लिए ख़ुदा से दुआ करती है कि—

اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ

अल्लाहुम्मा अद्ख़िलहुल जन्न त०

'ऐ अल्लाह! इस को जन्नत में दाख़िल कर दे।'

और जो आदमी तीन बार दोज़ख़ से पनाह चाहे तो दोज़ख़ उसके लिए ख़ुदा से दुआ करता है कि—

اَللّٰهُمَّ اَجِرْهُ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म अजिर्हु मिनन्नारि०

'ऐ अल्लाह! इसको दोज़ख़ से बचा।' —तर्ग़ीब

आख़िरी बात

अब मैं इस रिसाले को ख़त्म करता हूं। सबक़ लेने वाली आंख रखने वालों के लिए थोड़ा भी बहुत है और ग़ाफ़िलों के लिए बड़े-बड़े दफ़्तर भी कुछ नहीं।

पढ़ने वालों से दर्ख़्वास्त है कि मुहताज व मिस्कीन के हक़ में दुआ फ़रमायें कि अल्लाह अपनी रहमत से दुनिया व आख़िरत के तमाम अज़ाबों

और तक्लीफ़ों से बचाये रखें और जन्नतुल फ़िर्दौस नसीब फ़रमायें।

मेरे वालिद मोहतरम सूफ़ी मुहम्मद सिद्दीक़ साहब जी द मज्दुहुम को भी दुआ-ए-खैर से याद फ़रमायें, जिनकी कोशिश से मैं कुरआन करीम की मौक़े की आयतें जमा करने और नबी सल्ल० की हदीसों को चुनने के लायक़ हुआ।

جزاه الله عنى جزاء خير فى هذه الدار و فى تلك الدار واحشرنى و اياه مع المتقين الابرار - امين

و اخر دعونا ان الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على خير خلقه سيدنا محمد الشفيع لامته يوم الدين وعلى اله وصحبه هداة الدين المتين ٠٠

जज़ाहुल्लाहु अन्नी जज़ाअ खैरिन फ़ी हाज़िहिद्दारि व फ़ी तिल्कद्दारि वह्शुर्नी व इय्याहु मअ़ल मुत्तक़ीनल अब्रारि० आमीन

व आखिरुदअ् वाना अनिल हुम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला खल्क़िहि सय्यिदिना मुहम्मदि-निश्शफ़िअ़िल उम्मति यौमद्दीनि व अला आलिही व सह्बिही हुदातद्दीनिल मतीन०

يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْئًا ط

या ऐ युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम वख़्शौ यौमल्ला यज्ज़ी वालिदुन अंव्व ल दिही व ला मौलूदुन हु व जाज़िन अंव्वालिदिही शैआ०

मरने के बाद क्या होगा? (३)

मैदाने हश्र

कुरआन व हदीस की रोशनी में क़ियामत के तफ़्सीली हालात, हश्र व नश्र, हिसाब व किताब की तफ़्सील के बयान की गयी कैफ़ियत

लेखक: मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्द शहरी

अनुवादक :

कौसर यज़्दानी नदवी एम. ए.

प्रकाशक:

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

फ़ोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272636 (घर) 25702399

विषय-सूची

कहां?	क्या?
१. क़ियामत किन लोगों पर क़ायम होगी ?	११६
२. क़ियामत की तारीख की खबर नहीं दी गयी	११८
३. क़ियायत अचानक आ जाएगी	११९
४. सूर और सूर का फूंका जाना	१२०
५. कायनात का बिखर जाना	१२३
६. पहाडों का हल	१२३
७. आसमान व ज़मीन	१२५
८. चांद, सूरज, सितारे	१२९
९. इंसानों का क़ब्रों से निकलना	१३१
१०. क़ब्रों से नंगे और बे-खत्ना के निकलेंगे	१३१
११. मैदाने हश्र में जमा होने के लिए चलना	१३२
१२. काफ़िर गूंगे बहरे अंधे उठेंगे	१३३
१३. काफ़िरों की आंखें नीली होंगी	१३४
१४. दुनिया में कितने दिन रहे ?	१३५
१५. क़ियामत के दिन की परेशानी और हैरानी	१३७
१६. चेहरों पर खुशी और उदासी	१३९
१७. महशर में पसीने की मुसीबत	१४१
१८. हश्र के मैदान में मौजूद लोगों की अलग-अलग हालतें	१४२
१९. भिखारियों की हालत	१४२
२०. बीवी के साथ ना-इन्साफ़ी करने वाला	१४२
२१. जो क़ुरआन शरीफ़ भूल गया हो	१४२
२२. ज़कात न देने वाला	१४५
२३. क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा भूखे	१४७
२४. दुनिया में दोबारा आने की दर्ख्वास्त	१५४
२५. लीडरों की बेज़ारी	१५७
२६. हश्र के मैदान में प्यारे नबी सल्ल० के बुलन्द मर्तबे का ज़ुहूर	१५८
२७. उम्मते मुहम्मदिया की पहचान	१६२
२८. हौज़े कौसर	१६३
२९. हज़रत मुहम्मद सल्ल० के हौज़ की खूबियां	१६४
३०. सबसे पहले हौज़ पर पहुचने वाले	१६५
३१. हौज़े कौसर से हटाये जाने वाले	१६६

कहां?	क्या?
३२. अपने-अपने बापों के नाम से बुलाये जाएंगे	१६८
३३. नेमतों का हाल	१७०
३४. फ़रिश्तों से खिताब	१७५
३५. फ़रिश्तों का जवाब	१७६
३६. मुश्रिकों का इंकार	१८०
३७. जिन की पूजा करते थे, वे भी इंकारी होंगे	१८०
३८. हिसाब-किताब, क़िसास, मीज़ान	१८२
३९. नमाज़ का हिसाब और नफ़्लों का फ़ायदा	१८४
४०. बे-हिसाब जन्नत में जाने वाले	१८५
४१. सख्त हिसाब	१८६
४२. मोमिन पर अल्लाह का खास करम	१८७
४३. किसी पर ज़ुल्म न होगा	१८८
४४. बन्दों के हक़	१८९
४५. क़ियामत के दिन सबसे बड़ा ग़रीब	१९०
४६. जानवरों के फ़ैसले	१९१
४७. मालिकों और ग़ुलामों का इंसाफ़	१९३
४८. जिन्नों से खिताब	१९५
४९. जुर्म न मानने पर गवाहियां	१९७
५०. ज़मीन की गवाही	१९८
५१. आमालनामे	१९८
५२. आमालनामों की तक़सीम	२००
५३. आमालनामों के मिलने पर	२०१
५४. अमल का वज़न	२०३
५५. एक बन्दे के अमल का वज़न	२०५
५६. सबसे ज़्यादा वज़नी अमल	२०६
५७. काफ़िरों की नेकियां बे-वज़न होंगी	२०७
५८. अल्लाह की रहमत से बख्शे जाएंगे	२१०
५९. हर एक शर्मिन्दा होगा	२११
६०. शफ़ाअत	२१२
६१. तंबीह	२१६
६२. मोमिनों की शफ़ाअत	२१६
६३. मुजाहिद की शफ़ाअत	२१७
६४. ना-बालिग़ बच्चों की शफ़ाअत	२१८

क्या?	कहां?
६५. क़ुरआन के हाफ़िज़ की शफ़ाअत	२१६
६६. रोज़ा और क़ुरआन की शफ़ाअत	२२०
६७. तजल्ली-ए-साक़, पुल सिरात, तक़्सीमे नूर	२२०
६८. नूर की तक़्सीम	२२१
६९. साक़ की तजल्ली	२२४
७०. प्यारे नबी जन्नत खुलवाएंगे	२३०
७१. जन्नत व दोज़ख़ में गिरोह-गिरोह जाएंगे	२३०
७२. दोज़ख़ियों की आपस में एक दूसरे पर लानत	२३२
७३. दोज़ख़ियों की अनोखी हैरत	२३३
७४. अपने मानने वालों के सामने शैतान की सफ़ाई	२३३
७५. मालदार जन्नत में जाने से अटके रहेंगे	२३५
७६. दोज़ख़ में अक्सर औरतें और मालदार जाएंगे	२३६
७७. दोज़ख़ और जन्नत दिखायी जाएगी	२३८
७८. दोज़ख़ में जाने वालों का अन्दाज़ा	२३९
७९. क़ियामत के दिन की लम्बाई	२४०
८०. आराफ़ वाले	२४२

मैदाने हश्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिही सय्यिदिना मुहम्मदिव्व आलिही व अस्हाबिही अजमईन० अम्मा बअ्दु—

इस दुनिया में जो भी आया, हर एक ने इसको छोड़ कर दूसरी दुनिया का रास्ता लिया यानी अपनी उम्र के सांस पूरी करके मौत की कठिन घाटी को तै करके बर्ज़ख़ में पहुंचा। बर्ज़ख़ में अज़ाब और तक्लीफ़ें भी हैं और आराम व राहत भी है। अपने-अपने आमाल के एतबार से बर्ज़ख़ में अलग-अलग हालात से गुज़रना पड़ता है। दुनिया से जो आता है, बर्ज़ख़ में जगह पाता है, ग़रज यह कि हर आने वाला जाएगा और—

सब ठाठ पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा।

जिस तरह इन्सानों और जिन्नों की उम्रें मुक़र्रर हैं, उसी तरह इस दुनिया की उम्र भी मुक़र्रर है। जब इस दुनिया की उम्र पूरी होगी, अचानक उसके मज्मूए को मौत आ जाएगी, एक-एक आदमी के चले जाने को मौत और पूरी दुनिया के ख़त्म हो जाने को क़ियामत कहते हैं। मौत और ज़िंदगी की हिक्मत बयान फ़रमाते हुए अल्लाह जल्ल शानुहू ने इर्शाद फ़रमाया है।

اَلَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَکُمْ اَیُّکُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ

अल्लज़ी ख ल क़ल मौ त वल हया त लियब्लु व कुम अय्युकुम अहसनु अ म ला०

'जिसने पैदा किया मौत को और ज़िंदगी को, ताकि तुमको जांचा

जाए कि तुममें कौन अच्छे काम करता है।'

यानी मौत व ज़िंदगी का यह सिलसिला इस लिए है कि अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल की जांच करे कि कौन बुरे काम करता है और कौन अच्छे काम करता है और—अच्छे से अच्छा काम करने वाला कौन है? पहली ज़िंदगी में अमल का मौक़ा देकर और काम करने का तरीक़ा बता कर इंसान को इम्तिहान में डाला, फिर दूसरी ज़िंदगी रखी गयी, जिसका एलान पैग़म्बरों की ज़ुबानी साफ़ कर दिया गया कि ऐ इंसानो! तुमको मरना है और मरने के बाद जी उठना है और जी उठ कर पैदा करने वाले व मालिक के हुज़ूर में जवाब देही करना है। सूरः मूमिनून में इंसान की पैदाइश के हालात बयान करने के बाद इर्शाद फ़रमाया—

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝

सुम्म इन्नकुम ब अ् द ज़ालि क ल मय्यितू न सुम्म इन्नकुम यौमल क़ियामति तुब्असून०

'फिर तुम इसके बाद मरोगे, फिर तुम क़ियामत के दिन खड़े किये जाओगे।'

यानी यह ज़िंदगी, ज़िंदगी नहीं है और जीती-जागती मूरत और हंसती-बोलती तस्वीर, देखती-सुनती जान जो तुम को दी गयी है, हमेशा न रहेगी, मौत की घाटी से गुज़र कर एक और ज़िंदगी पाओगे और अपनी उस प्यारी जान को लेकर अल्लाह के हुज़ूर में पेश होकर 'वुफ़्फ़ियत कुल्लु नाफ़्सिम मा अमिलत' का मंज़र देखोगे।

आमाल का बदला मिलना ज़रूरी है, इस पर तमाम अक़्ल वाले एक राय हैं, 'जैसी करनी वैसी भरनी' मशहूर मसल है जो आम व ख़ास हरेक की ज़ुबान पर है। दुनिया में जो काम इंसान करते हैं, उनके फ़ैसले क़ियामत के दिन होंगे। क़ुरआन मजीद में क़ियामत के दिन को 'यौमुद्दीन' (बदले का दिन) और 'यौमुल फ़स्लि' (फ़ैसले का दिन) और 'यौमुल हिसाबि' (हिसाब का दिन) फ़रमाया गया है। उस दिन रिश्तेदार काम न आयेंगे, ताक़त न चलेगी, बेकसी और बेबसी की दुनिया होगी, आमाल पेश होंगे। हर भलाई-बुराई सामने आयेगी। सूरः ज़िल्ज़ाल में फ़रमाया—

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ
ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝

यौ मइज़िय्यस्दुरुन्नासु अश्तातल्लि युरौ अअ् मा ल हुम फमंय्यअ्मल मिस्क़ा ल ज़र्र तिन ख़ैरंय्यर हू व मंय्यअ्मल मिस्क़ा ल ज़र्रतिन

शर्रं य्यरहू०

'उस दिन अलग-अलग जमाअतों में हो जाएंगे ताकि आमाल को देख लें सो जिसने ज़र्रा बराबर नेकी की, वह उसे देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की वह उसे देख लेगा।'

अपने आप अकेले हाज़िरी होगी और पहले के और आख़िर के लोगों में से कोई भी छिप कर कहीं न जा सकेगा। अल्लाह का इर्शाद है—

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ۔ (سورہ مریم)

ल क़ द अह्सा हुम व अद्द हुम अद्दा व कुल्लुहुम आतीहि यौमल क़ियामति फ़र्दा० —सूरः मर्यम

'उसके पास उनकी गिनती है और गिन रखी है उनकी गिनती, और क़ियामत के दिन इनमें से हर एक उसके सामने तंहा आयेगा।'

इंसानों ने जो काम दुनिया में किये थे, उनका अक्सर हिस्सा दुनिया में ही भूल गये थे, फिर आख़िरत में तो क्या याद रखेंगे, लेकिन अल्लाह तआला उनके तमाम आमाल से इत्तिला फ़रमायेंगे। सूरः मुजादला में फ़रमाया—

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا اَحْصٰىهُ
اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۔

यौ म यब् असु हुमु ल्लाहु जमीअन फ़ युनब्बिउ हुम बिमा अमिलू अह्सा हु ल्लाहु व नसूहु०

जिस दिन अल्लाह तआला इन सब को दोबारा ज़िंदा करेगा तो फिर उनका सब किया हुआ उनको जता देगा, अल्लाह ने वह महफ़ूज़ कर रखा है और वे भूल गये।'

रहा यह सवाल कि नेकियों और बुराइयों का बदला क़ियामत के दिन पर उधार क्यों रखा है, मरते के साथ ही क़ब्र में क्यों फ़ैसला नहीं हो जाता तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआला हिक्मत वाला और जानने वाला है। उनकी हिक्मत चाहती है कि फ़ैसलों और बदलों के लिए क़ियामत के दिन का इंतिज़ार किया जाए। अल्लाह जल्ल शानुहू के इल्म में तो (ख़ुदा ही बेहतर जाने) कितनी मस्लहतें और हिक्मतें होंगी, सरसरी नज़र में जो (मस्लहत) हमारी समझ में आती है, वह यह है कि इस दुनिया में इन्सान का ताल्लुक़ इन्सान से भी है और इसके अलावा दूसरी मख़्लूक़ से भी है और इंसान को अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म दिया गया है कि सारी मख़्लूक़ से अच्छा बर्ताव रखे

और अच्छा व्यवहार करे, किसी पर जानी या माली ज़ुल्म न करे, मख़्लूक़ के मख़्लूक़ पर जो हक़ हैं, खुले तौर पर पाक शरीअत ने उनसे आगाह (सूचित) फ़रमा दिया है, फिर यह कि इंसान के ज़िम्मे न सिर्फ़ मख़्लूक़ के हक़ हैं, बल्कि अल्लाह तआला के हक़ भी हैं, उनकी तफ़्सील भी पाक शरीअत में मौजूद है, उसके साथ दूसरी बात यह भी ज़ेहन में रख लीजिए कि नेक अमल और बुरे अमल दोनों की दो क़िस्में हैं, एक वे अमल कि जो अमल करते ही ख़त्म हो जाते हैं और उन को कर लेने के बाद इंसान अज़ाब या सवाब का हक़दार हो जाता है। दूसरे वह अमल कि जो वजूद में आते ही ख़त्म नहीं होते, बल्कि उनका असर बराबर जारी रहता है और उस अमल की वजह से उस अमल का करने वाला बराबर ज़्यादा से ज़्यादा सवाब या अज़ाब का हक़दार होता चला जाता है, जैसे किसी शख़्स ने लिख कर या बोल कर तब्लीग़ (प्रचार) की और उसके असर से दुनिया में नेकियां जारी हैं या किसी ने कुवां खुदवा दिया है या सराय बनवा दी है या और कोई ऐसा काम कर दिया है, जिसका नफ़ा और असर बराबर जारी है, तो बहरहाल उसका सवाब भी चालू है, वह मर भी जाएगा, तब भी उसका सवाब चालू रहेगा। इसके ख़िलाफ़ अगर किसी ने कोई गुनाह का काम चालू किया या किसी को गुनाह का रास्ता बता दिया या कोई ऐसी किताब लिख दी जो इंसानों को गुनाहों पर उभारती रहती है या और कोई ऐसा काम कर दिया जिसकी वजह से गुनाह बराबर जारी हैं तो बहरहाल उसके आमाल नामे में गुनाह बढ़ते रहेंगे और ज़्यादा से ज़्यादा अज़ाब का हक़दार होता रहेगा इससे यह भी साफ़ हो गया कि जिस तरह दुनिया में इंसान के आमाल का खाता बराबर लिखा जाता रहता है, इसी तरह मरने के बाद भी उसके आमाल में (अच्छे हों या बुरे) बढ़ती होती रहती है।

कहने का मतलब यह है कि—

जब कि क़ब्र (यानी बर्ज़ख़ की दुनिया) भी अमल का घर है और आख़िरत में जिन आमाल की वजह से अज़ाब या सवाब मिलता है, वह अब भी उसके आमाल नामे में जारी हैं (चाहे उसने किये हों या वह उन के करने की वजह बन गया हो) कैसे दे दिया जाए और आख़िरी फ़ैसला किस तरह हो ? फिर चूंकि बंदे के हक़ों के फ़ैसले भी होना ज़रूरी हैं, इसलिए भी क़ियामत के दिन पर फ़ैसला रखा गया, क्योंकि बर्ज़ख़ की दुनिया में तमाम हक़दार मौजूद न होंगे, हर आदमी की मौत का वक़्त

अलग-अलग है, बर्ज़ख़ की दुनिया में यह आज पहुंचा है और जिसने उस पर ज़ुल्म किया था वह दस वर्ष बाद वहां पहुंचेगा और जिन लोगों पर उसने ज़ुल्म किया है, वह बीस वर्ष बाद दुनिया से रुख़्सत होकर बर्ज़ख़ में जगह पाएंगे। इंसाफ़ का तक़ाज़ा है कि मुद्दई और मुद्दआ अलैह दोनों मौजूद हों, तब फ़ैसला किया जाए, ताकि ग़ायबाना फ़ैसला करने पर मुद्दई यह एतराज़ न कर सके कि मेरा हक़ कम दिलाया गया और मुद्दआ अलैह यों न कह सके कि मेरे ख़िलाफ़ डिग्री देना उस वक़्त सही होता जब कि मुद्दई मौजूद होता, क्या मुम्किन न था कि मुद्दई माफ़ कर देता।

इसलिए—

हिक्मत व मस्लहत का तक़ाज़ा यह हुआ कि एक ऐसी तारीख़ फ़ैसलों और बदलों के लिए मुक़र्रर कर दी जाए, जिसमें सब हाज़िर हों और जिस में हर क़िस्म के आमाल (चाहे ख़ुद किए हों या वास्ते के साथ बंदे के आमालनामे में लिखे गये हों) ख़त्म हो चुके हों, ताकि सबके सामने फ़ैसला हो और पूरे आमाल का पूरा बदला दिया जाए। इसी तारीख़ को क़ियामत का दिन कहते हैं। क़ियामत के दिन यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी और हर क़िस्म के अमल और अमल के सिलसिले ख़त्म हो जाएंगे और तमाम अगले व पिछले लोग ज़िंदा करके हाज़िर किये जाएंगे और उस दिन फ़ैसले होंगे और बदले मिलेंगे।

बाक़ी रहा यह सवाल कि इस दुनिया में क्यों फ़ैसले नहीं होते और बदले क्यों नहीं मिलते, तो इसका जवाब यह है कि एक तो यह दुनिया अमल की जगह है, इसमें इम्तिहान के लिए आते हैं, अमल की जगह अमल का बदला मिलने लगे तो ग़ैब पर ईमान न रहे और इम्तिहान का मक़्सद बेकार हो जाए, फिर यह कि अमल बराबर जारी हैं, नेकियों से बहुत से गुनाह (छोटे) माफ़ होते रहते हैं और तौबा करने का भी मौक़ा है, इस लिए यह मुनासिब और सही है कि इस ज़िंदगी के बाद दूसरी ज़िंदगी में फ़ैसले हों और बदले दिए जाएं। क़ियामत का दिन जब ख़त्म होगा और सबके फ़ैसले हो जाएंगे तो हर एक अपने-अपने अंजाम के मुताबिक़ दोज़ख़ या जन्नत में पहुंचेगा, वे गुनाहगार मोमिन जो बुरे आमाल की वजह से दोज़ख़ में जाएंगे, बाद में जब अल्लाह जल्ल शानुहू की मंशा होगी, दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे, लेकिन जन्नत से निकाल कर किसी को किसी दूसरी जगह न भेजा जाएगा। क़ियामत के फ़ैसले के बाद जन्नत का फ़ैसला हो जाना ही सच्ची कामियाबी है। क़ुरआन शरीफ़ में है—

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ (آلِ عمران)

कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौति व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ न उजूर कुम यौमल क़ियामति फ मन ज़ुह्ज़ि ह अनिन्नारि व उद्खिलल जन्न त फ़ क़ द फ़ा ज़ व मल हयातुद्दन्या इल्ला मताउल ग़ुरूरि० —आले इम्रान

'हर जान मौत को चखने वाली है और तुमको पूरे बदले क़ियामत के दिन दिए जाएंगे। पस जो शख़्स दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, सो वह पूरा कामियाब हुआ और दुनिया की ज़िंदगी धोखे की पूंजी के सिवा कुछ भी नही है।'

इंसान के आमाल का बदला जो दोज़ख़ या जन्नत की शक्ल में मिलेगा और उसके आमाल के फ़ैसले जो क़ियामत के दिन होंगे, उनके हालात और तफ़्सीलात क़ुरआन व हदीस में ख़ूब खोल कर बयान किये गये हैं। मुसलमानों के अलावा दूसरी क़ौमों में भी मरने के बाद अमल का बदला मिलने के बारे में कुछ बातें मिलती हैं, लेकिन इनकी कोई सही बुनियाद नहीं, जिसकी वजह यह है कि उन बातों को उन्होंने अपनी अटकल से तज्वीज़ कर लिए हैं जो अल्लाह तआला के रसूलों (सल्लल्लाहु अलैहिम व सल्लम) की तालीमात और उनके बताये अक़ीदों के ख़िलाफ़ हैं। जैसे, कुछ क़ौमों में आवागमन का अक़ीदा चला आ रहा है, जिसे उन लोगों ने अपनी तरफ़ से तज्वीज़ किया है। उन लोगों का ख्याल है कि मरने के बाद इंसान की रूह दूसरे इन्सान या जानवर की योनि में जगह पाकर नया जन्म ले लेती है और हमेशा यही होता रहता है। इस अक़ीदे की वजह यह नहीं है कि ख़ुदा के पैग़म्बरों की बतायी हुई बात को मान कर ऐसा कर रहे हैं, बल्कि इस अक़ीदे के गढ़ने की वजह यह है कि इन लोगों को दुनिया में इन्सानों के अलग-अलग मर्तबे और दर्जे इस तरह नज़र आये कि कोई हाकिम है, कोई मह्कूम (जिस पर हुकूमत को जाए) कोई अमीर है, कोई ग़रीब, कोई ख़ादिम है, कोई मख़्दूम (जिसकी ख़िदमत की जाए) और इसी तरह के अनगिनत फ़र्क़ हैं। इस अलगाव की वजह क्या है? इसका फ़लसफ़ा (दर्शन) उन लोगों की समझ में न आया। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत की तरफ़ रुजू करते तो इस अलगाव की बहुत सी वज्हें मालूम हो जातीं। ख़ुद समझना चाहा, इस लिए समझ न सके। मजबूर होकर यह तज्वीज़ किया

कि पिछले जन्म में जो कर्म किये थे, यह अच्छा या बुरा हाल उसी का नतीजा है। इन नादानों का यह अक़ीदा जो उनका ख़ुद गढ़ा हुआ है, बहुत से पहलुओं से ग़लत है, अगर ग़ौर किया जाए तो सरसरी नज़र में एक बड़ा सवाल और एतराज़ इस अक़ीदे के मान लेने के साथ ही मामूली समझ वाले इंसान की अक़्ल में यह आता है कि अमल का बदला (अज़ाब की हैसियत में) सच में, वही बदला समझा जा सकता है, जिसके बारे में बदला मिलने वाले को उसका इल्म और यक़ीन हो कि मुझे यह आराम या तक्लीफ़ फ़्लां अमल की वजह से मिल रही है, अगर आराम पाने वाले या सज़ा भुगतने वाले को इसका इल्म न हो कि यह आराम या तक्लीफ़ फ़्लां अमल की वजह से है तो उसको बदला कहने का कोई मतलब न हुआ। दुनिया में जो लोग मौजूद हैं, जबकि उनको यह मालूम नहीं कि यह आराम या तक्लीफ़ फ़्लां जगह के लिए फ़्लां अमल की वजह से है तो दुनिया के आराम व राहत या तक्लीफ़ व मुसीबत को किसी पिछले जन्म का नतीजा किस तरह माना जाए? सज़ा भुगतने वाले को जब ही शर्म और पछतावा होगा जबकि उसे यह ख़बर हो कि यह फ़्लां अमल की सज़ा है, काश वह अमल मैं न करता।

बहरहाल हक़ वही है जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया और बताया, उन्होंने जो कुछ फ़रमाया, सही फ़रमाया, जो बताया, अल्लाह की तरफ़ से फ़रमाया, गुमान और अटकल को उन्होंने किसी मतलब का न समझा।

अब मैं क़ुरआन हकीम और नबी सल्ल० के इर्शादात की रोशनी में क़ियामत के हालात तफ़्सील से लिखता हूं, ये हालात हक़ हैं, इनको सच्चा जानो और अपनी आक़बत (अंजाम) की फ़िक्र करो।

क़ियामत का आना ज़रूरी है, कोई माने या माने, वायदा सच्चा है जो होकर रहेगा। जिस वक़्त क़ुरआन करीम नाज़िल होता था उस वक़्त भी क़ियामत के इंकारी थे और आज भी इस साबित सच्चाई के इंकार करने वाले मौजूद हैं। वह्य नाज़िल होते वक़्त जो लोगों को इस बारे में शक व शुब्हे थे, बहुत से मौक़ों पर क़ुरआन शरीफ़ में उनके जवाब दिए गये हैं। नीचे कुछ आयतें इसी से मुतालिक़ लिखी जाती हैं। सूरः यासीन में फ़रमाया—

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ۗ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ؕ

व ज़ र ब लना म स लंव्व नसि य ख़ल्क़हू क़ा ल मंय्युह्यि ल्

अ्ज़ा म व हि य रमीम०

'और बयान की (इंसान ने) हमारे लिए मिसाल और भूल गया अपनी पैदाइश को, कहने लगा कौन हड्डियों को ज़िंदा करेगा, जबकि वह खोकरी हो गयी होगी।'

इस आयत में इंसान की ना-मुनासिब बात की शिकायत की गयी है कि देखो वह ख़ुदा पर भी जुम्ले चस्पां करता है और कहता है कि मियां, गली-सड़ी हड्डियों को कौन ज़िंदा करेगा? बस ये सब कहने की बातें हैं। ऐसा सवाल करते वक़्त इंसान अपनी पैदाइश को भूल जाता है, अगर उसे अपनी पैदाइश का ख़्याल होता और इस बात को भूल न जाता कि उसकी पैदाइश एक ज़लील क़तरे (बूंद) से है तो अल्लाह जल्ल शानुहू के बारे में ऐसे लफ़्ज़ कहने में कुछ तो शर्म खाता और अक़्ल से काम लेता तो इस सवाल का जवाब भी अपनी पैदाइश में ग़ौर करने से पा लेता। आगे इस सवाल का तफ़्सीली जवाब देते हुए फ़रमाया—

قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِىْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ ۙ

क़ुल युह्यीहल्लज़ी अन्शअ हा अव्व ल मर्रतिन वहु व बिकुल्लि खल्क़िन अलीम०

'आप फ़रमा दीजिए कि इन हड्डियों को वही ज़िंदा करेगा जिसने इनको पहली बार पैदा फ़रमाया था और वह सब बनाना जानता है।'

यानी जिसने पहली बार हड्डियों को वजूद बख़्शा और उनमें जान डाली, वही दोबारा उनको ज़िंदगी बख़्शेगा, वह पूरी क़ुदरत रखता है, उसके लिए सब कुछ आसान है, बदन के अंश और हड्डियों के कण जहां कहीं भी बिखरे हों उनका एक-एक कण उसके इल्म में है, वह हर तरह बनाने पर क़ुदरत रखता है। सोचना चाहिए कि जिसने नुत्फ़े (वीर्य) को बहुत-से हालात से गुज़ार कर जीती-जागती तस्वीर देकर रूह डाल दी, भला उसके लिए यह कैसे मुम्किन है कि वह मुर्दों को जिंदा न कर सके।

اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِىَ الْمَوْتٰى ۔

अ लै स ज़ालिक बिक़ादिरिन अला अंय्युह्यियल मौता०

इंसानी समझ का तक़ाज़ा तो यह है कि पहली बार अदम (न होना) से वजूद बख़्शने के बाद दोबारा ज़िंदगी देना आसान है। सूरः रूम में फ़रमाया—

وَهُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ

व हुवल्लज़ी यब्द उलख़ल्क़ सुम्म युअीदुहू वहु व अह्वन अलैहि०

'और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर उसको दोबारा पैदा कर देगा और यह (दोहराना) इसके लिए (पहली बार पैदा करने से) ज़्यादा आसान है।

यानी तुम ख़ुद ही समझ लो कि जिसने पहली बार बिना मिसाल, नक़्शे और ख़ाके के वजूद बख़्श दिया, वह दोबारा पैदा करने पर क्योंकर क़ुदरत न रखेगा, गो इसके लिए पहली पैदाइश और दूसरी पैदाइश सब बराबर है।' लेकिन तुम्हारी समझ के एतबार से पहली बार पैदा करने से दूसरी बार दोहरा देना आसान होना चाहिए। यह अजीब बात है कि जिसने पहली बार वजूद बख़्शा वह मौत देकर दोबारा ज़िंदा न कर सके, कुछ तो समझो। सूरः अह्क़ाफ़ में फ़रमाया—

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْىَ
بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِىَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۔

अ व लम यरौ अन्नल्ला हल्लज़ी ख ल क़स्स मावाति वल् अर्ज़ व लम यअ्‌य बिख़ल्क़िहिन्न बिक़ादिरिन अला अंय्युह्यियल मौता बला-इन्नहू अला कुल्लि शैइन क़दीर०

'क्या नहीं देखते कि वह अल्लाह जिसने बनाये आसमान व ज़मीन और उनके बनाने से वह थका नहीं, वह क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िंदा कर दे ज़रूर! वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।'

यानी जिसने आसमानों और ज़मीन जैसी बड़ी-बड़ी चीज़ें सिर्फ़ अपनी क़ुदरत से फ़रमा दीं, क्या इस पर क़ुदरत नहीं रखता कि मुर्दों को ज़िंदा करे। बिला शुबहा इस पर वह ज़रूर क़ादिर (क़ुदरत रखने वाला) है। सूरः हाम-मीम सज्दा में फ़रमाया—

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ
اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِىْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْىِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيْرٌ ۔

व मिन आयाति ही इन्न क तरल अर्ज़ ख़ाशिअतन फ़ इज़ा मा अन्ज़ल्ना अलैहल मा अह तज़्ज़त व रबत इन्नल्लज़ी अह्याहा ल मुह्यिल

१. बुख़ारी

मौता व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर०

'और बहुत सी इसकी निशानियों में से एक यह है कि तू ज़मीन को देखता है, दबी पड़ती है, फिर जब हम इस पर पानी बरसाते हैं वह उभरती है। बेशक जिसने इस ज़मीन को ज़िंदा कर दिया है, वही मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है। बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है।'

यानी जिस ख़ुदावन्द करीम ने इस ज़मीन को ज़िंदा कर दिया वही मुर्दों के जिस्मों में दोबारा जान डाल देगा।

एक बार एक सहाबी रज़ि० ने हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला मख़्लूक़ को कैसे दोबारा ज़िंदा फ़रमायेगा और (मौजूदा) मख़्लूक़ में इसकी क्या नज़ीर (मिसाल) है? इस पर आंहज़रत सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्या ऐसा नहीं हुआ कि तुम अपनी क़ौम के जंगल पर उस वक़्त नहीं गुज़रे जबकि ज़मीन सूखी हुई थी, फिर दोबारा उस वक़्त गुज़रे जबकि वह हरी-भरी होकर लहलहाती हुई थी? उन्होंने अर्ज़ किया कि जी हां, ऐसा तो हुआ है। प्यारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि यही अल्लाह की निशानी है उसकी मख़्लूक़ में, (यानी मौत के बाद ज़िन्दा करने की एक नज़ीर है) इसी तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िंदा फ़रमाएगा'[१]।

कुछ जगहों का क़ुरआन मजीद में क़ियामत के इंकारियों का सवाल नक़ल फ़रमाकर उनका जवाब दलील से नहीं दिया, बल्कि क़ियामत क़ायम होने का यक़ीन दिलाने के लिए क़ियामत होने के दावे को दोहरा दिया है। चुनांचे सूरः साफ़्फ़ात में पहले इंकार करने वालों की बात नक़ल फ़रमायी, फिर जवाब में दावे को दोहरा दिया। चुनांचे इर्शाद है—

ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ءَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝ أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝
قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ ۝ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ
يَنظُرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي
كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝

अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्व इज़ामन अ इन्ना लमब ऊसू न अ व आबाउनल अव्वलू न क़ुल न अम व अन्तुम दाख़िरून फ़ इन्नमा हिय ज़जरतुव्वाहिदतुन फ़ इज़ा हुम यन्ज़ुरून व क़ालू या वैलना हाज़ा यौमुद्दीनि

१. मिश्कात शरीफ़.

हाज़ा यौमुल फ़स्लिल्लज़ी कुन्तुम बिही तुकज़्ज़िबू न०

'क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां ही हड्डियां हो गये तो क्या हम उठाये जाएंगे? क्या हमारे अगले बाप-दादे भी उठाये जाएंगे? आप फ़रमा दीजिए कि हां, (तुम उठाये जाओगे) और ज़िल्लत की हालत में होगे और कहेंगे कि हाय! हमारी ख़राबी!! यह आ गया बदले का दिन! (जवाब मिलेगा कि) यह है दिन फ़ैसले का जिसको तुम झुठलाते थे।'

सूरः सबा में इर्शाद फ़रमाया—

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ
مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ
جِنَّةٌ ۝ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ
الْبَعِيدِ ۝

व क़ालल्लज़ी न क फ़ रू हल नदुल्लुकुम अला रजुलिन युनब्बि-उकुम इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम कुल्ल मुमज़्ज़क़िन इन्नकुम लफ़ी ख़ल्क़िन जदीद० अफ़्तरा अलल्लाहि कज़िबन अम बिही जिन्नतुन बलिल्लज़ी न ला युअमिनू न बिल आख़िरति फ़िल अज़ाबि वज़्ज़लालिल बईद०

'और कहने लगे काफ़िर क्या हम बतलाएं तुम को एक मर्द जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम फट कर ज़रा-ज़रा से रेज़े (कण) हो जाओगे, तुमको फिर नये सिरे से बनना है, क्या बना लाया है अल्लाह पर झूठ, या उसको जुनून है? कुछ भी नहीं, लेकिन जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, आफ़त में हैं और गुमराही में दूर जा पड़े हैं।

हासिल यह है कि क़ियामत हक़ है। अल्लाह तआला की जब मंशा होगी, सूर फूंक दिया जाएगा, क़ियामत आ मौजूद होगी, तो कोई भी उसका झुठलाने वाला न होगा, उसके आने का वक़्त अल्लाह तआला के इल्म में मुक़र्रर है। लोगों के एतराज़ करने से अल्लाह तआला वक़्त से पहले ज़ाहिर न फ़रमायेंगे। सूरः सबा में यह भी इर्शाद है—

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُل لَّكُم مِّيعَادُ
يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ۝

व यक़ूलू न मता हाज़ल् वअ़्दु इन कुन्तुम सादिक़ीन क़ुल लकुम मीआदु यौमिल्ला तस्ताख़िरू न अन्हु साअतंव्व ला तस्तक़्दिमू न०

'और वे कहते हैं कि यह वायदा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे

हो। आप कह दीजिए कि तुम्हारे लिए वायदा है, एक दिन का, न एक घड़ी इससे लेट किये जाओगे और न पहले।'

क़ियामत की निशानियां इस ना-चीज़ ने एक किताब में जमा कर दी हैं जो 'रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशीन गोइयां' के नाम से छप चुकी हैं, इसलिए क़ियामत की निशानियों को उसी में पढ़ लें। अब उन लोगों का मुख्तसर हाल लिख कर जिन पर क़ियामत क़ायम होगी, क़ियामत के हालात लिखना शुरू करता हूं।

وَاللّٰهُ وَلِيُّ التَّوْفِيْقِ وَهُوَ خَيْرُ مُعِيْنٍ وَّخَيْرُ رَفِيْقٍ

वल्लाहु वलीयुत्तौफ़ीक़ि व हु व ख़ैरु मौनिन व ख़ैरु रफ़ीक़िन॰

क़ियामत किन लोगों पर कायम होगी?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत सबसे बुरी मख्लूक़ पर क़ायम होगी, यह भी इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम न होगी जब तक ज़मीन में अल्लाह-अल्लाह किया जाता रहेगा, यह भी इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत किसी ऐसे शख्स पर क़ायम न होगी जो अल्लाह अल्लाह कहता होगा।'

एक लम्बी हदीस में है कि (चूंकि किसी मुसलमान की मौजूदगी में क़ियामत क़ायम न होगी, इसलिए दुनिया के इसी दिन व रात के होते हुए) अचानक अल्लाह तआला एक उम्दा हवा भेज देंगे जो मुसलमानों की बग़लों में लगकर हर मोमिन और मुस्लिम की रूह क़ब्ज़ कर लेगी और सबसे बुरे लोग बाक़ी रह जाएंगे जो (सबके सामने बे-हयाई से) गधों की तरह औरतों से ज़िना करेंगे।'

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से रिवायत है कि प्यारे नबी सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि दज्जाल को क़त्ल करने के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सात वर्ष लोगों में रहेंगे, इस दौर में दो आदमियों के बीच ज़रा दुश्मनी न होगी, फिर अल्लाह तआला मुल्क शाम की तरफ़ से एक ठंडी हवा भेज देंगे, जिसकी वजह से तमाम मोमिन खत्म हो जाएंगे (और) ज़मीन पर कोई भी ऐसा शख्स बाक़ी न रहेगा, जिसके दिल में ख़ैर का (या फ़रमाया ईमान का) कोई ज़र्रा होगा, यहां तक कि अगर तुम

१. मुस्लिम शरीफ़, २. मिश्कात शरीफ़,

(मुसलमानों में से) कोई शख्स किसी पहाड़ के अन्दर (खोह में) दाखिल हो जाएगा, तो वह हवा वहां भी दाखिल होकर उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेगी।

इसके बाद सबसे बुरे लोग रह जाएंगे (जो बुरे करतूतों और शरारत की तरफ़ बढ़ने में) हल्के परिंदों की तरह (तेज़ी से उड़ने वाले) होंगे और (दूसरों का खून बहाने और जान लेने में) दरिंदों जैसे अख्लाक़ वाले होंगे, न भलाई को पहचानते होंगे, न बुराई को बुराई समझते होंगे, उनका यह हाल देखकर इंसानी शक्लों में शैतान उनके पास आकर कहेगा कि (अफ़सोस ! तुम कैसे हो गये) तुम्हें शर्म नहीं आती (कि अपने बाप-दादों का दीन छोड़ बैठे)। वे उससे कहेंगे कि तू ही बता हम क्या करें ? इसलिए वे उनको बुत परस्ती की तालीम देगा (और वे बुत की पूजा करने लगेंगे) वे इसी हाल में होंगे (यानी क़त्ल व खून, बिगाड़-फ़साद और बुत परस्ती में पड़े होंगे) और उनको खूब रोज़ी मिल रही होगी और अच्छी ज़िंदगी गुज़र रही होगी कि सूर फूंक दिया जाएगा। सूर की आवाज़ सब ही सुनेंगे, जो-जो सुनता जाएगा (डर की वजह से, हैरान होकर) एक तरफ़ को गरदन झुका देगा और दूसरी तरफ़ को उठा देगा।

फिर फ़रमाया कि सबसे पहले जो शख्स उसकी आवाज़ सुनेगा, वह होगा जो ऊंटों को पानी पिलाने का हौज़ लीप रहा होगा, यह शख्स सूर की आवाज़ सुनकर बेहोश हो जाएगा और फिर सब लोग बे-होश हो जाएंगे, फिर खुदा एक बारिश भेजेगा जो ओस की तरह होगी, उससे आदमी उग जाएंगे (यानी क़ब्रों में मिट्टी के जिस्म बन जाएंगे) फिर दोबारा सूर फूंका जाएगा तो अचानक सब खड़े देखते होंगे, इसके बाद एलान होगा कि ऐ लोगो ! चलो अपने रब की तरफ़ और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) इनको ठहराओ। इनसे सवाल होगा, फिर एलान होगा कि (इस सारे मज्मे से) दोज़खियों को अलग कर दो। इस पर पूछा जाएगा (अल्लाह जल्ल शानुहू से) कि किस तायदाद में से कितने दोज़खी निकाले जाएं, जवाब मिलेगा कि हर हज़ार में ९९९ दोज़खी निकालो, इसके बाद आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह वह दिन होगा कि जिसके डर और दहशत से, बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और यह दिन बड़ा ही मुसीबत का होगा।'

इन हदीसों से मालूम हुआ कि क़ियामत क़ायम होने के वक़्त कोई

१. मुस्लिम शरीफ़,

मुसलमान दुनिया में मौजूद न होगा, इस बड़ी मुसीबत से अल्लाह तआला इन इंसानों को बचाये रखेंगे, जिनके दिल में ज़रा-सा भी ईमान होगा।

क़ियामत की तारीख़ की ख़बर नहीं दी गयी

अल्लाह तआला ही जानते हैं कि क़ियामत कब आयेगी। क़ुरआन शरीफ़ में बताया गया है कि क़ियामत अचानक आ जाएगी, बाक़ी उसकी मुक़र्ररा तारीख़ की ख़बर नहीं दी गयी। एक बार हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने इंसानी शक्ल में आकर मज्लिस में हाज़िर लोगों की मौजूदगी में प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा कि क़ियामत कब क़ायम होगी, तो उनके इस सवाल के जवाब में प्यारे नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि—

مَا الْمَسْئُوْلُ عَنْهَا بِاَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ (بخاری ومسلم)

मल् मस् ऊलु अन्हा बि अअ्लम मिनस्साइलि०

—बुख़ारी व मुस्लिम

'इस बारे में सवाल करने वाले से ज़्यादा उसको इल्म नहीं है जिस से सवाल किया गया है।'

यानी इस बारे में हम और तुम दोनों बराबर हैं, न मुझे उसके क़ायम होने के वक़्त का इल्म है और न तुम को है। एक बार जब लोगों ने प्यारे नबी सल्ल० से पूछा कि क़ियामत कब आयेगी तो अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से हुक्म हुआ—

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَا اِلَّا هُوَ ط ثَقُلَتْ فِى السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ط يَسْئَلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ط

क़ुल इन्नमा अिल्मुहा इन्द रब्बी लायुजल्लीहा लिवक़्तिहा इल्ला हु व सक़ुलत फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ला तातीकुम इल्ला बग़्ततन० यस्अलू न क क अन्नक हफ़ीयुन अन्हा क़ुल इन्नमा अिल्मुहा अिन्दल्लाहि व लाकिन्न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून०

'आप फ़रमा दीजिए कि इसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब ही के पास है, उसके वक्त पर उसको सिवाए अल्लाह तआला के कोई ज़ाहिर न करेगा, आसमान व ज़मीन में बड़ी भारी घटना होगी, वह तुम पर बिल्कुल ही

अचानक आ पड़ेगी, वे आप से इस तरह पूछते हैं जैसे गोया आप उसकी खोज कर चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि उसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

क़ियामत अचानक आ जाएगी

सूरः अंबिया में फ़रमाया—

بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ -

बल तातीहिम बग़्ततन फ़तब्हतुहुम फ़ ला यस्ततीऊन रद्दहा व ला हुम युन्ज़रून०

'बल्कि वह आ जाएगी अचानक उन पर और उनको बद-हवास कर देगी, न उसके हटाने की उनको क़ुदरत होगी और न उनको मोहलत दी जाएगी।'

इस मुबारक आयत से और इससे पहली आयत से मालूम हुआ कि क़ियामत अचानक आ जाएगी, हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल-बत्ता क़ियामत ज़रूर इस हालत में क़ायम होगी कि दो आदमियों ने अपने दर्मियान (ख़रीदने-बेचने के लिए) कपड़ा खोल रखा होगा और अभी मामला तै करने और कपड़ा लपेटने भी न पायेंगे कि क़ियामत क़ायम हो जाएगी (फिर फ़रमाया कि) अल-बत्ता क़ियामत ज़रूर इस हाल में क़ायम होगी कि एक इंसान अपनी ऊंटनी का दूध निकाल कर जा रहा होगा और पी भी न सकेगा और क़ियामत यक़ीनन इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपना हौज़ लीप रहा होगा और अभी उसमें (मवेशियों को) पानी भी न पिलाने पायेगा और वाक़ई क़ियामत इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपने मुंह की तरफ़ लुक़्मा उठायेगा और उसे खा भी न सकेगा।[1]

यानी जैसे आजकल लोग कारोबार में लगे हुए हैं, उसी तरह क़ियामत के आने वाले दिन भी लगे होंगे कि अचानक क़ियामत आ

१. बुख़ारी व मुस्लिम.

पहुंचेगी । जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी, वह जुमे का दिन होगा ।[१] प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सब दिनों से बेहतर जुमा का दिन है, उसी दिन वह जन्नत से निकाले गये और क़ियामत जुमा ही के दिन क़ायम होगी ।[२]

दूसरी हदीस में है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जुमा के दिन क़ियामत क़ायम होगी, हर क़रीबी फ़रिश्ता और आसमान और ज़मीन और पहाड़ और समुद्र, ये सब जुमा के दिन से डरते हैं कि कहीं आज क़ियामत न हो जाए ।[३]

सूर और सूर का फूंका जाना

क़ियामत की शुरूआत सूर फूंकने मे होगी । प्यरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सूर एक सींग है, जिसमें फूका जाएगा ।[४] और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैं मज़े की ज़िंदगी क्यों कर गुज़ारूंगा, हालांकि सूर फूंकने वाले (फ़रिश्ते) ने मुंह में सूर ले रखा है और अपना कान लगा रखा है और माथा झुका रखा है, इस इंतिज़ार में कि कब सूर फूंकने का हुक्म हो ।[५] सूरः मुद्दस्सिर में सूर को नाक़ूर फ़रमाया है, चुनांचे इर्शाद है —

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ۝ فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۝ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ

फ़ इज़ा नुक़िर फ़िन्नाक़ूरि फ़ ज़ालिक यौ म इज़िंय्यौमुन असीरुन अलल्काफ़िरी न ग़ैरु यसीरु०

'फिर जब नाक़ूर (यानी सूर) फूका जायेगा तो वह काफ़िरों पर एक सख़्त दिन होगा जिसमें कुछ आसानी न होगी ।'

सूरः ज़ुमर में इर्शाद फ़रमाया—

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنظُرُونَ

१. यह जो मशहूर है कि क़ियामत मुहर्रम की दसवीं तारीख को क़ायम होगी, किसी हदीस से साबित नहीं है । मज्मउल बिहार में इसको मौज़ूअ यानी गढ़ी हुई बातों में गिना है ।

२. मुस्लिम शरीफ़, ३. मिश्कात शरीफ़, ४. मिश्कात शरीफ़,

५. मिश्कात शरीफ़,

व नुफ़ि ख फ़िस्सूरि फ़ सअ़ि क़ मन फ़िस्समावाति व मन फ़िल अर्ज़ि इल्ला मन शाअल्लाहु सुम्म नुफ़ि ख फ़ीहि उख़रा फ़ इज़ा हुम क़िया-मुंय्यन्ज़ुरून०

'और सूर में फूंका जाएगा, सो बेहोश हो जाएंगे, जो भी आसमानों और ज़मीन में हैं सिवाए उनके जिनका होश में रहना अल्लाह चाहें फिर दोबारा सूर में फूंका जाएगा तो वह फ़ौरन खड़े हो जाएंगे हर तरफ़ देखते हुए ।'

क़ुरआनी आयतों और नबी की हदीसों में दो बार सूर फूंके जाने का ज़िक्र है, पहली बार सूरफूंका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएंगे (इल्ला मन शाअल्लाहु) फिर ज़िंदे तो मर जाएंगे और जो मर चुके थे उनकी रूहों पर बेहोशी की हालत पैदा हो जाएगी, इसके बाद दोबारा सूर फूंका जाएगा तो मुर्दों की रूहें उनके बदनों में वापस आ जाएंगी और जो बेहोश थे उनकी बेहोशी चली जाएगी और क़ायदा हो जाएगा, उस वक़्त का अजीब व ग़रीब हाल देखकर सब हैरत से तकते होंगे और अल्लाह के दरबार में पेशी के लिए तेज़ी के साथ हाज़िर किए जाएंगे । सूरः यासीन में फ़रमाया—

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ۝ قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۝ إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝

व नुफ़ि ख फ़िस्सूरि फ़ इज़ाहुम मिनल अज्दासि इला रब्बिहिम यन्सिलू न क़ालू यावैलना मम ब अ स ना मिम मर्क़िदना हाज़ा मा व अ दर्रहमानु व स द क़लमुर्सलू न कानत् इल्ला सैहतंव्वाहिदतन फ़ इज़ा हुम जमीअुल्लदैना मुह्ज़रून०

'और सूर में फूंका जाएगा, बस अचानक, वह अपने रब की तरफ़ जल्दी-जल्दी फैल पड़ेंगे, कहेंगे कि हाय हमारी ख़राबी, किसने हम को उठा दिया हमारे लेटने की जगह से, (जवाब मिलेगा कि) यह वह माजरा है जिसका रहमान ने वायदा किया है और पैग़म्बरों ने सच्ची ख़बर दी, बस एक चिंघाड़ होगी, फिर उसी वक़्त वे सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएंगे ।'

यानी कोई न छिप सकेगा न छिप कर जा सकेगा, सब अल्लाह के हुज़ूर में मौजूद कर दिए जाएंगे ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया कि प्यारे नबी सल्ल० ने पहली बार और दूसरी बार सूर फूंकने की दर्मियानी दूरी बताते हुए चालीस का अदद फ़र्माया। मौजूद लोगों ने हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि क्या चालीस ? चालीस दिन या चालीस माह या चालीस साल। आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने क्या फ़रमाया ? इस सवाल के जवाब में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ला-इल्मी ज़ाहिर की और फ़रमाया कि मुझे ख़बर नहीं (या याद नहीं) कि आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सिर्फ़ चालीस फ़रमाया या चालीस साल या चालीस दिन फ़रमाया। दोबारा सूर फूंके जाने के बाद फिर अल्लाह तबारक व तआला आसमान से पानी बरसा देंगे, जिसकी वजह से लोग (क़ब्रों से) उग जाएंगे जैसे (ज़मीन से) सब्ज़ी (उग जाती है)। यह भी फ़रमाया कि इंसान के जिस्म की हर चीज़ गल जाती है यानी मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जाती है सिवाए एक हड्डी के कि वह बाक़ी है, क़ियामत के दिन उसी से जिस्म बना दिए जाएंगे, यह हड्डी रीढ़ की हड्डी है।'[1]

सूरः ज़ुमर की आयत में यह जो फ़रमाया कि सूर फूंके जाने से सब बेहोश हो जाएंगे, सिवाए उनके जिनको अल्लाह चाहे, इसके बारे में तफ़्सीर लिखने वालों के कुछ क़ौल हैं, किसी ने फ़रमाया कि शहीद मुराद हैं, किसी ने कहा कि जिब्रील व मीकाईल और इस्राफ़ील व इज़्राईल के बारे में फ़रमाया है, किसी ने अर्श उठाने वालों को इस छूट में शामिल किया है, इनके अलावा और भी क़ौल हैं (अल्लाह ही बेहतर जानता है।) मुम्किन है कि बाद में इन पर भी फ़ना छा जाए, जिसे इस छूट में बयान किया जाता है, जैसा कि आयत 'लि मनि ल मुल्कल यौम लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार' की तफ़्सीर में साहिबे मआलिमुल तंज़ील लिखते हैं कि जब मख़्लूक़ के फ़ना हो जाने के बाद अल्लाह तआला 'लि मनिल मुल्कुल यौम' (किस का राज है आज) फ़रमायेंगे, तो कोई जवाब देने वाला न होगा, इसलिए ख़ुद ही जवाब में फ़रमायेंगे, 'लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार' (आज बस अल्लाह ही का राज है जो तंहा है और क़ह्हार[2] है)

यानी आज के दिन बस उसी एक हक़ीक़ी बादशाह का राज है,

१. बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि राई के दाने के बराबर रीढ़ की हड्डी बाक़ी रह जाती है, उसी से दोबारा जिस्म बनेंगे। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब,

२. ज़बर्दस्त क़हर वाला,

जिसके सामने हर ताक़त दबी हुई है, तमाम दुनिया की हकूमतें और राज इस वक़्त फ़ना हैं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बेशक लोग क़ियामत के दिन बेहोश हो जाएंगे और मैं भी उनके साथ बेहोश हो जाऊंगा, फिर सबसे पहले मेरी ही बेहोशी दूर होगी तो अचानक देखूंगा कि मूसा (पैग़म्बर अलैहिस्सलातु वस्सलामु) अर्शे इलाही को एक तरफ़ पकड़े खड़े हैं, मैं नहीं जानता कि वह बेहोश होकर मुझ से पहले होश में आ चुके होंगे या उन पर बेहोशी आयी ही न होगी और वे उनमें से होंगे जिनके बारे में अल्लाह का इर्शाद है 'इल्ला मन शा-अल्लाहु' है।

—मिश्कात शरीफ़

कायनात का बिखर जाना

सूर फूंके जाने से न सिर्फ़ ये इंसान मर जाएंगे बल्कि कायनात का निज़ाम[2] ही टूट-फूट कर बिखर जाएगा, आसमान फट जाएगा, सितारे झड़ जाएंगे और और बे-नूर हो जाएंगे, चांद व सूरज की रोशनी ख़त्म कर दी जाएगी, ज़मीन हमवार मैदान बन जाएगी, पहाड़ उड़ते फिरेंगे।

नीचे की आयतों व हदीसों से ये बातें साफ़-साफ़ ज़ाहिर हो रही हैं।

पहाड़ों का हाल

अल्लाह का इर्शाद है—

اَلْقَارِعَةُ مَا الْقَارِعَةُ وَمَا اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ
كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ

अल् क़ारिअ़ तु मल् क़ारि अ़ तु व मा अद्रा क मल क़ारि अः यौ म यकूनुन्नासु कल्फ़ राशिल मब्सूसि व तकू नुल जिबालु कल् अ़िह्निल मन्फ़ूशि०

'वह खड़खड़ाने वाली, क्या है वह खड़खड़ाने वाली और तू क्या

२. व्यवस्था,

समझा, क्या है वह खड़खड़ाने वाली, जिस दिन लोग परवानों की तरह और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह होंगे।'

'अल् क़ारि अ:' (खड़खड़ाने वाली) क़ियामत को फ़रमाया है, यह नाम इसका इस लिए रखा गया कि वह दिलों को घबराहट से और कानों को सख़्त आवाज़ से खड़खड़ा देगी। उस दिन इंसान परवानों की तरह, बेचैनी के साथ, बद-हवास होकर महशर की तरफ़ जमा होने के लिए चल पड़ेंगे, ऐसे बिखरे हुए अन्दाज़ में चलेंगे कि जैसे परवाने अंधा-धुंध चिराग़ पर गिरते जाते हैं और पहाड़ों का यह हाल होगा कि जैसे धुनिया ऊन या रुई को धुन कर एक-एक फाया उड़ा देता है, उसी तरह पहाड़ बिखर कर उड़ जाएंगे। सूर: मुर्सलात में फ़रमाया—

व इज़ल जिबालु नुसिफ़त॰

'और जब पहाड़ उड़ा दिए जाएंगे'

सूर: नबा में फ़रमाया—

व सुय्यि रतिल जिबालु फ़ कानत सराबा॰

'और चलाये जाएंगे पहाड़ तो हो जाएंगे चमकता हुआ रेत'।

सूर: नहल में फ़रमाया—

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۭ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۭ

व तरल जिबा ल तह्सबुहा जामिदतन व हि य तमुर्रु मर्रस्सहाबि सुन् अल्लाहिल्लज़ी अत्क़ न कुल्ल शैइन॰

'और तू देखे पहाड़ों को यह समझते हुए कि वे जमे हुए हैं, हालांकि वे चलेंगे बादल के चलने की तरह, कारीगरी अल्लाह की, जिसने ठीक किया हर चीज़ को'।

यानी ये बड़े-बड़े पहाड़, जिनको तुम उस वक़्त देख कर यह ख़्याल करते हो कि ये ऐसे जमे हुए हैं कि कभी अपनी जगह से जुंबिश भी न खा सकेंगे, उन पर एक दिन ऐसा आने वाला है कि यह रुई के गालों की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे और बादल की तरह तेज़ रफ़्तार होंगे। अल्लाह ने हिक्मत के मुताबिक़ हर चीज़ को दुरुस्त किया, उसी ने आज पहाड़ों को ऐसा बोझल और भारी और ठहरा हुआ बनाया कि ज़मीन को भी हिलने से रोके हुए हैं।

وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ

व अल्क़ा फ़िल अर्ज़ि र वा सि य अन् तमी द बिकुम॰

'फिर क़ियामत के दिन उन का मालिक और पैदा करने वाला ज़र्रा-ज़र्रा करके उड़ा देगा, यह सब उस कारीगर की कारीगरी है, जिस का कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं।' सूर: वाक़िआ में फ़रमाया—

وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۙ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۙ

व बुस्सतिल जिबालु बस्सन फ़ कानत हबाअम मंबस्सा॰

'और रेज़ा-रेज़ा हो जाएंगे पहाड़, फिर हो जाएंगे उड़ता हुआ ग़ुबार (गर्द-धूल)।'

आसमान व ज़मीन

सूर: ताहा में फ़रमाया—

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ۙ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۙ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ۭ

व यस अलू न क अनिल जिबालि फ़ क़ुल यन्सिफ़ुहा रब्बी नस्फ़न फ़ य ज़ रुहा क़ाअन सफ़सफ़ल्ला तरा फ़ीहा अि व जंव्व ला अम्ता॰

'और वे आप से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि मेरा रब उन को अच्छी तरह उड़ा देगा, फिर ज़मीन को छोड़ देगा चटियल मैदान, न देखेगा तू उसमें मोड़ और टीला।'

यानी क़ियामत के दिन पहाड़ उड़ा दिए जाएंगे और ज़मीन साफ़ और हमवार मैदान बना दी जाएगी, कोई टीला उस पर न रहेगा। सूर: इब्राहीम में फ़रमाया—

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۭ

यौ म तुबद्दलुल अर्ज़ु ग़ैरल अर्ज़ि वस्समावातु व ब र ज़ू लिल्लाहिल वाहि दिल क़ह्हारि॰

'जिस दिन बदल दी जाए इस ज़मीन से दूसरी ज़मीन और बदले जाएं आसमान और लोग निकल खड़े होंगे अल्लाह वाहिद क़ह्हार के सामने।'

इस आयत से मालूम हुआ कि आसमान व ज़मीन क़ियामत के दिन बदल दिए जाएंगे और अपनी इस मौजूदा शक्ल पर बाक़ी न रहेंगे। इस आयत के बारे में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने

ग्रां हज़रत सल्लल्लाहु तग्राला ग्रलैहि व सल्लम से सवाल किया कि जब ग्रासमान व ज़मीन बदले जाएंगे तो उस दिन लोग कहां होंगे ? इसके जवाब में फ़ख़्रे दो ग्रालम सल्लल्लाहु ग्रलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पुल सिरात पर होंगे ।'[1]

इस रिवायत से मालूम होता है कि इस ग्रायत में जो ग्रासमान व ज़मीन के बदले जाने का ज़िक्र है, वह हिसाब-किताब होने के बाद उस वक़्त होगा, जबकि लोग जन्नत या दोज़ख़ में भेजे जाने के लिए पुल सिरात पर पहुंच जाएंगे ।

पहली ग्रायत में जो ज़िक्र हुग्रा कि ज़मीन हमवार ग्रौर साफ़ मैदान कर दी जाएगी, वह हिसाब व किताब शुरू होने से पहले का ज़िक्र है । हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु तग्राला ग्रन्हु से रिवायत है कि ग्रां हज़रत सय्यदे ग्रालम सल्लल्लाहु तग्राला ग्रलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग ऐसी ज़मीन पर जमा किए जाएंगे जिसका रंग सफ़ेद होगा, लेकिन सफ़ेदी का झुकाव मटियाले रंग की तरफ़ होगा । उस वक़्त ज़मीन मैदे की रोटी जैसी होगी, किसी की उसमें निशानी न होगी ।[2]

जब क़ियामत होगी तो ग्रासमान में यह तब्दीली होगी कि उसके सितारे झड़ पड़ेंगे ग्रौर बे-नूर हो जाएंगे ग्रौर चांद-सूरज की रोशनी लपेट दी जाएगी, नीज़ ग्रासमान फट पड़ेगा ग्रौर उसमें दरवाज़े हो जाएंगे । सूरः नबा में फ़रमाया—

يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ط

यौ म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़ तातू न ग्रफ़्वा जंव्व फ़ुतिहतिस्समाऊ फ़कानत ग्रब्वाबा०

'जिस दिन फूंका जाएगा सूरः में तो तुम चले ग्राग्रोगे झुन्ड के झुन्ड ग्रौर खोला जाएगा ग्रासमान तो हो जाएंगे उसमें दरवाज़े ।'

यानी ग्रासमान फट कर ऐसा हो जाएगा कि गोया दरवाज़े ही दरवाज़े हैं ।

सूरः मुर्सलात में है—

व इज़स्समाउ फ़ुरिजत०

'ग्रौर जब ग्रासमान में झरोखे पड़ जाएंगे ।'

सूरः फ़ुर्क़ान में फ़रमाया—

१. मुस्लिम शरीफ़, २. बुख़ारी शरीफ़,

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ٥

व यौ म त शक़्क़क़ु स्समाउ बिल् ग़मामि व नुज़्ज़िलल मलाइकतु, तन्ज़ीला०

'जिस दिन फट जाए ग्रासमान बादल से ग्रौर उतार दिए जाएं फ़रिश्ते लगातार ।'

सूरः हाक़्क़ा में फ़रमाया—

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ

फ़ इज़ा नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि नफ़्ख़तुंव्वाहि दतुन व हुमिलतिल ग्रर्ज़ु वल जिबालु फ़ दुक्कता दक्क तंव्वाहि द तन फ़ यौ म इज़िंव्वं क़ ग्र तिल वा क़िग्रतु वन्शक़्क़ तिस्समाउ फ़ हि य यौम इज़िंव्वाहि य तुव्वंल म ल कु ग्रला ग्रर्जाइ हा व यह्मिलु ग्रर्श रब्बि क फ़ौ क़ हुम यौ म इज़िन समानिय तुन०

'फिर जब सूर में फूंक मारी जाए, एक फूंक ग्रौर उठा दिए जाएं (ग्रपनी जगह से) ज़मीन ग्रौर पहाड़ फिर दोनों एक बार रेज़ा-रेज़ा कर दिए जाएंगे तो उस दिन हो पड़ने वाली हो पड़ेगी (यानी क़ियामत) ग्रौर ग्रासमान फट जाएगा तो वह उस दिन बोदा होगा ग्रौर फ़रिश्ते ग्रासमान के किनारों पर ग्रा जाएंगे ग्रौर ग्रापके परवरदिगार के ग्रर्श को उस दिन ग्राठ फ़रिश्ते उठाये होंगे ।'

जिस वक़्त दर्मियान से ग्रासमान फटने लगेगा तो फ़रिश्ते उस के किनारों पर चले जाएंगे ।

सूरः रह्मान में इर्शाद फ़रमाया—

فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ط

फ़ इज़न शक़्क़तिस्समाउ फ़ कानत वर्दतन कद्दिहानि०

'बस जब ग्रासमान फट जायेगा तो ऐसा लाल हो जाएगा जैसे लाल नरी ।'

ग्रौर सूरः मग्रारिज में फ़रमाया है कि ग्रासमान उस दिन 'मुह्ल' यानी पिघले हुए तांबे की तरह होगा यानी फटने के साथ उस का रंग भी बदल जाएगा ग्रौर लाल हो जाएगा । सूरः तूर में फ़रमाया है कि उस

दिन आसमान कपकपायेगा—

यौ म तमूरुस्समाउ मौरा०

यानी कपकपा कर फट पड़ेगा।

सूरः इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया—

إِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ
وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۔

इज़स्समाउन शक़्क़त व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त व इज़ल अर्जु मुद्दत व अल्क़त मा फ़ीहा व तखल्लत व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त०

'जब आसमान फट जाएगा और अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक़ है और जब ज़मीन खींच कर बढ़ा दी जाएगी और अपने अन्दर की चीज़ों को बाहर डाल देगी और खाली हो जाएगी और अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक़ है।'

आसमान को फटने का और ज़मीन को खींच कर बढ़ जाने और फैल जाने का हुक्म उन के रब की तरफ़ से होगा, दोनों अल्लाह की मख़्लूक़ हैं, मख़्लूक़ को खालिक़ (पैदा करने वाले) का हुक्म सुनना और अमल करना ज़रूरी बात है, ये दोनों भी अल्लाह तआला के हुक्म को पूरा करेंगे और उनको यही लायक़ भी है कि अपने पैदा करने वाले और मालिक के आगे झुक जाएं और फ़रमांबरदारी में तनिक भी कहें-सुनें नहीं।

ज़मीन खींच कर रबड़ की तरह बढ़ा दी जाएगी और इमारत और पहाड़ वग़ैरह सब बराबर कर दिये जाएंगे ताकि एक हमवार बराबर ज़मीन पर सब अगले-पिछले एक साथ खड़े हो सकें और कोई पर्दा-रुकावट बाक़ी न रहे, ज़मीन अपने भीतर की चीज़ों को बाहर डाल देगी और खाली हो जाएगी यानी वह अपने अंदर से खज़ाने और मुर्दे और मुर्दों के हिस्से उगल डालेगी और उन तमाम चीज़ों से खाली हो जाएगी, जिनका ताल्लुक़ बंदों के आमाल का बदला मिलने से होगा।

चांद, सूरज, सितारे

जब सूर फूंका जाएगा, तो चांद, सूरज और सितारे भी अपने हाल पर बाक़ी न रहेंगे। सूरः तक्वीर में फ़रमाया—

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ

इज़श्शम्सु कुव्विरत व इज़न्नुजूमुन क द रत०

'जब सूरज बे-नूर हो जाएगा और जब सितारे टूट कर गिर पड़ेंगे।'

सूरः इन्फ़ितार में फ़रमाया—

إِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۔

इज़स्समाउन्फ़ त रत व इज़ल कवाकिबुन्त स रत०

'जब आसमान फट जायेगा और जब सितारे झड़ पड़ेंगे।'

इन आयतों से आसमान का फटना और सितारों का झड़ कर गिरना ज़ाहिर हुआ। सूरः मुर्सलात में फ़रमाया है कि उस दिन सितारों की रोशनी खत्म कर दी जाएगी, चुनांचे इर्शाद है—

فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ۔

फ़इज़न्नुजूमु तुमिसत०

'सो जब सितारे बे-नूर हो जाएंगे।'

सूरः क़ियामः में फ़रमाया—

يَسْئَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ وَخَسَفَ الْقَمَرُ وَ
جُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ
كَلَّا لَا وَزَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۔

यस्अलु अय्या न यौमुल क़ियामति फ़ इज़ा बरिक़ल ब स रु व ख स फ़ल क़ म रु व जुमिअश्शम्सु वल क़ म रु यक़ूलुल इन्सानु यौम इज़िन ऐनल मफ़र्रु कल्ला ला व ज़ र इला रब्बि क यौम इज़ि-निल-मुस्तक़र्रु०

'पूछता है (इन्सान) कब होगा दिन क़ियामत का, पस जब चुंधियाने लगे आंख और बे-नूर हो जाए चांद और जमा किए जाएं चांद और सूरज, उस दिन कहेगा इन्सान, कहां चला जाऊं भाग कर। हरगिज़ नहीं कहीं, पनाह की जगह नहीं उस दिन सिर्फ़ तेरे रब की तरफ़ जा ठहरना है।'

इन आयतों से साफ़ हो गया कि क़ियामत के दिन चांद भी बे-नूर हो जाएगा। चांद के बे-नूर होने का ज़िक्र फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया, 'व जुमिअश्शम्सु वल क़ म रु' (सूरज और चांद जमा किए जाएंगे) यानी सिर्फ़ चांद ही बे-नूर न होगा, बल्कि बे-नूर होने में दोनों शरीक होंगे, चांद के बे-नूर होने का खास तौर से इस लिए ज़िक्र फ़रमाया कि अरब के लोगों को चांद का हिसाब रखने की वजह से उसका हाल देखने का

ज़्यादा एहतमाम था।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन चांद[1] और सूरज दोनों लपेट दिये जाएंगे।[2] यानी उनकी रोशनी लपेट दी जाएगी, जिसकी वजह से रोशनी न फैल सकेगी, न किसी चीज़ पर पड़ेगी।

बैहक़ी ने किताबुल बअसि वन्नुशूर में हज़रत हसन बसरी रह० से रिवायत की है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद गरामी नकल करते हुए फ़रमाया कि सूरज और चांद बे-नूर करके दो टुकड़े बना कर क़ियामत के दिन दोज़ख में डाल दिए जाएंगे। यह सुन कर हज़रत हसन रह० ने सवाल किया कि इनकी क्या वजह है ? हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान नक़ल कर रहा हूं (इससे ज़्यादा मुझे इल्म नहीं) यह सुन कर हसन रह० खामोश हो गये।[3]

---

१. आसमान, ज़मीन, चांद, सूरज और सितारों के बारे में पुराने फ़लसफ़े और आज की साइन्स के कुछ ख्यालात है। ये सब उन लोगों ने खुद तज्वीज़ कर लिए हैं जिन में तब्दीलियां तज्वीज़ करते रहते हैं। आज एक नज़रिया है, कल दूसरी बात कह देंगे, अटकलों, ख्यालों और गुमानों के चारों तरफ़ इनके नज़रिए घूमते रहते हैं, फिर ताज्जुब यह है कि क़ुरआन व हदीस में इन चीज़ों के पिछले या अगले जो हालात ज़िक्र किये गये हैं, उनके मान लेने में इसलिए झिझकते हैं कि अपने गढ़े हुए नज़रियों के खिलाफ़ नज़र आते हैं, जिसने इन चीज़ों को वजूद बख्शा है, उससे ज़्यादा उसकी मख्लूख का जानने वाला कौन हो सकता है ? बेशक वे लोग बड़े बे-सूझ-बूझ के और हक़ के रास्ते से हटे हुए हैं अल्लाह जो सब का पैदा करने वाला और हर का मालिक है, उसकी खबर को अपने तज्वीज़ किए हुए नज़रियों पर परखते हैं, क़ियामत आने के सिलसिले में दुनिया के बिगड़ने और बदलने के जिन हालात का ज़िक्र क़ुरआन व हदीस में किया गया है, बेशुब्हा सही और हक़ हैं। जो लोग अपने तज्वीज किए हुए नज़रियों की बुनियाद पर क़ुरआन व हदीस को न मानें, खुली गुमराही और खुली नादानी में पड़े हुए हैं। इंय्यत्तबिऊ न इल्लज़्ज़न्न व मा तह्वल अन्फ़ुसु लक़द जा अ हुम मिर्रब्बिहि मुलहुदा०

२. बुख़ारी शरीफ़,

३. मिश्कात शरीफ़,

इंसानों का क़ब्रों से निकलना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि प्यारे नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे पहले ज़मीन फट कर मुझे ज़ाहिर करेगी, फिर अबू बक्र व उमर रज़ि० क़ब्रों से ज़ाहिर होंगे, फिर बक़ीअ (क़ब्रस्तान) में जाऊंगा, इस लिए वे (क़ब्रों से निकल कर) मेरे साथ जमा कर दिए जाएंगे, फिर मैं मक्का वालों का इन्तिज़ार करूंगा, (यहां तक कि वे भी क़ब्रों से निकल कर मेरे साथ हो जाएंगे) फिर मैं हरमैन (वालों) के दर्मियान (महश्र में) जमा हो जाऊंगा।[1]

जो लोग क़ब्रों में दफ़न हैं (मुस्लिम हों या काफ़िर) वे तो दूसरी बार सूर की आवाज़ सुन कर क़ब्रों से निकल खड़े होंगे और जो लोग आग में जला दिये गये या समुद्रों में बहा दिए गये या जिन को दरिंदों ने फ़ाड़ खाया था, उनकी रूहों को भी जिस्म दिया जाएगा और ज़रूर ही वे भी महशर में हाज़िर होंगे।

क़ब्रों में नंगे और बे-ख़त्ना के निकलेंगे

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने प्यारे नबी सल्ल० से सुना कि क़ियामत के दिन लोग नंगे पांव, नंगे बदन, बे-खत्ना के जमा किए जाएंगे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ! क्या मर्द व औरत सब (नंगे होंगे और) एक दूसरे को देखते होंगे। (अगर ऐसा हुआ तो बड़े शर्म की बात होगी) इसके जवाब में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ आइशा रज़ि० ! क़ियामत की सख़्ती इतनी ज़्यादा होगी (और लोग घबराहट और परेशानी से ऐसे बे-हाल होंगे) कि किसी को दूसरे की तरफ़ देखने का ध्यान ही न होगा।[2]

दूसरी हदीस में है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक क़ियामत के दिन तुम नंगे पांव, नंगे बदन, बे-खत्ना जमा किये जाओगे। यह फ़रमा कर क़ुरआन मजीद की आयत 'कमा बदअ् ना अव्वल खल्क़िन नुईदुहू' (हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त शुरूआत की थी, उसको दोबारा इसी तरह लौटाएंगे) तिलावत फ़रमायी, फिर फ़रमाया कि सबसे पहले क़ियामत के दिन

---

१. तिर्मिज़ी शरीफ़, २. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़,

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को कपड़े पहनाये जाएंगे।'

उलेमा ने लिखा है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इस लिए सबसे पहले लिबास पहनाया जाएगा कि उन्होंने सबसे पहले फ़क़ीरों को कपड़े पहनाये थे या इस लिए कि वे अल्लाह तआला की तरफ़ दावत देने की वजह से सबसे पहले नंगे किये गये जबकि काफ़िरों ने उनको आग में डाला था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे पहले जिसको कपड़े पहनाये जाएंगे, वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम होंगे। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि मेरे दोस्त को पहनाओ। चुनांचे जन्नत के कपड़ों में से दो बारीक और नर्म-सफ़ेद कपड़े उनको पहनाने के लिए लाए जाएंगे, उन के बाद कपड़े मुझे कपड़े पहनाये जाएंगे।

क़ब्रों से उठकर मैदाने हश्र के लिए चलना में जमा होने

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग तीन क़िस्म से जमा किये जाएंगे—१. एक जमाअत पैदल, २. दूसरी सवार, ३. तीसरी वह जमाअत होगी जो अपने चेहरों के बल चलेंगे, समाल किया गया कि या रसूलल्लाह! वे लोग चेहरों के बल क्यों कर चलेंगे? जवाब में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जिस ज़ात पाक ने उनको क़दमों पर चलाया, वह इस पर क़ुदरत रखता है कि उनको चेहरों के बल चला दें, फिर फ़रमाया कि खबरदार वे (चेहरों के बल इस तरह चलेंगे) कि ज़मीन के उभरे हुए हिस्से और कांटों तक से अपने चेहरों के ज़रिए बचाव करेंगे।'

यह हाल काफ़िरों का होगा, चूंकि इन ना-लायक़ों ने दुनिया में अपने चेहरे को खुदा के हुज़ूर में रखने से मुंह फेरा और घमंड की वजह से सज्दे में सर रखने से इन्कार किया, इस लिए क़ियामत के दिन उनके चेहरों से उनको पांव का काम दिलाया जाएगा ताकि खूब ज़लील हों और चेहरों के पैदा करने वाले और मालिक को सज्दा करने से जो इन्कार किया था, उसका मज़ा चख लें। अल्लाह तआला को सब कुछ क़ुदरत है,

---

१. बुखारी व मुस्लिम शरीफ़, २. तिर्मिज़ी शरीफ़,

वह अपनी मख़्लूक़ के जिस्म के हर हिस्से को उसकी हर खिदमत में इस्ते-माल फ़रमा सकते हैं। दुनिया ही में देख लिया जाए कि कुछ चीज़ें चार पैरों पर और कुछ दो पैरों पर चलती हैं और कुछ सिर्फ़ अपने पेट से (फ़ मिन्हुम मंय्यम् शी अला बत्निही) वे लोग जिनके एक हाथ हैं, वे उसी एक हाथ से दोनों हाथों का कामकर लेते हैं, जो लोग अंधे होते हैं, उनकी सुनने और महसूस करने की ताक़त अक्सर तेज़ होती हैं, जिनसे बड़ी हद तक आंख न होने की कमी दूर हो जाती है, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला काफ़िरों को चेहरे के बल चलायेंगे, यह अक़्ल के एतबार से ज़रा भी ना मुम्किन नहीं है।

काफ़िर गूंगे-बहरे और अन्धे उठाये जायेंगे

सूरः बनी इस्राईल में फ़रमाया—

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا۔

व नह्शुरुहुम यौमल क़ियामति अला वुजूहिहिम अुम्यंव्व बुक्मंव्व सुम्मंन०

'और हम उनको क़ियामत के दिन अंधे, बहरे, गूंगे करके चेहरों के बल चलाएंगे।'

सूरः ताहा में इर्शाद फ़रमाया—

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ۝ قَالَ
كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ
اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ۝

व मन अअ्‌र ज़ अन ज़िक्री फ़ इन्न लहू मअीशतन ज़न्कंव्व नह्शुरुहू यौमल क़ियामति अअ्‌मा क़ा ल रब्बि लि म हशर्तनी अअ्‌मा व क़द कुन्तु बसीरा क़ा ल कज़ालि क अतत् क आयातुना फ़ नसी त हा व कज़ालि कल यौ म तुन्सा व कज़ालि क नज्ज़ी मन अस् र फ़ व लम् युअ्‌मिन बिआ-याति रब्बिही व ल अज़ाबुल आख़िरति अशद्दु व अब्क़ा०

'और जिसने मुंह फेरा मेरी याद से तो उसके लिए है तंगी की ज़िंदगी और क़ियामत के दिन हम उसका हश्र इस तरह करेंगे कि वह अंधा होगा। वह कहेगा कि ऐ मेरे रब! क्यों तूने मुझे अंधा उठाया हालांकि मैं देखता था। जवाब में खुदा इर्शाद फ़रमायेगा, इसी तरह आती थीं तेरे पास मेरी आयतें, पस तूने उनको भुला दिया और इसी

तरह आज तू भुलाया जाएगा और इसी तरह हम बदला देंगे उसको जो हद से बढ़ा और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाया और अलबत्ता आख़िरत का अज़ाब सख्त है और बाक़ी रहने वाला है।'

अल्लाह के दीन से दुनिया में जिन लोगों ने आंखें फेरीं और सच्चे मालिक की आयतों को सुन कर क़ुबूल करने और इक़रार करने के बजाए सब सुनी-अन सुनी कर दी, उनकी आंखों और कानों और ज़ुबानों की ताक़तें छीन ली जाएंगी और गूंगे-बहरे हो कर उठेंगे। यह हश्र के शुरू का ज़िक्र है, फिर आंखें और ज़ुबानें और कान खोल दिए जाएंगे ताकि महशर के हालात और उसकी सख्तियां देख सकें और हिसाब-किताब के मौक़े पर उनसे जवाब-सवाल किया जाए।'

काफ़िरों की आंखें नीली होंगी

सूरः ताहा में फ़रमाया—

وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا يَتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ط

व नह्शुरुल मुजिरमी न यौ म इज़ि न ज़ुक़ंय्यं त ख़ाफ़ तू न बैन हुम इल्ल बिस्तुम इल्ला अशरा०

'और हम जमा करेंगे उस दिन गुनाहगारों को इस हाल में कि उनकी आंखें नीली होंगी, चुपके-चुपके आपस में कहते होंगे कि दुनिया में बस तुम दस दिन रहे।'

यानी बुरा लगने के लिए उनकी आंखें नीली कर दी जाएंगी, जब क़ियामत को उठ खड़े होंगे तो आपस में धीरे-धीरे बातें करेंगे कि दुनिया में कितने दिन रहे, फिर खुद ही आपस में जवाब देंगे। कोई कहेगा कि दुनिया में हम दस दिन ही रहे।

दुनिया में कितने दिन रहे?

अल्लाह तआला ने इस आयत के बाद दूसरी आयत में फ़रमाया—

१. मआलिमुत्तंजील,

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا

नह्नु अअ्लमु बिमा यक़ूलू न इज़ यक़ूलु अम्सलुहुम तरीक़तन इल्लबिस्तुम इल्ला यौमन०

'हमको अच्छी तरह मालूम है, जो कुछ वे कहते हैं। जब बोलेगा उनमें का अच्छी रविश वाला कि तुम दुनिया में एक दिन से ज़्यादा नहीं रहे।'

आख़िरत के लम्बे और वहां के दर्दनाक मंज़रों को देख कर दुनिया में या क़ब्र में रहना इतना कम नज़र आयेगा कि गोया दस दिन से ज़्यादा नहीं रहे, दस दिन भी किसी के ख्याल में गुज़रेगा, वरना जो इनमें ज़्यादा अक़्लमंद और अच्छी राय वाला और होशियार होगा, वह कहेगा कि दस दिन भी कहां? सिर्फ़ एक ही दिन समझो। इस बात के कहने वाले को अक़्लमंद और अच्छे रवैया वाला इस लिए फ़रमाया कि दुनिया का ख़त्म हो जाना और आख़िरत का बाक़ी रहना और सख्ती को उसने दूसरों से ज़्यादा समझा।

सूरः नाज़िआत में फ़रमाया—

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰهَا۔

क अन्नहुम यौ म यरौ न हा लम् यल्बसू इल्ला अशीयतन औ ज़ु हा हा०

'जब वे क़ियामत को देखेंगे तो ऐसा मालूम होगा कि दुनिया में बस एक शाम या उसकी सुबह ठहरे हैं।'

अब तो जल्दी करते हैं और कहते हैं, 'मता हाज़ल वअ्दु इन कुन्तुम सादिक़ीन०' (यह वायदा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो) और यह भी कहते हैं कि 'अय्या न मुर्साहा' (कब पूरा होगा क़ियामत का आना) लेकिन जब वह अचानक आ पहुंचेगी, उस वक्त ऐसा मालूम होगा कि बहुत जल्द आयी, बीच में ज़रा देर भी नहीं लगी।

सूरः रूम में फ़रमाया—

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ۔

व यौ म तक़ूमुस्सा अ त युक्सिमुल मुजिरमू न मा लाबिसू ग़ैर साअतिन क ज़ालिक कानू युअ् फ़ कून०

'और जिस दिन क़ायम होगी क़ियामत, क़सम खाकर कहेंगे मुजिरम कि हम दुनिया में एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। इसी तरह उलटे चलते थे।'

क़ब्र में या दुनिया में रहना थोड़ा सा मालूम होगा, जब क़ियामत की मुसीबत सर पर आ खड़ी होगी तो अफ़सोस करेंगे और कहेंगे कि दुनिया की और बर्ज़ख़ की ज़िंदगी बड़ी जल्दी ख़त्म हो गयी, कुछ ज्यादा मुद्दत ठहरने का मौक़ा मिलता तो इस दिन के लिए तैयारी करते। यह तो एक दम मुसीबत की घड़ी सामने आ गयी। दुनिया के मज़े और लम्बी चौड़ी उम्मीदें सब भूल जाएंगे, बेहूदा उम्र खोने और दुनिया की साज-सज्जा और ओहदों और बड़ाइयों में जो बर्षों गुज़ारे थे, उतनी लम्बी उम्र को घड़ी भर की ज़िंदगी बतायेंगे। अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया, क़ज़ालि क कानू युअ्‌ फ़ कून० यानी इसी तरह दुनिया में उलटी बातें करते थे और बेहूदा ख्यालात जमाते थे, न दुनिया में हक़ को माना और दिल में उतारा, न यहां सच बोल रहे हैं।

आगे इर्शाद फ़रमाया—

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ
الْبَعْثِ وَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ

व क़ालल्लज़ी न ऊतुल इल्म वल ईमा न लक़द लबिस्तुम फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल बअ्‌ सि व हाज़ा यौमुल बअ्‌सि व ला किन्न-कुम कुन्तुम ला तअ्‌ ल मून०

'और कहेंगे इल्म और ईमान वाले, तुम्हारा ठहरना अल्लाह की किताब में जी उठने के दिन तक था, सो यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम जानते न थे।'

इल्म और ईमान वाले उस वक़्त उनकी बातों को रद्द करेंगे और कहेंगे कि तुम झूठ बकते हो और यह जो कहते हो कि सिर्फ़ एक घड़ी रहना हुआ, सरासर ग़लत है, तुम ठीक अल्लाह तआला के इल्म में और लौहे महफ़ूज़[1] के नविश्ता[2] के मुताबिक़ क़ियामत के दिन तक ठहरे, एक सिकंड की भी कमी नहीं हुई, हर एक को जितनी उम्र मिली थी, उसने सब पूरी की, फिर बर्ज़ख़ की लम्बी ज़िंदगी गुज़ार कर अब मैदाने हश्र में मौजूद हुआ है, आज वह दिन आ पहुंचा जिसका आना यक़ीनी था। अब देख लो जिसे तुम जानते और मानते न थे, अगर पहले से उस दिन

१. सुरक्षित तख़्ती, २. लिखे हुए,

का यक़ीन करते, तो यहां के लिए ईमान और नेकियों से तैयार होकर आते।

क़ियामत के दिन की परेशानी और हैरानी

क़ियामत का दिन होश गुम कर देने वाला होगा

सूरः इब्राहीम में फ़रमाया—

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ
تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِىْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ
طَرْفُهُمْ وَاَفْئِدَتُهُمْ هَوَآءٌ

व ला तह्‌सबन्नल्ला ह ग़ाफ़िलन अम्मा यअ्‌मलुज्ज़ालिमू न इन्नमा युअख़्ख़िरुहुम लियौमिन तश्ख़सु फ़ीहिल अब्सारु मुह्‌तिओन मुक़्निओ रुऊसिहिम ला यर्तद्दु इलैहिम तर्फ़ुहुम व अफ़्इदतुहुम हवाउन०

'और जो कुछ ज़ालिम करते हैं अल्लाह तआला को उनके आमाल से बे-ख़बर मत समझ, उनको सिर्फ़ उस दिन तक मोहलत दे रखी है, जिसमें उन लोगों की आंखें फटी रह जाएंगी, दौड़ते होंगे (और) अपने सर ऊपर को उठाये हुए होंगे, उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आयेगी और उनके दिल बिल्कुल बद-हवास होंगे।'

महशर की तरफ़ (क़ब्रों से निकल कर) सख़्त परेशानी और हैरत से ऊपर को सर उठाये टकटकी बांधे घबराते हुए चले आएंगे, हक्का-बक्का होकर देखते होंगे, ज़रा पलक भी न झपकेगी, दिलों का यह हाल होगा कि होश से बिल्कुल ख़ाली होंगे, ख़ौफ़ में उड़े जा रहे होंगे।

सूरः हज में फ़रमाया—

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَىْءٌ عَظِيْمٌ يَوْمَ
تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ
حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ
اللّٰهِ شَدِيْدٌ

या ऐयुहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम इन्न ज़ल ज़लतस्सा अति शैउन अज़ीमुन यौ म तरौ न हा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़िअ तिन अम्मा अर्ज़अ़त व तज़ अ

कुल्लु ज़ाति हम्लिन हम्ल हा व तरन्ना स सुकारा व मा हुम बिसुकारा व ला किन्न अज़ाबल्लाहि शदीद०

'ऐ लोगो ! डरो अपने रब से बिला शुबहा क़ियामत का भूंचाल एक बड़ी चीज़ है, जिस दिन उसको देखोगे; भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पिलाने को और गिरा देगी हर हमल वाली अपने हमल को और तू देखेगा लोगों को नशे में और (हक़ीक़त में), वे नशे में न होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।'

क़ियामत के बड़े ज़लज़ले दो हैं, क़ियामत से कुछ पहले, जो क़ियामत की निशानियों में से हैं, दूसरा उस वक़्त जब दोबारा सूर फूंके जाने के बाद क़ब्रों से निकल खड़े होंगे। इस आयत में अगर पहला ज़लज़ला मुराद है तो दूध पिलाने वालियों का बच्चों का भूल जाना और हामिला औरतों का अपने-अपने हमल गिरा देना हक़ीक़ी और ज़ाहिरी मानी के एतबार से मुराद होगा और अगर दूसरे मानी मुराद हों तो यह मिसाल के तौर पर कहा गया समझा जाएगा यानी क़ियामत की घबराहट और सख़्ती इतनी होगी कि अगर औरतों के पेटों में उस वक़्त हमल हो तो उनके हमल गिर जाएं और अगर उनकी गोदों में दूध पीते बच्चे हों तो उनको भूल जाएं।

इस वक़्त लोग इतने डरे हुए होंगे कि देखने वाला ख़्याल करेगा कि ये लोग शराब के नशे में हैं, हालांकि वहां नशे का क्या काम ? अज़ाब की सख़्ती होश गुम कर देगी। सूरः मुज़्ज़म्मिल में इर्शाद है !

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝

फ़ कै फ़ तत्तक़ू न इन कफ़र्तुम यौमंय्य ज्अलुल विल् दान शीबा०

'सो अगर तुम कुफ़्र करोगे तो कैसे बचोगे उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।'

अगर दुनिया में बच गये तो उस दिन किस तरह बचोगे, जिस दिन की तेज़ी और लम्बाई बच्चों को बूढ़ा कर देने वाली होगी, चाहे, सच में बूढ़े न हों, मगर वह दिन ऐसा सख़्त होगा कि उसकी सख़्ती और लम्बाई बच्चों को बूढ़ा कर देने वाली होगी।

चेहरों पर ख़ुशी और उदासी

महशर में सब ही हाज़िर होंगे अल्लाह के नेक बंदों के चेहरे सफ़ेद

और ख़ुश और हंसते-खेलते होंगे और काफ़िरों और ना फ़रमानों के चेहरों पर उदासी और ज़िल्लत छायी होगी। सूरः आले इम्रान में फ़रमाया—

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

यौ म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्व तस्वद्दु वुजूहुन फ़ अम्मल्लज़ी नस्वद्दत वुजूहुहुम अ कफ़र्तुम बअ् द ईमानिकुम फ़ ज़ूक़ुल अज़ा ब बिना कुन्तुम तक्फ़ुरून० व अम्मल्लज़ी नब यज़्ज़त वुजूहुहुम फ़ फ़ी रहमतिल्लाहि हुम फ़ीहा ख़ालिदून०

'जिस दिन कुछ चेहरे सफ़ेद होंगे और कुछ स्याह होंगे, सो जिनके चेहरे स्याह होंगे, उनसे कहा जाएगा, क्या तुम काफ़िर हुए बाद ईमान लाने के, बस चखो अज़ाब इस वजह से कि तुम कुफ़्र करते थे और जिनके चेहरे सफ़ेद हुए, सो वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे।'

कुछ के चेहरों पर ईमान व तक़्वा का नूर चमकता होगा और इज़्ज़त के साथ ख़ुश-ख़ुश नज़र आएंगे, उनके ख़िलाफ़ दूसरों के मुंह कुफ़्र व निफ़ाक़ की स्याही से काले होंगे, शक्ल से ज़िल्लत व रुसवाई टपक रही होगी, हर एक का ज़ाहिर उसके भीतर का आईना होगा।

सूरः अ ब स में फ़रमाया—

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ۝ ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ۝ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝

वुजूहुंय्यौ म इज़िम मुस्फ़ि र तुन ज़ाहिकतुम मुस्तब्शि र तुन व वुजूहुंय्यौ म इज़िन अलैहा ग़ ब रतुन तर्हक़ुहा क़ त रतुन उलाइ क हुमुल क फ़ र तुल फ़ ज र:०

'कितने चेहरे उस दिन रोशन (और) हंसते (और) ख़ुशी करते होंगे और कितने चेहरे उस दिन ऐसे होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी और स्याही चढ़ी आती होगी, ये लोग काफ़िर व नाफ़र्मान होंगे।'

ईमान और नेक कामों की वजह से नेक बन्दों के चेहरे रोशन होंगे, उनकी शक्लों से ख़ुशी और ताज़ापन ज़ाहिर हो रहा होगा और जिन नालायक़ों ने दुनिया से ख़ुदा को भुला दिया, ईमान और नेक कामों के

नूर से अलग रहे और कुफ़ और नाफ़र्मानी की स्याही में घुसे रहे, क़ियामत के दिन उनके चेहरों पर स्याही चढ़ी होगी, ज़िल्लत और रुसवाई के साथ महशर में हाज़िर होंगे अपने बुरे आमाल की वजह से उदास हो रहे होंगे और डरे हुए होकर यह सोचते होंगे कि वहां हमसे बुरा बर्ताव होने वाला है और वह आफ़त आने वाली है जो कमर तोड़ देने वाली होगी। (तज़ुन्नु अंय्युफ अ ल बिहा फ़ाक़िरः०) (تَظُنُّ أَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ)

इर्शाद फ़रमाया सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कि क़ियामत के दिन (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की उनके बाप आज़र से मुलाक़ात हो जाएगी, उनके बाप के चेहरे पर स्याही होगी और गर्द पड़ी होगी। (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अपने बाप से फ़रमायेंगे, क्या मैंने न कहा था कि मेरी ना-फ़रमानी न करो, उनका बाप कहेगा कि आज आपकी ना फ़रमानी न करूंगा, उसके बाद (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के दरबार में अर्ज़ करेंगे कि आपने मुझ से वायदा फ़रमाया था कि क़ियामत के दिन मुझे आप रुसवा न करेंगे, इस से ज़्यादा क्या रुसवाई होगी कि मेरा बाप हलाक हो रहा है। अल्लाह तआला शानुहू फ़रमायेंगे कि मैंने काफ़िरों पर जन्नत हराम कर दी है (तुम्हारा बाप अज़ाब से बचकर जन्नत में नहीं जा सकेगा) फिर (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से पूछा जाएगा कि आपके पांव में क्या है ? वह नज़र करेंगे, तो एक लिथड़ा हुआ बिज्जू नज़र आएगा, फिर इस बिज्जू की टांगें पकड़ कर दोज़ख में डाल दिया जाएगा।[1]

अल्लाह तआला शानुहू अपनी क़ुदरत से आज़र को बिज्जू की शक्ल में कर देंगे ताकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की रुसवाई न हो और उनको अपने बाप की शक्ल देखकर तरस भी न आये। अल्लाह ! अल्लाह! यह किस के बाप का अंजाम हुआ ? हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलामु के बाप का ! जो नबियों के बाप हैं और ख़ुदा के दोस्त हैं, जिनकी मिल्लत (तरीक़े) की पैरवी करने का हुक्म हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुआ, जिन्होंने ख़ाना काबा बनाया, काफ़िर बाप के हक़ में उनकी सिफ़ारिश भी न चली ! कहां हैं वह पीर-फ़क़ीर जो नसब, और रिश्ते पर फ़ख़् करने वाले हैं और जो बुरे करतूतों के साथ रिश्तों की आड़ लेकर बख़्शे जाने के उम्मीदवार बने हुए हैं।

१. बुख़ारी शरीफ़,

महशर में पसीने की मुसीबत

हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि प्यारे नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सूरज मख़्लूक़ से इतना क़रीब हो जाएगा कि उनसे क़रीब एक मील[1] के फ़ासले पर होगा और आमाल की बुराइयों के बराबर लोग पसीने में होंगे, बस कोई तो पसीने में टख़नों तक होगा और किसी के घुटनों तक पसीना होगा और किसी के तहमद बांधने की जगह तक पसीना होगा और किसी का यह हाल होगा कि पांव से लेकर मुंह तक पसीना में होगा, उसका पसीना लगाम की तरह मुंह में घुसा हुआ होगा।[2]

एक हदीस में है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हश्र के मैदान में इंसान को इतना पसीना आयेगा और लगातार बाक़ी रहेगा कि इंसान यह कह उठेगा कि ऐ रब ! आप का मुझे दोज़ख़ में भेज देना मेरे लिए इस मुसीबत से आसान है, महशर के अज़ाब की सख़्ती को देखकर ऐसा कहेगा, हालांकि दोज़ख़ के अज़ाब की सख़्ती को जानता होगा।[3]

१. पहले गुज़र चुका है कि क़ियामत क़ायम होने से चांद-सूरज बे-नूर हो जाएंगे, आसमान फट जाएगा। अगर कोई सवाल करे कि सूरज बे-नूर होने के बाद महशर में लोगों के सरों से एक मील होकर कैसे गर्मी पहुंचाएगा, जवाब यह है कि एक तो बे-नूर होने के साथ उसकी जलन और गर्मी का ख़त्म हो जाना ज़रूरी नहीं और अगर यह मान लिया जाए कि बे-नूर होने के साथ उसकी जलन भी जाएगी तो दूसरा जवाब यह है कि उसको दोबारा रोशनी और गर्मी देकर महशर में सरों पर क़ायम किया जाएगा, फिर इसके बाद दोबारा बे-नूर करके दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा, ताकि उसके पुजारियों को सबक़ मिले और समझ लें कि यह पूजा के क़ाबिल होता, तो ख़ुद क्यों दोज़ख़ में पड़ा होता। बहरहाल आयतों और हदीसों में जो कुछ आया है, उस पर ईमान लाना ज़रूरी है।

२. मुस्लिम शरीफ़,

३. तर्ग़ीब.

हश्र के मैदान में मौजूद लोगों की अलग-अलग हालतें

भिखारियों की हालत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी लोगों से सवाल करते-करते उस हालत को पहुंच जाता है कि क़ियामत के दिन इस हालत में आयेगा कि उसके चेहरे पर गोश्त की ज़रा सी भी बोटी न होगी' यानी भीख मांगने वाले को रुसवा और ज़लील करने के लिए हश्र के मैदान में इस हाल में लाया जाएगा कि उसके चेहरे पर बस हड्डियां ही हड्डियां होंगी और गोश्त की एक बोटी भी न होगी और तमाम लोग उसे देखकर पहचान लेंगे कि यह दुनिया में लोगों से सवाल करके अपनी इज़्ज़त खोता था, आज भी उसकी कुछ इज़्ज़त नहीं और सबके सामने ज़लील हो रहा है।

जिसने एक बीवी के साथ ना-इंसाफ़ी की हो

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस मर्द के पास दो बीवियां हों और उसने उनके दर्मियान इंसाफ़ न किया हो, तो क़ियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसका पहलू गिरा हुआ होगा।'

जो कुरआन शरीफ़ भूल गया हो

हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा और फिर उसे (ग़फ़लत और सुस्ती की वजह से) भुला दिया, वह अल्लाह से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि 'अज्ज़म' होगा।'

'अज्ज़म होगा' यानी कोढ़ी होगा, उसके हाथ या उंगलियां गिरी हुई होंगी और कुछ बुज़ुर्गों का कहना है कि इसका मतलब यह है कि उसके

१. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़, २. मिश्कात शरीफ़, ३. मिश्कात,

दांत गिरे हुए होंगे।' ज़ाहिर में यह आख़िरी मतलब ही ज़्यादा मुनासिब मालूम होता है, क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते रहने से याद रहता है और पढ़ते रहना ज़ुबान और दांतों का अमल है, इसलिए इसकी सज़ा दांतों का न होना ही मुनासिब है। (ख़ुदा ही बेहतर जाने)

एक हदीस में है कि प्यारे नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझ पर मेरी उम्मत के गुनाह पेश किये गये तो मैंने कोई गुनाह इससे बढ़कर नहीं देखा कि किसी को क़ुरआन की कोई सूरः या आयत आती हो और फिर वह उसे भूल जाए।'

बे-नमाज़ियों का हश्र

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने नमाज़ की पाबन्दी न की, इसके लिए नमाज़ न नूर होगी, न दलील होगी, न निजात का सामान होगी और क़ियामत के दिन उसका हश्र फ़िऔन, क़ारून, हामान और उबई बिन ख़लफ़ के साथ होगा।'

क़ातिल व मक़्तूल

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मक़्तूल अपने क़ातिल को पकड़ कर इस तरह लायेगा कि क़ातिल का माथा और उसका सर मक़्तूल के हाथ में होगा और मक़्तूल की गरदन की नसों से ख़ून बह रहा होगा। वह अल्लाह के दरबार में अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! मुझे उसने क़त्ल किया था (इसी तरह वह) उसे अर्श के क़रीब ले पहुंचेगा।'

क़ातिल की मदद करने वाला

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने किसी मोमिन के क़त्ल में ज़रा सा कलमा कहकर भी मदद की हो (क़ियामत के दिन) वह ख़ुदा से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उस की दोनों आंखों के दर्मियान 'आइसुम मिर्रहम-तिल्लाहि' लिखा होगा, जिसके मानी यह है यह अल्लाह की रहमत से

१. तमआत, २. तिर्मिज़ी शरीफ़, ३. अहमद व दारमी,
४. जिसे क़त्ल किया जाए, ५. तिर्मिज़ी व नसई.

ना-उम्मीद है।[1]

वायदा न पूरा करने वाला

हज़रत सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन हर ग़ादिर (यानी वायदा तोड़ने वाला) के लिए झंडा होगा जो उसके पाख़ाने की जगह पर लगा होगा।[2]

दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसका वायदा तोड़ा जितना ही बड़ा होगा, उतना ही झंडा बुलन्द होगा, इसके बाद फ़रमाया कि ख़बरदार जो जनता का हाकिम बना उसके वायदा तोड़ने से बढ़कर किसी का वायदा तोड़ना नहीं यानी अगर वह वायदा तोड़ेगा तो तमाम पब्लिक उसके निशाने पर आ जाएगी, इस लिए उसका वायदा तोड़ना सबसे बड़ा हुआ।[3]

अमीर या बादशाह

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स भी दस आदमियों का अमीर बना होगा, वह क़ियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसके हाथ बंधे हुए होंगे, यहां तक कि (अगर उसने अपने मातहतों में इंसाफ़ से काम लिया होगा तो) उसे इंसाफ़ छुड़ा देगा या (अगर ज़ुल्म का वर्ताव किया होगा तो) उसे ज़ुल्म हलाक कर देगा।[4]

एक हदीस में है कि जो हाकिम भी लोगों के दर्मियान हुक्म करता है, वह क़ियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि एक फ़रिश्ते ने उसकी गुद्दी पकड़ रखी होगी, (वह फ़रिश्ता उसको लाकर खड़ा कर देगा और) फिर अपना सर आसमान की तरफ़ उठाकर (अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार करेगा) सो अगर अल्लाह तआला हुक्म फ़रमाएंगे कि उसको गिरा दे तो वह उसको इतने गहरे गड्ढे में गिरा देगा, जिसकी तह में गिरते-गिरते चालीस साल में पहुंचा जाए।[5]

ज़ालिम हाकिम गिराए जाएंगे।

---

१. इब्ने माजा, २. मुस्लिम शरीफ़,
३. मिश्कात, ४. दारमी,
५. मिश्कात शरीफ़,

ज़कात न देने वाला

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसने उसकी ज़कात न अदा की तो क़ियामत के दिन उसका माल गंजा सांप बना दिया जाएगा, जिसकी आंखों पर उभरे हुए दो नुक़्ते होंगे। वह सांप तौक़ बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा, फिर वह सांप उसके दोनों बांहों को पकड़ कर कहेगा कि मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा ख़ज़ाना हूं, फिर आप ने यह आयत तिलावत फ़रमायी (जिस में यही मज़्मून आया है)—

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا
لَّهُم بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۔ (آل عمران)

व ला यह्सबन्नल्लज़ी न यब्ख़लू न बिमा आता हुमु ल्लाहु मिन फ़ज़्लिही हु व ख़ैरल्लहुम बल हुव शर्रुल्लहुम स यु तव्वक़ू न मा बख़िलू बिही यौमल क़ियामति०
—आले इम्रान

'और जो लोग अल्लाह के दिए हुए में बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं, जो उसने उनको अपने फ़ज़्ल से दिया है, वे यह ख़्याल न करें कि यह उनके हक़ में बेहतर है, बल्कि यह उनके लिए वबाल है। उन्हें बहुत जल्द क़ियामत के दिन इस (माल) का तौक़ पहनाया जायेगा, जिसमें उन्होंने कंजूसी की थी।'
—बुख़ारी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सोने-चांदी के जिस मालिक ने इनमें से इनका हक़ (ज़कात) अदा न किया तो जब क़ियामत का दिन होगा तो उसके लिए आग की तख़्तियां बनायी जाएंगी जो दोज़ख़ में तपायी जाएंगी, फिर उनसे उनका पहलू और उसका माथा और उसकी पीठ को दाग़ दिया जाएगा। जब भी वे (तख़्तियां ठंडी हो-हो कर दोज़ख़ की आग में) वापस कर दी जाएंगी, तो फिर बार-बार निकाली जाती रहेंगी (और उनसे दाग़ दिया जाता रहेगा और यह सज़ा) उसको उस दिन में (मिलती रहेगी) जो पचास हज़ार वर्ष का दिन होगा, यहां तक कि सब बन्दों का फ़ैसला कर दिया जाएगा। फिर आख़िरकार वह (इस मुसीबत से निजात पा कर) अपना रास्ता

पायेगा जो जन्नत की तरफ़ होगा या दोज़ख़ की तरफ़। मौजूद लोगों में से किसी ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह ! ऊंटों का हुक्म (भी) इर्शाद फ़रमायें। आपने फ़रमाया, जो ऊंटों वाला इनमें से इनका हक़ अदा नहीं करता और इनके हक़ों में से एक हक़ यह भी है कि जिस दिन उनको पानी पिलाये उस दिन उनका दूध भी निकाल ले तो उसको उन ऊंटों के नीचे साफ़ मैदान में लिटा दिया जाएगा। इसके ऊंट ख़ूब मोटे-ताज़े सब के सब वहां मौजूद होंगे। उनमें से एक बच्चा भी ग़ैर-हाज़िर न होगा। वे ऊंट अपने खुरों से उसको रौंदेंगे और अपने मुंहों से उसको काटेंगे। जब उनका पहला गिरोह गुज़र चुकेगा तो बाद का गिरोह उस पर लौटा दिया जाएगा। पचास हज़ार वर्ष के दिन में बन्दों के दर्मियान फ़ैसले होने तक उसको यही सज़ा मिलती रहेगी, फिर वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ़ पाएगा या दोज़ख़ की तरफ़।

सवाल किया गया कि या रसूलल्लाह ! बकरियों और गायों का हुक्म भी इर्शाद फ़रमायें। आपने फ़रमाया कि जो गायों का मालिक और बकरियों का मालिक इनमें से इनका हक़ अदा नहीं करता, तो जब क़ियामत का दिन होगा तो उसको साफ़ मैदान में उनके नीचे लिटा दिया जाएगा। इनमें से वहां एक गाय या बकरी ग़ैरहाज़िर न होगी (और) न कोई इनमें मुड़े हुए सींगों की होगी और न कोई बे-सींगों की और न कोई टूटे हुए सींगों की। फिर ये गायें और बकरियां उस पर गुज़रेंगी और अपने सींगों से उसको मारती जाएंगी और खुरों से रौंदती जाएंगी। जब इनका पहला गिरोह गुज़र चुकेगा तो आख़िर का गिरोह उस पर लौटा दिया जाएगा। पचास हज़ार वर्ष के दिन में फ़ैसला होने तक उसको यही सज़ा मिलती रहेगी, फिर वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ़ पायेगा या दोज़ख़ की तरफ़।'

क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा भूखे

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने एक शख़्स ने डकार ली। आप ने फ़रमाया कि अपनी डकार कम करो, क्योंकि क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा देर तक वही भूखे रहेंगे जो दुनिया में सबसे

१. मुस्लिम शरीफ़,

ज़्यादा देर तक पेट भरे रहते हैं।'

दोग़ले का हश्र

हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो दुनिया में दो चेहरों वाला था (यानी ऐसा शख़्स कि इस गिरोह के सामने इसकी तारीफ़ और दूसरों की निंदा करता हो और फिर जब दूसरों में जाए तो उनकी तारीफ़ और उस गिरोह की बुराई करता हो) तो क़ियामत के दिन उसकी ज़ुबान आग की होगी।'

कनसूई लेने वाला

फ़रमाया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कि जिसने बनाकर (यानी अपनी तरफ़ से गढ़ कर) झूठा ख़्वाब बयान किया उसे क़ियामत के दिन मजबूर किया जाएगा कि दो जौ के बीच में गिरह लगाये और वह उनमें हरगिज़ गिरह न लगा सकेगा (इस लिए अज़ाब में रहेगा) और जिसने किसी गिरोह की बात की तरफ़ कान लगाये, हालांकि वह सुनाना न चाहते थे तो क़ियामत के दिन उसके कान में सीसा (पिघला कर) डाला जाएगा। और जिसने कोई तस्वीर (जानदार की) बनायी उसे क़ियामत के दिन अज़ाब दिया जाएगा और मजबूर किया जाएगा कि उसमें रूह फूंक कर ज़िंदा करे और वह रूह फूंक न सकेगा।'

ज़िल्लत का लिबास

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने दुनिया में शोहरत (घमंड और इतराने) का लिबास पहना, उसे ख़ुदा क़ियामत के दिन ज़िल्लत का लिबास पहनायेगा।'

ज़मीन हड़पने वाला

इर्शाद फ़रमाया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जिसने थोड़ी-सी ज़मीन भी बग़ैर हक़ के ले ली, उसको क़ियामत के दिन

१. मिश्कात शरीफ़, २. मिश्कात शरीफ़,
३. मिश्कात शरीफ़, ४. अहमद, अबूदाऊद,

सातवीं ज़मीन तक धंसा दिया जायेगा ।[१]

दूसरी रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया कि जिसने ज़ुल्म के तौर पर एक बालिश्त ज़मीन भी ले ली उसको अल्लाह तआला मजबूर करेगा कि उसे इतना खोदे कि सातवीं ज़मीन के आखिर तक पहुंच जाए, फिर क़ियामत का दिन खत्म होने तक, जब तक कि लोगों में फ़ैसला न हो, वे सातों ज़मीनें उसके गले में तौक़ की तरह डाल दी जाएंगी ।[२]

आग की लगाम

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिससे कोई इल्म की बात पूछी गयी, जिसे वह जानता था और उसने वह छिपा ली तो क़ियामत के दिन उसके (मुंह में) आग की लगाम दी जाएगी ।[३] चूंकि उसने बोलने के वक़्त ज़ुबान बंद कर रखी, इस लिए जुर्म के मुताबिक़ सज़ा तज्वीज़ हुई कि आग की लगाम लगायी गयी ।

गुस्सा पीने वाला

हज़रत सहल रज़ि० अपने बाप हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत फ़रमाते थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने गुस्सा पी लिया, हालांकि वह गुस्से के तक़ाज़े पर अमल करने की क़ुदरत रखता था, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसको सारी मख्लूक़ के सामने बुला कर अख्तियार देंगे कि जिस हूर को चाहे, अपने लिए अख्तियार कर ले ।[४]

हरमैन में वफ़ात पाने वाला

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मदीने में ठहरा और उसने मदीने की तक्लीफ़ पर सब्र किया, मैं क़ियामत के दिन उसके लिए गवाह और सिफ़ारिशी हूंगा और जो शख्स मक्का के हरम या मदीना के हरम में मर गया, उसे अल्लाह क़ियामत के दिन अम्न वालों में उठायेगा ।[५]

---

१. बुख़ारी शरीफ़, २. मिश्कात शरीफ़,
३. अहमद व तिर्मिज़ी, ४. तिर्मिज़ी व अबूदाऊद,
५. दोनों हरम (काबा और मदीने का रौज़ा-ए-अक़्दस), ६. बैहक़ी,

जो हज करते हुये मर जायें

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि एक साहब हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अरफ़ात में ठहरे हुए थे, अचानक सवारी से गिर पड़े, जिससे उनकी गरदन टूट गयी । हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि उसको बेरी के पत्तों में पके हुए पानी से नहलाओ और उसको इन (एहराम के) ही कपड़ों में कफ़न दो और उसका सर न ढांको क्योंकि यह क़ियामत के दिन 'तल्बिया'[१] पढ़ता हुआ उठेगा ।[२]

शहीद

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह की राह में जिस किसी के ज़ख्म लग गया और अल्लाह ही खूब जानता है कि उसकी राह में किस-किस के ज़ख्म आया है, (यानी) नीयत का हाल अल्लाह ही खूब जानता है तो वह क़ियामत के दिन उस ज़ख्म को लेकर इस हाल में आयेगा कि उसका खून खूब बह रहा होगा जिसका रंग खून की तरह होगा और खुश्बू मुश्क की तरह होगी ।[३]

कामिल नूर वाले

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मस्जिदों को अंधेरे में जाने वालों को खुशखबरी सुना दो कि उनको क़ियामत के दिन पूरा नूर इनायत किया जाएगा ।[४]

अज़ान देने वाले

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अज़ान देने वाले क़ियामत के दिन सब लोगों से ज़्यादा लम्बी गरदनों वाले होंगे ।[५]

---

१. हज में जो दुआ अक्सर पढ़ी जाती है, जिसमें बार-बार लब्बैक आता है उसे तल्बिया कहते हैं, २. बुख़ारी शरीफ़, ३. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़,
४. तिर्मिज़ी, ५. मुस्लिम शरीफ़,

खुदा के लिये मुहब्बत करने वाले

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरी अज़्मत (बड़ाई) की वजह से आपस में मुहब्बत करने वालों के लिए नूर के मिंबर होंगे और नबी व शहीद उन पर रश्क करते होंगे (क्योंकि वे तो बे-ख़ौफ़ और बे-ग़म होकर नूर के मिम्बरों पर बैठे होंगे और नबी व शहीद दूसरों की सिफ़ारिश में लगे होंगे।[1]

अर्श के साये में

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि सात शख़्सों को उस दिन अल्लाह अपने साए में रखेगा जबकि उसके साए के अलावा और किसी का साया न होगा—

१. मुसलमानों का इंसाफ़ पसंद बादशाह,

२. वह जवान, जिसने अल्लाह की इबादत में जवानी गुज़ारी।

३. वह मर्द, जिसका दिल मस्जिद में लगा रहता है, जब वह मस्जिद से निकलता है, जब तक वह वापस न आये (उसका जिस्म बाहर और दिल मस्जिद के अंदर रहता है)

४. वे दो शख़्स जिन्होंने आपस में अल्लाह के लिए मुहब्बत की। उसी मुहब्बत की वजह से जमा होते हैं और उसी को दिल में रखते हुए जुदा हो जाते हैं।

५. वह शख़्स जिसने तंहाई में अल्लाह को याद किया और उसके आंसू बह निकले।

६. वह मर्द जिसको ख़ूबसूरत और इज़्ज़तदार औरत ने (बुरे काम के लिए) बुलाया और उसने टका-सा जवाब दे दिया कि मैं तो अल्लाह से डरता हूं।

७. वह शख़्स जिसने ऐसे छिपा कर सद्क़ा दिया कि उसके बाएं हाथ को ख़बर न हुई कि दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया।[2]

नूर के ताज वाले

हज़रत मुआज़ जुह्नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते

१. मिश्कात शरीफ़. २. बुख़ारी व मुस्लिम.

हैं कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने क़ुरआन पढ़ा और उस पर अमल किया, क़ियामत के दिन उसके मां-बाप को एक ताज पहनाया जाएगा, जिसकी रोशनी सूरज की उस रोशनी से भी अच्छी होगी जबकि दुनिया के घरों में इस शक्ल में होती, जिस वक़्त कि सूरज तुम्हारे घरों में मौजूद होता। अब तुम ही बताओ कि जब उसके मां-बाप का यह हाल है तो ख़ुद जिसने उस पर अमल किया होगा, उस का कैसा रुत्बा होगा।[1]

हलाल कमाने वाले

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने हलाल तरीक़े से इसलिए दुनिया तलब की कि भीख मांगने से बचे और अपने घर वालों पर ख़र्च करे और अपने पड़ोसी पर रहम करे तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से वह इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चांद की तरह चमकता हुआ होगा और जिसने हलाल तरीक़े से दुनिया इसलिए तलब की कि दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा जमा कर ले और दूसरों पर फ़ख़् करे और दिखावा करे तो ख़ुदा से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि अल्लाह तआला उस पर ग़ुस्सा होगा।[2] —मिश्कात

रिश्ते-नातेदार काम न आयेंगे

उस दिन हर आदमी सिर्फ़ अपने बचाव की फ़िक्र में होगा, कोई किसी के काम न आयेगा, एक दूसरे से भागेगा। बहुत सी आयतों में इन्हीं बातों का एलान फ़रमाया गया है। सूरः लुक़्मान में इर्शाद है—

وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِي وَالِدٌ عَن وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَن وَالِدِهِ شَيْئًا

वख़्शौ यौमल्ला यज्ज़ी वालिदुन अंव्व ल दिही वला मौलूदुन हु व

१. अहमद, अबूदाऊद

२. यह बात ध्यान देने की है कि फ़ख़् करने के लिए हलाल कमाने वाले के हक़ में यह धमकी है, पस जो लोग इस मक़्सद के लिए हराम कमाते हैं, उनका क्या बनेगा ? फ़अ तबिरू या उलिल् अब्सार०

जाज़िन अंव्वालिदिही शैअन०

'उस दिन से डरो जिस दिन न बाप बेटे का बदला चुकायेगा, न बेटा ही बाप की तरफ़ से कोई मुतालबा (मांग) अदा कर सकेगा।'

क़ियामत के दिन बड़ा बिखराव होगा, दुनिया की कुछ दिनों की ज़िंदगी से (जिस में नाते-रिश्तेदार काम आते हैं) धोखा खाकर बेवक़ूफ़ी से यह समझना कि क़ियामत में भी ये लोग काम आयेंगे, नादानी है। सूरः मूमिनून में फ़रमाया—

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ -

फ़ इज़ा नुफ़ि ख फ़िस्सूरि फ़ ला अन्सा ब बैन हुम व ला य त साअ लून०

'जब सूर फूंका जा चुकेगा तो उस दिन उनके दर्मियान रिश्ते-नाते न रहेंगे और न कोई किसी को पूछेगा।'

सूरः अ ब स में फ़रमाया—

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ -

यौ म यफ़िर्रुल मर्उ मिन अख़ीहि व उम्मिही व अबीहि व साहिबतिही व बनीहि०

यानी 'क़ियामत के दिन इंसान अपने भाई से और मां-बाप से और बीवी से और बेटों से सबसे भागेगा।'

यानी किसी के साथ हमदर्दी और मदद तो दूर की बात, वह अपने ऐसे क़रीबी रिश्तेदारों तक से दूर भागेगा।

दोस्त दुश्मन हो जायेंगे

क़ियामत के दिन बस नेक अमल ही काम आयेंगे। इंसान को सब से ज्यादा भरोसा अपने रिश्तेदारों पर होता है, ऊपर की आयतों से यह बात मालूम हुई कि इंसान अपने रिश्तेदारों से दूर भागेगा, उनके बाद नम्बर दोस्तों और हमदर्दों का आता है, उनके बारे में अल्लाह का इर्शाद है।'

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا يُبَصَّرُونَهُمْ

व ला यस अलु हमीमुन हमीमंय्युबस्सरू न हुम०

यानी 'न दोस्त दोस्त को पूछेगा, हालांकि (वे एक दूसरे को) दिखाई दे रहे होंगे और फ़रमाया—

२. सूरः मुमारिज,

अल-अख़िल्लाउ यौ म इज़िन बअ्ज़ुहुम लिबअ्ज़िन अदूवुन इल्लल मुत्तक़ीन०'

'यानी उस दिन दुनिया के दोस्त एक दूसरे के दुश्मन बने हुए होंगे, हां, परहेज़गारों की दोस्ती उस वक़्त भी क़ायम रहेगी।

रिश्वत में सारी दुनिया देने को तैयार होंगे

सूरः मआरिज में फ़रमाया—

يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنجِيهِ كَلَّا -

यवद्दुल मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन अज़ाबि यौ म इज़िम बिबनीहि व साहिबतिही व अख़ीहि व फ़सीलतिहिल्लती तुअ्वीहि व मन फ़िल अर्ज़ि जमीअन सुम्म युन्जीहि कल्ला०

'मुज्रिम चाहेगा (किसी तरह) अपनी सज़ा के बदले में अपनी औलाद को, बीवी को, भाई को, यहां तक कि अपना सारा कुन्बा जिसके साथ रहता था, बल्कि ज़मीन में जो कुछ है वह सब (रिश्वत के तौर पर) दे दे और फिर उसे छुटकारा मिल जाए।'

(लेकिन) हरगिज़ ऐसा न होगा। क़ियामत के दिन अपने बदले में रिश्तेदार-नातेदार, माल व दौलत, बल्कि सारी ज़मीन देकर जान छुड़ाने तक के लिए इंसान राज़ी होगा, मगर वहां आमाल के सिवा कुछ पास भी न होगा, अज़ीज़ व रिश्तेदार क्यों किसी के बदले उस दिन की मुसीबत में पड़ना पसंद करेंगे। मान भी लीजिए अगर किसी के पास कुछ हो और कोई किसी की तरफ़ से अपनी जान को बदले में देने को तैयार भी हो जाए, तो क़ुबूल न होगा। सूरः आले इम्रान में फ़रमाया—

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ -

इन्नल्लज़ी न क फ़ रू व मातू व हुम कुफ़्फ़ारुन फ़लंय्युक़ब ल मिन अ हदिहिम मिल्उल् अर्ज़ि ज़ ह बंव्व ल विफ़्तदा बिही०

१. सूरः जुख़रुफ़,

'बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और कुफ़्र की हालत में मर गये सो उन में से किसी का ज़मीन भर कर सोना भी न लिया जाएगा भले ही अपनी जान के बदले देना चाहे।'

अल्लाहु अक्बरु ! कैसी परेशानी और मजबूरी और बेकसी की हालत होगी।

दुनिया में दोबारा आने की दर्ख्वास्त

सूरः अलिफ़-लाम-मीम सज्दा में फ़रमाया—

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا
وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ط ۔

व लौ तरा इज़िल मुज्रिमून नाकिसू रुऊसिहिम अिन्द रब्बिहिम रब्बना अब्सिरना व समिअ्ना फ़र्जिअ्ना नअ्मल सालिहन इन्ना मूक़िनून०

'और अगर तुम वह वक़्त देखो जबकि मुज्रिम अपने परवरदिगार के सामने सर झुकाये हुए (कह रहे) होंगे कि ऐ हमारे माबूद ! हमने देख लिया और सुन लिया, हमें आप दुनिया में लौटा दीजिए, हम नेक काम करेंगे, अब हमें यक़ीन आ गया, उस वक़्त अजीब मंज़र देखोगे।'

लेकिन एक तो, इन्हें दोबारा दुनिया से भेजा नहीं जाएगा और अगर भेज भी दिया जाए, तो फिर नाफ़रमानी करेंगे, चुनांचे फ़रमाया—

व लौ रुद्दू ल आदू लिमानुहू अन्हु व इन्नहुम ल काज़िबून०

وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ط ۔ (الانعام) —अन्आम

'अगर उन्हें लौटा दिया जाए तो फिर वे गुनाह करेंगे, जिसे मना किया गया है, बेशक ये बड़े झूठे हैं।'

सरदारों पर लानत

सूरः सबा में फ़रमाया—

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
الْقَوْلَ ج يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا
مُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَ
نَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُم بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا ط

व लौ तरा इजिज़्ज़ालिमून मौक़ूफ़ू न अिन्द रब्बिहिम यर्जिअु बाज़ुहुम इला बाज़ि-निल-क़ौल यक़ूलुल्लज़ी नस तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ी नस्तक्बरू लौ ला अन्तुम ल कुन्ना मुअ्मिनीन० क़ालल्लज़ी न स्तक्बरू लिल्लनज़ीस्तु ज़्अि.फ़ू अ नह्नु सद्दनाकुम अनिल हुदा बअ्द इज़ जा अ कुम बल कुन्तुम मुज्रिमीन व क़ालल्लज़ीनस्तु ज़्अि.फ़ू लिल्लज़ी नस्तक्बरू बल मक्रुल्लैलि वन्नहारि इज़ तअ्मुरून ना अन तुक्फ़ुर बिल्लाहि व नज्अ.ल लहू अन्दादा ०

'काश, तुम वह वक़्त देखो जब ज़ालिम अपने परवरदिगार के पास खड़े हुए एक दूसरे पर बात टाल रहे होंगे, जो लोग दुनिया में छोटे समझे जाते थे, उन लोगों से कहेंगे जो दुनिया में बड़े समझे जाते थे, अगर तुम न होते, तो हम यक़ीनन मोमिन होते। (यह सुनकर) बड़े लोग छोटों से कहेंगे कि क्या हमने तुमको हिदायत से रोका था। जब तुम्हारे पास हिदायत आयी थी, बल्कि तुम ख़ुद मुज्रिम हुए। वे बड़ों को जवाब देंगे, बल्कि तुम्हारे रात-दिन के फ़रेब और चाल बाज़ियों ने ही (हमें गुमराह किया), जब तुम हमें अल्लाह पाक के साथ कुफ़्र करने और उसके साथ शरीक ठहराने का हुक्म देते थे।'

इन आयतों में बातिल के सरदारों और कुफ़्र व शिर्क के लीडरों और उसकी बात पर चलने वालों की आपस में जो बहस क़ियामत के दिन अल्लाह के दरबार में होगी, उसको नक़ल फ़रमाया है। छोटे कहेंगे कि लीडरो ! तुमने हमारा नास मारा और ख़ुदा से बाग़ी किया, लीडर कहेंगे कि हम ने कब तुम को कुफ़्र व शिर्क पर मजबूर किया और कब तुम्हारा हाथ पकड़ कर रोका, तुमने ख़ुद ही कुफ़्र किया, ख़ुद मुज्रिम हो, छोटे कहेंगे कि तुमने ज़बरदस्ती तो मजबूर न किया था, मगर तुम्हारी चालों और धोखेबाज़ियों ने हम को हक़ मानने और अल्लाह के रसूलों की पैरवी से रोके रखा। सूरः साफ़्फ़ात में फ़रमाया—

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ
قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ بَلْ كُنتُمْ
قَوْمًا طَاغِينَ ۝ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا إِنَّا لَذَائِقُونَ ۝ فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ۝

व अक़्ब ल बअ़्ज़ुहुम अ़ला बअ़्ज़िय्य य साअलू न क़ालू इन्नकुम कुन्तुम तअ़्तून ना अ़निल यमीनि क़ालू बल लम तकूनू मुअ़्मिनीन व मा का न लना अ़लैकुम मिन सुल्तानिन बल कुन्तुम क़ौमन ताग़ीन फ़ हक़्क़ अ़लैना क़ौलु रब्बिना इन्ना लज़ाइक़ू न फ़ अग़वैनाकुम इन्ना कुन्ना ग़ावीन०

'और एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर जवाब व सवाल करने लगेंगे जो ताबे (मातहत) थे, वे अपने लीडरों से कहेंगे कि हमारे पास तुम्हारा आना बहुत ज़ोर से हुआ करता था। लीडर कहेंगे, बल्कि तुम ख़ुद ही ईमान नहीं लाये थे और हमारा तुम पर कोई ज़ोर तो था ही नहीं, बल्कि तुम ख़ुद ही सरकशी किया करते थे, सो हम सब पर हमारे रब की बात साबित हो गयी कि हम को मज़ा चखना है, तो हमने तुम को बहकाया, हम ख़ुद ही गुमराह थे।'

छोटे लोग और जनता अपने लीडरों और सरदारों पर इल्ज़ाम रखेंगे कि तुमने हमारा नास खोया और बड़े ज़ोर-शोर से तुम हमारे पास आते और तक़रीरों (भाषणों)-तहरीरों (लेखों) से हम पर ज़ोर डालते और बातिल (असत्य) की तरफ़ बुलाते और हक़ के मानने से रोकते थे। लीडर जवाब में कहेंगे कि हमारा तुम पर क्या ज़ोर था जो तुम्हारे दिल में ईमान न घुसने देते, तुम ख़ुद ही अक़्ल व इंसाफ़ की हद से निकल गए कि बे-ग़रज़ नसीहत करने वालों का कहना न माना और हमारे बहकावे में आये, समझ से और अंजाम को सोचते हुए काम लेते तो हमारी बातों पर कान धरते, ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बरों और [illegible] की बातों से क्यों मुंह मोड़ते ? हम तो ख़ुद गुमराह थे, गुमराह से और क्या उम्मीद हो सकती है ? वह तो गुमराह ही करेगा, अब क्या बन सकता है, अब हम को और तुमको अज़ाब चखना है। आगे फ़रमाया—

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ
إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا
لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَجْنُونٍ ط

फ़ इन्नहुम यौ म इज़िन फ़िल अज़ाबि मुश्तरिकून इन्ना कज़ालि क नफ़अ़लु बिल मुज्रिमीन इन्नहुम कानू इज़ा क़ील लहुम ला इला ह इल्ल-ल्लाहु यस्तक्बिरू न व यक़ूलू न अ इन्ना लतारिकू आलिहतिना लिशाइरिम मज्नून०

'सो वे सब उस दिन अज़ाब में शरीक हों, हम मुज्रिमों के साथ

ऐसा ही करते हैं, दुनिया में जब उनसे 'ला इला ह इल्लल्लाहु' कहा जाता तो घमंड करते और यों कहते थे, क्या हम छोड़ देंगे अपने माबूदों को एक शायर दीवाना के कहने से।'

लीडर हों या जनता, जिसने भी 'ला इला ह इल्लल्लाहु' से इंकार किया और ख़ुदा को माबूद मानने को अपनी शान के ख़िलाफ़ समझा, और ख़ुदा के रसूल को झुठलाया और शायर व दीवाना बताया, ऐसे लोग सब ही अज़ाब में डाले जाएंगे, यह न होगा कि सिर्फ़ गुमराह करने वाले लीडरों को अज़ाब हो और उनके रास्ते पर चलने वाली जनता छोड़ दी जाए।

लीडरों की बेज़ारी

सूरः बकरः में फ़रमाया—

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ
بِهِمُ الْأَسْبَابُ ۝

इज़ तबर्रअल्लज़ी नत्तबिअू मिनल्लज़ी नत्तबअू व र अ वुल अज़ा ब व तक़त्तअ़त बिहिमुल अस्बाबु०

'जिनके कहने पर दूसरे चलते थे, जब वे इनसे साफ़ बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे जिन्होंने उनका कहा माना था और अज़ाब को देख लेंगे और उनके ताल्लुक़ात आपस में टूट जाएंगे।'

क़ियामत के दिन गुमराही के लीडर और कुफ़्र के सरदार अपने लोगों से बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे और कोई मदद न करेंगे और न मदद कर सकेंगे, उस वक़्त उनकी बात पर चलने वालों और उनकी कुफ़्र व बातिल की तज्वीज़ों और प्रस्तावों पर हाथ उठाने वालों को लीडरों पर जो ग़ुस्सा आएगा, ज़ाहिर है। इसी आयत के आगे लोगों की परेशानी और शर्मिंदगी का ज़िक्र फ़रमाते हुए अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया—

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ط
كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ
مِنَ النَّارِ ۝

व क़ालल्लज़ी नत्त ब अू लौ अन्न लना कर्रतन फ़ न त बर्र अ मिन हुम

कमा तबर्रऊ मिन्ना क ज़ालि क युरीहिमुल्लाहु अअमालहुम हसरातिन अलैहिम व मा हुम बिखारिजी न मिनन्नारि०

'(और इन झूठे लीडरों के) लोग कहेंगे कि किसी तरह एक बार ज़रा हमको दुनिया में जाना मिल जाए, तो हम भी उनसे साफ़ अलग हो जाएं जैसा ये हमसे (इस वक़्त) साफ़ अलग हो गए और उनको दोज़ख से निकलना नसीब न होगा।'

क़ुरआन करीम ने साफ़ खोल कर मैदाने हश्र के वाक़िए बयान फ़रमाये हैं। क्या ठिकाना है हमदर्दी और भलाई चाहने का। बद-क़िस्मत हैं जो उसकी दावत पर कान नहीं धरते और उसकी खुली निशानियों से नसीहत हासिल नहीं करते ?

मैदाने हश्र में प्यारे नबी सल्ल० के बुलन्द मर्तबे का जहूर

शफ़ाअते कुबरा, मक़ामे महमूद, उम्मते मुहम्मदिया की बड़ाई

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन आदम की तमाम औलाद का मैं सरदार हूंगा (यानी सरदार होना सब पर साफ़ हो जाएगा, गो हक़ीक़त में सरदार अब भी आप ही हैं) और मैं इस पर फ़ख्र नहीं करता हूं (बल्कि यह बयान हक़ीक़त और नेमत का इज़्हार है) और मेरे हाथ में हम्द का झंडा होगा और मैं इस पर फ़ख्र नहीं करता हूं और उस दिन हर नबी आदम और उनके अलावा सब नबी मेरे झंडे के नीचे होंगे और ज़मीन में सबसे पहले मैं ज़ाहिर हूंगा।'

दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब क़ियामत का दिन होगा तो मैं नबियों के आगे-आगे हूंगा और उन पर खतीब[2] और शफ़ाअत करने वाला हूंगा, यह बग़ैर फ़ख्र के बयान कर रहा हूं।'

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं

१. तिर्मिज़ी, २. खुत्बा देने वाला, (वक्ता), ३. तिर्मिज़ी,

कि एक दावत में हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ थे। एक दस्त (बकरी का) आपकी ख़िदमत में पेश किया गया, आपको दस्त पसन्द था। उसमें से आपने अपने मुबारक दांतों में थोड़ा-सा रखा और उस वक़्त इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मैं सब इंसानों का सरदार हूंगा। तुम को मालूम है इसके (ज़ाहिर होने) की क्या शक्ल होगी ? फिर खुद ही जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि एक ही मैदान में अल्लाह तआला तमाम अगलों-पिछलों को जमा फ़रमाएंगे, देखने वाला सब को देखेगा और पुकारने वाला सब को सुनायेगा और सूरज उनसे क़रीब होगा, इसलिए लोगों को ऐसी घुटन और बे-चैनी होगी जो ताक़त और बर्दाश्त से बाहर होगी।

इस घुटन और बेचैनी की वजह से लोग (आपस में) कहेंगे कि जिस हाल और जिस मुसीबत में तुम हो, ज़ाहिर है क्या किसी ऐसे (बुज़ुर्ग) शख़्स को नहीं खोजते जो तुम्हारे रब के दरबार में सिफ़ारिश कर दे, फिर कुछ-कुछ से कहेंगे कि तुम्हारे बाप आदम इसके अह्ल हैं, उनसे अर्ज़ करो, चुनांचे उनके पास आकर कहेंगे कि ऐ आदम ! आप अबुल बशर[1] हैं, अल्लाह ने आपको अपने हाथ से पैदा फ़रमाया और अपनी रूह आपके अंदर फूंकी और फ़रिश्तों को हुक्म दिया तो उन्होंने आपको सज्दा किया और आप को जन्नत मे ठहराया, क्या आप अपने रब से हमारे लिए सिफ़ारिश नहीं कर देते ? आप देखते नहीं हैं, हम किस मुसीबत और परेशानी में हैं ? (हज़रत) आदम (अलैहिस्सलाम) फ़रमायेंगे, यक़ीन जानो कि मेरे रब को आज इस क़दर गुस्सा है कि इससे पहले न कभी हुआ और न इसके बाद कभी हरगिज़ इतना गुस्सा होगा और यह हक़ीक़त है कि मेरे रब ने मुझे पेड़ (के पास जाने) से रोका था, जिसकी मुझ से नाफ़रमानी हो गयी। नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी, (मुझे अपनी ही फ़िक्र है) तुम लोग मेरे अलावा किसी दूसरे के पास चले जाओ, ऐसा करो कि नूह के पास पहुंचो (और उनसे दरख़्वास्त करो)। इसलिए लोग (हज़रत) नूह (अलैहिस्सलाम) के पास पहुंचेंगे और अर्ज़ करेंगे कि आप ज़मीन वालों की तरफ़ (कुफ़्फ़ार को ईमान की दावत देने के लिए) सबसे पहले रसूल थे, अल्लाह ने आपको शुक्रगुज़ार बन्दा फ़रमाया है। क्या आप नहीं देख रहे हैं कि हम किस मुसीबत में हैं और हमारा क्या बुरा हाल बना हुआ है ? क्या आप अपने रब के दरबार में हमारे लिए सिफ़ारिश नहीं कर देते ? (हज़रत) नूह (अलैहिस्सलाम) जवाब में

१. इन्सानों के बाप,

फ़रमायेंगे, यक़ीन जानो मेरे रब को आज इतना ग़ुस्सा है कि कभी ऐसा ग़ुस्सा न इससे पहले हुआ और न हरगिज़ कभी इसके बाद होगा और यह सच है कि मैंने अपनी क़ौम के लिए बद-दुआ की थी (मुझे इसपर पकड़े जाने का डर है) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी, तुम लोग मेरे अलावा किसी और के पास पहुंच जाओ, ऐसा करो कि इब्राहीम के पास जाओ।

इसके बाद लोग (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास आएंगे और उनसे अर्ज़ करेंगे कि आप अल्लाह के नबी और ज़मीन वालों में से (चुने हुए) अल्लाह के दोस्त हैं, हमारे लिए अपने रब के सामने सिफ़ारिश फ़रमा दीजिये। आप देख ही रहे हैं कि हमारा क्या हाल बना हुआ है ? (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) उनको जवाब देंगे, यक़ीन जानो, मेरे रब को आज इस क़दर ग़ुस्सा है कि न कभी ऐसा ग़ुस्सा इससे पहले हुआ, न हरगिज़ कभी इसके बाद होगा और यह सच है कि मैंने तीन झूठ[1] बोले थे (गो दीनी मस्लहत और दीनी ज़रूरत से हुए थे, लेकिन ख़ौफ़ है कि कहीं मेरी पकड़ न हो जाए) यह फ़रमा कर उन तीन मौक़ों का ज़िक्र फ़रमाया, जिन में उनसे झूठ निकला था। (आख़िर में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमायेंगे) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी, (तुम मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ) ऐसा करो कि मूसा के पास पहुंचो।

चुनांचे लोग (हज़रत) मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास आएंगे और उनसे अर्ज़ करेंगे कि ऐ मूसा ! आप अल्लाह के रसूल हैं, आप को अल्लाह ने अपने पैग़ामों के ज़रिए और अपने साथ हमकलामी (बात करने) के ज़रिए लोगों पर फ़ज़ीलत दी। आप अपने रब के सामने हमारी सिफ़ारिश कर दीजिए, आप देख रहे हैं कि हमारा कैसा हाल बना हुआ है। (हज़रत) मूसा (अलैहिस्सलाम) जवाब देंगे कि यक़ीन जानो कि मेरे रब को आज इस क़दर ग़ुस्सा है कि ऐसा ग़ुस्सा इससे पहले न हुआ, न हरगिज़ इसके बाद कभी होगा, यह सच है कि मैंने एक शख़्स को क़त्ल किया था, जिसके क़त्ल करने का (ख़ुदा की तरफ़ से) मुझे हुक्म न था।[2] नफ़्सी-

---

१. जिन तीन झूठों का ज़िक्र इस हदीस पाक में है, उनकी कैफ़ियत (अवस्था) ज़रूरत व मस्लहत दूसरी रिवायत में ज़िक्र हुई है, ऐसे मौक़ों पर झूठ बोलना मना नहीं है, लेकिन हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अपने बुलंद मर्तबे की वजह से ख़ौफ़ करेंगे कि गो जायज़ था, मगर झूठ तो था। ख़लीलुल्लाह से उसका होना शायद पकड़ में आये, जिनके रुत्बे हैं सिवा, उनको सिवा मुश्किल है।

२. मूसा अलै० ने एक दिन देखा कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं, एक

नफ़्सी-नफ़्सी, तुम लोग मेरे अलावा किसी और के पास जाओ। ऐसा करो कि ईसा अलै० के पास पहुंचो।

चुनांचे लोग (हज़रत) ईसा (अलैहिस्सलाम) के पास जाएंगे और उनसे अर्ज़ करेंगे कि ऐ ईसा ! आप अल्लाह के रसूल हैं और उसका कलमा हैं, जिसे अल्लाह ने मर्यम तक पहुंचाया और अल्लाह की तरफ़ से रूह हैं। आपने गहवारा में लोगों से बात की (ये आप के फ़ज़ाइल हैं) अपने पालनहार के दरबार में हमारी सिफ़ारिश फ़रमा दीजिये। आप देख ही रहे हैं कि हमारा क्या बुरा हाल बना हुआ है ? वह फ़रमाएंगे कि यक़ीन जानो मेरे रब को आज इतना ग़ुस्सा है कि ऐसा ग़ुस्सा न इससे पहले हुआ, न हरगिज़ कभी इसके बाद होगा।[1]

यहां पहुंच कर प्यारे नबी सल्ल० ने हज़रत ईसा अहिस्सलाम की किसी 'भूल' का ज़िक्र नहीं फ़रमाया, जिसे याद करके वह सिफ़ारिश का उज़्र करेंगे (बल्कि इसके बाद यह फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमायेंगे, नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी (और यह फ़रमायेंगे कि) मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ, ऐसा करो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचो।

आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अब मेरे पास लोग आयेंगे और कहेंगे कि ऐ मुहम्मद सल्ल० ! आप अल्लाह के रसूल हैं और नबियों में आख़िरी नबी हैं और अल्लाह ने आप का सब कुछ बख़्श दिया। अपने रब के दरबार में आप हमारे लिए सिफ़ारिश फ़रमा दीजिए, आप देख ही रहे हैं कि हम किस बद-हाली में हैं।

इसलिए मैं रवाना हो जाऊंगा और अर्श के नीचे आकर अपने रब के लिए सज्दा में पड़ जाऊंगा, फिर अल्लाह तआला मुझ पर अपनी

उनकी क़ौम का था और दूसरा दुश्मनों की क़ौम से था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम वाले ने उनसे मदद चाही, इसलिए आपने उस आदमी को एक घूंसा मार दिया जो उनकी क़ौम वाले पर ज़ुल्म कर रहा था, मारा तो था, सज़ा के लिए, तंबीह करने के लिए, मगर हुक्म ख़ुदा का ऐसा हुआ कि वह मर गया। हज़रत मूसा अलै० शर्मिंदा हुए, अल्लाह तआला से माफ़ी मांगी, अल्लाह तआला ने माफ़ कर दिया, इसी क़िस्से की तरफ़ इशारा है।

१. दूसरी रिवायत में है कि इस मौक़े पर हज़रत ईसा अलहिस्सलाम शफ़ाअत न कर सकने की वजह यह बयान फ़रमाएंगे, अल्लाह से वरे मेरी इबादत की गयी।

वे तारीफ़ें और वह बेहतरीन सना (गुण-गान) खोलेंगे जो मुझ से पहले किसी पर न खोली गयी थी, फिर अल्लाह का इर्शाद होगा कि ऐ मुहम्मद! सर उठाओ और मांगो, तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा, सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी, चुनांचे मैं सर उठाऊंगा और (अल्लाह के दरबार में) अर्ज़ करूंगा कि ऐ रब ! मेरी उम्मत पर रहम फ़रमा, ऐ रब ! मेरी उम्मत पर रहम फ़रमा, ऐ रब ! मेरी उम्मत पर रहम फ़रमा, इसलिए मुझे इर्शाद होगा कि ऐ मुहम्मद ! अपनी उम्मत के उन लोगों को जिन पर कोई हिसाब नहीं है, जन्नत के दरवाज़ों में से दाएं दरवाज़े से दाखिल कर दो और उस दरवाज़े के अलावा दूसरे दरवाज़ों में भी वे साझी हैं (यानी उनको यह भी अख्तियार है कि इस दरवाज़े के अलावा दूसरे दरवाज़ों से दाखिल हो जाएं) इसके बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के दरवाज़ों (की इतनी बड़ी चौड़ाई है कि उन) के दोनों किनारों के दर्मियान जो फ़ासला है, वह इतना लम्बा है कि जितना मक्का और हिज्र के दर्मियान का रास्ता है या (फ़रमाया कि जैसे) मक्का और बुसरा के दर्मियान का रास्ता है ।[1]

दूसरी रिवायत में है (जिसे रिवायत करने वाले हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं) कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शफ़ाअत का वाक़िआ बयान फ़रमा कर यह आयत तिलावत फ़रमायी—

عَسٰى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝

असा अंय्यब् अ स क रब्बु क मक़ामम मह्मूदा०

(क़रीब है कि आप का रब आप को मक़ामे महमूद में खड़ा करेगा)

फिर फ़रमाया कि यह मक़ामे महमूद है जिसका वायदा (अल्लाह तआला ने) तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से किया है ।[2]

उम्मते मुहम्मदिया की पहचान

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक आदमी ने पूछा, ऐ

१. अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब (बुखारी व मुस्लिम) २. बुखारी व मुस्लिम

अल्लाह के रसूल ! आप (क़ियामत के दिन) सारी उम्मतों के दर्मियान जो (हज़रत) नूह (अलैहिस्सलाम) की उम्मत से ले कर आप की उम्मत तक दुनिया में आयी थी, अपनी उम्मत को कैसे पहचानेंगे ? इसके जवाब में आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि वुज़ू के असर से उनके चेहरे रोशन होंगे और हाथ-पांव सफ़ेद होंगे, इनके अलावा और कोई इस हाल में न होगा और मैं उनको इस तरह भी पहचानूंगा कि उनके आमालनामे उनके दाहिने[1] हाथों में दिए जाएंगे और इस तरह भी उनको पहचानूंगा कि उनकी ज़ुर्रियत[2] उनके आगे दौड़ती होगी ।[3]

हौज़े कौसर

हश्र के मैदान में बड़ी भारी तायदाद में हौज़ होंगे। आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हर नबी का एक हौज़ होगा और सब नबी आपस में इस पर फ़ख़्र करेंगे कि किस के पास पीने वाले ज्यादा आते हैं (हर नबी के हौज़ से उसके उम्मती पिएंगे) और मैं उम्मीद करता हूं कि सब से ज़्यादा लोग मेरे पास पीने के लिए आएंगे ।[4]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि आप क़ियामत के दिन मेरे लिए सिफ़ारिश फ़रमा दें। आप ने इर्शाद फ़रमाया कि

१. क़ुरआन शरीफ़ में है कि जिनके आमालनाने दाहिने हाथों में दिए जाएंगे, उनसे आसान हिसाब होगा और अपने बाल-बच्चों में खुश-खुश लौटकर जाएंगे, इसमें उम्मते मुहम्मदिया को खास नहीं किया गया, इसलिए इस हदीस शरीफ़ में जो यह फ़रमाया कि में अपनी उम्मत को इस तरह भी पहचानूंगा कि उनके आमालनामे सीधे हाथों से दिए जाएंगे तो इसके बारे में कुछ उलेमा ने फ़रमाया कि दाहिने हाथों में किसी ऐसी खास शक्ल से उनको आमालनामे मिलेंगे जो दूसरी उम्मतों के साथ न होगा या यह समझो कि उम्मते मुहम्मदिया को सबसे पहले दिए जाएंगे। (हाशिया मिश्कात)
२. आल-औलाद, ३. मिश्कात, किताबुत्तहारत,
४. क्योंकि उम्मते मुहम्मदिया (अला साहिबहस्सलातु वस्सलामु) सब उम्मतों से ज़्यादा होगी। —तिर्मिज़ी,

हां, मैं कर दूंगा। मैंने अर्ज किया, आप को कहां तलाश करूं ? फ़रमाया पहले पुल सिरात पर तलाश करना। मैंने अर्ज किया, वहां आपसे मुलाक़ात न हो तो कहां तलाश करूं ? फ़रमाया, आमाल की तराज़ू के पास तलाश करना ! मैंने अर्ज किया, वहां भी मुलाक़ात न हो तो कहां हाज़िर हूं ? फ़रमाया हौज़ पर तलाश करना, इन तीनों जगहों में से किसी एक जगह ज़रूर मिल जाऊंगा।'

हज़रत मुहम्मद सल्ल० के हौज़ की खूबियां

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई इतनी ज़्यादा है कि उसके एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ जाने के लिए एक महीने की मुद्दत चाहिए और उसके कोने बराबर हैं (यानी वह चौकोर है, लम्बाई-चौड़ाई दोनों बराबर हैं) उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है और उसकी खुश्बू मुश्क से ज़्यादा उम्दा है और उसके लोटे इतने हैं जितने आसमान के सितारे हैं, जो उसमें पियेगा, कभी प्यासा न होगा।'

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बेशक मेरा हौज़ इतना लंबा-चौड़ा है कि उसके दोनों किनारों के दर्मियान उस फ़ासले से भी ज़्यादा फ़ासला है जो एला से अदन तक है, सच जानो वह बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है, जो दूध में मिला हुआ हो और उसके बर्तन सितारों की तायदाद से ज़्यादा हैं और मैं (दूसरी उम्मतों) को अपने हौज़ पर आने से हटाऊंगा, जैसे (दुनिया में) कोई शख़्स दूसरों के ऊंटों को अपने हौज़ से हटाता है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या उस दिन आप हमको पहचानते होंगे ? इर्शाद फ़रमाया, हां, (ज़रूर पहचान लूंगा, इसलिए कि) तुम्हारी एक निशानी होगी जो और किसी उम्मत की न होगी और वह यह कि तुम हौज़ पर मेरे पास इस हाल में आओगे कि वुज़ू के आसार से तुम्हारे चेहरे रोशन होंगे और हाथ-पांव सफ़ेद होंगे।'

दूसरी रिवायत में यह भी है कि आपने इर्शाद फ़रमाया कि आसमान

१. तिर्मिज़ी, २. बुख़ारी व मुस्लिम, ३. मुस्लिम,

के तारों की तायदाद में हौज़ के अंदर सोने-चांदी के लोटे नज़र आ रहे होंगे।' यह भी इर्शाद फ़रमाया कि इस हौज़ में दो परनाले गिर रहे होंगे जो जन्नत (की नहर से) उसके पानी में बढ़ौती कर रहे होंगे, एक परनाला सोने का और दूसरा चांदी का होगा।'

सबसे पहले हौज़ पर पहुंचने वाले

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरा हौज़ इतना बड़ा है जितना अदन' और अमान के दर्मियान फ़ासला है, बर्फ़ से ज़्यादा ठंडा और शहद से ज़्यादा मीठा है और मुश्क से बेहतर उसकी खुश्बू है। उसके प्याले आसमान के सितारों से भी ज़्यादा हैं, जो उसमें से एक बार पी लेगा, उसके बाद कभी भी प्यासा न होगा। सबसे पहले पीने के लिए उस पर मुहाजिर फ़ुक़रा (मुहताज) आएंगे। किसी ने (मौजूद लोगों में से) सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! उनका हाल बता दीजिए, ये वह लोग हैं (दुनिया में) जिन के सरों के बाल बिखरे हुए और चेहरे (भूख, मेहनत व थकन की वजह से) बदले होते थे। इनके लिए (बादशाहों और हाकिमों) के दरवाज़े नहीं खोले जाते थे और अच्छी औरतें इनके निकाह में नहीं दी जाती थीं और (इनके मामलों की खूबी का यह हाल था कि) इनके ज़िम्मे जो हक़ (किसी का) होता था तो सब चुका देते थे और इनका जो (हक़ किसी पर) होता था तो पूरा न लेते थे (बल्कि थोड़ा बहुत) छोड़ देते थे।'

यानी दुनिया में उनकी बदहाली और तंगी का यह हाल था कि बाल सुधारने और कपड़े साफ़ रखने की ताक़त भी न थी और ज़ाहिर

१. मुस्लिम, २. मुस्लिम,

३. हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई कई तरह इर्शाद फ़रमायी है, कहीं एक माह की दूरी उसके किनारों के दर्मियान फ़रमाया, कहीं एला और अदन के बीच की दूरी से इसे नापा, कहीं कुछ और फ़रमाया। इन मिसालों का मक़सद हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई को समझाना है, नापी हुई दूरी बताना मुराद नहीं है। मौजूद लोगों के हिसाब से वह दूरी ज़िक्र फ़रमायी है जिसे वे समझ सकते थे। खुलासा तमाम रिवायतों का यह है कि इस हौज़ की दूरी सैकड़ों मील है।

४. तर्ग़ीब व तर्हीब,

है संवारने का उनको ऐसा खास ध्यान भी न था कि बनाव-सिंगार के चों चलों में वक़्त गुज़ारते और आखिरत से ग़फ़लत बरतते, उनको दुनिया में फ़िक्र-मुसीबतें इस तरह घेरी रहती थीं कि चेहरों पर उनका असर ज़ाहिर था, दुनिया वाले उनको ऐसा नीच समझते थे कि मज्लिसों, जश्नों और शाही दरबारों में उनको दावत देकर बुलाना तो दूर की बात उनके लिए ऐसे मौक़ों में दरवाज़े ही न खोले जाते थे और वे औरतें जो नाज़ व नेमत में पली थीं, इन खुदा के खास बन्दों के निकाहों में नहीं दी जाती थीं, मगर आख़िरत में उनका यह रुत्बा होगा कि हौज़ कौसर पर सबसे पहले पहुंचेंगे, उनको छोटा समझने वाले उनके बाद उस पाक हौज़ से पी सकेंगे (बशर्ते कि ईमान वाले और उसमें से पीने के लायक़ हो)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के सामने आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद सुनाया गया कि हौज़े कौसर पर सबसे पहले फ़ुक़रा मुहाजिरीन पहुंचेंगे जिनके सर बिखरे हुए और कपड़े मैले रहते थे और जिनसे अच्छी औरतों के निकाह न किये जाते थे और जिनके लिए दरवाज़े नहीं खोले जाते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस इर्शाद को सुनकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (घबरा गये) और बे-अख्तियार फ़रमाया कि मैं तो ऐसा नहीं हूं! मेरे निकाह में अब्दुल मलिक की बेटी फ़ातिमा (शाहज़ादी) है और मेरे लिए दरवाज़े खोले जाते हैं, अब तो ज़रूर ही ऐसा करूंगा कि उस वक़्त तक सर को न धोऊंगा जब तक बाल बिखर न जाया करेंगे और न अपने बदन का कपड़ा उस वक़्त तक धोऊंगा जब तक मैला न हो जाया करेगा।[1]

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैहि वक़्त के खलीफ़ा और इस्लामी सरकार के चलाने वाले थे। आख़िरत की फ़िक्र के उनके बड़े-बड़े क़िस्से एतबार वाली किताबों में मिलते हैं।

हौज़े कौसर से हटाये जाने वाले

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि यक़ीन जानो (क़ियामत के दिन) हौज़ पर तुम्हारा मेरा सामना होगा (यानी मैं तुमको पिलाने के लिए पहले पहुंचा हुआ हूंगा)। जो मेरे पास

१. तर्ग़ीब व तर्हीब,

से होकर गुज़रेगा, पी लेगा और जो (मेरे पास हौज़ से) पी लेगा, कभी प्यासा न होगा, फिर इर्शाद फ़रमाया, ऐसा ज़रूर होगा कि पीने के लिए मेरे पास ऐसे लोग आएंगे, जिनको मैं पहचानता हूंगा और वे मुझे पहचानते होंगे, फिर (उनको मुझ तक पहुंचने न दिया जाएगा, बल्कि) मेरे और उनके दर्मियान आड़ लगा दी जाएगी (और वे पीने से महरूम रह जाएंगे, मैं कहूंगा, ये तो मेरे आदमी हैं (इनको आने दिया जाए) इस पर (मुझ से) कहा जाएगा कि आप नहीं जानते हैं कि आपके बाद उन्होंने क्या नयी चीज़ें निकाली थीं, यह सुनकर मैं कहूंगा दूर हों, जिन्होंने मेरे बाद अदल-बदल किया।[1]

आह ! दीन में पच्चर लगाने वालों का उस वक़्त कैसा बुरा हाल होगा जबकि क़ियामत के दिन प्यास से बेताब और मुसीबत से परेशान होंगे और हौज़े कौसर के क़रीब पहुंचा कर धुत्कार दिये जाएंगे और प्यारे नबी सल्ल० उनकी 'नयी बातों' का हाल सुनकर 'दूर-दूर' फ़रमा कर फटकार देंगे।

क़ुरआन व हदीस में जो कुछ आया है और जो हदीसों और आयतों से निकलता है, उसी पर चलने में भलाई और कामियाबी है, लोगों ने हज़ारों बिद्अतें निकाल रखी हैं और दीन में अदल-बदल कर रखा है, जिनसे उनकी दुनिया भी चलती है और नफ़्स को मज़ा भी आता है और अलग-अलग इलाक़ों में अलग-अलग बिद्अतें रिवाज पा गयी हैं, ऐसे लोगों को समझाया जाता है तो उलटा समझाने वाले ही को बुरा कहते हैं। हम सीधी और मोटी सी एक बात कहे देते हैं कि जो कोई काम करना हो, आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जैसे फ़रमाया, इस तरह करो और जिस तरह आपने किया उसी तरह अमल करो।

दुनियादार पीर-फ़क़ीर या मौलवी-मुल्ला अगर कहें कि फ़्लां काम में सवाब है और अच्छा है तो उनसे सबूत मांगो और पूछो कि बताओ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया है या नहीं ? और हदीस शरीफ़ की किस किताब में लिखा है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ऐसा करना पसंद था या आपने इसको अंजाम दिया है।

मरने-जीने और ब्याह-शादी में औरतों ने और दुनियादार पीरों-फ़क़ीरों ने बड़ी बिद्अतें और ग़ैर शरई रस्में निकाल रखी हैं, सोयम,

१. बुखारी व मुस्लिम शरीफ़, २. मिश्कात शरीफ़, ३. मिश्कात,

चेहलुम, क़ब्र पर चादर, क़ब्र का ग़ुस्ल, संदल, उर्स, पक्की क़ब्र और इसी तरह की बहुत सी बातें जो क़ब्रों पर होती है, बिद्अत हैं, ऐसा करने वाले अंजाम सोच लें, हौज़े कौसर से हटाये जाने को तैयार रहें और क़ब्र का तवाफ़ और क़ब्र को या पीर को सज्दा यह तो शिर्क है, जो गुनाह में बिद्अत से कहीं ज्यादा बढ़ा हुआ है।

अपने-अपने बापों के नाम से बुलाये जायेंगे

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम क़ियामत के दिन अपने नामों के साथ और अपने बापों के नामों के साथ बुलाये जाओगे, इसलिए तुम अपने नाम अच्छे रखो'। आम तौर से मशहूर है कि क़ियामत के दिन लोग अपनी माओं के नामों के साथ पुकारे जाएंगे, यह सही नहीं है, बनायी हुई बात है।[2]

क़ियामत बुलन्द और पस्त करने वाली होगी

क़ियामत के बारे में अल्लाह का इर्शाद है—

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ -

(سورۂ واقعہ)

इज़ा व क़ अतिल वाक़िअतु लै स लिवक़् अतिहा काज़िबतुन ख़ाफ़िज़तुर्रा फ़िअः—

—सूरः वाक़िअः

'जिस वक़्त होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी, नहीं है उसके होने में कुछ झूठ, वह पस्त करने वाली है और बुलंद करने वाली।'

क़ियामत के दिन अमल के मुताबिक़ रुत्बों में फ़र्क़ होगा और

---

१. अहमद, अबूदाऊद,

२. इमाम बुख़ारी ने अपनी जामे सहीह में बाब 'मा युद्अन्नासु यौमल क़ियामति बि आ बा इहिम' क़ायम करके सही हदीस से साबित किया है कि क़ियामत के दिन बापों के नाम से बुलावा होगा। मआलिमुत्तंज़ील में माओं के नामों के साथ पुकारने की तीन वजहें बतायी गयी हैं, लेकिन ये सब मन गढ़ंत हैं जो सिर्फ़ रिवायत के मशहूर होने की वजह से तज्वीज़ किये गये हैं, चुनांचे साहिबे मआलिमुत्तंज़ील ने तीनों वज्हों का ज़िक्र करके फ़रमाया है कि सही हदीसें इस [illegible] क़ौल के ख़िलाफ़ हैं।

छोटाई-बड़ाई का मेयार नेकी-बदी होगा। यहां दुनिया में जो छोटा-बड़ा होने के मेयार हैं यहीं रह जाएंगे बड़े-बड़े घमंडी, जो दुनिया में बहुत घमंडी और सर बुलंद समझे जाते थे, क़ियामत के दिन दोज़ख़ के गहरे गढ़े में ढकेल दिए जाएंगे और उनकी बड़ाई और चौधराहट धूल में मिल जाएगी, वहां ये मर्दूद कहेंगे—

مَا اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ، هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطَانِيَهْ ،

मा अग्ना अन्नी मालियः ह ल क अन्नी सुल्तानियः—०

'मेरा माल मेरे कुछ काम न आया, जाती रही मेरी हुकूमत।'

और यह कहना और हाथ मलना कुछ काम न आयेगा, और बहुत से लोग ऐसे होंगे जो दुनिया में नर्म बनकर रहते थे, लोग उनको नीचता की नज़र से देखते थे और नीची ज़ात का समझते थे और उनको अपनी बड़ाई का ख्याल न था लेकिन चूंकि उन्होंने अल्लाह से अपना ताल्लुक़ सही रखा और अल्लाह के हुक्मों पर अमल करते रहे, इसलिए क़ियामत के दिन उनमें से कोई मुश्क के टीले पर बैठा होगा, कोई नूर के मिंबर पर होगा, अर्श के साए में मज़े करते होंगे, फिर बहुत से तो बे-हिसाब और बहुत से तो हिसाब के बाद जन्नत में दाख़िल होंगे और उसके साफ़-सुथरे कोठों में चैन से रहेंगे—

उलाइ क युज्ज़ौ न ल ग़ुर्फ़ त बिमा स ब रू व यूलक़्क़ौ न फ़ीहा तहीयतंव्व सलामा० اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلَامًا ط

सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ख़बरदार! बहुत से लोग जो दुनिया में खाते-पीते और नेमतों में रहने वाले हैं, आख़िरत में नंगे-भूखे होंगे, फिर फ़रमाया कि ख़बरदार! दुनिया में बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपने को इज़्ज़तदार बना रहे हैं और हक़ीक़त में वे अपने को ज़लील कर रहे हैं (जिसका पता आख़िरत में चल जाएगा) और बहुत से लोग दुनिया में ऐसे हैं जो (नर्मी की वजह से) अपने को ज़लील कर रहे हैं। सच तो यह है कि वे अपने को इज़्ज़तदार बना रहे हैं (क्योंकि उनकी नर्मी उनको जन्नत में पहुंचा देगी)।'

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ज़रूर ऐसा होगा कि क़ियामत के दिन (भारी भरकम) मोटा-ताज़ा आदमी आयेगा, जिसका वज़न अल्लाह के नज़दीक मच्छर के बराबर भी न होगा यानी उसकी हैसियत और पोज़ीशन उस दिन न होगी) फिर आपने

---

१. तर्ग़ीब व तर्हीब,

फ़रमाया कि तुम चाहो तो (मेरी बात की तस्दीक़ में) इस आयत को पढ़ लो—

فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ـ

फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना०

(तो हम क़ियामत के दिन उनके लिए ज़रा वज़न भी क़ायम न करेंगे।)

आज दुनिया में बहुत से आक़ा हैं, जिनके नौकर-चाकर और खादिम हैं। इन नौकरों को गालियां देते हैं, मारते-पीटते हैं और बहुत से लोग दौलत या ओहदे के नशे में कम-हैसियत लोगों से बेगारें लेते हैं और बात-बात में लात-घूंसा दिखाते हैं, लेकिन क़ियामत का दिन सही फ़ैसले और वाक़ई इंसाफ़ का होगा, वहां बहुत से नौकर-चाकर और कम हैसियत लोग बुलन्द हो जाएंगे और घमंड करने वाले, दौलत व पोज़ीशन वाले, जो ख़ुदा के बाग़ी थे, पस्त हो जाएंगे, उन पर ज़िल्लत सवार होगी और दोज़ख़ का रास्ता देखेंगे। क्या हाल बनेगा उन लोगों का जो बड़ाई के लिए एलेक्शन पर एलेक्शन लड़े चले जाते हैं और बड़ाई की उम्मीद में या बड़ाई मिलने के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों के खिलाफ़ करते रहते हैं, ऐसे लोग अपना अंजाम सोच लें।

नेमतों का हाल

क़ियामत के दिन नेमतों का सवाल होगा। क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है—

ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ـ

सुम्म ल तुस्अ लुन्न यौ म इज़िन अनिन्नईम०

(फिर अल-बत्ता ज़रूर तुम से उस दिन नेमतों की पूछ होगी।)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहा क़ियामत के दिन नेमतों में से सब से पहले (तन्दुरुस्ती और ठंडे पानी का सवाल होगा और) यों पूछा जाएगा कि क्या हमने तेरे जिस्म को ठीक न रखा था और क्या तुझे हमने ठंडे पानी से तर नहीं किया था।[1]

१. तिर्मिज़ी शरीफ़,

अल्लाह तआला ने जो कुछ भी इनायत फ़रमाया है, बग़ैर किसी हक़ के दिया है, उनको यह हक़ है कि अपनी नेमत के बारे में सवाल करें और यह पकड़ करें कि मेरी नेमतों में तुम रहे, बोलो, इन नेमतों का क्या हक़ अदा किया और मेरी इबादत में कितना लगे और इन नेमतों के इस्तेमाल के बदले क्या लेकर आये ? यह सवाल बड़ा ही कठिन होगा। मुबारक हैं वे लोग जो ख़ुदा की नेमतों के शुक्रिए में नेक अमल करते रहते हैं और आख़िरत की पूछ से कांपते हैं, इसके खिलाफ़ वे बद-क़िस्मत हैं जो अल्लाह की नेमतों में पलते-बढ़ते हैं और नेमतों में डूबे हुए हैं, लेकिन ख़ुदा की तरफ़ उनका ज़रा ध्यान नहीं और ख़ुदा के सामने झुकने का ज़रा ख़्याल नहीं! अल्लाह तआला की अनगिनत नेमतें हैं। क़ुरआन मजीद में इर्शाद है—

وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ـ

व इन तअुद्दु निअ्मतल्लाहि ला तुह्सूहा

(अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनोगे, तो गिन नहीं सकते।)

फिर साथ ही यह भी फ़रमाया—

इन्नल इन्सा न ल ज़लूमुन कफ़्फ़ार० إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ـ

(बिला शुब्हा इन्सान बड़ा ज़ालिम (और) ना-शुक्रा है।)

बिला शुब्हा यह इंसान की बड़ी नादानी और ज़ुल्म है कि मख़्लूक़ के ज़रा से भी एहसान का भी शुक्रिया अदा करता है और जिससे कुछ मिलता है, उससे दबता है और उसके सामने बा-अदब खड़ा होता है, हालांकि ये देने वाले मुफ़्त नहीं देते, बल्कि किसी काम के बदले या आगे किसी काम के मिलने की उम्मीद में देते-दिलाते हैं। अल्लाह तआला, पैदा करने वाले मालिक, ग़नी और ग़नी बनाने वाले हैं, वे बग़ैर किसी ग़रज़ के देते हैं, लेकिन उनके हुक्मों पर चलने और उनके आगे सज्दा करने से इंसान भागता-फिरता है, यह बड़ी बद-क़िस्मती है। अल्लाह की नेमतों को कोई कहां तक गिनेगा, जो नेमत है हर एक का मुहताज है, एक बदन की सलामती और तन्दुरुस्ती ही को ले लीजिए, कैसी बड़ी नेमत है, जब प्यास लगती है तो ग़टा ग़ट ठंडा पानी पी जाते हैं, यह पानी किसने पैदा किया है ? इस पैदा करने वाले के हुक्मों पर चलने और शुक्रगुज़ार बन्दा बनने की भी फ़िक्र है या नहीं ? यह ग़ौर करने की बात है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन इंसान के क़दम (हिसाब की जगह

से) न हट सकेंगे, जब तक कि उससे पांच चीज़ों का सवाल न हो जाएगा—

१. उम्र का सवाल होगा कि किन चीज़ों में खत्म कर दी ?
२. जवानी का सवाल होगा कि कहां बर्बाद कर दी ?
३. माल का सवाल होगा कि कहां से कमाया ?
४. और कहां खर्च किया ?
५. इल्म का सवाल होगा कि (दीन और दीनियात का) जो इल्म था उस पर क्या अमल किया ?[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन इंसान के तीन दफ़्तर होंगे। एक दफ़्तर में उसके नेक अमल लिखे होंगे, दूसरे दफ़्तर में उसके गुनाह दर्ज होंगे और एक दफ़्तर में अल्लाह की वे नेमतें दर्ज होंगी जो उसको खुदा की तरफ़ से दुनिया में दी गयी थीं। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल सब से छोटी नेमत से फ़रमायेंगे कि अपनी क़ीमत उसके नेक अमल में से ले ले, चुनांचे वह नेमत उसके तमाम नेक अमल को अपनी क़ीमत में लगा लेगी और इसके बाद अर्ज़ करेगी कि (ऐ रब !) आप की इज़्ज़त की क़सम ! अभी मैंने पूरी क़ीमत वसूल नहीं की है। अब इसके बाद गुनाह बाक़ी रहे और नेमतें भी बाक़ी रहीं (जिन की क़ीमत अदा नहीं हुई है) रहे नेक अमल ! सो वे सब खत्म हो चुके, क्योंकि सबसे छोटी नेमत अपनी क़ीमत में तमाम नेक अमल को लगा चुकी है, पस जब अल्लाह तआला किसी बन्दे पर रहम करना चाहेंगे (यानी मग़फ़िरत फ़रमा कर जन्नत अता फ़रमाना चाहेंगे) तो फ़रमायेंगे कि ऐ मेरे बन्दे ! मैं ने तेरी नेकियों को बढ़ा दिया और तेरे गुनाहों से आंखें बचायीं।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि शायद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर खुदा-ए-पाक का इर्शाद गरामी नक़ल फ़रमाते हुए यह भी फ़रमाया कि मैं ने तुझे अपनी नेमतें (यों ही बग़ैर किसी बदले में) बख़्श दीं।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के रोज़ इंसान को बकरी के बच्चे की तरह (बे-हक़ीक़त और बे-हैसियत होने की हालत में) लाया जाएगा फिर अल्लाह के सामने खड़ा कर दिया

१. तिर्मिज़ी शरीफ़, २. तर्ग़ीब अनिल बज़्ज़ार,

जाएगा। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि मैंने तुझे दिया और नेमतों से माला माल किया, तू ने क्या किया ? वह जवाब देगा कि ऐ रब ! मैं ने माल जमा किया और नफ़ा पर नफ़ा कमा कर उसे बढ़ाया और जितना शुरू में था, उससे बहुत ज़्यादा बढ़ाकर छोड़ आया हूं, इसलिए आप मुझे इजाज़त दीजिए, मैं सारा आपके दरबार में लाकर हाज़िर कर देता हूं। अल्लाह का इर्शाद होगा (यहां से वापस जाने का क़ानून नहीं है) जो पहले से यहां भेजा था वह दिखाओ। इस फ़रमान के जवाब में वह फिर वही कहेगा कि ऐ रब ! मैं ने माल जमा किया और नफ़ा पर नफ़ा कमा कर उसे बढ़ाया और जितना शुरू में था उससे बहुत ज़्यादा बढ़ा कर छोड़ आया, पस मुझे वापस भेज दिए, मैं सारा माल लाकर आपके दरबार में हाज़िर कर देता हूं।

खुलासा यह कि वह यही जवाब देगा और चूंकि कुछ पहले से वहां के लिए इस दुनिया से न भेजा था, इसलिए वह नतीजे के तौर पर ऐसा शख़्स निकलेगा जिसने ज़रा भलाई (अपने लिए) पहले से न भेजी थी, चुनांचे उसको दोज़ख की तरफ़ रवाना कर दिया जाएगा।[1]

पैग़म्बरों से सवाल

क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है—

فَلَنَسْئَلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْئَلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ (اعراف)

फ़ ल नसअलन्न ल्लज़ी न उर्सिल इलैहिम व ल नस् अलन्नल मुर्सलीन०
—सूर: आराफ़

'सो हम को ज़रूर पूछना है उन से जिनके पास पैग़म्बर भेजे गये और ज़रूर पूछना है पैग़म्बरों से।'

इसकी तश्रीह (व्याख्या) दूसरी आयतों में इस तरह फ़रमायी—

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَا اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُوْنَ ٥

व यौ म युनादीहिम फ़ यक़ूलु मा ज़ा अजब्तुमुल मुर्सलीन फ़ अमियत अलैहिमुल अंबाउ यौ म इज़िन फ़हुम ला य त सा अ लून०
—सूर: क़सस, पारा, २०

१. तिर्मिज़ी शरीफ़,

'और जिस दिन उन से पुकार कर पूछेंगा कि तुमने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया, सो उस दिन उन से सब मज़ामीन गुम हो जाएंगे, पस वे आपस में भी पूछ-पाछ न कर सकेंगे।'

यानी रिसालत के बारे में सवाल होगा कि तुम पैग़म्बरों के समझाने पर समझे या नहीं ? पैग़म्बरों को तुम ने क्या जवाब दिया ? इस सवाल का कोई जवाब न बन पड़ेगा।

दूसरी जगह इर्शाद है—

يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا اجبتم قالوا لا علم لنا انك انت علام الغيوب (مائدہ پ ۷)

यौ म यज्म उल्लाहुरु सुल फ़ यक़ू लु मा ज़ा उजिब्तुम क़ालू ला ग्रिल्म लना इन्न क अन्त अल्लामुल ग़ुयूबि० —माइदः पारा ७

'जिस दिन अल्लाह तआला जमा फ़रमायेंगे सब पैग़म्बरों को फिर सवाल फ़रमायेंगे कि तुम को क्या जवाब मिला। वें कहेंगे हम को खबर नही ! बेशक आप छिपी बातों के जानने वाले हैं।'

यह सवाल अंबिया किरामं अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु से उनकी उम्मतों के सामने होगा कि जब तुम उनके पास हक़ की दावत ले गये तो उन्होंने क्या जवाब दिया। उस वक़्त अल्लाह की बड़ाई ज़ाहिर होगी, उसके क़हर से सब डर रहे होंगे, बे-इंतिहा डर की वजह से अल्लाह तआला के सामने जवाब में 'ला इल्म लना' (हमको कुछ खबर नहीं) से ज़्यादा कुछ न कर सकेंगे।

सूरः निसा में फ़रमाया—

فكيف اذا جئنا من كل امة بشهيد وجئنا بك على هؤلاء شهيدا

फ़ कै फ़ इज़ा जिअ्ना मिन कुल्लि उम्मतिन बिशहीदिंव्व जिअ्ना बि क अला हा उलाइ शहीदा०

'फिर उस वक़्त क्या हाल होगा, जब बुलाएंगे हम हर उम्मत में से (उसका) हाल बताने वाला और तुमको उन (लोगों) के मुताल्लिक़ गवाही देने वाला बनाकर लाएंगे।'

इससे हर उम्मत का नबी और हर ज़माने के नेक और मोतबर लोग मुराद हैं कि वह क़ियामत के दिन लोगों की ना-फ़रमानी और फ़रमां-बरदारी बयान करेंगे और सबके हालात की गवाही देंगे, यह जो फ़रमाया, 'व जिअ्ना बि क अलाहा उलाइ शहीदा०' (कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तुमको उनके मुताल्लिक़ देने गवाही वाला बना कर लाएंगे) इसका मतलब यह है कि दूसरे नबियों की तरह आप भी अपनी उम्मत के हालात व आमाल के बारे में गवाही देंगे और यह भी हो सकता है कि 'हा उलाइ' का इशारा नबियों की तरफ़ हो, जिसका मतलब यह होगा कि सय्यदे आलम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अंबिया-ए-किराम की सच्चाई पर गवाही देंगे, जब कि उनकी उम्मतें उनको झूठा बताएंगी। एक बात यह भी हो सकती है कि 'हा उलाइ' का इशारा काफ़िरों की तरफ़ हो, जिनका ज़िक्र पिछली आयत 'यौम इज़िय्य वद्दु ल्लज़ी न क फ़ रू' में हो चुका है। इस शक्ल में मतलब यह होगा कि जिस तरह पिछले नबी अपनी उम्मत के फ़ासिक़ों व काफ़िरों के फ़िस्क़ व कुफ़्र की गवाही देंगे, ऐसे ही आप भी ऐ मुहम्मद ! इनकी बद-आमाली पर गवाह बनेंगे, जिससे उनकी खराबी व बुराई और ज़्यादा साबित होगी।

फ़रिश्तों से ख़िताब

सूरः सबा में इर्शाद फ़रमाया—

ويوم يحشرهم جميعا ثم يقول للملائكة اهؤلاء اياكم كانوا يعبدون

व यौ म यह्शुरु हुम जमीअन सुम्म यक़ूलु लिल मलाइकति अ हाउलाइ इय्याकुम कानू यअ्बुदू न०

'और जिस दिन (अल्लाह तआला) जमा फ़रमायेगा इन सबको फिर फ़रिश्तों से सवाल फ़रमायेगा, क्या ये लोग तुमको पूजा करते थे।'

दुनिया में बहुत से मुश्रिक फ़रिश्तों को खुदा की बेटियां बताते थे और उनके हैकल बनाकर पूजते थे, कुछ उलेमा का कहना है कि बुत परस्ती की शुरूआत फ़रिश्तों की पूजा से हुई। क़ियामत के दिन मुश्रिकों को सुना कर अल्लाह जल्लशानुहू फ़रिश्तों से सवाल फ़रमायेंगे, क्या ये लोग तुमको पूजते थे, शायद सवाल का मतलब यह हो कि तुम ने तो उनसे ऐसा नहीं किया और तुम इनके इस काम से खुश तो नहीं हुए ? और इस सवाल से यह मक़सद भी हो सकता है कि फ़रिश्तों का यह जवाब मुश्रिकों के सामने सुनवा दिया जाए कि न हमने उनको शिर्क की तालीम दी, न उनकी इस हरकत से खुश हुए ! ताकि मुश्रिकों को यह यक़ीन हो जाए कि अपने

अमल के हम ख़ुद अकेले ज़िम्मेदार हैं।

फ़रिश्तों का जवाब

आगे इसी आयत के बाद फ़रमाया—

قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُونِهِمْ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُمْ
بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ۝

क़ालू सुब्हा न क अन्त वलीयुना मिन दूनिहिम ब ल कानू यअबुदू नल जिन्न अक्सरुहुम बिहिम मुअ्मिनून०

'फ़रिश्ते जवाब में अर्ज़ करेंगे कि तेरी ज़ात पाक है, तू ही हमारा वली है न कि वह, बल्कि वह पूजा करते थे जिन्नों की, उनमें अक्सर उनही को मानते थे।'

यानी आपकी ज़ात इससे पाक है कि किसी दर्ज में भी कोई आपका शरीक हो, हम क्यों ऐसी बात कहते और क्यों शिर्किया हरकतों से ख़ुश रहते, हमारी ख़ुशी आपकी ख़ुशी में है, इन नालायक़ों से हमको क्या वास्ता, ये बद-बख़्त हक़ीक़त में हमारी पूजा करते भी न थे, नाम हमारी पूजा का लेते और पूजते शैतानों को थे! शैतान उनको जिस तरफ़ मोड़ते, उधर ही मुड़ जाते थे, चाहे फ़रिश्तों का नाम लेकर, चाहे किसी नबी का, किसी वली और शहीद, पीर-फ़क़ीर का।

आगे फ़रमाया—

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ
ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

फ़ल् यौ म ला यम्लिकु बअ्ज़ुकुम लिबअ्ज़िन नफ़्अंव्व ला ज़र्रंव्व नक़ूल लिल्लज़ी न ज़ ल मू ज़ूक़ू अज़ाबन्ना रिल्लती कुन्तुम बिहा तुकज़्ज़िबून०

'सो, आज मालिक नहीं तुम में से कोई एक दूसरे के नफ़ा का, न नुक़सान का और हम कह देंगे यह ज़ालिमों से कि चखो उस आग का अज़ाब जिसे तुम झुठलाते थे।'

हज़रत नूह अलैहिस्सलातु वस्सलामु की उम्मत के ख़िलाफ़ उम्मते मुहम्मदिया की गवाही

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहित्तहीयतु वत्तस्लीम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन (हज़रत) नूह अलैहिस्सलाम को लाया जाएगा और उनसे सवाल होगा कि क्या तुमने तब्लीग़ (प्रचार) की? वे अर्ज़ करेंगे कि या रब! मैंने सच में तब्लीग़ की थी! उनकी उम्मत से सवाल होगा कि बोलो क्या उन्होंने तुमको हुक्म पहुंचाये? वे कहेंगे कि नहीं! हमारे पास तो कोई नज़ीर (यानी डराने वाला) नहीं आया। इसके बाद (हज़रत) नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा जाएगा कि तुम्हारे दावे की तस्दीक़ की गवाही देने वाले कौन हैं? वे जवाब देंगे कि (हज़रत) मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उनके उम्मती हैं। यहां तक वाक़िआ नक़ल करने के बाद आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को ख़िताब करके फ़रमाया कि इसके बाद तुमको लाया जाएगा और तुम गवाही दोगे कि बेशक हज़रत नूह अलैहिस्सलातु वस्सलामु ने अपनी क़ौम को तब्लीग़ की थी, इसके बाद आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने (सूरः बक़रः की) नीचे की आयत तिलावत फ़रमायी—

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ
عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۝

व कज़ालि क जअल्नाकुम उम्मतंव्व स तल्लितकूनू शु ह दा अ अलन्नासि व यकूनर्रसू लु अलैकुम शहीदा०

'और हमने तुमको एक ऐसी जमाअत बना दी है जो बहुत दर्मियानी है ताकि तुम दूसरी उम्मतों के लोगों के मुक़ाबले में गवाह बनो। और तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम गवाह बनें।'

यह बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है। मुस्नद इमाम अहमद रह० की एक रिवायत से ज़ाहिर होता है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलातु वस्सलामु के अलावा दूसरे नबी सल्ल० की उम्मतें भी इंकारी होंगी और कहेंगी कि हमको तब्लीग़ नहीं की गयी, उनके नबियों से सवाल होगा कि तुमने तब्लीग़ की। वे कहेंगे कि जो हमने तब्लीग़ की थी, इस पर उनसे गवाह

मांगे जाएंगे तो वे हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उनकी उम्मत को गवाही में पेश करेंगे, चुनांचे हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह अल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उनकी उम्मत से सवाल होगा कि इस बारे में आप हज़रत क्या कहते हैं। जवाब में अर्ज़ करेंगे, जी, हम पैग़म्बरों के दावे की तस्दीक़ करते हैं! उम्मते मुहम्मदिया से सवाल होगा कि तुमको इस मामले में क्या ख़बर है? वे जवाब में अर्ज़ करेंगे कि हमारे पास हमारे नबी सल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये और उन्होंने ख़बर दी कि तमाम पैग़म्बरों ने अपनी अपनी उम्मत की तब्लीग़ की।'

आयत का आम होना 'लि तकूनू शुहदाअ अलन्नासि' भी इसको चाहता है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलातु वस्सलामु के अलावा दूसरे नबियों की उम्मतों के मुक़ाबले में भी उम्मते मुहम्मदिया गवाही देगी।

यहां एक शुब्हा किया जा सकता है और वह यह कि उम्मते मुहम्मदिया नबियों से ज़्यादा सच्ची और एतबार के क़ाबिल तो नहीं है, फिर नबियों की सच्चाई को उम्मते मुहम्मदिया की गवाही से साबित करने का क्या मतलब होगा? जवाब यह है कि ज़्यादा एतबार के और सच्चे तो हज़रात अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु ही हैं लेकिन चूंकि इस मुक़दमे में फ़रीक़ हो गये, इसलिए दूसरे गवाहों की ज़रूरत होगी, भले ही वे गवाह नबियों से कम दर्जे के होंगे।' और उनके

१. कुछ रिवायतों में यह भी आया है कि जब उम्मते मुहम्मदिया दूसरी उम्मतों के मुक़ाबले में उनके नबियों की ताईद में गवाही देगी तो सय्यदे आलम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सवाल होगा कि क्या तुम्हारी उम्मत इस लायक़ है कि उनकी गवाही मोतबर मानी जाए? आं हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत की अदालत की गवाही देंगे, यानी यह फ़रमायेंगे कि हां, ये सच कहते हैं और इनकी गवाही मोतबर है। बेशक इस उम्मत का बड़ा मर्तबा है और बहुत बड़ाई है, जिसका हश्र के मैदान में अगलों-पिछलों के सामने ज़हूर होगा। उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० की गवाही पर हज़रात अंबिया किराम अलै० के हक़ में अल्लाह के दरबार में फ़ैसला होना और अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु के मुख़ालिफ़ों का मुजरिम क़रार पा कर सज़ा पाना इस उम्मत के लिए बड़े ऊंचे दर्जे की इज़्ज़त है। —बयानुल क़ुरआन

२. यहां एक सवाल और पैदा होता है और वह यह है कि जब उम्मते मुहम्मदिया नबियों की तब्लीग़ के वक़्त मौजूद न थी तो उनकी गवाही कैसे एतबार की होगी? जवाब यह है कि गवाही का भरोसा सिर्फ़ यक़ीन पर है और महसूसाते ग़ैर साबित बिल वह्य (वह्य के अलावा की महसूस चीज़ों) में यक़ीन हासिल होना बग़ैर देखे मुम्किन नहीं, इसलिए गवाही का मदार (आश्रय) मुशाहदा (देखना) को बना दिया गया है और नबियों की तब्लीग व रिसालत का वाक़िआ अगर्चे महसूस भी है और मुशाहद (जिसे देखा जाए) भी है, लेकिन उम्मते मुहम्मदिया की गवाही का एतबार के क़ाबिल होना देखने की वजह से नहीं, बल्कि वह्य से साबित होने की वजह से होगा और वह्य से मुशाहदे जैसा, बल्कि उससे भी ज़्यादा यक़ीन हासिल होता है और यक़ीन ही असल गवाही का मदार है जैसे कोई डाक्टर किसी मुर्दा को जिसके बदन पर कोई ज़ाहिरी निशानी (ज़ख़्म वग़ैरह न हो) देखकर अपनी महारत के ज़रिए यह इज़हार कर दे कि यह शख़्स मर्ज़ से नहीं बल्कि किसी भारी चोट से मरा है और इस वजह से क़ातिल की इन्क्वाइरी का हुक्म हो जाए, तो इसके बावजूद कि डाक्टर उसकी मौत के वक़्त मौजूद न था, चूंकि सेहत के क़ायदों की वजह से 'भारी चोट' वजह बतायी गयी, इसलिए इसका एतबार किया गया। —बयानुल क़ुरआन

एतबार वाला होने की गवाही प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दे देंगे जैसे कोई तहसीलदार (जो ख़ुद भी साहिबे इज्लास होता है) किसी गुस्ताख़ चपरासी के मुक़दमे में फ़रीक़ बन जाए तो हाकिमे आला के इज्लास में तहसीलदार से गवाह तलब किये जाएंगे, भले ही वे रुत्बे में तहसीलदार से छोटे दर्जे के हों और फिर उन गवाहों की सच्चाई को देख कर फ़ैसला किया जाएगा, यहीं से एक और शुब्हे का जवाब भी साफ़ हो जाता है। शुब्हा यह है कि रिसालत व तब्लीग़ के इंकारी इस मौक़े पर यह कह सकते हैं कि जब हमने नबियों को सच्चा न माना तो उनकी उम्मत (यानी उम्मते मुहम्मदिया) को क्यों सच्ची मानें? जवाब यह है कि ऐसा कहने का उनको हक़ न होगा, क्योंकि मुद्दई जब गवाह पेश कर दे तो मुद्दआ अलैह अगर उन गवाहों को झूठा साबित कर दे तो वे गवाह रद्द होंगे, गवाह पेश हो जाने के बाद मुद्दआ अलैह की तरफ़ से सिर्फ़ यह कह देना काफ़ी न होगा कि हम इनको सच्चा नहीं मानते। साथ ही इस हक़ीक़त से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि मुद्दआ अलैहि गवाहों को सच्चा माने या न माने, फ़ैसला देने के लिए हाकिम के नज़दीक उनका सच्चा होना काफ़ी है।

मुश्रिकों का इन्कार कि हम मुश्रिक न थे

सूरः अन्ग्राम में फ़रमाया—

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ثُمَّ لَمْ تَكُن فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ -

व यौ म नह्शुरुहुम जमीअन सुम्म नक़ूलु लिल्लज़ी न अश्रकू ऐ न शुर का उकुमुल्लज़ी न कुन्तुम तज़्अमू न सुम्म लम तकुन फ़ित्न तुहुम इल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन०

'और वह वक़्त भी याद करने के क़ाबिल है जिस दिन हम इन सब को जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम्हारे वे शरीक, जिनके माबूद होने के तुम मुद्दई थे, कहां गये, फिर उनके शिर्क का अंजाम बस यही होगा कि यों कहेंगे कि अल्लाह की क़सम ! जो हमारा परवरदिगार है, हम मुश्रिक न थे।'

इसके बाद फ़रमाया—

انظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ -

उन्ज़ुर कै फ़ क ज़ बू अला अन्फ़ुसिहिम व ज़ल्ल अन्हुम मा कानू यफ़्तरून०

'ज़रा देखो तो किस तरह झूठ बोला अपनी जानों पर और जिन चीज़ों को वे झूठ-मूठ तराशा करते थे, वे सब ग़ायब हो गयीं।'

इन्कार तो करेंगे मगर इन्कार से निजात कहां मिलेगी, आमाल-नामों और ग्वाहों के ज़रिए इल्ज़ाम साबित हो ही जाएगा।

जिनकी पूजा करते थे, वे भी इन्कारी होंगे

सूरः यूनुस में फ़रमाया—

وَقَالَ شُرَكَاؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ -

व क़ा ल शुर काउहुम मा कुन्तुम इय्याना तअ्बुदू न फ़ कफ़ा बिल्लाहि शहीदम बै न ना व बै न कुम इन कुन्ना अन अिबादतिकुम ल ग़ाफ़िलीन०

'और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे, सो हमारे तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा काफ़ी गवाह है कि हम को तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न की।'

हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम से सवाल

क़ियामत के दिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम से यही सवाल होगा जैसा कि सूरः माइदः में फ़रमाया—

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ

व इज़ क़ा लल्लाहु या ईसब्न मर्यम अ अन्त क़ुल्त लिन्नासित्त ख़ज़ूनी व उम्मि य इलाहैनि मिन दूनिल्लाहि०

'और जबकि अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुम ने उन लोगों से कह दिया था कि मुझ को और मेरी मां को ख़ुदा के अलावा माबूद बना लो।'

हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का जवाब

قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ -

क़ा ल सुब्हा न क मा यकूनु ली अन अक़ू ल मा लैस ली बिहक़्क़िन इन कुन्तु क़ुल्तुहू फ़क़द अलिम्तहू तअ्लमु मा फ़ी नफ़्सी व ला अअ्लमु मा फ़ी नफ़्सि क इन्न क अन्त अल्लामुल ग़ुयूबि मा क़ुल्तु लहुम इल्ला मा अमर्तनी बिही अनिअ्बुदुल्ला ह रब्बी व रब्बकुम व कुन्तु अलैहिम शहीदम्मा दुम्तु फ़ीहिम फ़ लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्त अन्तर्रक़ी ब अलैहिम व अन्त अला कुल्लि शैइन शहीद इन तुअ़ज़्ज़िबहुम फ़ इन्नहुम अिबादुक व

इन तग़्फ़िर लहुम फ़ इन्न क अन्तल् अज़ीज़ुल हकीम०

'(हज़रत) ईसा (अलैहिस्सलाम) जवाब देंगे कि मैं तो आप को (हर ऐब) से बरी जानता हूं। मुझे किसी तरह मुनासिब न था कि ऐसी बात कहूं जिस के कहने का मुझे हक़ नहीं मगर (अल्लाह की पनाह!) मैं ने कहा होगा तो आप जानते होंगे, आप तो मेरे दिल की बात जानते हैं और मैं आप के इल्म में जो कुछ है, उसको नहीं जानता। बेशक आप तमाम ऐबों को ख़ूब जानते हैं। मैंने उनसे सिर्फ़ वही कहा जिसका आप ने मुझे हुक्म दिया (और वह) यह कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी और मैं जब तक उनमें रहा, उन पर मुत्तला रहा। फिर जब आप ने मुझे उठा लिया तो आप ही उन पर मुत्तला रहे और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं। अगर आप उनको सज़ा दें तो यह आप के बन्दे है और अगर आप इन को माफ़ फ़रमा दें, तो आप अज़ीज़ व हकीम हैं।'

लेकिन काफ़िर और मुश्रिक की मग़्फ़िरत का क़ानून नहीं है, ज़रूर ही ईसाई दोज़ख़ में जाएंगे, अपने पैग़म्बर की हिदायत को छोड़कर ख़ुद गुमराह और काफ़िर हुए, यक़ीनन अज़ाब झेलेंगे।

हिसाब-किताब, क़िसास, मीज़ान

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ

व वुफ़्फ़ियत कुल्लु नफ़्सिम मा अमिलत०

'और हर जान को उसके अमल का पूरा बदला दिया जाएगा।'

नीयतों पर फ़ैसले

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बेशक क़ियामत के दिन जिन लोगों के बारे में सबसे पहले फ़ैसला दिया जाएगा, उनमें से एक शख़्स वह होगा जो (जिहाद में क़त्ल हो जाने की वजह से) शहीद समझ लिया गया था, उस को क़ियामत के दिन लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआला उसको नेमतों की पहचान कराएंगे जिन को वह पहचान लेगा (यानी उसे वे नेमतें याद आ जाएंगी जो अल्लाह ने दुनिया में उसको दी थीं) अल्लाह जल्ल शानुहू उस

से सवाल फ़रमायेंगे कि तूने उन नेमतों को किस काम में लगाया ? वह जवाब में अर्ज़ करेगा कि मैं ने आप के रास्ते में यहां तक लड़ाई लड़ी कि शहीद हो गया। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि तूने झूठ कहा (तेरा यह कहना ग़लत है कि तूने मेरे लिए लड़ाई लड़ी) बल्कि तूने इसलिए लड़ाई की कि तुझे बहादुर समझा जाए सो (इसका फल तुझे मिल चुका और) दुनिया में तेरा नाम हो चुका। इसके बाद हुक्म होगा कि इसे मुंह के बल खींच कर दोज़ख़ में डाल दिया जाए, चुनांचे हुक्म पूरा कर दिया जाएगा।

और एक वह आदमी भी उन लोगों में से होगा, जिसके बारे में सब से पहले फ़ैसला किया जाएगा, जिसने इल्म (दीन) सीखा और सिखाया और क़ुरआन पढ़ा। उसे (क़ियामत के दिन) लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआला उसको अपनी नेमतों की पहचान करायेंगे। चुनांचे वह पहचान कर लेगा। उससे अल्लाह तआला सवाल फ़रमायेंगे कि तूने इन नेमतों को किस तरह काम में लगाया ? वह जवाब देगा कि मैं ने इल्म हासिल किया और दूसरों को सिखाया और आपकी ख़ुशी के लिए क़ुरआन पढ़ा। अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमायेंगे कि तूने झूठ बोला, (मेरे लिए तूने न इल्म हासिल किया, न क़ुरआन पढ़ा) बल्कि तूने इल्म इसलिए हासिल किया कि तुझे लोग आलिम कहें और क़ुरआन तूने इसलिए पढ़ा कि लोग तेरे मुताल्लिक़ यह कहें कि यह तो क़ुरआन पढ़ता रहता है (और इसका फल तुझे मिल चुका और) दुनिया में तेरे मुताल्लिक़ वह कहा जा चुका जिसका तू चाहने वाला था। इसके बाद हुक्म होगा कि उसे मुंह के बल घसीट कर दोज़ख़ में डाल दिया जाए। चुनांचे हुक्म पूरा कर दिया जाएगा।

और एक वह शख़्स भी उन लोगों में से होगा जिनके मुताल्लिक़ सबसे पहले फ़ैसला किया जाएगा, जिसे अल्लाह तआला ने बहुत कुछ दिया था और तरह-तरह के माल उसे दिए गए थे, क़ियामत के दिन उसे लाया जाएगा, इसके बाद अल्लाह तआला अपनी नेमतों की पहचान करायेंगे, चुनांचे वह उनको पहचान लेगा। अल्लाह जल्ल शानुहू का सवाल होगा कि तूने इन नेमतों को किस चीज़ में लगाया ? वह कहेगा कि कोई ऐसा भला काम, जिसमें ख़र्च करना आप को महबूब हो, मैंने नहीं छोड़ा, हर भले काम में मैं ने आप की ख़ुशी के लिए अपना माल ख़र्च किया। अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमायेंगे कि तूने झूठ बोला (मेरे लिए तू ने ख़र्च नहीं किया) बल्कि तू ने यह काम इसलिए किया कि तेरे बारे में यह कहा जाएगा कि वह सख़ी है, चुनांचे कहा जा चुका (और तेरा मक़्सूद पूरा हो गया) इसके बाद हुक्म होगा कि उसे मुंह के बल घसीट कर दोज़ख़ में

डाल दिया जाए, चुनांचे इसे भी पूरा कर दिया जाएगा।[1]

तिर्मिज़ी शरीफ़ में भी यह हदीस मौजूद है, इसमें यही ज़िक्र किया गया है कि इसके बयान करने का हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरादा फ़रमाया तो (हश्र के मैदान के इस मंज़र के ख्याल से) बेहोश हो गए। होश आने पर फिर बयान करने लगे तो दोबारा बेहोश हो गये। फिर होश आने पर तीसरी बार बयान करने का इरादा फ़रमाया तो तीसरी बार भी बेहोश हो गए और इसके बाद होश आने पर हदीस बयान फ़रमायी। जब यह हदीस हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सुनायी गयी तो फ़रमाया कि जब इन तीनों आदमियों के साथ ऐसा होगा तो इनके अलावा दूसरे बद-नीयत इन्सानों के बारे में अच्छा मामला होने की क्या उम्मीद रखी जाए, इसके बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ि-यल्लाहु तआला अन्हु इतना रोये कि देखने वालों ने यह समझ लिया कि आज उनकी जान निकल कर रहेगी।[1]

हज़रत अबू सईद बिन फ़ुज़ाला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवा-यत है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह क़ियामत के दिन लोगों को जमा करेंगे, जिसके आने में ज़रा शक नहीं है तो एक पुकारने वाला ज़ोर से पुकारेगा कि जिसने कोई अमल अल्लाह के लिए किया और इस अमल में किसी दूसरे को दिखाने की नीयत करके इस दूसरे को भी शरीक कर लिया तो उस को चाहिए कि इस अमल का सवाब अल्लाह के सिवा (इस ग़ैर से) ही ले ले।[1]

दूसरी हदीस में है (जिसकी रिवायत बैहक़ी ने शाबुल ईमान में की है) कि जिस दिन अल्लाह तआला बन्दों को आमाल का बदला देंगे। दिखावा करने वालों से फ़रमायेंगे, जाओ दुनिया में तुम जिनको दिखाने के लिए अमल करते थे, उन ही के पास जाओ, फिर देखो कि उनके पास तुम्हें कुछ सवाब या भलाई मिलती है।[1]

नमाज़ का हिसाब और नफ़्लों का फ़ायदा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि बेशक क़ियामत के

१. मिश्कात (मुस्लिम शरीफ़), २. मिश्कात अन अहमद,
३. मिश्कात शरीफ़, ४. मिश्कात शरीफ़,

दिन बन्दे के आमाल में से पहले उसकी नमाज़ का हिसाब किया जाएगा, पस अगर नमाज़ ठीक निकली तो कामियाब और बा-मुराद होगा और अगर नमाज़ ख़राब निकली तो ना-मुराद और टोटा उठाने वाला होगा, पस उसके फ़र्ज़ों में कोई कमी रह जाएगी तो अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि देखो, क्या मेरे बन्दे के कुछ नफ़्ल भी हैं ? पस (अगर नफ़्ल निकले तो) जो फ़र्ज़ों में कमी होगी, नफ़्लों के ज़रिए पूरी कर दी जाएगी, फिर (नमाज़ के बाद) उसके बाक़ी अमलों का इसी तरह हिसाब होगा।[2]

एक रिवायत में है कि फिर (नमाज़ के बाद) इसी तरह ज़कात का हिसाब होगा। फिर (दूसरे) आमाल इसी तरह से (हिसाब में) लिए जाएंगे।[3]

बे-हिसाब जन्नत में जाने वाले

अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग एक ही मैदान में जमा किए जायेंगे, उस वक़्त एक पुकारने वाला ज़ोर से पुकार कर कहेगा कि वे लोग कहां हैं, जिनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते थे (क्योंकि वे रातों को नमाज़ों में वक़्त गुज़ारते थे)। यह सुनकर इस ख़ूबी के लोग पूरे मज्मे में से निकल कर खड़े होंगे जो तायदाद में (बहुत कम) होंगे। ये लोग जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाख़िल हो जायेंगे, फिर उनके बाद बाक़ी लोगों का हिसाब शुरू करने के लिए हुक्म होगा।[3]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आं-हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मेरे रब ने मुझ से वायदा फ़रमाया है कि तेरी उम्मत से सत्तर हज़ार बिला हिसाब-किताब जन्नत में दाख़िल होंगे, जिन पर कोई अज़ाब न होगा। हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार होंगे (जो इसी बड़ाई से नवाज़े जायेंगे और तीन लप मेरे रब के लप[4] भर कर (भी) जन्नत में दाख़िल

१. तानी फ़र्ज़ नमाज़ों की तक्मील नफ़्लों से (ग़ैर नमाज़ में भी) की जाएगी,
२. मिश्कात शरीफ़, ३. बैहक़ी शोबुल ईमान,
४. अल्लाह हाथ, लप, क़दम और चेहरे से पाक है। क़ुरआन व हदीस में जहां कहीं इन चीज़ों का ज़िक्र आया है, उन पर ईमान लाओ कि उनका जो मतलब

होंगे ।[1]

शफ़ाअत वाली हदीस में है कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं अर्श के नीचे अपने रब के लिए सज्दे में जा पड़ूंगा, फिर अल्लाह मुझे अपनी वे हम्दें और उम्दा तारीफ़ बता देगा जो मुझसे पहले किसी को न बताई होंगी, फिर अल्लाह का इर्शाद होगा कि ऐ मुहम्मद ! अपना सर उठाओ और सवाल करो, तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा और सिफ़ारिश करो, तुम्हारी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी । चुनांचे मैं सर उठाऊंगा ! और 'या रब्बि उम्मती ! या रब्बि उम्मती ! या रब्बि उम्मती ! (ऐ मेरे रब ! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब ! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब ! मेरी उम्मत) कहूंगा । इसलिए मुझसे कहा जाएगा कि ऐ मुहम्मद ! अपनी उम्मत के उन लोगों को जन्नत के दरवाज़ों में से दाहिने दरवाज़े से जन्नत में दाख़िल कर दो, जिनसे कोई हिसाब नहीं है । (फिर आपने फ़रमाया कि) क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के दरवाज़े इतने चौड़े हैं, जितना कि मक्का और हिज्र[2] के दर्मियान फ़ासला है ।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रिवायत फ़रमाती हैं कि मैंने एक नमाज़ में आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को यह दुआ करते हुए सुना कि—

अल्लाहुम्म हासिब्नी हिसाबंय्यसीरा०

(ऐ अल्लाह ! मुझ से आसान हिसाब लीजियो) मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी ! आसान हिसाब का क्या मतलब है ? इर्शाद फ़रमाया, आसान हिसाब यह है कि आमालनामे से आंखें बचा कर मुंह फेर लिया जाए । (और छान-बीन न की जाए) यह सच है कि जिससे छान-बीन करके हिसाब लिया गया, वह हलाक हुआ ।[4]

सख़्त हिसाब

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यह भी रिवायत है कि नबी अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि

अल्लाह के नज़दीक है, यही हमारे नज़दीक है और इनका ज़ाहिरी मतलब लेकर अल्लाह के लिए जिस्म तज्वीज़ कभी न करो ।

१. मिश्कात शरीफ़,

२. हिज्र अरब के एक शहर का नाम था, जो मक्का से काफ़ी दूर था,

३. मिश्कात शरीफ़, ४. अहमद,

क़ियामत के दिन जिससे (सही मानी में) हिसाब लिया गया, वह बरबाद होकर रहेगा, यह सुनकर मैंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, 'फ़ सौ फ़ युहासबु हिसाबंय्यसीरा०' (कि जिसके दाहिने हाथ में आमालनामा दिया गया, सो उससे बहुत जल्द आसान हिसाब होगा, इससे मालूम हुआ कि कुछ हिसाब देने वाले ऐसे भी होंगे, जो निजात पा जाएंगे ।) आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस सवाल के जवाब में फ़रमाया (आसान हिसाब से सही मानी में खोद-कुरेद और छान-बीन वाला हिसाब मुराद नहीं है, बल्कि आसान हिसाब से यह मुराद है कि बन्दे के सामने सिर्फ़ आमालनामा पेश करके छोड़ दिया जाए, लेकिन जिसकी छान-बीन हुई, वह तो बर्बाद ही होकर रहेगा ।[1]

मोमिन पर अल्लाह का खास करम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बेशक (क़ियामत के दिन) अल्लाह तआला मोमिन को अपने क़रीब करेंगे और (मह्शर वालों से उसे छिपा करके) फ़रमायेंगे कि क्या तुझे फ़्लां गुनाह याद है ? क्या तुझे फ़्लां गुनाह याद है ? वह जवाब में अर्ज़ करेगा कि, हां, ऐ रब ! याद है, यहां तक कि अल्लाह तआला उससे गुनाहों का इक़रार करा लेंगे और वह अपने दिल में यक़ीन कर लेगा कि मैं बर्बाद हो चुका । अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि मैंने दुनिया में तेरे ऐबों को छिपाया और उन गुनाहों को न ज़ाहिर होने दिया और अब मैं बख़्शिश कर देता हूं । इसके बाद उसकी नेकियों का आमालनामा उसे इनायत कर दिया जाएगा, लेकिन काफ़िर और मुनाफ़िक़ लोगों का प्रोपगंडा किया जाएगा । सारी मख़्लूक़ के सामने उसके मुताल्लिक़ ज़ोर से पुकार दिया जाएगा कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झूठी बातें गढ़ी थीं । ख़बरदार अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर ।[2]

बग़ैर किसी वास्ते के और पर्दे के अल्लाह को जवाब देना होगा

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़, २. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़,

फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से कोई भी ऐसा नहीं है, जिससे उसका रब खुद (हिसाब लेने के सिलसिले में) बात न करे। बन्दे के और उसके रब के दर्मियान कोई वास्ता और कोई पर्दा न होगा। उस वक़्त बन्दा अपने दाहिनी तरफ़ नज़र करेगा तो अपने आमाल के अलावा कुछ नज़र न आयेगा और अपने बाएं तरफ़ नज़र करेगा तो जो पहले से करके भेजा था, वह नज़र आएगा और अपने सामने नज़र करेगा तो सामने दोज़ख ही पर नज़र पड़ेगी (इसके बाद इर्शाद फ़रमाया) इसलिए तुम दोज़ख से बचो, अगरचे खजूर का एक टुकड़ा ही (अल्लाह के रास्ते से) खर्च करने को तुम्हारे पास हो।'[1]

किसी पर ज़ुल्म न होगा और भलाई और बुराई की एक-एक बात मौजूद होगी

क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है—

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ.

फ़ल यौ म ला तुज़्लमु नफ़्सुन शैअंव्व ला तुज्ज़ौ न इल्ला मा कुन्तुम तअ् मलून०

'यानी उस दिन किसी जान पर ज़ुल्म न होगा और तुमको बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते थे।'

और इर्शाद है—

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۞ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ

फ़ मंय्यअ् मल मिस्क़ा ल ज़र्रतिन खैरंय्यरह व मंय्यअ् मल मिस्क़ा ल ज़र्रतिन शर्रंय्यरह०

'सो जो शख्स (दुनिया में) ज़र्रा बराबर नेकी करेगा वह (वहां) उसको देख लेगा और जो शख्स ज़र्रा बराबर बदी करेगा वह (भी वहां) उसको देख लेगा।'

सूरः मोमिन में फ़रमाया—

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

अल् यौम तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम बिमा क स बत ला ज़ुल्मल यौम

१. बुखारी व मुस्लिम,

इन्नल्ला ह सरीअुल हिसाब०

'आज हर शख्स को उसके कामों का बदला दिया जाएगा। आज (किसी पर) ज़ुल्म न होगा। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।'

बंदों के हक़

क़ियामत के दिन अल्लाह के हक़ों (नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वग़ैरह) का भी हिसाब होगा और बंदों के हक़ों का भी हिसाब होगा। दुनिया में जिसने किसी का हक़ मारा हो या किसी भी तरह ज़ुल्म या ज़्यादती की हो, सब का हिसाब और फ़ैसला होगा। बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि अल्लाह का मुज्रिम होना क़ियामत के दिन के लिए इतना खतरनाक नहीं है, जितना बंदों के हक़ों को मारने और बंदों के सताने व ज़ुल्म करने में खतरा है, क्योंकि अल्लाह तआला बे-नियाज़ है। उन की तरफ़ से अपने हक़ों की बख्शिश कर देने की उम्मीद की जा सकती है, लेकिन बन्दे चूंकि ज़रूरतमंद होंगे और एक-एक नेकी से काम निकलने और निजात पाने की उम्मीद होगी, इसलिए बन्दों से माफ़ करने और अपना हक़ छोड़ने की उम्मीद रखना ना-मुनासिब है। क़ियामत के दिन रुपया-पैसा, माल व दौलत कुछ भी पास न होगा, हक़ों की अदायगी के लिए नेकियों का लेन-देन होगा और हक़ों की अदाएगी का एहतमाम इतना होगा कि जानवरों ने जो आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म किया था, उसका भी बदला दिलाया जाएगा।

नेकियों और बुराइयों से लेन-देन होगा

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने अपने किसी भाई पर ज़ुल्म कर रखा हो कि उसकी बे-आबरूई की हो और कुछ हक़ मारा हो, तो उसे चाहिए कि आज ही (उसका हक़ अदा करके या माफ़ी मांग कर) उस दिन से पहले हलाल करा ले, जब कि न दीनार होगा, न दिरहम। (फिर फ़रमाया) अगर इसके कुछ अच्छे अमल होंगे तो ज़ुल्म के बराबर उस से ले लिए जायेंगे और जिस पर ज़ुल्म हुआ है उसको दिला दिए जायेंगे और अगर उसकी नेकियां न हुईं तो मज़लूम की बुराइयां लेकर उस ज़ालिम के सर डाल दी

जायेंगी ।[१]

क़ियामत के दिन सबसे बड़ा ग़रीब

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक बार अपने सहाबा रज़ि० से सवाल फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि ग़रीब कौन है ? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हम तो उसे ग़रीब समझते हैं कि जिसके पास दिरहम (रुपया-पैसा) और माल व अस्बाब न हो। इसके जवाब में आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक मेरी उम्मत में से (हक़ीक़ी) मुफ़्लिस वह है जो क़ियामत के दिन नमाज़ और रोज़े और ज़कात लेकर आएगा (यानी उसने नमाज़ें भी पढ़ी होंगी और रोज़े भी रखे होंगे और ज़कात भी अदा की होगी) और (इन सब के बावजूद) इस हाल में (हश्र के मैदान में) आयेगा कि किसी को गाली दी होगी और किसी को तोहमत लगायी होगी और किसी का (ना-हक़) माल खाया होगा और किसी का ख़ून बहाया होगा और किसी को (ना-मुनासिब और ना-हक़) मारा होगा। (और चूंकि क़ियामत का दिन इंसाफ़ और सही फ़ैसलों का दिन होगा) इसलिए (उस शख़्स का फ़ैसला इस तरह किया जाएगा कि जिस-जिस को उसने सताया होगा और जिस-जिस का हक़ मारा होगा सब को उस की नेकियां बांट दी जायेंगी) कुछ नेकियां इस हक़दार को दे दी जाएंगी और कुछ उस हक़दार को दे दी जाएंगी, फिर अगर हुक़ूक़ पूरा न होने से पहले उसकी नेकियां ख़त्म हो जाएं तो हक़दारों के गुनाह उसके सर डाल दिए जाएंगे, फिर उसको दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा।[२]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह (अपने बन्दों) को जमा फ़रमाएगा जो नंगे, बे-ख़त्ना, और बिल्कुल ख़ाली हाथ होंगे, फिर ऐसी आवाज़ से पुकारेंगे, जिसे हर दूर वाले इसी तरह सुनेंगे जैसे क़रीब वाले सुनेंगे (और उस वक़्त ये फ़रमाएंगे कि) मैं बदला देने वाला हूं, मैं बादशाह हूं। (आज) किसी दोज़ख़ी के हक़ में यह न होगा कि दोज़ख़ में चला

१. बुख़ारी शरीफ़, २. मुस्लिम शरीफ़,

जाए और किसी जन्नती पर उसका ज़रा भी कोई हक़ हो जब तक कि मैं उसका बदला न दिला दूं ? यहां तक कि अगर एक चपत भी ज़ुल्म से मार दिया था तो उसका बदला भी दिला दूंगा।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! बदला कैसे दिलाया जाएगा, हालांकि हम नंगे, बे-ख़त्ना और बिल्कुल ख़ाली हाथ होंगे ? जवाब में सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि नेकियों और बुराइयों से लेन-देन होगा।[१]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जिस ने अपने ख़रीदे हुए ग़ुलाम को ज़ुल्म से एक कोड़ा भी मारा था, क़ियामत के दिन उसको बदला दिलाया जाएगा।[२]

मां-बाप भी हक़ छोड़ने पर राज़ी न होंगे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि (अगर) मां-बाप का अपनी औलाद पर क़र्ज़ होगा तो जब क़ियामत का दिन होगा, तो अपनी औलाद से उलझ जाएंगे (कि ला हमारा क़र्ज़ अदा कर)। वह जवाब देगा कि मैं तो तुम्हारी औलाद हूं। वे इस जवाब का कुछ असर न लेंगे और मांग पूरी करने पर इसरार करते रहेंगे, बल्कि यह तमन्ना करेंगे कि काश ! इस पर हमारा और भी ज़्यादा क़र्ज़ होता।[३]

सबसे पहले मुद्दई व मुदआ अलैहि

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सब से पहले मुद्दई व मुद्दआ अलैहि दो पड़ोसी होंगे।[४]

जानवरों के फ़ैसले

क़ियामत के दिन सभी का हिसाब होगा। हर मज़्लूम के हक़ में इंसाफ़ होगा। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम

१. अहमर, २. तर्ग़ीब, ३. तबरानी, ४. अहमद,

ज़रूर-ब-ज़रूर हक़ वालों को उन के हक़ क़ियामत के दिन अदा करोगे, यहां तक कि कि बे-सींगों वाली बकरी को (जिसे दुनिया में सींगों वाली बकरी ने मारा था) सींगों वाली बकरी से बदला दिलाया जाएगा।'[1]

सूरः नबा के आख़िर में इर्शाद है—

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ۝ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِىْ كُنْتُ تُرٰبًا ۝

ज़ालिकल यौमुल हक़्क़ु फ़ मन शाअत्त ख ज़ इला रब्बिही मआबा० इन्ना अन्ज़र्नाकुम अज़ाबन क़रीबंय्यौ म यन्ज़ुरुल मउ' मा क़द्दमत यदाहु व यक़ूलुल काफ़िरु या लै त नी कुन्तु तुराबा०

'वह दिन यक़ीनी है, सो जिस का जी चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना रखे। बेशक हम ने तुम को एक नज़दीक आने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन हर शख़्स अपने अमल को देख लेगा, जो उस ने पहले से आगे भेज दिए थे और काफ़िर कहेगा, काश मैं मिट्टी हो जाता।'

दुर्रे मंसूर में इस आयत की तफ़्सीर में बहुत-सी हदीस की किताबों के हवाले से हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया है कि क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ जमा की जाएगी, चौपाए भी और (इनके अलावा) ज़मीन पर चलने वाले भी और परिंदे भी और इनके अलावा हर चीज़। उस वक़्त अल्लाह की अदालत से जो फ़ैसले होंगे, उनमें यह भी होगा कि बे-सींगों वाले जानवरों को सींगों वाले जानवर से बदला दिलाया जाएगा, फिर उनसे कह दिया जाएगा कि मिट्टी हो जाओ (चुनांचे जानवर मिट्टी हो जाएंगे) उस वक़्त काफ़िर की ज़ुबान से (बड़ी हसरत से) यह निकलेगा कि काश मैं मिट्टी होता।'[2]

मशहूर तफ़्सीर लिखने वाले हज़रत मुजाहिद रज़ि० ने फ़रमाया कि जिस जानवर के चोंच मारी गयी थी उसे चोंच मारने वाले जानवर से और जिस जानवर के लात मारी गयी थी, उसे लात मारने वाले जानवर से बदला दिलाया जाएगा। यह माजरा इंसानों के सामने होगा जिसे वे देखते रहेंगे, इसके बाद जानवरों से कह दिया जायगा कि मिट्टी हो जाओ, न तुम्हारे लिए जन्नत है, न दोज़ख़ है। उस वक़्त काफ़िर (जानवरों की यह खलासी बल्कि हमेशा के अज़ाब से बचने की कामियाबी को देखकर उन पर रश्क करेगा और) कह उठेगा कि मैं (भी)

१. मुस्लिम शरीफ़, २. दुर्रेमंसूर,

मिट्टी हो जाता।

दुनिया काम करने की जगह है, सोचने की जगह है, तक्लीफ़ की जगह है, दुख की जगह है, इस दुनिया में जो आदमी दुनिया ही के लिए अमल और मेहनत करेगा और दुनिया ही के रंज व फ़िक्र में घुलेगा, यक़ीनी तौर पर आख़िरत में ख़ाली हाथ पहुंचेगा। जिसने यहां अपने को न सिर्फ़ जानवरों से अच्छा बल्कि नेक बन्दों से भी अच्छा समझा और अल्लाह व रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बात को ठुकराया और आख़िरत से बे-फ़िक्र रहा, आख़िरत में बरबाद और बे-आबरू होगा और न सिर्फ़ नेक बन्दे उससे अच्छे साबित होंगे, बल्कि जानवर भी नतीजे के तौर पर उससे अच्छे रहेंगे और उस वक़्त बड़ी हसरत और ना-उम्मीदी के साथ पुकार उठेगा कि काश! मैं भी मिट्टी हो जाता, हिसाब न लिया जाता, दोज़ख़ में न गिरता, काश! ज़मीन फट जाती और मैं हमेशा के लिए ज़मीन का पैवंद हो जाता जैसा कि सूरः निसा में फ़रमाया—

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ

यौ म इज़िन यवद्दुल्लज़ी न क फ़ रू व अ स उर्रसू ल लौ तुसव्वा बिहिमुल अर्ज़०

'जिन लोगों ने कुफ़्र किया और रसूल की नां-फ़रमानी की, उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश! हम ज़मीन का पैवंद हो जाएं।'

इस के ख़िलाफ़ कि जिन लोगों ने दुनिया को आख़िरत के अमल की जगह समझ कर वहां के लिए फ़िक्र किया और वहां की फ़िक्र में घुला वे वहां कामियाब होंगे, दुनिया में उन का यह हाल था कि ख़ुदा के डर से कहते थे कि काश हम मिट्टी हो जाते। मतलब यह कि ईमान वाले यहां अपने को दूसरी मख़्लूक़ से कम समझ कर आख़िरत की कामियाबी हासिल करेंगे और हक़ के इंकारी क़ियामत के दिन अपने को जानवरों से बद-तर यक़ीन करेंगे और ना-काम होंगे।

جَعَلَنَا اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ حَشَرَنَا مَعَهُمْ (اٰمِيْن)

ज अ ल नल्लाहु मिनस्सालिही न ह श र ना मअ हुम० (आमीन)

मालिकों और ग़ुलामों का इन्साफ़

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स आकर

बैठ गया। उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! बिला शुब्हा मेरे कुछ गुलाम हैं, जो मुझ से झूठ बोलते हैं और मेरी खियानत करते हैं और मेरी नाफ़र्मानी करते हैं (यह तो उनकी तरफ़ से है) और (मेरी तरफ़ से यह है) कि उनको गालियां देता हूं और सज़ा में मारता भी हूं। अब मुझे आप यह बताएं कि आखिरत में मेरा और उनका क्या मामला होगा? आप ने इर्शाद फ़र्माया कि जब क़ियामत का दिन होगा तो तेरे गुलामों की खियानत और ना-फ़रमानी और झूठ बोलने का और तेरे सज़ा देने का हिसाब होगा, मगर तेरी सज़ा उनके क़ुसूरों के बराबर होगी तो मामला बराबर रहेगा, न तुझे कुछ उनकी तरफ़ से मिलेगा, न तुझ पर कुछ बोझ पड़ेगा और अगर तेरी सज़ा उनकी हरकतों से ज़्यादा होगी तो उस ज़्यादा सज़ा का उनको तुझ से बदला दिलाया जाएगा।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी का यह इर्शाद सुनकर वह शख़्स रोता और चीखता हुआ वहां से हट गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस से फ़रमाया क्या तू अल्लाह तआला का यह इर्शाद नहीं पढ़ता (जिसमें तेरे मामले का साफ़ ज़िक्र किया गया है।)

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَىٰ بِنَا حَاسِبِينَ ٥

व न ज़ उल म वाज़ी नल क़िस्त लि यौमिल क़ियामति फ़ ला तुज़्लमु नफ़्सुन शैअ न्व इन का न मिस्क़ा ल हब्बतिम मिन खरदलिन अतैना बिहा व कफ़ा बिना हासिबीन०

'और हम क़ियामत के दिन इंसाफ़ की तराज़ू क़ायम करेंगे, सो किसी पर ज़रा-सा भी ज़ुल्म न होगा और अगर कोई अमल राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे हाज़िर करेंगे और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।'

यह सुनकर उस शख़्स ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने और इन गुलामों के हक़ में इस से बेहतर कुछ नहीं समझता कि उनको अपने से जुदा कर दूं। आप को गवाह बना कर कहता हूं कि वे सब आज़ाद हैं।'

१. मिश्कात शरीफ़,

जिन्नों से ख़िताब

जिन्नों को खिताब करके अल्लाह जल्ल शानुहू सवाल फ़रमाएंगे, जैसा कि सूरः अन्आम में फ़रमाया—

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُم مِّنَ الْإِنسِ

व यौ म नह्शुरुहुम जमीअन या मअ्शरल जिन्नि क़दिस्तक्सर्तुम मिनल इन्सि०

'और जिस दिन अल्लाह इन सब को जमा करेगा (और फ़रमायेगा) ऐ जिन्नों की जमाअत! तुमने इंसानों में से बड़ी जमाअत बस में कर ली थी।'

आगे फ़रमाया—

وَقَالَ أَوْلِيَاؤُهُم مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي أَجَّلْتَ لَنَا

व क़ा ल औलियाउहु म मिनल इंसि रब्ब नस्तम्त अ बअ्ज़ुना बिबअ्ज़िंव्व बलग़ना अ ज ल नल्लज़ी अज्जल्त लना०

'और कहेंगे जिन्नों के दोस्त आदमियों में से कि ऐ हमारे रब! फ़ायदा उठाया हम में एक ने दूसरे से और हम पहुंच गये अपने उस मुक़र्रर वक़्त को जो आपने हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमाया।'

दुनिया में जो लोग बुत वग़ैरह पूजते हैं, वे सच में ख़बीस जिन्न व शैतान ही की पूजा करते हैं, इस ख्याल से कि वे हमारे काम निकालेंगे, उन की नियाज़ें चढ़ाते हैं और उनके आस-पास नाचते और गाते-बजाते हैं। इस्लाम से पहले यह भी क़ायदा था कि आड़े वक़्त में जिन्नों से मदद तलब किया करते थे, जब आख़िरत में जिन्न और उनकी पूजा करने वाले पकड़े जाएंगे तो मुदिरक कहेंगे कि हमारे परवरदिगार! वह तो हमने वक़्ती कार्रवाई करली थी और मौत का वायदा आने से पहले-पहले दुनिया की ज़रूरतों के लिए हम एक-दूसरे से काम निकालने के कुछ उपाय कर लिया करते थे।

आगे फ़रमाया—

قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

क़ालन्नारु मस्वाकुम खालिदीन फ़ीहा इल्ला मा शाअल्लाहु इन्न रब्ब क हकीमुन अलीम व कज़ालिक नुवल्ली बअ्ज़ज़्ज़ालिमी न बअ्ज़म बिमा कानू यक्सिबन०

'अल्लाह तआला का इर्शाद होगा कि दोज़ख है तुम्हारा ठिकाना, उसमें हमेशा रहोगे मगर हां, जो अल्लाह चाहे,' बेशक तेरा रब हिक्मत वाला और जानने वाला है और इसी तरह हम साथ मिला देंगे गुनहगारों को एक-दूसरे से उनके अमाल की वजह से।'

फिर आगे फ़रमाया—

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ
اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۤءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰۤى اَنْفُسِنَا
وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ
كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝

या मअ्शरल जिन्नि वल इंसि अ लम यअ्तिकुम रुसुलुम मिन् कुम यक़ुस्सून अलैकुम आयाती व युन्ज़िरू न कुम लिक़ाअ यौमिकुम हाज़ा क़ालू शहिदना अला अन्फ़ुसिना व ग़र्रतहुमुल हयातुद्दुन्या व शहिदू अला अन्फ़ुसिहिम अन्नहुम कानू काफ़िरीन०

'ऐ जिन्नों और इंसानों की जमाअत! क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आये थे जो तुम को मेरी आयतें सुनाते थे और उस दिन के पेश आने से डराते थे, जिन्न व इंसान इक़रार करते हुए अर्ज़ करेंगे कि हमने अपने गुनाह का इक़रार कर लिया और उन को दुनिया की ज़िंदगी ने धोखा दिया और इक़रारी होंगे कि वे काफ़िर थे।'

इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि जिन्नों और इंसानों से इकट्ठा खिताब और सवाल होगा कि रसूल तुम्हारे पास पहुंचे या नहीं? सवाल के जवाब में जुर्म का इक़रार करेंगे और यह मानेंगे कि हां, रसूल हमारे पास आये थे। सच में हम ही मुज्रिम हैं। इस आयत में है कि अपने काफ़िर होने का इक़रार करेंगे और कुछ आयतों में है कि 'मा कुन्ना मुश्रिकीन'० (हम मुश्रिक न थे) कहेंगे। इस शुब्हे का जवाब यह है कि

१. दोज़ख का अज़ाब काफ़िरों के लिए हमेशा है अल्लाह के चाहने से, अगर अल्लाह चाहे तो खत्म कर दे, लेकिन इसका फ़ैसला हो चुका कि काफ़िर व मुश्रिक की बख्शिश नहीं। ये लोग हमेशा दोज़ख में रहेंगे। पैग़म्बरों के ज़रिए इसकी खबर दी जा चुकी है।

पहले इंकार करेंगे और फिर आमालनामों और गवाहियों के ज़रिए इक़रार कर लेंगे और यह इंसान का क़ायदा है कि पहले जुर्म मानने से इंकार करता है, फिर जब इस तरह जान छूटती नज़र नहीं आती तो यह समझ कर शायद इक़रार करने ही से खलासी हो जाए, इक़रार कर लेता है (लेकिन वहां काफ़िर व मुश्रिक की खलासी न होगी।)

जुर्म ने मानने पर गवाहियां

बदन के अंगों की गवाही

इंसान बड़ा झगड़ालू है और उसकी बहस की तबीयत क़ियामत के दिन भी अपना रंग दिखायेगी और अल्लाह तआला से भी हुज्जत करेगा, उस वक़्त गवाहों के ज़रिए उसकी हुज्जत खत्म कर दी जाएगा, खुद इंसान के अंग उसके खिलाफ़ गवाही देंगे, जैसा कि सूरः यासीन में फ़रमाया—

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَاۤ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ
اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

अल् यौ म नख़्तिमु अला अफ़्वाहिहिम व तुकल्लिमुना ऐदीहिम व तशहदु अर्जुलुहुम बिमा कानू यक्सिबून०

'आज हम उनके मुंहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हम से कलाम करेंगे और उनके पांव उन कामों की गवाही देंगे।'

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रिवायत बयान फ़रमायी कि (एक बार) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हम बैठे हुए थे कि उसी बीच अचानक आप को हंसी आ गयी और (हमसे) फ़रमाया, क्या तुम जानते हो मैं क्यों हंस रहा हूं? हमने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसका रसूल ही खूब जानते हैं। फ़रमाया कि (क़ियामत के दिन) बन्दे जो अल्लाह से सवाल व जवाब करेंगे, इस मंज़र को याद करके मुझे हंसी आ गयी। बंदा कहेगा कि ऐ रब! क्या आप ने मुझे ज़ुल्म से (बचाने का एलान फ़रमा कर) मुत्मइन नहीं फ़रमाया है। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि हां, मैं ने यह वायदा किया है। इसके बाद बन्दा कहेगा कि मैं अपने मामले में किसी की गवाही न मानूंगा. हां, अगर मेरे ही अंदर से कोई गवाही देदे तो एतबार कर सकता हूं। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि आज अपने बारे में तेरा खुद गवाह

होना काफ़ी है और लिखने वालों की गवाही भी काफ़ी है। (आं हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने) फ़रमाया कि इसके बाद उसके मुंह पर मुहर लगा दी जाएगी (और अल्लाह की तरफ़ से) उसके अंगों को हुक्म होगा कि बोलो, चुनांचे उसके अंग उसके अमल को ज़ाहिर कर देंगे। यह क़िस्सा देख कर बंदा अपने अंगों से कहेगा कि दूर! दूर! तुम ही को अज़ाब से बचाने के लिए तो मैं बहस कर रहा था।'[1]

एक हदीस में है कि उस की रान और गोश्त और हड्डियां उस के अमल की गवाही देंगे।[2]

ज़मीन की गवाही

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आयत 'यौ म इज़िन तुहद्दिसु अख़्बा रहा'० (उस दिन ज़मीन अपनी ख़बरें बयान कर देगी) तिलावत फ़रमा कर सवाल फ़रमाया, क्या तुम जानते हो ज़मीन के ख़बर देने का क्या मतलब है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उस का रसूल ही ख़ूब जानते है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ज़मीन के ख़बर देने का मतलब यह है कि हर मर्द व औरत के ख़िलाफ़ उसके आमाल की गवाही देगी जो उस की पीठ पर किये थे। वह कहेगी कि (उसने) मुझ पर फ़्लां फ़्लां दिन फ़्लां-फ़्लां अमल किया था। यह है ज़मीन का ख़बर देना।'[3]

आमाल नामे

क़ियामत के दिन आमालनामे पेश किये जाएंगे। किरामन कातिबीन जो दुनिया में बंदों के आमाल रिकार्ड करते हैं, आमाल नामे की शक्ल में पेश कर दिए जाएंगे। सूरः जासिया में फ़रमाया—

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰى اِلٰى كِتَابِهَا اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ

---

१. मुस्लिम शरीफ़,
२. मुस्लिम शरीफ़ अन अबी हुरैरह,
३. अहमद व तिर्मिज़ी शरीफ़

مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

व तरा कुल्लु उम्मतिन जासियतिन् कुल्लु उम्मतिन तुद्आ इला किताबिहा अल यौ म तुज्ज़ौ न मा कुन्तुम तअमलून हाज़ा किताबुना यन्तिक़ु अलैकुम बिल्हक़्क़ि इन्ना कुन्ना नस्तन्सिख़ु मा कुन्तुम तअ मलून०

'और (उस दिन) आप हर फ़िर्क़े को देखेंगे कि (ख़ौफ़ की वजह से) ज़ानू के बल गिरे पड़े होंगे, हर फ़िर्क़ा अपने नामा-ए-आमाल को तरफ़ बुलाया जाएगा (और उनसे कहा जाएगा) कि आज तुम को तुम्हारे कामों का बदला दिया जाएगा। यह हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक-ठीक बोल रहा है और हम तुम्हारे आमाल को लिखवा लिया करते थे।'

सूरः बनी इस्राईल में फ़रमाया—

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا اِقْرَاْ كِتٰبَكَ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ
حَسِيْبًا

व कुल्लु इन्सानिन अल्ज़म्नाहु ताइ र हू फ़ी अ़ुनुक़िही व नुख़्रिजु लहू यौमल क़ियामति किताबंय्यल्क़ाहु मन्सूरा० इक़्रअ् किताब क कफ़ा बिनफ़्सि कल यौ म अलै क हसीबा०

'और हम ने हर इंसान का अमल उसके गले का हार कर रखा है और क़ियामत के दिन हम उसका आमालनामा निकाल कर सामने कर देंगे जिसको वह खुला हुआ देख लेगा (और उससे कहेंगे) पढ़ ले अपना आमालनामा, आज तू ख़ुद अपना हिसाब लेने वाला काफ़ी है।'

आमालनामों में सब कुछ होगा और मुज्रिम डरे हुये हैरत और हसरत करेंगे

आमालनामों में सब कुछ होगा और बद-अमल आमालनामों को देख कर डर जाएंगे और जो भी दुनिया में किया था, सब मौजूद पाएंगे। सूरः कह्फ़ में इर्शाद है—

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ
يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا
وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا

व वुज़िअल किताबु फ़ तरल मुजरिमीन मुश्फ़िक़ी न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू न या वै ल त ना मालि हाज़ल किताबि ला युग़ादिरु सग़ीरतंव्व ला कबीरतन इल्ला अह्साहा व व ज दू मा अमिलू हाज़िरंव्व ला युज़्लिमु रब्बु क अ ह दा०

'और आमाल नामा रख दिया जाएगा तो आप मुजिरमों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ होगा उससे डर रहे होंगे और कहते होंगे कि हाय ! हमारी कम-बख़्ती ! इस नामा-ए-आमाल की अजीब हालत है कि बग़ैर क़लमबंद किए हुए उसने न कोई छोटा गुनाह छोड़ा, न कोई बड़ा गुनाह छोड़ा और जो कुछ उन्होंने किया, सब कुछ मौजूद पाएंगे और आपका रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा।'

आमालनामों की तक़्सीम

हर शख़्स का आमालनामा उसके सुपुर्द किया जाएगा, जो लोग नेक और निजात पाने वाले होंगे, उनके आमालनामे दाहिने हाथ में दिए जाएंगे और जो लोग बद-अमल और दोज़ख़ में गिरने वाले होंगे, उनके आमालनामे बाएं हाथ में और पीठ के पीछे से दिए जाएंगे—

सूरः इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया—

يٰاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ فَاَمَّا مَنْ
اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا وَّيَنْقَلِبُ
اِلٰى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَاءَ ظَهْرِهٖ فَسَوْفَ
يَدْعُوْا ثُبُوْرًا وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا اِنَّهٗ كَانَ فِيْ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا اِنَّهٗ
ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ بَلٰى اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا

या ऐयुहल इंसानु इन्न क कादिहुन इला रब्बि क कद्हन फ़ मुलाक़ीहि फ़ अम्मा मन ऊति य किता ब हू बियमीनिही फ़ सौफ़ युहासबु हिसाबंय्यसीरंव्व यं क़लिबु इला अह्लिही मसरूरा व अम्मा मन ऊति य किता ब हू वरा अ ज़ह्रिही फ़ सौ फ़ यद्अू सुबूरंव्व यस्ला सईरा इन्नहू का न फ़ी अह्लिही मसरूरा इन्नहू ज़न्न अल्लंय्यहू र बला इन्न रब्बहू का न बिही बसीरा०

'ऐ इंसान ! अपने रब के पास पहुंचने तक काम में कोशिश कर रहा है, फिर (उस काम के बदले) से तू मिलेगा सो वह शख़्स जिसका

आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दे दिया गया सो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा और वह (हिसाब से फ़ारिग़ होकर) अपने मुताल्लिक़ लोगों के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा और जिस शख़्स का आमालनामा (बायें हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा सो वह मौत को पुकारेगा और जहन्नम में दाख़िल होगा। दुनिया में उस का यह हाल था कि (आख़िरत से बे-फ़िक्र होकर) अपने बाल-बच्चों में ख़ुश-ख़ुश रहा करता था और यह ख़्याल कर रखा था (उसको ख़ुदा की तरफ़) लौटना नहीं है, लौटना क्यों न होता, उस का रब उस को ख़ूब देखता था।'

जो शख़्स दुनिया में ख़ुश-ख़ुश रहा, दुनिया की ज़िंदगी को असल समझ कर उसी में मस्त रहा और आख़िरत की ज़रा फ़िक्र न की और आख़िरत की बातों को झूठा समझा, क़ियामत के दिन सख़्त मुसीबत और रंज व ग़म में पड़ा रहेगा। इसके ख़िलाफ़ जो लोग दुनिया में रहते हुए, आख़िरत की फ़िक्र में घुले जाते थे और मरने के बाद वाली हालत का उन को फ़िक्र लगा रहता था, वे क़ियामत के दिन दाहिने हाथ में आमालनामा लेकर ख़ूब ख़ुश होंगे, बद-अमल यहां ख़ुश हैं और नेक अमल वहां ख़ुश होंगे।

आमालनामों के मिलने पर नेक बन्दों की बे-हद ख़ुशी और बुरों का बेहद रंज

सूरः हाक़्क़ा में इसे और ज़्यादा खोल दिया गया है, चुनांचे इर्शाद है—

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ

यौम इज़िन तुअ्रज़ू न ला तख़्फ़ा मिन्कुम ख़ाफ़ियः०

'उस दिन तुम लोग पेश किये जाओगे और तुम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा।'

इस के बाद दाहिने हाथ में किताब मिलने वालों के लिए फ़रमाया—

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَاؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ اِنِّيْ ظَنَنْتُ
اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ
قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْئًا بِمَا اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ

फ़ अम्मा मन ऊति य किता ब हु बियमीनिही फ़ यक़ूलु हाउ मुक़रऊ किताबियह इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन हिसाबियः फ़ हु व फ़ी ईशतिर्राज़ियः फ़ी जन्नतिन आलियतिन क़ुतूफ़ुहा दानियतिन कुलू वश्रबू

हनीअम बिमा अस्लफ्तुम फ़िल अय्यामिल ख़ालियः०

'सो जिनके दाहिने हाथ में किताब दी जाएगी तो (खुशी में कहेगा लीजियो, पढ़ियो मेरा आमालनामा। मेरा तो अक़ीदा ही था कि बेशक मेरा हिसाब मिलना है, सो वह शख़्स बड़ी पसंदीदा ज़िंदगी में होगा, बुलंद बहिश्त में होगा, जिसके मेवे झुके हुए होंगे और उनसे कहा जाएगा कि खाओ और पियो रच कर। यह बदला है उन (नेक) कामों का जो तुम ने पिछले दिनों में पहले से (आगे) भेज दिए थे।'

दाहिने हाथ में आमालनामे का मिलना निजात पाने और मक़बूल होने की निशानी होगी, ऐसा आदमी मारे खुशी के हर एक को दिखाता फिरेगा, कि लो आओ मेरा आमालनामा पढ़ो और यह भी कहेगा कि मैं ने दुनिया में यह समझ रखा था कि हिसाब पेश होना है, इस ख्याल से मैं डरता रहा और फ़िक्र में घुलता रहा। आज उसका दिल खुश करने वाला नतीजा देख रहा हूं।

इसके बाद बाएं हाथ में किताब मिलने वालों की हालत का इस तरह ज़िक्र फ़रमाया—

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ کِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ فَیَقُوْلُ یٰلَیْتَنِیْ لَمْ اُوْتَ کِتٰبِیَهْ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِیَهْ یٰلَیْتَهَا کَانَتِ الْقَاضِیَةَ ۚ مَاۤ اَغْنٰی عَنِّیْ مَالِیَهْ هَلَکَ عَنِّیْ سُلْطٰنِیَهْ ۚ

व अम्मा मा ऊति य किता बहू बिशिमा लिहि फ़ यक़ूलु या लै तनी लम ऊति य किताबियह व लम अद्‌रि मा हिसाबियह या लै त हा कानतिल क़ाज़ियह मा अग़्ना अन्नी मालियः ह ल क अन्नी सुल्तानियः०

'और जिसके बाएं हाथ में किताब दी जाएगी, सो वह कहेगा कि काश! मुझे मेरा आमालनामा न मिलता और मुझे खबर ही न होती कि मेरा क्या हिसाब है। काश! वही मौत (मेरा) काम तमाम करने वाली होती (और मुझे दोबारा ज़िंदगी न मिलती) कुछ मेरे काम न आया मेरा माल, मुझ से जाती रहे मेरी हुकूमत।'

सूरः इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया कि पीठ के पीछे से बद-अमलों को आमालनामे दिए जाएंगे और सूरः हाक़्क़ा में फ़रमाया कि बद-अमलों को बाएं हाथ में आमालनामे दिए जाएंगे, दोनों को मिलाने से मालूम होता है कि बाएं हाथ में जिनको आमालनामे दिए जायेंगे, सो पीछे से दिए जाएंगे, गोया फ़रिश्ते उनकी सूरत देखना पसंद न करेंगे और मुम्किन है कि मशकें बंधी हों, इस लिए आमालनामा पीठ की तरफ़ से बाएं हाथ में देने की नौबत आये।

अमल का वज़न

अल्लाह तआला हमेशा से सारी मख़्लूक़ के अमल को जनता है, अगर क़ियामत के मैदान में सिर्फ़ अपनी जानकारियों की बुनियाद पर अमल का बदला व सज़ा दें तो उनको इस का भी हक़ है, लेकिन हश्र के मैदान में ऐसा न किया जाएगा, बल्कि बन्दों के सामने उनके आमालनामे पेश कर दिए जाएंगे, वज़न होगा, गवाहियां होंगी, मुजिरम इंकारी भी होंगे और दलील से जुर्म भी साबित किया जाएगा ताकि सज़ा भुगतने वाले यों न कह सकें कि हम पर ज़ुल्म करके बे-वजह अज़ाब में डाला गया।

सूरः अन्आम में फ़रमाया—

وَالْوَزْنُ یَوْمَئِذِ ِۨ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِیْنُهٗ فَاُولٰٓئِکَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۙ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِیْنُهٗ فَاُولٰٓئِکَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا کَانُوْا بِاٰیٰتِنَا یَظْلِمُوْنَ ۙ

वल् वज़्नु यौ म-इज़ि-निल-हक़्क़ु फ़ मन सक़ुलत मवाज़ीनुहू फ़ उलाइ क हुमुल मुफ़्लिहून व मन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुहू फ़ उलाइ क ल्लज़ी न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम बिमा कानू बिआयातिना यज़्लिमून०

'और तौल उस दिन ठीक होगी सो जिन की तौलें भारी पड़ें, वही लोग बा-मुराद होंगे और जिनकी तौलें हल्की पड़ें, सो वही हैं, जिन्होंने अपना आप नुक़सान किया, इस वजह से कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे।'

हज़रत सल्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आं-हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन (आमाल तौलने की) तराज़ू रख दी जाएगी (और वह इतनी ही लम्बी-चौड़ी होगी कि) अगर उसमें सारे आसमान व ज़मीन रख कर वज़न किए जाएं तो सब उसमें आ जाएं। उसको देखकर फ़रिश्ते ख़ुदा के दरबार में अर्ज़ करेंगे कि यह किस के लिए तौलेगी। यह सुनकर फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह ! आप पाक हैं, जैसा इबादत का हक़ है, हमने ऐसी इबादत आप की नहीं की।'

१. अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब,

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने इर्शाद फ़रमाया (क़ियामत के दिन) तराज़ू पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होगा (अमल का वज़न करने के लिए,) इंसान इस तराज़ू के पास लाये जाते रहेंगे, जो आएगा, तराज़ू के दोनों पलड़ों के दर्मियान खड़ा कर दिया जाएगा, पस अगर उस के तौल भारी हुए, तो वह फ़रिश्ता ऐसी बुलंद आवाज से पुकार कर एलान कर देगा, जिसे सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़लां हमेशा के लिए सआदतमंद[1] हो गया, अब कभी इसके बाद बद-नसीब न होगा और अगर उसके तौल हल्के रहे, तो वह फ़रिश्ता ऐसी बुलंद आवाज़ से पुकार कर एलान कर देगा, जिसे सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़लां हमेशा के लिए ना-मुराद हो गया, अब कभी इसके बाद ख़ुश-नसीब न होगा।[2]

हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर साहब रहमतुल्लाह अलैहि 'मूज़िहुल क़ुरआन, में लिखते हैं कि हर शख़्स के अमल वज़न के मुवाफ़िक़ लिखे जाते हैं, एक ही काम है, अगर इख़्लास व मुहब्बत से शरई हुक्म के मुवाफ़िक़ किया गया और सही मौक़े पर किया गया तो उसका वज़न बढ़ गया और दिखावे को किया या हुक्म के मुवाफ़िक़ न किया या ठिकाने पर न किया तो वज़न घट लिया, आख़िरत में वे काग़ज़ तुलेंगे, जिसके नेक काम भारी हुए तो बुराइयों से माफ़ी मिली और (जिसके नेक काम) हल्के हुए तो पकड़ा गया।

कुछ उलेमा का कहना है कि क़ियामत के दिन आमाल को जिस्म देकर हाज़िर किया जाएगा और ये जिस्म तुलेंगे और इन जिस्मों के वज़नों के हल्का या भारी होने पर फ़ैसले होंगे, कागज़ों का तुलना या आमाल को जिस्म देकर तौला जाना भी ना-मुम्किन नहीं है और आमाल को वग़ैर वज़न दिए यों ही तौल देना भी क़ादिरे मुत्लक़ की क़ुदरत से बाहर नहीं है। आज जब कि साइंस का दौर है और नई-नई ईजादें हर दिन तरक़्क़ी पर है, आमाल का तौल में आ जाना बिल्कुल समझ में आ जाता है, ये आजिज़ बन्दे, जिन को अल्लाह जल्ल जलालुहू व अम्म नवालुहू ने थोड़ी सी समझ दी है, थरमामीटर के ज़रिए जिस्म की गर्मी की मिक़्दार बता देते हैं और इसी तरह के बहुत से आलें[3] हैं जो जिस्मों के अलावा दूसरी चीज़ों की मिक़्दार मालूम करने के लिए बनाए गए हैं, तो उस एक ही ख़ुदा की क़ुदरत से यह कैसे बाहर माना जाए कि अमल तौल में न आ सकेंगे। अगर किसी को यह

---

१. सौभाग्यवान. २. अन्तर्गीत वन्तर्हीव, ३. यंत्र,

शुब्हा हो कि अमल तो महसूस होने वाला वजूद नहीं रखते और वजूद में आने के साथ ही फ़ना होते रहते हैं,फिर उनका आख़िरत में जमा होना और तौला जाना क्या मानी रखता है ? तो इसका जवाब यह है कि जिस तरह तक़रीरों का रिकार्ड कर लिया जाता है और वह रेडियो स्टेशन से फैलायी जाती रहती हैं, हालांकि बंद कमरे में जब मुक़र्रिर (वक्ता) तक़रीर करता है तो एक दम आन की आन में सब नहीं कह देता, बल्कि एक-एक हर्फ़ अदा करता है और जब एक हर्फ़ ज़ुबान से निकल कर ख़त्म हो जाता है, तब दूसरा हर्फ़ अदा होता है, इसके बावजूद भी सारी तक़रीर महफ़ूज़ (सुरक्षित) हो जाती है, तो जबकि अल्लाह जल्ल जलालुहू ने अपने बन्दों को लफ़्ज़ों और बातों को पकड़ में लाकर इकट्ठा करने और रिकार्ड में लाने की ताक़त दी है तो वह ख़ुद इसकी क़ुदरत क्यों न रखेगा कि अपनी मख़्लूक़ के अमल व हरकत का पूरा रिकार्ड तैयार रखे, जिसमें से एक ज़र्रा और शोशा भी ग़ायब न हो और महसूस तौर पर क़ियामत के दिन उन का वज़न सब के सामने ज़ाहिर हो जाए—

ليجزى الله كل نفس ما كسبت ان الله سريع الحساب ط

लि यज्ज़ियल्लाहु क़ुल्लु नफ़्सिम्मा क स बत इन्नल्ला ह सरीअ़ुल हिसाबि०

एक बंदे के अमल का वज़न

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने अल्लाह तआला मेरे एक उम्मती को (पूरे मज्मे से) अलग करके उस के सामने निन्नानवे दफ़्तर खोल देंगे। हर दफ़्तर वहां तक होगा जहां तक निगाह पहुंचे। (इन दफ़्तरों में सिर्फ़ गुनाह होंगे) इसके बाद अल्लाह जल्ल शानुहू उससे सवाल फ़रमाएंगे कि क्या तू इन आमालनामों में से किसी चीज़ का इंकार करता है ? क्या मेरे (मुक़र्रर किए हुए) लिखने वालों ने तुझ पर कोई ज़ुल्म किया है (कि कोई गुनाह किए बग़ैर लिख लिया हो या करने से ज़्यादा लिख दिए हों) ? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार ! नहीं ! ! (न इंकार है, न ज़ुल्म का दावा है) इसके बाद अल्लाह जल्ल शानुहू सवाल फ़रमाएंगे कि क्या तेरे पास इन बद-आमालियों का कोई उज़्र है ? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार ! मेरे पास

कोई उज़्र नहीं !

इसके बाद अल्लाह का इर्शाद होगा कि हां बेशक तेरी एक नेकी हमारे पास महफ़ूज़ है (वह भी तेरी सामने आती है) इसके बाद एक पुर्ज़ा निकाला जाएगा जिसमें—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۔

अश्हदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

लिखा होगा और उस बन्दे से फ़रमाया जाएगा कि जा, अपने आमाल का वज़न होता देख ले। वह बन्दा अर्ज़ करेगा कि ऐ मेरे रब ! (तौलना-न-तौलना बराबर है। मेरी हलाकत ज़ाहिर है, क्योंकि) इन दफ़्तरों की मौजूदगी में इस पुर्ज़े की क्या हक़ीक़त है ? अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमायेंगे कि यक़ीन जान ! तुझ पर आज ज़ुल्म न होगा (तौलना ज़रूरी है)। चुनांचे वह सारे दफ़्तर (इंसाफ़ की तराज़ू के एक पलड़े में और वह पुर्ज़ा दूसरे पलड़े में रख दिया जाएगा और (नतीजे के तौर पर) वे दफ़्तर हल्के रह जाएंगे और वह पुर्ज़ा (इन सब दफ़्तरों से) भारी निकलेगा, इसके बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बात (असल यह है कि) अल्लाह के नाम की मौजूदगी में कोई चीज़ वज़नी न हो सकेगी।[1]

यह इख़्लास और दिल में अल्लाह का डर और अल्लाह तआला से मुहब्बत व ताल्लुक़ के साथ पढ़ने की बरकत है, अल्लाह का नाम लेना भी उसी वक़्त नेकी बनता है जबकि ख़ुलूस के साथ पढ़ा जाए, यों काफ़िर भी कभी-कभी कलमा पढ़ देते हैं, लेकिन उनका यह नामे इलाही ख़ाली ज़ुबान से ले लेना आख़िरत में उन को निजात न दिलायेगा, ईमान भी हो, इख़्लास भी, तब ही नेकी में जान पड़ती है और वज़नदार बनती है।

सबसे ज़्यादा वज़नी अमल

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है, आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा सबसे ज़्यादा वज़नी चीज़ जो क़ियामत के दिन मोमिन की तराज़ू में रखी जाएगी, वह अच्छे अख़्लाक़ होंगे, फिर फ़रमाया कि बिला शुब्हा अल्लाह

---

१. तिर्मिज़ी, इब्ने माजा,

गंदगी और बेहयाई वाले से बुग़्ज़ (कपट) रखते हैं।[1]

काफ़िरों की नेकियां बे-वज़न होंगी

सूरः कह्फ़ के आख़िरी रुकूअ में इर्शाद है—

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِيْنَ أَعْمَالًا ۞ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۞ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۞

क़ुल हल उनब्बिउकुम बिल् अख़्सरी न अअ़्माला० अल्लज़ी न ज़ल्ल सअ़्युहुम फ़िल हयातिद्दुन्या व हुम यह्सबू न अन्नहुम युह्सिनू न सुन्आ उलाइकल्लज़ी न क फ़रू बिआयाति रब्बिहिम व लिक़ाइही फ़ हबितत अअ़्मालुहुम फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना०

'आप फ़रमा दीजिए, क्या हम तुम को ऐसे लोग बताएं जो आमाल के एतबार से बड़े घाटे में हैं (ये) वे लोग हैं जिनकी कोशिश अकारथ गयी दुनिया की ज़िंदगी में और वे समझते रहे कि ख़ूब बनाते हैं काम ! ये वही हैं, जो इंकारी हुए अपने रब की आयतों के और उसकी मुलाक़ात के सिवा अकारथ गए उनके अमल, पस हम क़ियामत के दिन उनके लिए तौल क़ायम न करेंगे।'

यानी सब से ज़्यादा टोटं और ख़सारे वाले हक़ीक़त में वे लोग हैं, जिन्होंने वर्षों दुनिया में गुज़ारे और मेहनत व कोशिश करके नफ़ा कमाते रहे और दुनिया जोड़ कर ख़ुश हुए और यह यक़ीन करते रहे कि हम बड़े कामियाब और बा-मुराद हैं। कल हज़ारपति थे, आज लखपति हो गए, पिछले साल म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर थे, इस चुनाव में मेम्बर पालिया-मेंट बन गये, ग़रज़ कि इसी फेर में ज़िंदगी गुज़ारी, अल्लाह को न माना, उसकी आदतों का इन्कार किया, क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने हाज़िरी से झुठलाया, मरने के बाद क्या बनेगा, इसको कभी न सोचा, सिर्फ़ दुनिया की तरक़्क़ियों और कामियाबियों को बड़ा कमाल समझते रहे, जब क़ियामत के दिन हाज़िर होंगे तो कुफ़्र और दुनिया की मुहब्बत और दुनिया की कोशिश ही उनके आमालनामों में होगी, वहां ये चीज़ें बे-वज़न होंगी और दोज़ख़ में जाना पड़ेगा, उस वक़्त आंखें खुलेंगी कि कामियाबी क्या है ?

---

१. मिश्कात शरीफ़,

यहूदी और ईसाई, मुश्रिक और काफ़िर, जो दुनिया की जिंदगी में अपने ख्याल में नेक काम करते हैं, जैसे पानी पिलाने के लिए जगह का इंतिज़ाम करते हैं और मजबूर की मदद कर गुज़रते हैं या अल्लाह के नामों का विर्द (बार-बार पढ़ना) रखते हैं 'इला ग़ैरि ज़ालिक'। इस क़िस्म के काम भी आख़िरत में उनको निजात न दिलाएंगे। साधू और राहिब (योगी, संसार-त्यागी) जो बड़ी-बड़ी रियाज़तें (तपस्या) करते हैं और मुजाहदा करके नफ़्स को मारते हैं और यहूदियों और ईसाइयों के राहिब और पादरी जो नेकी के ख्याल से शादी नहीं करते, इस क़िस्म के तमाम काम बे-फ़ायदा हैं, आख़िरत में कुफ़्र की वजह से कुछ न पाएंगे, काफ़िर की नेकियां मुर्दा हैं, वे क़ियामत के दिन नेकियों से ख़ाली हाथ होंगे। सूरः इब्राहीम में इर्शाद है—

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ
عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ـ

म स लुल्लज़ी न क फ़ रू बिरब्बिहिम अअ्मालुहुम क र मादि-निश-तद्दत बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन आसिफ़िन ला यक़्दिरू न मिम्मा क स बू अला शैइन ज़ालिक हुवज़्ज़लालुल बईद०

यानी (इन काफ़िरों को अगर अपनी निजात के मुताल्लिक़ यह ख्याल हो कि हमारे आमाल हमको नफ़ा देंगे तो इसके मुताल्लिक़ सुन लो कि) जो लोग अपने परवरदिगार के साथ कुफ़्र करते हैं, उनकी हालत (अमल के एतबार से) यह है कि जैसे कुछ राख हो, जिसे तेज़ आंधी के दिन में तेज़ी के साथ हवा उड़ा ले जाए (कि इस शक्ल में राख का नाम व निशान न रहेगा, इसी तरह) इन लोगों ने जो अमल किए थे, उनका कोई हिस्सा उनको हासिल न होगा, (बल्कि राख की तरह सब जाया व बर्बाद हो जाएंगे और कुफ़्र व गुनाह ही क़ियामत के दिन साथ होंगे। यह काफ़ी दूर की गुमराही है) कि गुमान तो यह हो कि हमारे अमल नफ़ा देने वाले होंगे और फिर ज़रूरत के वक़्त कुछ काम भी न आएंगे।'

साहिबे तफ़्सीरे मज़्हरी 'फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना' की तफ़्सीर में लिखते हैं कि अल्लाह तआला के नज़दीक काफ़िरों के अमल का कोई एतबार या अहमियत न होगी। फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इर्शाद, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नक़ल फ़रमाया है (जो इस किताब में पहले

१. बयानुल क़ुरआन मय ज़्यादतुत्तौज़ीह वत्तफ़्हीम,

गुज़र भी चुका है) कि (क़ियामत के दिन) कुछ लोग भारी-भरकम (पोज़ीशन के एतबार से या जिस्म की मोटाई के लिहाज़ से) मोटे-ताज़े आएंगे, जिनका वज़न' अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पैर के बराबर भी न होगा। इसके बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि (मेरी ताईद के लिए) तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लो—'फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना०'

फिर साहिबे तफ़्सीरे मज़्हरी आयत के इन लफ़्ज़ों की दूसरी तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि या यह मानी हैं कि इन (काफ़िरों) के लिए तराज़ू खड़ी भी न की जाएगी और तौलने का मामला उनके साथ होना ही नहीं, क्योंकि उनके (नेक) अमल वहां पर अकारथ हो जाएंगे, इसलिए सीधे दोज़ख में डाल दिए जाएंगे। आयत में आये लफ़्ज़ों के तीसरा मानी बयान करते हुए फ़रमाते हैं, या यह मानी हैं कि काफ़िर अपने जिन अमल को नेक समझते हैं, क़ियामत की तराज़ू में उनका कुछ वज़न न निकलेगा। (क्योंकि वहां इसी नेक काम में वज़न होगा जिन्हें ईमान की दौलत हासिल करते हुए, इख़्लास के साथ (अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए) दुनिया में किया गया था।

इसके बाद अल्लामा सुयूती रह० से नक़ल फ़रमाते हैं कि इल्म वालों का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि ईमान वालों के अमल का सिर्फ़ वज़न होगा या काफ़िरों के अमल भी तौले जाएंगे। एक जमाअत का कहना है कि सिर्फ़ मोमिनों के अमल तौले जाएंगे (क्योंकि काफ़िरों की नेकियां तो अकारथ हो जाएंगी, फिर जब नेकी के पलड़े में रखने के लिए कुछ न रहा तो एक पलड़ा क्या तौला जाए ?) इस जमाअत ने 'फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना' से दलील ली है। दूसरी जमाअत कहती है कि काफ़िरों के अमल भी तौले जाएंगे। (लेकिन वह बे-वज़न निकलेंगे)। उनकी दलील आयत 'व मन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुहू फ़ उलाइ कल्लज़ी न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम फ़ी जहन्नम ख़ालिदून०' से है, जिसका तर्जुमा यह है, 'और जिनकी तौल हल्की निकली, तो ये वे लोग हैं जो हार बैठे अपनी जान, ये दोज़ख में हमेशा रहेंगे, दलील 'हुम फ़ी हा ख़ालिदून' से है। मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा में हल्की तौल निकलने वालों के बारे में फ़रमाया है कि वह दोज़ख में हमेशा रहेंगे। इससे मालूम हुआ कि काफ़िरों के आमाल भी तौले जाएंगे, क्योंकि इस पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि मोमिन कोई भी दोज़ख में हमेशा न रहेगा।

१. वैल्यू और पोज़ीशन 'लिअन्नल अज्सा म ला तू ज़न

इसके बाद साहिबे तफ़्सीरे मज़्हरी अल्लामा क़र्तबी का क़ौल नक़ल फ़रमाते हैं कि हर एक के आमाल नहीं तौले जाएंगे (बल्कि इसमें तफ़्सील है और वह यह कि) जो लोग बग़ैर हिसाब जन्नत में जाएंगे या जिनको दोज़ख में बग़ैर हिसाब हश्र का मैदान क़ायम होते ही जाना होगा इन दोनों जमाअतों के आमाल न तौले जाएंगे और इनके अलावा बाक़ी मोमिनों व काफ़िरों के अमल का वज़न होगा।

साहिबे तफ़्सीरे मज़्हरी इसके बाद फ़रमाते हैं कि अल्लामा क़र्तबी का यह इर्शाद दोनों जमाअतों के मस्लकों और दोनों आयतों (आयत सूरः कह्फ़ और आयत सूरः मूमिनून) के मतलबों को जमा कर देता है।

हज़रत हकीमुल उम्मत क़ुद्दस (बयानुल क़ुरआन में) सूरः आराफ़ के शुरू में एक मुफ़ीद तम्हीद के बाद इर्शाद फ़रमाते हैं कि, 'पस इस मीज़ान में ईमान व कुफ़्र भी वज़न किया जाएगा और इस वज़न में एक पलड़ा ख़ाली रहेगा और एक पलड़े में अगर वह मोमिन है तो ईमान और अगर काफ़िर है तो कुफ़्र रखा जाएगा। जब इस तौल से मोमिन व काफ़िर अलग-अलग हो जाएंगे (तो) फिर ख़ास मोमिनों के लिए एक पल्ले में उनके हसनात[1] और दूसरे पल्ले में उनके सय्यिआत[2] रखकर उन अमल का वज़न होगा और जैसा कि दुर्रे मंसूर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया गया है कि अगर हसनात ग़ालिब हुए तो जन्नत और अगर सय्यिआत ग़ालिब हुए तो दोज़ख और अगर दोनों बराबर हुए तो आराफ़ तज्वीज़ होगी, फिर चाहे शफ़ाअत से पहले सज़ा या सज़ा के बाद मग़्फ़िरत हो जाएगी (और दोज़ख वाले और आराफ़ वाले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।)

अल्लाह की रहमत से बख़्शे जांयेंगे

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हरगिज़ कोई जन्नत में अल्लाह की रहमत के बग़ैर दाख़िल न होगा ? सहाबा किराम रज़ि-यल्लाहु तआला अन्हुम ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह ! आप भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में न जाएंगे ? इसके जवाब में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपना मुबारक हाथ सर पर

१. नेकियाँ, २. गुनाह,

रखकर फ़रमाया और न मैं जन्नत में दाख़िल हूंगा, मगर यह कि अल्लाह मुझे अपनी रहमत में ढांप ले।'

इस हदीसे मुबारक में नेक अमल करने वालों को और ख़ास तौर से उन इबादत करने वालों, दुनिया से चाव न रखने वालों, अल्लाह का ज़िक्र करने वालों, और जिहाद करने वालों को तंबीह फ़रमायी गयी है जो हर वक़्त भलाई और नेकी में लगे रहते हैं कि अपने अमल पर नाज़ न करें और न समझें कि हम जन्नत के हक़दार वाजबी तौर पर हो चुके बल्कि चाहिए कि अपने आमाल को कमतर समझते रहें और डरते रहें कि शायद क़ुबूल न हों। अगर अल्लाह तआला आमाल क़ुबूल न फ़रमायें तो किसी की उन पर क्या ज़बरदस्ती है ? जो नेक अमल लोग करते हैं, उनको क़ुबूल फ़रमा कर सवाब से नवाज़ें और जन्नत में दाख़िल फ़रमाएं, यह उनकी सिर्फ़ रहमत है, उनकी मामूली नेमत का बदला भी सारी उम्र के अमल नहीं हो सकते हैं (जैसा कि नेमतों के सवाल के सिलसिले में रिवायत गुज़र चुकी है) जब आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल न होगा, तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने यह समझ कर कि आप तो अल्लाह तआला के हुक्मों पर पूरी तरह क़ायम है और सख़्त मेहनत और मुजाहदा इबादत और तब्लीग़ के लिए बरदाश्त करते हैं और आपके किसी भी अमल में ज़रा खोट का शुब्हा भी नहीं हो सकता, तो तश्रीह (व्याख्या) चाही कि आप जन्नत में आमाल की वजह से जा सकेंगे या नहीं। आपने साफ़ फ़रमा दिया कि मैं भी अल्लाह की रहमत का मुहताज हूं, उसकी रहमत के बग़ैर जन्नत में न जाऊंगा, है तो अल्लाह के आप बन्दे ही, आख़िर आप रहमत के मुहताज क्यों न होंगे। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम पर बे-इंतिहा रहमत व रिज़वान की बारिशें हों, जिन्होंने सवाल करके बाद में आने वालों के लिए अच्छी तरह दीन समझने के लिए नबी सल्ल० के इर्शादात का ज़ख़ीरा जमा कर लिया और फिर उसको बाद वालों के सुपुर्द कर गये। जो लोग हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़ुदाई अख़्तियारात देते हुए कहते हैं कि जो लेना है, वह लगे मुहम्मद से, इस मुबारक हदीस को ग़ौर से पढ़ें।

१. तर्ग़ीब व तर्हीब.

हर एक शर्मिंदा होगा

हज़रत मुहम्मद बिन अबी उमैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा अगर कोई बन्दा पैदाइश के दिन से मौत आने तक अल्लाह की फ़रमांबरदारी में चेहरे के बल गिरा पड़ा रहे तो वह (क़ियामत के दिन इस सारे अमल को हक़ीर (तुच्छ) समझेगा और यह तमन्ना करेगा कि उसको दुनिया की तरफ़ वापस कर दिया जाए ताकि और ज्यादा बदला व सवाब (भले काम करके) हासिल करे।'

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से जिसको भी मौत आएगी, ज़रूर शर्मिदा होगा। सहाबा रजि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! किस चीज़ की शर्मिंदगी होगी, फ़रमाया, अगर अच्छे अमल करने वाला था, तो यों सोच कर शर्मिन्दा होगा कि और अमल कर लेता तो क्या अच्छा होता और अगर बुरे अमल करने वाला था, तो यों सोचेगा कि काश मैं बुराइयों से अपनी जान को बचाये रखता।'

शफ़ाअत

क़ियामत में शफ़ाअत भी अल्लाह जल्ल शानुहू क़ुबूल फ़रमाएंगे और उससे ईमान वालों को बड़ा नफ़ा पहुंचेगा। आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन तीन गिरोह शफ़ाअत करेंगे—

(१) अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु, (२) फिर उलेमा, (३) फिर शुहदा'। लेकिन शफ़ाअत वही कर सकेगा, जिसे अल्लाह तआला की तरफ़ से शफ़ाअत करने की इजाज़त होगी, जैसा कि आयतल कुर्सी में फ़रमाया—

مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ۔

मन ज़ल्लज़ी यशफ़अु अिन्द हू इल्ला बिइज्निही०

'कोई है जो उसके दरबार में शफ़ाअत करे बग़ैर उसकी इजाज़त के।'

और सूरः ताहा में फ़रमाया—

یَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِیَ لَهٗ قَوْلًا۔

यौ म इज़िल्ला तन्फ़अुश्शफ़ाअतु अिन्द हू इल्ला मन अज़ि न लहुर्रहमानु व रज़ि य लहू क़ौला०

'उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा न देगी, मगर ऐसी शख़्स को जिसके वास्ते अल्लाह ने इजाज़त दे दी हो और इसके वास्ते बोलना पसन्द कर लिया हो।'

जिसको अल्लाह जल्लशानुहू की तरफ़ से शफ़ाअत की इजाज़त होगी, वही शफ़ाअत कर सकेगा और जिसके लिए शफ़ाअत की इजाज़त होगी, उसी के बारे में शफ़ाअत करने वाले शफ़ाअत करने की हिम्मत करेंगे।

काफ़िरों के हक़ में शफ़ाअत करने की इजाज़त न होगी और न कोई उनका दोस्त और सिफ़ारिशी होगा। अल्लाह का इर्शाद है—

مَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ حَمِیْمٍ وَّلَا شَفِیْعٍ یُّطَاعُ۔ (مومن پ۲۴)

मा लिज्ज़ालिमी न मिन हमीमिव्व ला शफ़ीअिंय्युताअु

—मोमिन, पारा २४

'ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी, जिसका कहा माना जाए।'

मिर्क़ात शरह मिश्कात में लिखा है कि क़ियामत के दिन पांच तरह की शफ़ाअतें होंगी। सबसे पहली शफ़ाअत हश्र के मैदान में जमा होने के बाद हिसाब-किताब शुरू कराने के लिए (जिसका ज़िक्र तफ़्सील से गुज़र चुका है) तमाम नबी अल्लाह के दरबार में शफ़ाअत करने से इंकार कर देंगे और आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तमाम अगले-पिछले मुस्लिमों और काफ़िरों के लिए शफ़ाअत फ़रमाएंगे। दूसरी शफ़ाअत बहुत से ईमान वालों को जन्नत में बग़ैर हिसाब दाख़िल कराने के बारे में होगी। यह सिफ़ारिश भी आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फ़रमाएंगे। तीसरी शफ़ाअत उन लोगों के लिए होगी जो बद-आमालियों की वजह से दोज़ख़ के हक़दार हो चुके होंगे। यह शफ़ाअत आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी फ़रमाएंगे और आपके अलावा मोमिन और शहीद आलिम भी उनकी शफ़ाअत करेंगे। चौथी शफ़ाअत उन गुनाहगारों के

१. अहमद, २. तिर्मिज़ी शरीफ़, ३. इब्ने माजा,

बारे में होगी जो दोज़ख में दाखिल हो चुके होंगे, उनको दोज़ख से निकालने के लिए नबियों और फ़रिश्ते शफ़ाअत करेंगे। पांचवीं शफ़ाअत जन्नतियों के दर्जे बुलन्द कराने के लिए होगी।

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे रब के पास से एक क़ासिद ने आकर (अल्लाह तआला की तरफ़ से) मुझे यह पैग़ाम दिया कि या तो मैं इस बात को अख्तियार कर लूं कि मेरी आधी उम्मत (बिला हिसाब व अज़ाब) जन्नत में दाखिल हो जाए या इसको अख्तियार कर लूं कि (अपनी उम्मतमें से जिसके लिए भी चाहूं, शफ़ाअत कर सकूं, इस लिए मैंने शफ़ाअत को अख्तियार कर लिया और यह मेरी शफ़ाअत उन लोगों के लिए होगी, जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करते।'[1]

चूंकि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उम्मत का ज्यादा नफ़ा उसी में समझा कि हर शख्स के लिए शफ़ाअत करने का हक़ ले लें, इस लिए आपने उसी को अख्तियार फ़रमाया।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (अल्लाह तआला की तरफ़ से हर नबी को) एक मक़्बूल दुआ दी गयी, पस हर नबी सल्ल० ने दुनिया ही में वह दुआ मांग कर क़ुबूल करा ली और मैंने (इस दुआ को दुनिया में मांग कर खत्म नहीं कर दी, बल्कि इस दुआ को क़ियामत के दिन तक के लिए छिपा रखी है, ताकि उस दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअत में उसको काम में लाऊं। पस मेरी शफ़ाअत इन् शाअल्लाहु मेरे हर उस उम्मती को ज़रूर पहुंचेगी जो इस हाल में मर गया हो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करता था।'[2]

इस मुबारक हदीस के अन्दाज़ से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की यह आदत थी कि हर नबी को खास तौर पर यह अख्तियार देते थे कि एक दुआ ज़रूर ही क़ुबूल होगी, चाहे कुछ ही मांग लें, यों तो नबियों की हर दुआ क़ुबूल होती ही थी, लेकिन खास एजाज़ के लिए अल्लाह जल्ल शानुहू ने हर नबी को अख्तियार दिया कि एक बार तुम जो चाहो, मांग लो। प्यारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि वह खास दुआ हर नबी ने दुनिया ही में मांग ली। मैंने यहां नहीं मांगी, बल्कि क़ियामत के दिन के लिए रख छोड़ी है, उसे अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिए

१. मिश्कात शरीफ़, २. मुस्लिम शरीफ़,

इस्तेमाल करूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि (हमारे) इस क़िब्ले को मानने वालों में इतनी ज्यादा तायदाद दोज़ख में दाखिल होगी कि जिसका इल्म अल्लाह ही को है (और यह दोज़ख का दाखिला) अल्लाह की नाफ़रमानियों की वजह से और नाफ़रमानियों पर जुर्अत (दुस्साहस) करने और अल्लाह के हुक्म के खिलाफ़ चलने की वजह से (होगी), पस मैं सज्दा में पड़कर अल्लाह की तारीफ़ में लग जाऊंगा जैसा कि खड़े होकर उसकी तारीफ़ बयान करूंगा। इसके बाद (अल्लाह तआला की तरफ़ से) हुक्म होगा कि अपना सर उठाओ और सवाल करो, तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा और शफ़ाअत करो, तुम्हारी शफ़ाअत मानी जाएगी।'[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत के लिए शफ़ाअत करता रहूंगा और अल्लाह मेरी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाते, रहेंगे यहां तक कि अल्लाह तआला मुझसे पूछेगा कि ऐ मुहम्मद क्या राज़ी हो गये, मैं अर्ज़ करूंगा कि ऐ रब मैं राज़ी हो गया।'[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नबियों के लिए (क़ियामत के दिन) नूर के मिंबर रख दिए जाएंगे, जिन पर वे तशरीफ़ फ़रमा होंगे और मेरा मिंबर खाली रहेगा। मैं उस पर इस डर से न बैठूंगा कि कहीं जन्नत में मुझे न भेज दिया जाए और मेरे बाद मेरी उम्मत (शफ़ाअत से महरूम) न रह जाए। मैं अर्ज़ करूंगा कि ऐ रब! मेरी उम्मत!! मेरी उम्मत!!! अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाएंगे कि ऐ मुहम्मद! तुम अपनी उम्मत के बारे में मुझ से क्या चाहते हो? मैं अर्ज़ करूंगा कि उनका हिसाब जल्दी कर दिया जाए। चुनांचे उम्मत को बुला कर उनका हिसाब शुरू हो जाएगा। नतीजे के तौर पर कुछ तो उनमें से अल्लाह की रहमत से और कुछ मेरी शफ़ाअत से जन्नत में दाखिल होंगे, मैं सिफ़ारिश करता ही रहूंगा, यहां तक कि जो लोग दोज़ख में भेज दिए गए होंगे, उनके निकालने के लिए भी (अल्लाह तआला की तरफ़ से) मुझे (उनके लिखे हुए नामों की) एक किताब दे दी

१. मुस्लिम शरीफ़, २. तर्ग़ीब व तर्हीब,

जाएगी, यहां तक कि (मालिक अलैहिस्सलाम) दोज़ख के दारोग़ा मुझसे कहेंगे कि आपने अपनी उम्मत में से किसी को भी अल्लाह के गुस्से के लिए नहीं छोड़ा जो अज़ाब में पड़ा रहा चला जाता (बल्कि सबको निकलवा लिया)[1]

तंबीह

आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत ज़रूर होगी और हदीसों में जो कुछ आया है, सब सही और दुरुस्त है, लेकिन शफ़ाअत के भरोसे पर भले काम न करना और गुनाहों में पड़े रहना बड़ी नादानी है, यह तो शफ़ाअत की हदीसों से ही मालूम हुआ और आगे आने वाली हदीसों से भी यह बात साफ़ हो जाएगी कि इस उम्मत के आदमी बहुत बड़ी भारी तायदाद में दोज़ख में जाएंगे, दोज़ख में जाने और फिर कितनी मुद्दत अज़ाब भुगतने के बाद शफ़ाअत से निकलना होगा, यह खुदा ही बेहतर जाने ! अब कौन-सा गुनाहगार और नेक अमल से खाली यह कह सकता है कि मैं दोज़ख में हरगिज़ न जाऊंगा और बे-अज़ाब व हिसाब जन्नत में पहुंच जाऊंगा ? कोई भी यह दावा नहीं कर सकता, फिर गुनाहों पर जुर्अत करना और नेकियों से खाली हाथ रहना कौन सी समझदारी है ? इन ही सफ़्हों (पृष्ठों) में अभी क़रीब ही गुज़र चुका है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (हमारे) इस क़िब्ले को मानने वालों में से इतनी बड़ी तायदाद दोज़ख में दाखिल होगी कि जिसका इल्म अल्लाह ही को है और यह दोज़ख का दाखिला अल्लाह की नाफ़रमानियों और नाफ़रमानियों पर जुर्अत करने और खुदा के हुक्म के खिलाफ़ करने की वजह से होगा।

मोमिनों की शफ़ाअत

आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत उम्मत के लिए रहमत होगी और आप के तुफ़ैल में आप के बहुत से उम्मतियों को भी शफ़ाअत करने का एजाज़ (श्रेय) मिलेगा। हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत

---

१. तर्ग़ीब व तर्हीब,

२. दस से चालीस तक की तायदाद के गिरोह को उस्बा कहते है,

सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा मेरी उम्मत के कुछ लोग पूरी जमाअत के लिए शफ़ाअत करेंगे और कुछ एक क़बीले के लिए और कुछ लोग उस्बा[2] के लिए और कुछ एक शख़्स के लिए सिफ़ारिश करेंगे, यहां तक कि सारी उम्मत जन्नत में दाखिल हो जाएगी और एक हदीस में है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के एक शख़्स की शफ़ाअत से क़बीला बनू तमीम के आदमियों से भी ज्यादा जन्नत में दाखिल होंगे।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (जन्नतियों के रास्ते में) दोज़ख में जाने वालों की लाइन बनी खड़ी होगी। इसी बीच एक जन्नती वहां को गुज़रेगा। दोज़ख़ियों की लाइन वालों में से एक शख़्स उस जन्नती से कहेगा कि ऐ साहब ! क्या आप मुझे पहचानते नहीं ? मैंने आप को दुनिया में एक बार पानी पिलाया था, इस लिए मेहरबानी फ़रमा कर मेरी शफ़ाअत कर दीजिए और दोज़ख़ियों की इन लाइन वालों में से कोई गुज़रने वाला जन्नती से कहेगा कि मैंने आप को वुज़ू का पानी दिया था, (मेहरबानी फ़रमा कर शफ़ाअत कर दीजिए) चुनांचे जन्नती शफ़ाअत करके जन्नत में दाखिल करा देगा।[3]

लानत करने वाले शफ़ाअत नहीं कर सकेंगे

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि लानत करने की आदत वाले क़ियामत के दिन न गवाह बनेंगे, न शफ़ाअत करने के अह्ल होंगे यानी उन की इस बुरी आदत की वजह से गवाही और शफ़ाअत का ओहदा न दिया जाएगा जो बड़ी सआदत और इज़्ज़त का रुत्बा है।[1]

मुजाहिद की शफ़ाअत

तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक लम्बी रिवायत में है, जिसे हज़रत मिक़दाम बिन मादीकर्ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रिवायत की है कि

---

१. मिश्कात शरीफ़, २. इब्ने माजा, ३. मुस्लिम शरीफ़,

आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने शहीद की बड़ाइयां बयान करते हुए यह भी फ़रमाया कि सत्तर रिश्तेदारों के बारे में उसकी शफ़ाअत क़ुबूल की जाएगी।[1]

मां-बाप के हक़ में ना-बालिग़ बच्चे की शफ़ाअत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने तीन बच्चे (पहले से अपने) आगे (आख़िरत में) भेज दिए थे, जो बालिग़ न हुए थे, वे बच्चे उसके लिए मर्द हो या या औरत, दोज़ख़ से बचाने के लिए मज़बूत क़िले (की तरह) काम आने वाले बन जाएंगे। यह सुनकर हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि मैंने तो सिर्फ़ दो बच्चे आगे भेजे हैं, मेरे बारे में क्या फ़रमाते हैं? नबी सल्ल० का इर्शाद हुआ कि दो बच्चे जो आगे भेजे हैं, उनके बारे में भी यही बात है। हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि मैंने तो एक ही बच्चा आगे भेजा है। आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक के बारे में भी यही बात है।[2]

आगे भेजने का मतलब यह है कि मां-बाप या दोनों में से एक की मौजूदगी में बच्चे का इंतिक़ाल हो जाए, बच्चे की मौत पर जो मां-बाप को ग़म होता है, उसके बदले में अल्लाह जल्ल शानुहू ने यह ख़ुशी रखी है कि वह बच्चा मां-बाप को बख़्शवाने के लिए ज़ोर लगायेगा। अगर अधूरा बच्चा गिर गया तो वह भी मां-बाप को बख़्शवाने के लिए ज़ोर लगायेगा, जैसाकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाया है कि बिला शुब्हा अधूरा गया हुआ बच्चा भी उस वक़्त अपने रब से बड़ी ज़बरदस्त सिफ़ारिश मां-बाप के लिए करेगा, जबकि उसके मां-बाप दोज़ख़ में दाख़िल कर दिए जाएंगे। उसकी ज़ोरदार सिफ़ारिश पर उससे कहा जाएगा कि ऐ अधूरे बच्चे जो अपने रब से (मां-बाप की बख़्शिश के लिए) ज़ोर लगा रहा है, अपने मां-बाप को जन्नत में दाख़िल कर दे। इसके बाद वह अपनी नाफ़ के ज़रिए खींचता हुआ लेजा कर उन दोनों को जन्नत में दाख़िल कर देगा।[3]

---

१. मिश्कात शरीफ़, २. मिश्कात शरीफ़, ३. इब्ने माजा शरीफ़,

क़ुरआन के हाफ़िज़ की शफ़ाअत

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने क़ुरआन पढ़ा और उसको अच्छी तरह याद कर लिया, और क़ुरआन ने जिन चीज़ों और कामों को हलाल बताया है, उन को (अपने अमल और अक़ीदे में) हलाल रखा और जिन चीज़ों को उसने हराम बताया है, उनको (अपने अमल और अक़ीदे में) हराम ही रखा तो उस को अल्लाह जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे और उसके घर वालों में से ऐसे दस आदमियों के बारे में उसकी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाएंगे जिन के लिए (बुरे आमाल की वजह से) दोज़ख़ में जाना ज़रूरी हो चुका होगा।[1]

तंबीह

जिसे क़ुरआन मजीद याद हो, उस की शफ़ाअत दस आदमियों के हक़ में क़ुबूल होगी, जैसा कि अभी ऊपर की हदीस में गुज़रा, लेकिन इसी के साथ हदीस शरीफ़ में यह शर्त भी है कि क़ुरआन पाक में अमल करने वाला हो, क़ुरआन मजीद के मुतालबों और तक़ाज़ों को पूरा करता हो, हराम से बचता हो, हलाल पर अमल करता हो, लेकिन जिसने क़ुरआन के तक़ाज़ों और मुतालबों को पीठ पीछे डाला तो ख़ुद क़ुरआन शरीफ़ उस पर दावा करेगा और दोज़ख़ में दाख़िल कर देगा। बहुत से लोग गुनाह करते जाते हैं और नेक अमल से कतराते हैं और नसीहत करने पर कहते हैं कि साहब! हमारा बेटा या भतीजा या फ़्लां रिश्तेदार हाफ़िज़ है, वह बख़्शवा लेगा, हालांकि यह नहीं देखते कि क़ुरआन शरीफ़ पर वह अमल भी करता है या नहीं। आजकल तो अमल करने वाला कोई-कोई है। दूसरे के भरोसे पर ख़ुद गुनाहों में पड़ना ना-दानी है, हां, नेक अमल करते हुए अपने रिश्तेदार हाफ़िज़ की शफ़ाअत की उम्मीद रखे और साथ ही साथ उसे क़ुरआन के मुताबिक़ चलाते भी रहें।

---

१. तिर्मिज़ी शरीफ़ वग़ैरह,

रोज़ा और क़ुरआन की शफ़ाअत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रोज़े और क़ुरआन बन्दे के लिए शफ़ाअत करेंगे। रोज़े अर्ज़ करेंगे कि ऐ रब ! मैंने उसको दिन में खाने से और दूसरी ख्वाहिशों से रोक दिया था, इसलिए इसके हक़ में मेरी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाइए और क़ुरआन अर्ज़ करेगा कि ऐ रब ! मैंने उस को रात को सोने से रोक दिया था, क्योंकि यह रात को मुझे पढ़ता या सुनता था, इस लिए मेरी शफ़ाअत उसके हक़ में क़ुबूल फ़रमाइए। इसके बाद सय्यदे आलम सल्ल० ने फ़रमाया कि आखिर में दोनों की शफ़ाअत क़ुबूल कर ली जाएगी।[1]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ पढ़ो, क्योंकि वह क़ियामत के दिन अपने आदमियों के लिए शफ़ाअत करने वाला बन कर आएगा, (फिर फ़रमाया कि) दोनों सूरतों बक़र: और आले इम्रान को पढ़ा करो, जो बहुत ज़्यादा रोशन हैं, क्योंकि वे क़ियामत के दिन दो बादलों या दो सायबानों या परिंदों की दो जमाअतों की तरह जो लाइन बनाये हुए हों, आयेंगी और अपने पढ़ने वालों के लिए बड़ी ज़ोर से सिफ़ारिश करेंगी।[2]

तजल्ली-ए-साक़, पुल सिरात, तक़्सीम नूर

काफ़िरों, मुश्रिकों और मुनाफ़िक़ों की बे-पनाह मुसीबत

क़ियामत का दिन इंसाफ़ का दिन होगा। हर शख्स अपनी आंखों से अपने अमल का वज़न देख कर जन्नत या दोज़ख में जाएगा, किसी को यह कहने की ताक़त होगी ही नहीं कि मुझ पर ज़ुल्म हुआ, मैं बे-वजह दोज़ख में जा रहा हूं।

१. मिश्कात,

२. मुस्लिम शरीफ़,

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ

व वुफ़्फ़ियत कुल्लु नफ़्सिम मा अमिलत व हु व अअ़लमु बिमा यफ़्अ़लून०

अल्लाह जल्ल शानुहू ने ईमान और भले कामों के बदले के लिए जन्नत तैयार फ़रमायी है और कुफ़्र व शिर्क और दूसरे गुनाहों की सज़ा के लिए जहन्नम तैयार फ़रमाया है, अपने आमाल के नतीजे में इन दोनों में से जिस को जहां जाना होगा, जाएगा। जन्नत में जाने के लिए दोज़ख के ऊपर से रास्ता होगा, जिसे हदीसों में 'सिरात' फ़रमाया गया है और आम तौर से हमारे देश वाले उसे पुल सिरात कहते हैं। खुदा से डरने वाले मोमिन अपने-अपने दर्जे के मुताबिक़ सही सलामत उस पर से गुज़र जाएंगे और बद-अमल चल न सकेंगे और दोज़ख के अंदर से बड़ी-बड़ी संडासियां निकली हुई होंगी जो गुज़रने वालों को पकड़ कर दोज़ख में गिराने वाली होंगी, उनसे छिल-छिला कर गुज़रते हुए बहुत से (बद-अमल) मुसलमान पार हो जाएंगे और जिन को दोज़ख में गिराना ही मंज़ूर होगा वे संडासियां उन को गिरा कर छोड़ेंगी। फिर कुछ मुद्दत के बाद अपने-अपने अमल के मुताबिक़ और नबियों और फ़रिश्तों और नेक बंदों की शफ़ाअत से और आखिर में सीधे-सीधे अल्लाह तआला की मेहरबानी से वे सब लोग दोज़ख से निकाल लिए जाएंगे, जिन्होंने सच्चे दिल से कलमा पढ़ा था और दोज़ख में सिर्फ़ काफ़िर व मुश्रिक व मुनाफ़िक़ ही रह जाएंगे।

नूर की तक़्सीम

पुल सिरात पर गुज़रने से पहले नूर तक़्सीम होगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि ईमान वाले मर्दों और औरतों को उनके अपने-अपने आमाल के बराबर नूर तक़्सीम होगा (जिस की रोशनी में) पुल सिरात पर गुज़रेंगे और यह नूर अल्लाह तआला की तरफ़ से जन्नत का रास्ता बताने वाला होगा। उन में से किसी का नूर पहाड़ के बराबर होगा और किसी का नूर खजूर के पेड़ के बराबर होगा और सब से कम नूर उस शख्स का होगा, जिस का नूर सिर्फ़ अंगूठे पर (टिमटिमाते चिराग़ की तरह) होगा, जो कभी

बुझ जाएगा और कभी रोशन हो जाएगा।'

सूरः हदीद में अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया—

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

यौ म तरल मुअ्मिनी न वल् मुअ्मिनाति यस्आ नूरु हुम बै न ऐदीहिम व बिऐ मानि हिम बुश्रा कुमुल यौ म जन्नातुन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अज़ीम०

'जिस दिन आप मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखेंगे कि उन का नूर उनके आगे और उनकी दाहिनी तरफ़ दौड़ता होगा (और फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि) आज तुम को ख़ुशख़बरी है ऐसे बाग़ों की जिन के नीचे नहरें जारी होंगी (वे) उनमें हमेशा रहेंगे। यह बड़ी कामियाबी है।'

नूर मिलने के बाद मोमिन मर्द और औरतें पुले सिरात पर गुज़रने लगेंगे और उन के नूर की रोशनी में मुनाफ़िक़ मर्द व औरत भी पीछे-पीछे हो लेंगे लेकिन जब मोमिन मर्द व औरत आगे बढ़ जाएंगे और मुनाफ़िक़ मर्द व औरत पीछे रह जाएंगे तो ईमान वालों को आवाज़ दे कर कहेंगे कि ज़रा इंतिज़ार करो, हम भी आ रहे हैं तुम्हारी रोशनी से हमें भी फ़ायदा पहुंच जाएगा और हम भी आगे बढ़ चलेंगे। ईमान वाले जवाब देंगे (यहां अपना ही नूर काम देता है, दूसरे के नूर से फ़ायदा पहुंचाने का क़ानून नहीं है, जाओ) वापस अपने पीछे जहां नूर तक़्सीम हुआ था, वहीं ढूंढो, चुनांचे मुनाफ़िक़ मर्द व औरत नूर लेने के लिए वापस होंगे, लेकिन वहां कुछ न मिलेगा, इसलिए फिर ईमान वालों का सहारा लेने के लिए दौड़ेंगे लेकिन उनको पा न सकेंगे। एक दीवार दोनों फ़रीक़ के दर्मियान रुकावट बन जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा होगा, उसके अंदरूनी हिस्से में (जिधर मुसलमान होंगे) रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा। (जिधर मुनाफ़िक़ होंगे) उस का ज़िक्र ऊपर की आयत के बाद सूरः हदीद में इस तरह है—

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ

---

१. दुर्रे मंसूर,

نُوْرِكُمْ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ

यौ म यक़ूलुल मुनाफ़ि क़ून वल मुनाफ़िक़ातु लिल्लज़ीन आमनुन ज़ुरूना नक़्तबिस मिन नूरिकुम क़ीलर जिअू वराअ कुम फ़ल् तमिसू नूरन फ़ ज़ुरि ब बै न हुम बिसूरिल्ल हू बाब बातिनुहू फ़ीहिर्रहमतु फ़ ज़ाहिरुहू मिन क़ि ब लिहिल अज़ाबु०

'जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमारा इंतिज़ार कर लो ताकि हम भी तुम्हारे नूर से रोशनी हासिल करें, उन को जवाब मिलेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ, फिर (वहां से) रोशनी तलाश कर लो, फिर दोनों फ़रीक़ के दर्मियान एक दीवार क़ायम कर दी जाएगी. जिसमें एक दरवाज़ा भी होगा, उसके अंदरूनी हिस्से में रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा।'

इस बे-पनाह मुसीबत और हैरानी व परेशानी में फंस कर कोई बचने की शक्ल मुनाफ़िक़ न पाएंगे और ईमान वालों को आवाज़ देकर मेहरबानी करने की दलील बयान करते हुए कहेंगे कि हम तो दुनिया में तुम्हारे साथी थे, तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ते और रोज़े रखते थे। अब दोस्ती और साथ का हक़ आप हज़रात को अदा करना चाहिए। क़ुरआन मजीद में मुनाफ़िक़ों की इस बात को इस तरह बयान फ़रमाया है—

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ

युनादू न हुम अ लम न कुम मअ़ कुम०

'मुनाफ़िक़ ईमान वालों को पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे।'

मुसलमान जवाब देंगे कि—

بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ

बला वला किन्नकुम फ़तन्तुम अन्फ़ु स कुम व तरब्बस्तुम वर्तब्तुम व ग़र्रत कुमुल अमानीयु हत्ता जा अ अम्रु ल्लाहि व ग़र्रकुम बिल्लाहिल ग़रूर०

'हां, (यह तो सही है कि तुम दुनिया में हमारे साथ थे) लेकिन (रियासत व मस्लहत की वजह से साथ हो गये, दिल से साथ न थे) तुम ने अपनी जानों को (निफ़ाक़ के) फ़ित्ने में डाल कर हलाक किया और

तुम इंतिज़ार में रहा करते थे कि (देखिए, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके साथी कब ख़त्म हों) और तुम को (इस्लाम के हक़ होने में) शक रहा और तुम को बेहूदा तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था, यहां तक कि तुम तक अल्लाह का हुक्म (यानी मौत) आ पहुंचा और तुम को धोखा देने वाले (यानी शैतान) ने अल्लाह के बारे में धोखा में डाल रखा था।'

आगे इर्शाद फ़रमाया—

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَأْوٰىكُمُ النَّارُ
هِيَ مَوْلٰىكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ط

फ़ल यौ म ला युअ्ख़ज़ु मिन्कुम फ़िद्‌यतुंव्व ला मिनल्लज़ी न कफ़रू मा वाकुमुन्नारु हि य मौलाकुम व बिअ्सल मसीरु०

'तो आज न क़ुबूल किया जाएगा, तुमसे जान का बदला और न तुम्हारे अलावा उनसे, जो एलानिया काफ़िर थे, तुम सब का ठिकाना दोज़ख है, वही तुम्हारा साथी है और वह बुरा ठिकाना है।'

साक़ की तजल्ली

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हमने रसूल सल्ल० के दरबार में अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या क़ियामत के दिन हम अपने रब को देखेंगे ? जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि हां, (ज़रूर देखोगे) क्या दोपहर के वक़्त सूरज के देखने में तुम को तक्लीफ़ होती है, जबकि सूरज बिल्कुल साफ़ हो (और) उस पर ज़रा बादल न हो ? और क्या चौदहवीं रात के चांद को देखने में तुम को कई तक्लीफ़ होती है, जबकि वह बिल्कुल साफ़ हो और उस पर कुछ भी बादल न हो ? सहाबा रज़ि० ने जवाब में अर्ज़ किया, कि अल्लाह के रसूल ! नहीं (कोई तक्लीफ़ नहीं होती, आसानी से देख लेते है, फ़रमाया, इसी तरह क़ियामत के दिन तुम अल्लाह को ख़ूब अच्छी तरह देखोगे और कोई तक्लीफ़ न होगी जैसा कि चांद-सूरज के देखने में (ज़िक्र की गयी हालत में) कोई तक्लीफ़ नहीं होती है। इस के बाद इर्शाद फ़रमाया कि—

'जब क़ियामत का दिन होगा तो एक पुकारने वाला पुकारेगा कि जो जिसको पूजता था, वह अपने माबूद के पीछे लग जाए, पस जो लोग

ग़ैर-अल्लाह यानी बुतों और स्थानों के पत्थरों को पूजते थे, वे सबके सब दोज़ख में गिर पड़ेंगे (क्योंकि उनके बातिल के माबूद[1] भी दोज़ख का ईंधन बनेंगे) यहां तक कि जब अहले किताब और वे लोग रह जाएंगे जो सिर्फ़ अल्लाह को पूजते थे तो यहूद को बुलाकर सवाल किया जाएगा कि तुम किस की इबादत करते थे, वे जवाब में कहेंगे कि हम अल्लाह के बेटे उज़ैर की पूजा किया करते थे, इस जवाब पर (उन पर डांट पड़ेगी और) उनसे कहा जाएगा कि) यह जो तुमने उज़ैर को अल्लाह का बेटा बताया, इस कहने में) तुम झूठे हो। अल्लाह ने किसी को अपनी बीवी या औलाद क़रार नहीं दिया ! इसके बाद उनसे सवाल होगा कि तुम क्या चाहते हो ? वह अर्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार ! हम प्यासे हैं, हमें पिला दीजिए, उन के इस कहने पर दोज़ख की तरफ़ इशारा करके उनसे कहा जाएगा कि वहां जाकर क्यों नहीं पी लेते, चुनांचे वे लोग दोज़ख की तरफ़ (चलाकर) जमा कर दिए जाएंगे (और वह दूर से ऐसा मालूम हो रहा होगा) गोया कि वह रेत है[2] और हक़ीक़त में वह आग होगी, जिसके हिस्से आपस में एक दूसरे को जला रहे होंगे, पस वे लोग उसमें गिर पड़ेंगे, फिर नसारा (ईसाई) को बुलाया जाएगा और उनसे सवाल होगा कि तुम किस की इबादत करते थे ? वे जवाब में कहेंगे कि हम अल्लाह के बेटे मसीह की इबादत करते थे। उनके इस जवाब पर (डांटने के लिए) कहा जाएगा कि (यह जो तुमने मसीह को अल्लाह का बेटा बताया, इस कहने में) तुम झूठे हो, अल्लाह ने किसी को अपनी बीवी या औलाद क़रार नहीं दिया, इसके बाद उनसे सवाल होगा कि तुम क्या चाहते हो ? वह अर्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार ! हम प्यासे हैं, हमको पिला दीजिए, उनके इस कहने पर दोज़ख की तरफ़ इशारा करके उनसे कहा जाएगा कि वहां जाकर क्यों नहीं पी लेते ? चुनांचे वे लोग दोज़ख की तरफ़ (चलाकर) जमा कर दीजिए जाएंगे (और वह दूर से ऐसा मालूम होगा) कि गोया रेत है (और हक़ीक़त में वह आग होगी) जिसके हिस्से आपस में एक दूसरे को जला रहे होंगे, पस वे लोग उसमें गिर पड़ेंगे (मतलब यह है कि तमाम यहूदी व ईसाई दोज़ख में गिर पड़ेंगे) यहां तक कि जब सिर्फ़ वही लोग रह जाएंगे, जो अल्लाह ही की इबादत करते थे (यानी मुसलमान) नेक भी और बद भी तो अल्लाह तआला की उनके सामने एक तजल्ली होगी (और)

---

१. जैसा कि क़ुरआन मजीद में आया है 'इन्नकुम वमा तअ्बुदून मिन दूनिल्लाहि ह स बु जहन्नम' (सूरः अंबिया),

२. रेत दूर से देखने में पानी मालूम होता है,

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि तुमको क्या इंतिज़ार है ? हर जमाअत को उसके माबूद के पीछे जाने का हुक्म है ! मोमिन अर्ज़ करेंगे कि (जाने वाले जा चुके, हमारा उनका क्या साथ, हमको अपने माबूद का इंतिज़ार है, जब तक हमारा माबूद न आए, हम यहीं रहेंगे। जब हमारा रब हमारे पास पहुंचेगा, हम पहचान लेंगे) ऐ परवरदिगार ! हम दूसरी जमाअतों और गिरोहों से दुनिया में अलग रहे, जब कि उनके साथ रहने के बहुत ज़्यादा मुहताज थे और (बहुत ज़्यादा मुहताज होने की हालत में भी) उनका साथ न दिया (अब उनके साथ कैसे हो सकते हैं) अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाएंगे कि मैं तुम्हारा रब हूं। मोमिन (चूंकि साक़ की तजल्ली से अल्लाह को पहचानने के ध्यान में होंगे, इसलिए अल्लाह की उस तजल्ली को, जो उस वक़्त होगी, ग़ैर अल्लाह समझ कर जवाब में) कहेंगे कि 'नऊज़ु बिल्लाहि' (हम तुझे अपना रब मान कर क्या मुश्रिक हो जाएं) हम अल्लाह के साथ किसी भी चीज़ को शरीक नहीं बनाते, दो या तीन बार ऐसा ही कहेंगे, उनके इस जवाब पर अल्लाह जल्ल शानुहू सवाल फ़रमाएंगे कि क्या तुम्हारे रब और तुम्हारे दर्मियान कोई निशानी (मुक़र्रर) है जिससे तुम अपने रब को पहचान लोगे ? मोमिन अर्ज़ करेंगे, जी हां, निशानी ज़रूर हैं ! इसके बाद साक़[1] की तजल्ली होगी जिसे देख कर तमाम वे लोग जो ख़ुलूस के साथ अल्लाह को सज्दा करते थे, अल्लाह के हुक्म से सज्दा में गिर पड़ेंगे, और जो लोग दिखावे या (मस्लहतों की वजह से दुनिया की मुश्किलों से) बचने के लिए (यानी निफ़ाक़ के साथ) सज्दा करते थे, अल्लाह उन सब की कमर को तख़्ता बना देंगे (जिसकी वजह से सज्दा न कर सकेंगे) जो भी कोई उनमें से जब भी सज्दे का इरादा करेगा, गुद्दी के बल गिर पड़ेगा, फिर मोमिन सज्दों से सर उठाएंगे और अब जो अल्लाह को देखेंगे तो उसी तजल्ली में जो तजल्ली साक़ से पहले थे, अब अल्लाह फ़रमाएंगे कि मैं तुम्हारा रब हूं तो मोमिन

१. साक़ पिंडली को कहते हैं और अल्लाह जल्ल शानुहू जिस्म और जिस्म के अंगों से पाक-साफ़ हैं, फिर यहां पिंडली का क्या मतलब है ? इसके बारे में उलेमा किराम ने बताया कि यह कोई ख़ास सिफ़त है, अल्लाह के सिफ़ती (गुणों) में से, जिसको किसी ख़ास मुनासबत से साक़ फ़रमाया है, जैसे क़ुरआन में 'यदुल्लाहि' (अल्लाह का हाथ) 'वज्हुल्लाहि' (अल्लाह का चेहरा) का लफ़्ज़ आया है। ये और ऐसी ही लफ़्ज़ों पर, बग़ैर समझे और अक़्ल लड़ाए और अल्लाह को जिस्म के होने से पाक समझते हुए बिला शर्त ईमान रखना लाज़िम है।

मान लेंगे कि हां, आप हमारे रब हैं।

इसके बाद दोज़ख़ की पीठ पर पुल सिरात क़ायम की जाएगी (उस पर से गुज़रने का हुक्म होगा) और उस वक़्त (शफ़ाअत के जो अह्ल होंगे, उनको) शफ़ाअत की इजाज़त दे दी जाएगी और 'अल्लाहुम्म सल्लिम सल्लिम' (ऐ अल्लाह ! सलामत रख, सलामत रख !) कहते होंगे। अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! पुल सिरात की क्या ख़ूबी है ? इर्शाद फ़रमाया, वह चिकनी और फिसलने की जगह है, उसमें (दोज़ख़ से निकली हुई) उचकने वाली चीज़ें और संडासियां होंगी और बड़े-बड़े कांटे भी होंगे, जिन की शक्ल के कांटे नज्द में होते हैं, जिनको सुदान कहा जाता है। पस मोमिन पुल सिरात पर (जल्दी-जल्दी) गुज़रेंगे (और यह गुज़रना नेक अमल के बराबर होगा) कोई पल झपकने में और कोई बिजली की तरह और कोई हवा की तरह और कोई परिंदों की तरह और कोई बेहतरीन तेज़ रफ़्तार घोड़ों की तरह और कोई ऊंटों की तरह (गुज़र जाएगा) और दोज़ख़ के अंदर से जो संडासियां और कांटे निकले हुए होंगे, वे खींच कर दोज़ख़ में गिराने की कोशिश करेंगे। नतीजा यह होगा कि (बहुत से मोमिन सलामती के साथ निजात पा कर पार हो जाएंगे और बहुत से ईमान वाले (गुज़रते हुए) छिल-छिल कर छूट जाएंगे और बहुत से दोज़ख़ की आग में धकेल दिए जाएंगे, यहां तक कि जब (नेक) ईमान वाले दोज़ख़ से बच जाएंगे तो मैं उस ज़ात की क़सम खाकर कहता हूं, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि तुम यहां (इस दुनिया में) अल्लाह से हक़ लेने के बारे में ऐसी मज़बूती के साथ बात करने वाले नहीं हो, जैसा कि (दोज़ख़ से बच कर पुल सिरात पर हो जाने वाले) मोमिन अपने उन भाइयों के लिए जो दोज़ख़ में (गिर चुके) होंगे अल्लाह से मज़बूती के साथ सिफ़ारिश करेंगे। दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर यों फ़रमाया कि (दुनिया में) जो हक़ तुम्हारा किसी के ज़िम्मे मालूम हो जाए, तो उस हक़ को हासिल करने के लिए जैसी सख़्ती से मांग करते हो, उस दिन अल्लाह से जो ईमान वाले अपने दोज़ख़ी भाइयों के लिए जिस ज़ोर से मांग करेंगे तुम्हारे दुनिया की मांग से बहुत ज़ोरदार होगा, जब कि मोमिन यह देख लेंगे कि हम निजात पा चुके, ख़ुदा के दरबार में अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ये लोग (जो दोज़ख़ में गुनाहों की वजह से गिर गये) हमारे साथ रोज़े रखते थे और हमारे साथ नमाज़ पढ़ते थे और हज करते थे, (अब भी हमारे साथ उनको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दीजिए) इर्शाद होगा कि तुम जिसे पहचानते हो, निकाल लो !

चुनांचे (वे उनको निकालने के लिए रवाना होंगे और (उन के जिस्म दोज़ख़ की आग पर हराम कर दिए जाएंगे (यानी दोज़ख़ की आग इन निकालने वालों को न जला सकेगी) नतीजा यह होगा कि वे लोग दोज़ख़ से भारी तायदाद में लोगों को निकालेंगे और इन दोज़ख़ियों में से किसी को आग ने आधी पिंडली तक और किसी को घुटने तक पकड़ा होगा।

फिर मोमिन ख़ुदा के दरबार में अर्ज़ करेंगे कि हमारे रब ! आपने जिन लोगों के निकालने के मुताल्लिक़ हुक्म दिया था, उनमें से अब कोई भी दोज़ख़ में बाक़ी नहीं रहा। अल्लाह फ़रमाएगा कि जाओ दोज़ख़ में कोई ऐसा भी मिले कि जिस के दिल में दीनार[1] के बाबर भी भलाई हो, उस को भी निकाल लो। चुनांचे मोमिन अल्लाह के इस इर्शाद के बाद भारी तायदाद में लोगों को निकालेंगे, फिर अर्ज़ करेंगे कि ऐ रब ! दोज़ख़ में हम ने इन में से कोई भी नहीं छोड़ा, जिनके निकालने के बारे में आपने हुक्म फ़रमाया था, इसके बाद अल्लाह का इर्शाद होगा कि जाओ, जिसके दिल में आधे दीनार के बराबर भी भलाई देखो, उसको भी निकाल लो। चुनांचे इर्शाद के बाद मोमिन भारी तायदाद में लोगों को दोज़ख़ से निकालेंगे, फिर अर्ज़ करेंगे कि ऐ रब ! हमने दोज़ख़ में उनमें से कोई भी नहीं छोड़ा, जिनके निकालने के बारे में आपने हुक्म फ़रमाया था। इसके बाद अल्लाह का इर्शाद होगा कि जाओ, जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी भलाई देखो, उसको भी निकाल लो, चुनांचे वे भारी तायदाद में लोगों को निकालेंगे, फिर अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमने दोज़ख़ में (कोई ज़रा) ख़ैर (वाला) नहीं छोड़ा।

अब अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाएंगे कि फ़रिश्तों ने शफ़ाअत कर ली और नबियों ने शफ़ाअत कर ली और ईमान वालों ने शफ़ाअत कर ली,अब बस अर्हमुर्राहिमीन (अल्लाह) ही बाक़ी है। अल्लाह जल्ल शानुहू यह फ़रमा कर दोज़ख़ में से एक मुट्ठी भरेंगे, पस उसमें से ऐसे लोगों को निकाल लेंगे, जिन्होंने कभी कोई भलाई की ही नहीं थी (और ईमान ही की छिपी दौलत उनके पास थी, ये लोग जल कर कोयला हो चुके होंगे। उनको अल्लाह जल्ल शानुहू एक नहर में डाल देंगे जो जन्नत के शुरू हिस्से में होगी जिसको 'नहरुल हयात' (ज़िंदगी की नहर) कहा जाता है। (नहर में पड़ कर उनकी हालत बदल जाएगी) पस ऐसे निकलेंगे जैसे बीच बहते पानी के घास-तिनकों पर (बहुत जल्द उग कर) निकल आता है। (फिर फ़रमाया कि) इस हाल में उस नहर से निकलेंगे

१. दीनार सोने की अशर्फ़ी को कहते हैं जो अरब में होती है।

कि जैसे मोती हैं, उनकी गरदनों की निशानियां होंगी (जिनके ज़रिए दूसरे) जन्नती उनको पहचानेंगे (कि ये अल्लाह के आज़ाद किये हुए हैं जिनको अल्लाह ने जन्नत में बग़ैर किसी (नेक) अमल के और बग़ैर किसी भलाई के, जो उन्होंने आगे भेजी हो, जन्नत में दाख़िल फ़रमाया।

फिर अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएंगे कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ, वहां जो नज़र पड़े, वह तुम्हारे लिए है। वे अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! आपने हम को वह अता फ़रमाया है जो आपने दुनियाओं में से किसी को भी नहीं दिया। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि मेरे पास तुम्हारे लिए इससे भी अफ़्ज़ल नेमत है। वे अर्ज़ करेंगे, या रब्बना, इससे अफ़्ज़ल कौन होगा ? अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाएंगे (कि इससे अफ़्ज़ल) मेरी ख़ुशी है, सो अब मैं तुम पर कभी भी नाराज़ नहीं हूंगा।[1]

यह एक लंबी हदीस है जो अभी ख़त्म हुई। इसमें बताया गया है कि साक़ की तजल्ली के बाद पुल सिरात क़ायम होगी, इससे यह भी समझ में आता है कि नूर की तक़्सीम तजल्ली साक़ और पुल सिरात पार करने के दर्मियान होगी, क्योंकि पुल सिरात पार करने के लिए नूर तक़्सीम किया जाएगा, लेकिन तर्तीब में हमने पूरी हदीस को एक ही जगह एक सिलसिले से रखने के लिए नूर की तक़्सीम को तजल्ली साक़ से पहले बयान कर दिया है।

इस हदीस मुबारक से पुल सिरात और उस पर से गुज़रने वालों का तफ़्सीली हाल मालूम हुआ। दूसरी रिवायतों में और ज़्यादा तफ़्सील आयी है। चुनांचे एक हदीस में है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पैग़म्बरों में से सबसे अव्वल मैं अपनी उम्मत के साथ पुल सिरात से गुज़रूंगा और उस दिन पैग़म्बरों के सिवा कोई बोलता न होगा और पैग़म्बरों का बोलना उस दिन 'अल्लाहुम सल्लिम सल्लिम'[2] होगा।[3] इसी को बार-बार कहेंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि दोज़ख़ पर पुल सिरात रखी जाएगी, जो तेज़ की हुई तलवार की तरह होगी।[4]

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि (पुल सिरात पर) लोगों के आमाल लेकर चलेंगे (जैसे जिसके अमल होंगे, उसी अन्दाज़े से

१. मिश्कात शरीफ़, तर्ग़ीब व तर्हीब (बुख़ारी व मुस्लिम),
२. ऐ अल्लाह ! सलामत रख, सलामत रख,
३. बुख़ारी व मुस्लिम, ४. तर्ग़ीब,

तेज़ और सुस्त रफ़्तार होगा और सुस्त रफ़्तारों की हालत यहां तक पहुंच जाएगी कि कुछ गुज़रने वाले इस हाल में होंगे कि घिसटते हुए चलेंगे।

एक रिवायत में है कि दोज़ख में से जो संडासियां निकली हुई होंगी, उनमें से एक-एक की लम्बाई व चौड़ाई और उनके पकड़ गिराने का यह हाल होगा कि एक ही के ज़रिए क़बीला रबीआ और मुज़र[1] के लोगों से भी ज़्यादा पकड़ कर दोज़ख में डाले जाएंगे।[2]

प्यारे नबी सल्ल० जन्नत खुलवाएंगे

आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन तमाम पैग़म्बरों से ज़्यादा मेरे तरीक़े पर चलने वाले मौजूद होंगे और मैं सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा (खुलवाने के लिए) खटखटाऊंगा।[3] यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैं क़ियामत के दिन जन्नत के दरवाज़े पर आकर खोलने को कहूंगा, जन्नत का दारोग़ा सवाल करेगा कि आप कौन हैं ? मैं जवाब दूंगा कि मुहम्मद हूं ! यह सुनकर वह कहेगा कि मुझे यही हुक्म हुआ है कि आप के लिए खोलूं (और) आपसे पहले किसी के लिए न खोलूं।[4] यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैं सबसे पहले जन्नत के (दरवाज़े के) हल्क़ों को हिलाऊंगा, पस अल्लाह मेरे लिए जन्नत खोलकर मुझे दाख़िल फ़रमा देंगे और मेरे साथ फ़क़ीर मोमिन होंगे और यह मैं फ़ख़्र के साथ नहीं बयान कर रहा हूं (फिर फ़रमाया कि) मैं अल्लाह के नज़दीक तमाम अगलों-पिछलों से ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूं।[5]

जन्नत व दोज़ख में गिरोह-गिरोह जायेंगे

दोज़ख़ियों पर मलामत और जन्नतियों का स्वागत, दोज़ख के दरवाज़े जेल की तरह पहले से बन्द होंगे और जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले होंगे।

तमाम काफ़िरों को धक्के देकर बड़ी ज़िल्लत व ख्वारी के साथ दोज़ख की तरफ़ हांका जाएगा और चूंकि कुफ़्र की क़िस्में और दर्जे बहुत

---

१. अरब के दो क़बीलों के नाम, २. तर्ग़ीब, बैहक़ी,
३. मुस्लिम शरीफ़, ४. मुस्लिम शरीफ़, ५. तिर्मिज़ी शरीफ़,

हैं, इसलिए हर क़िस्म और हर दर्जे के काफ़िरों का गिरोह अलग-अलग कर दिया जाएगा। अल्लाह का इर्शाद है---

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۔

व सीक़ल्लज़ी न क फ़ रू इला जहन्न म ज़ु म रा०

'और जो काफ़िर हैं, वह जहन्नम की तरफ़ गिरोह-गिरोह बनाकर हांके जाएंगे।'

जब वे दोज़ख के दरवाज़ों पर पहुंचेंगे तो दरवाज़े खोलकर उस में दाख़िल कर दिए जाएंगे और दोज़ख के दरवाज़ों पर जो फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे, वह मलामत करने के लिये सवाल करेंगे क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आए थे ?

चुनांचे इर्शाद फ़रमाया है—

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ
مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا
قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ٥ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا
اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ٥

हत्ता इज़ा जाऊ हा फ़ुतिहत अब्वाबुहा व क़ा ल लहुम ख ज़ नतुहा अ लम यातिकुम रुसुलुम मिन्कुम यत्लू न अलैकुम आयाति रब्बिकुम व युन्ज़िरू नकुम लिक़ा अ यौमिकुम हाज़ा क़ालू बला व ला किन हक़्क़त कलिमतुल अज़ाबि अलल काफ़िरी न क़ीलद् ख़ुलू अब्वा ब जहन्न म ख़ालिदीन फ़ीहा फ़ बिअ्‌ स मस्वल मु त कब्बिरीन०

'यहां तक कि दोज़ख के पास पहुंचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उनसे दोज़ख के निगरां कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आये थे, जो तुम को तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाते थे और तुमको आज के दिन पेश आने से डराया करते थे ? दोज़खी जवाब देंगे कि हां (पैग़म्बर आये थे) लेकिन अज़ाब का वायदा काफ़िरों पर पूरा होकर रहा (फिर उनसे) कहा जायेगा कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ (और) उसमें हमेशा के लिये रहो, ग़रज़ यह कि घमंडियों का बुरा ठिकाना होगा।'

जन्नत वालों के बारे में फ़रमाया—

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۭ

व सीक़ल्लज़ी न त्त क़ौ रब्बहुम इलल जन्नति ज़ु म रा०

'और जो लोग अपने रब से डरते थे, गिरोह-गिरोह होकर जन्नत की तरफ़ रवाना किए जाएंगे।'

ईमान व तक़्वा के मर्तबे और दर्जे कम और ज़्यादा हैं। हर दर्जे और मर्तबे के मोमिनों की जमाअत अलग-अलग होगी और उन सब जमाअतों को एज़ाज़ व इक्राम के साथ जन्नत की तरफ़ रवाना किया जायेगा। उनके स्वागत के लिए जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले होंगे और दरवाज़ों पर पहुंचते ही जन्नत के निगरां उनको सलामती और खुश ज़िंदगी गुज़ारते रहने की ख़ुशख़बरी सुनायेंगे। चुनांचे इर्शाद है—

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ

हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत अब्वाबुहा व क़ा ल लहुम ख ज़ न तुहा सलामुन अलैकुम तिब्तुम फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन०

'यहां तक कि जन्नत के पास पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े खुले होंगे और उसके निगरां कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम मज़े में रहे, सो जन्नत में हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ।'

दोज़ख़ियों की आपस में एक दूसरे पर लानत

दोज़ख़ी आपस में यहां बड़ी मुहब्बतें रखते थे और एक दूसरे के उकसाने और फुसलाने पर कुफ़्र व शिर्क के काम किया करते थे, लेकिन जब सब अपने बुरे किरदार (चरित्र) का नतीजा दोज़ख़ में जाने की शक्ल में देखेंगे तो एक दूसरे पर लानत की बौछार करेंगे।

सूरः एराफ़ में इर्शाद है—

كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا حَتّٰىٓ اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا

قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا

ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ

कुल्लमा द ख़ लत उम्मतुल्ल अ न त उख़्त हा हत्ता इज़द्दा र कू फ़ीहा जमीआ क़ालत उख़राहुम लि उलाहुम रब्बना हा उल्लाइ अज़ल्लूना फ़ आतिहिम अज़ाबन ज़िअ़फ़म मिनन्नारि०

'जिस वक़्त भी कोई जमाअत दोज़ख़ में दाख़िल होगी अपनी जैसी दूसरी जमाअत को लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उसमें जमा हो

जाएंगे तो पिछले लोग पहले लोगों के बारे में कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको इन लोगों ने गुमराह किया था, सो इनको दोज़ख़ का अज़ाब दो गुना दीजिए।'

दोज़ख़ियों को अनोखी हैरत

दुनिया में काफ़िर ईमान वालों का मज़ाक़ बनाते थे और उन का ठट्ठा करते थे। जब दोज़ख़ में पहुंचेंगे तो अल्लाह के इन क़रीबी लोगों को अपने साथ न देखकर हैरत में पड़ जाएंगे जैसा कि सूरः साद में फ़रमाया—

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ اَتَّخَذْنٰهُمْ

سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ

व क़ालू मा लनाला नरा रिजालन कुन्ना न अुद्दुहुम मिनल अश्रारि अत्तख़ज़्नाहुम सिख़रीयन अम ज़ाग़त अन्हुमुल अब्सारु०

'और ये दोज़ख़ी कहेंगे कि क्या बात है, वे लोग हमें दिखायी नहीं देते जिन को हम बुरे लोगों में गिना करते थे। क्या हमने उन लोगों की ग़ल्ती से हंसी कर रखी थी या उनके देखने से आंखें चकरा रही हैं।'

यानी जबकि वे लोग यहां नज़र नहीं आते तो उसके बारे में यही कहा जा सकता है कि हम उनको बुरा समझने और शरारत वाला गिनने और उनका मज़ाक़ बनाने में ग़लती पर थे और वे हक़ीक़त में अच्छे लोग थे जो आज यहां नहीं हैं या यह है कि वे हैं यहीं, मगर हमारी आंखें चूक गयी हैं, वे लोग देखने में नहीं आ रहे हैं।

अपने मानने वालों के सामने शैतान का सफाई पेश करना

दुनिया में शैतान ने अपने गिरोह के साथ इन्सानों को खूब बहकाया और हक़ के रास्ते से हटा कर कुफ़्र व शिर्क में फांसा, मगर क़ियामत के दिन इन्सानों को ही इल्ज़ाम देगा कि तुम ने मेरी बात क्यों मानी, मेरा तुम पर क्या ज़ोर था, चुनांचे अल्लाह का इर्शाद है—

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ

فَاَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ

فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ اِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (سورۂ ابراہیم)

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल अम्रु अल्लाह व अ द कुम व अदल हक़्क़ि व व अत्तुकुम फ़अख़्लफ़्तुकुम व मा का न लि य अलैकुम मिनसुल्तानिन इल्ला अन् दअौतुकुम फ़स्तजब्तुम ली फ़ ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ुसकुम मा अना बिमुस्रिख़िकुम वमा अन्तुम बिमुस्रिख़ीय इन्नी कफ़र्तु बिमा अश्रक्तुमूनि मिन क़ब्लु इन्नज़्ज़ालिमी न लहुम अज़ाबुन अलीम०

—सूरःइब्राहम

'और जब फ़ैसले हो चुकेंगे, शैतान कहेगा कि (मुझे बुरा कहना ना-हक़ है) क्योंकि बिला शुब्हा अल्लाह ने तुमसे सच्चे वायदे किये थे, और मैं ने (भी) तुमसे वायदे किये थे, सो मैं ने वे वायदे ख़िलाफ़ किये थे और तुम पर मेरा कुछ ज़ोर इससे ज़्यादा तो चलता न था कि मैं ने तुमको दावत दी, सो तुम ने (ख़ुद ही) मेरा कहना मान लिया, सो तुम मुझ पर मलामत न करो और अपने को मलामत करो, न मैं तुम्हारा मददगार हूं न तुम मेरे। मैं तुम्हारे इस फ़ेल (काम) से ख़ुद बेज़ार हूं कि तुम ने इससे पहले (दुनिया में) मुझे ख़ुदा का शरीक क़रार दिया। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।'

शैतान के कहने का मतलब यह है कि मैं ने तुम को बहकाया, सच्चे रास्ते से हटाने की कोशिश की। यह तो मेरा काम था, तुम ने मेरी बात क्यों न मानी ? तुम ख़ुद मुजिरम हो ? पैग़म्बरों की दावत छोड़ कर जो मोजज़ा, हुज्जत और दलील के ज़रिए होती थी, मेरे झूठे और बातिल बुलावे पर तुम ने क्यों कान धरा, कोई ज़बरदस्ती हाथ पकड़ के तो मैं ने तुमसे कुफ़्र व शिर्क के काम कराये नहीं, मुझे बुरा कहने से क्या बनेगा ख़ुद, अपने नफ़्सों को मलामत करो, हम आपस में एक दूसरे की मदद नहीं कर सकते, अब तो अज़ाब चखना ही है, दुनिया में जो तुमने मुझे ख़ुदा का शरीक बनाया, मैं उससे बेज़ारी ज़ाहिर करता हूं।

शैतान के कहने पर चलने वाले की हसरत व अफ़सोस का जो उस वक़्त हाल होगा, ज़ाहिर है 'अ आज़ नल्लाहु मिन तस्वीलिही व शर्रिहि०

जन्नत में सब से पहले उम्मते मुहम्मदिया दाखिल होगी और सबसे ज्यादा होगी

मुस्लिम शरीफ़ में है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हम दुनिया में आख़िर में आये और क़ियामत के दिन दूसरी मख़्लूक़ से पहले हमारे फ़ैसले होंगे और यह भी फ़रमाया कि हम (यहां) आख़िर में आये (और) क़ियामत के दिन पहले होंगे और सबसे पहले जन्नत में हम दाखिल होंगे'।

एक रिवायत में है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जन्नतियों की १२० सफ़े होंगी (यानी क़ियामत के मैदान में) जिनमें ८० इस उम्मत की और ४० सब उम्मतों को मिला कर होंगी।[२]

मालदार हिसाब की वजह से जन्नत में जाने से अटके रहेंगे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि तंगदस्त लोग जन्नत में मालदारों से पांच सौ वर्ष पहले दाखिल होंगे'। और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैंने जन्नत के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा तो उस में जो दाखिल हो चुके थे ज़्यादा तर मिस्कीन लोग थे और माल वाले (हिसाब देने के लिए) अटके हुए थे। मगर दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में पहुंचाने का हुक्म हो चुका था और मैं ने दोज़ख़ के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा, तो उसमें अक्सर औरतें थीं[४]।

इस मुबारक हदीस में आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने क़ियामत के दिन का एक मंज़र बयान फ़रमाया है जो आपको दिखा दिया गया था। इस हदीस पाक से जहां यह मालूम हुआ कि मालदारों को जन्नत में जाने में देर लगेगी, वहां यह भी मालूम हुआ कि तंगदस्ती और तंगी वाले पांच सौ वर्ष मालदारों से पहले जन्नत में जाएंगे। उस दिन तंगी की क़ीमत मालूम होगी, मगर यह भी नहीं भूलना चाहिए कि तंगदस्ती ख़ुद से जन्नत में ले जाने वाली चीज़ नहीं है। इसके साथ नेक अमल भी होने चाहिएं। बद-अमल तंगदस्त यह न समझें कि हम ज़रूर ही जन्नती हैं और हमारी बड़ी बड़ाई है। बड़ाई आख़िरत में नेक आमाल से होगी। हां, जिसके नेक अमल जन्नत लायक़ होंगे, वह तंगदस्ती की वजह से मालदार से पहले जन्नत में चला जाएगा, बहुत से लोग तंगदस्त भी हैं और बद-अमल भी, नमाज़-रोज़े से ग़ाफ़िल हैं, गुनाहों में लिथड़े

१. मिश्कात शरीफ़, बाबुल उमुम्रति, २. मिश्कात शरीफ़,
३. तिर्मिज़ी शरीफ़, ४. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़,

हुए हैं, ऐसे लोग सख्त नुक़सान में हैं और दोनों जगह की बद-नसीबी के लिए दुनिया गुज़ार रहे हैं। आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि बदनसीबों का बद-नसीब वह है जो तंगदस्त भी रहा और आख़िरत का अज़ाब भी भुगता।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (लोग) क़ियामत के दिन जमा होंगे, इसके बाद पुकार होगी कि इस उम्मत के तंगदस्त कहां हैं? फिर उन से सवाल होगा कि तुम ने क्या किया? (हिसाब दो) वे अर्ज़ करेंगे कि आप ने हमको तंगदस्ती देकर जांच में डाला, सो हम ने सब्र किया (और आप की ख़ुशी पर ख़ुश रहे) और आपने माल और हुकूमत हमारे सिवा दूसरों को दे दिया। अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाएंगे कि तुम ने सच कहा, इसके बाद (और लोगों से पहले) जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे, हिसाब की सख्ती मालदारों और हुकूमत वालों पर रहेगी। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मोमिन उस दिन कहां होंगे? नबी सल्ल० का इर्शाद हुआ कि उनके लिए नूर की कुर्सियां रख दी जाएंगी और उन पर बादलों का साया कर दिया जाएगा, (पहाड़ों से भी बड़ा) दिन ईमान वालों के लिए दिन के एक छोटे-से हिस्से से भी कम होगा।[2]

दोजख में अक्सर औरतें और मालदार जाएंगे

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं ने जन्नत में झांका तो देखा, उसमें अक्सर तंगदस्त हैं और मैंने दोज़ख़ में झांका तो देखा कि उसमें अक्सर माल वाले और औरतें हैं।[1]

एक रिवायत में है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो ऊंचे मर्तबे वाले जन्नती, तंगदस्त मुहाजिर और मोमिनों के नाबालिग़ बच्चे थे और जन्नत में सबसे कम मालदारों और औरतों की तायदाद थी। उस वक़्त मुझे बताया गया कि मालदारों का हिसाब दरवाज़े पर हो रहा है और उन को पाक व साफ़ किया जा रहा है और औरतों को (दुनिया में) सोने और रेशम ने (ख़ुदा और ख़ुदा के दीन से) ग़ाफ़िल रखा, इसलिए

१. तर्ग़ीब, २. तर्ग़ीब अनित्तबरानी वब्नि हब्बान, ३. तर्ग़ीब,

यहां उनकी तायदाद कम है।[1]

माल बड़े बबाल की चीज है, उसको ध्यान करके हलाल के ज़रिए कमाया और फिर उसमें से अल्लाह के और अल्लाह के बंदों के हुक़ूक़ अदा करना और गुनाहों में न खर्च करना बड़ा कठिन काम है। इसमें अक्सर लोग फ़ेल हो जाते हैं और माल होने पर अपनी ख़्वाहिश या औलाद व बीवी की फ़रमाइश पर या दुनिया की रस्म व रिवाज से दब कर गुनाह के कामों में रुपए को लगाते हैं, ज़कात सही हिसाब कर के अक्सर मालदार नहीं देते, हज़ारों लोग, जिन पर हज फ़र्ज़ हो चुका था, बग़ैर हज किए मर-जाते हैं और मालदारों के लिए गुनाहों के मौक़े बहुत हैं, जिनमें माल लुटाते और लगाते हैं। दोज़ख़ में मालदार ज़्यादा हों और हिसाब की वजह से अटके रहें, इसमें कोई ताज्जुब की जगह नहीं।

दोज़ख़ में औरतों की तायदाद भी बहुत भारी होगी, उनके दोज़ख़ में जाने की वजह अभी अभी हदीस शरीफ़ से यह मालूम हुई कि दुनिया में रेशम और सोने के फेर में रह कर अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल रहे औरतों में कपड़े और ज़ेवर का लालच जो होता है, इस को कौन नहीं जानता? कपड़े और ज़ेवर के लिए शौहर को हराम कमाने, रिश्वत लेने, क़र्ज़-उधार करने पर मजबूर करती हैं और दिखावे के लिए पहनती हैं। एक महफ़िल में एक जोड़ा पहन कर गयी थीं, तो अब दूसरी महफ़िल में उसी जोड़े को पहन कर जाने में शर्म समझती हैं। ज़ेवर पहन कर कहीं गर्मी के बहाने गला खोल कर दिखाती हैं, कहीं ज़ेवर की डिज़ाइनों पर बहस चला कर अपने ज़ेवर के अनोखा होने की बड़ाई हांकती हैं। दिखावा बहुत बड़ा गुनाह है। इर्शाद फ़रमाया नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, जो भी औरत दिखावे के लिए सोने का ज़ेवर पहनेगी, अज़ाब पाएगी।[2]

जो ज़ेवर हराम कमाई का है, उस का अज़ाब की वजह होना ज़ाहिर है लेकिन जो हलाल कमाई से बनता है, उसकी ज़कात न औरतें अदा करती हैं, न उनके शौहर अदा करते हैं। जिस माल की ज़कात न दी जाएगी, वह आख़िरत में बबाल और अज़ाब बनेगा।

बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि औरतों ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! औरतें दोज़ख़ में ज़्यादा जाने वाली क्यों होंगी। इर्शाद फ़रमाया, (इसलिए कि) तुम लानत (फिटकार) भेजने का मश्ग़ला (काम) बहुत रखती हो और शौहर की ना-शुक्री करती हो।[3]

१. तर्ग़ीब, २. मिश्कात शरीफ़, ३. मिश्कात

जन्नतियों को दोज़ख और दोज़ख़ियों को जन्नत दिखायी जाएगी

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत में जो कोई दाख़िल होगा, उस का दोज़ख़ में मुक़र्रर किया हुआ वह ठिकाना ज़रूर उसको दिखला दिया जाएगा, जो बुरे अमल करने पर उस को मिलता, ताकि ज़्यादा शुक्र अदा करे और जो कोई दोज़ख़ में दाख़िल होगा, उसका जन्नत में मुक़र्रर किया हुआ वह ठिकाना ज़रूर उसको दिखला दिया जाएगा जो अच्छे अमल करने पर मिलता, ताकि उसको ज़्यादा हसरत हो।

जन्नत और और दोजख दोनों भर दी जाएगी

सूरः क़ाफ़ में फ़रमाया—

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَئْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ‎-

यौ म नक़ूलु लिजहन्न म हलिम्तलअ्ति व तक़ूलु हल मिम मज़ीद०

'जिस दिन कि हम दोज़ख़ से कहेंगे कि क्या तू भर गयी, वह कहेगी, क्या कुछ और भी है ?'

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख़ में दोज़ख़ी डाले जाते रहेंगे और वह कहती रहेगी कि क्या और भी है ? यहां तक कि अल्लाह उसमें अपना क़दम रख देंगे जिसकी वजह से[1] सिमट जाएगी और कहेगी आपकी इज़्ज़त और करम की क़सम, बस ! बस !! और जन्नत में भी फ़ाज़िल जगह बाक़ी ही रहती जाएगी, यहां तक कि अल्लाह तआला नयी मख़्लूक़ पैदा फ़रमा कर उसी फ़ाज़िल जगह में बसा देंगे।[2]

दूसरी हदीस में है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने जन्नत व दोज़ख़ दोनों को भर देने का ज़िम्मा लिया है[3]। दोज़ख़ ख़ाली रह जाएगी तो नयी

१. अल्लाह तआला हाथ या क़दम तमाम अंग और देहत्त्व से पाक हैं। क़ुरआन व हदीस में जहां ऐसा ज़िक्र आए, उसके मुताल्लिक़ यही अक़ीदा रखें कि इसका जो मतलब अल्लाह के नज़दीक है, वही हमारे नज़दीक है।

२. बुख़ारी व मुस्लिम, ३. मिश्कात शरीफ़,

मख़्लूक़ पैदा फ़रमा कर उसे भरेंगे नहीं, क्योंकि वे बे-क़सूर[1] होंगे और जन्नत में जो जगह बच जाएगी, उसको नयी मख़्लूक़ पैदा फ़रमा कर भर देंगे। हमारे एक बुज़ुर्ग से किसी ने कहा कि वही मज़े में रहे जो पैदा होते ही जन्नत में होंगे। उन्होंने फ़रमाया कि उनको क्या ख़ाक मज़ा आएगा, न दुनिया में आये, न दुख-दर्द सहने की मुसीबत पड़ी, आराम का मज़ा उसी को ख़ूब महसूस होता है जिसे दुख के बाद नसीब हुआ हो।

दोज़ख़ में जाने वालों का अन्दाज़ा

हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हज़रत आदम को ख़िताब करके फ़रमाएंगे, 'ऐ आदम !' वह अर्ज़ करेंगे—

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِيْ يَدَيْكَ

लब्बैक व सअदैक वल ख़ैरु कुल्लुहू फ़ी यदैक०

'मैं हाज़िर हूं और हुक्म का ताबेअ़ हूं और सारी बेहतरी आप ही के हाथ में है।'

अल्ला॰ जल्लशानुहू फ़रमाएंगे, (अपनी औलाद में से) दोज़ख़ी निकाल दो। वह अर्ज़ करेंगे, दोज़ख़ी कितने हैं ? इर्शाद होगा हर हज़ार में ९९९ हैं। (यह सुन कर आदम की औलाद को सख़्त परेशानी होगी और रंज व ग़म की वजह से) उस वक़्त बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और हामिला औरतों का हमल गिर जाएगा और लोग होश खो बैठेंगे, जबकि हक़ीक़त में बेहोश न होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख़्त होगा (जिसकी वजह से होश खो बैठेंगे) यह सुनकर हज़रात सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! वह एक जन्नती हममें से कौन-कौन होगा ? आप ने फ़रमाया कि (घबराओ नहीं) ख़ुश हो जाओ, क्योंकि यह तायदाद इस तरह है कि एक तुम में से है और हज़ार याजूज माजूज हैं।[2]

मतलब यह है कि याजूज-माजूज की तायदाद बहुत ही ज़्यादा है कि अगर तुम में और उन में मुक़ाबला हो तो तुम में से एक शख़्स के मुक़ाबले में याजूज-माजूज एक हज़ार आएंगे और चूंकि वे भी आदम की नस्ल से हैं, उनको मिला कर हर हज़ार में ९९९ दोज़ख़ में जाएंगे। वे ज़मीन में बिगाड़ पैदा करने वाले और ख़ुदा का इन्कार करने वाले हैं।

१. मिश्कात, २. मिश्कात,

क़ियामत के दिन की लंबाई

क़ियामत का दिन बहुत लंबा होगा। हदीस शरीफ़ में इस की लंबाई ५०,००० वर्ष बतायी गयी है।[1] यानी पहली बार सूर फूंकने के के वक़्त से लेकर बहिश्तयों के बहिश्त में जाने और दोज़खियो के दोज़ख में क़रार पकड़ने तक पचास हज़ार वर्ष की मुद्दत होगी। इतना बड़ा दिन मुश्रिकों, काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के लिए बड़ा सख्त होगा। ईमान वाले बंदों के लिए अल्लाह तआला आसानी फ़रमा देंगे। चुनांचे हदीस शरीफ़ में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से उस दिन के बारे में सवाल किया गया जिस की लंबाई पचास हज़ार वर्ष की होगी कि उस दिन की लंबाई का क्या ठिकाना है (भला वह कैसे कटेगा ?)

आप ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, बिला शुबहा वह दिन मोमिन पर इतना आसान कर दिया जाएगा कि फ़र्ज़ नमाज़ जो दुनिया में पढ़ा करता था, उससे भी हल्का होगा।[2] खट से गुज़र भी जाएगा और हौल व मुसीबत होने की वजह से परेशानी भी न होगी।

मौत की मौत

दोज़ख में हमेशा के लिए काफ़िर और मुश्रिक मुनाफ़िक़ ही रहेंगे और उनको उसमें कभी मौत न आयेगी, न अज़ाब हल्का किया जाएगा, जैसा कि सूरः फ़ातिर में इर्शाद है—

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا كَذٰلِكَ نَجْزِىْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۚ

वल्लज़ी न क फ़रू लहुम नारु जहन्नम ला युक़्ज़ा अलैहिम फ़ यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुम मिन अज़ाबिहा कज़ालि क नज्ज़ी कुल्ल कफ़ूर०

'और जो लोग काफ़िर हैं, उन के लिए दोज़ख की आग है, न तो उनको क़ज़ा आयेगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख का अज़ाब ही उन से हल्का किया जाएगा, हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं'।'

गुनाहगार मुसलमान जो दोज़ख में जाएंगे, सज़ा भुगतने के बाद

१. देखो मिश्कात शरीफ़ 'किताबुज्ज़कात' पृ० १५६ और पृ० १५७,
२. मिश्कात शरीफ़,

जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे, जो जन्नत में दाख़िल होगा, उस में हमेशा रहेगा, जन्नत में किसी को मौत न आएगी, न उस से निकाले जाएंगे, न निकलना चाहेंगे।

خَالِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۚ

ख़ालिदी न फ़ीहा ला यब्गू न अन्हा हि व ला०

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब (सारे) जन्नती जन्नत में और (सारे) दोज़खी दोज़ख में पहुंच चुकेंगे तो मौत हाज़िर की जाएगी, यहां तक कि जन्नत और दोज़ख के दर्मियान लाने के बाद ज़िब्ह कर दी जाएगी, फिर एक पुकारने वाला ज़ोर से पुकार देगा कि ऐ जन्नतियो ! (अब) मौत नहीं और ऐ दोज़खियो ! (अब) मौत नहीं ! इस एलान की वजह से जन्नतियों की खुशी में खुशी बढ़ जाएगी और दोज़खियों के रंज पर रंज की बढ़ोत्तरी हो जाएगी।[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने (सूरः मरयम की आयत) 'व अन्ज़िरहुम यौमल हसरति'[2] पढ़ी (और इसके बाद हसरत की तफ़्सीर में) फ़रमाया कि मौत (जिस्म व शक्ल देकर) लायी जाएगी गोया कि वह शक्ल व सूरत में सफ़ेद मेंढा होगी जिसमें काले धब्बे भी होंगे और वह जन्नत और दोज़ख के दर्मियान वाली दीवार पर खड़ी की जाएगी, फिर जन्नत वालों को आवाज़ दी जाएगी कि ऐ जन्नत वालो ! यह सुन कर वे नज़र उठाकर देखेंगे और आवाज़ दी जाएगी कि ऐ दोज़ख वालो ! यह सुनकर वे (भी) नज़र उठाकर देखेंगे। इसके बाद उन (तमाम जन्नतियों और दोज़खियों) से सवाल होगा कि क्या तुम इसको पहचानते हो ? वे सब जवाब देंगे कि हां (पहचानते हैं) यह मौत है। इसके बाद (इन सब के सामने यह सलाम करने के लिए कि अब मौत न आएगी) मौत को लिटाकर ज़िब्ह कर दिया जाएगा (उस वक़्त जन्नत वालों की खुशी और दोज़ख वालों का रंज बहुत ज़्यादा होगा) पस अगर जन्नत वालों के लिए हमेशा ज़िन्दा और बाक़ी रहने का फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से न हो चुका होता, तो उस वक़्त की खुशी में मर जाते और अगर दोज़ख वालों के लिए हमेशा के लिए मौत न आने

१. मिश्कात शरीफ़ (बुख़ारी व मुस्लिम से)
२. और डरा उनको हसरत के दिन से,

और दोज़ख़ में हमेशा पड़े ही रहने का फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से न हो चुका होता, तो उस वक़्त के रंज से मर जाते।[1]

आराफ़ वाले

जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों के दर्मियान एक आड़ यानी एक दीवार होगी। इस दीवार का या इस दीवार के ऊपरी हिस्से का नाम आराफ़ है। आराफ़ पर थोड़ी सी मुद्दत के लिए उन मुसलमानों को रखा जाएगा, जिनकी नेकियां और बुराइयां वज़न में बराबर उतरेंगी। आराफ़ के ऊपर से ये लोग जन्नती और दोज़ख़ी दोनों को देखते और पहचानते होंगे और दोनों फ़रीक़ से बात-चीत करेंगे, जिसकी तफ़्सील सूरः आराफ़ में आयी है, चुनांचे अल्लाह का इर्शाद है—

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمَاهُمْ
وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ
يَطْمَعُوْنَ ۝

व बै न हुमा हिजाबुं व्व अलल आराफ़ि रिजालुं य्यअ् रफ़ू न कुल्लन बिसीमाहुम व नादौ अस्हाबल जन्नति अन् सलामुन अलैकुम लम् यद्ख़ुलूहा व हुम यत्मअू न०

'और इन दोनों (फ़रीक़) जन्नतियों और दोज़ख़ियों के दर्मियान एक आड़ (यानी दीवार) होगी और उस दीवार या उसके ऊपरी हिस्से का नाम आराफ़ है। उस पर से जन्नती और दोज़ख़ी सब नज़र आएंगे। आराफ़ के ऊपर बहुत से आदमी होंगे वे (जन्नतियों और दोज़ख़ियों में से) हर एक को उनकी निशानी से पहचानते होंगे और ये (आराफ़ वाले) जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि 'अस्सलामु अलैकुम'। अभी ये आराफ़ वाले जन्नत में दाख़िल न हुए होंगे और उसके उम्मीदवार होंगे।'[2]

आगे फ़रमाया—

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۔

१. तिर्मिज़ी शरीफ़, २. बाद में उनकी उम्मीद पूरी कर दी जाएगी।

व इज़ा सुरिफ़त अब्सारुहुम तिल्क़ा अ अस्हाबिन्नारि क़ालू रब्बना ला तज्अल्ना मअल क़ौमिज़्ज़ालिमीन०

'और जब इन (आराफ़) वालों की निगाहें दोज़ख़ वालों की तरफ़ जा पड़ेंगी, तो उस वक़्त (हौल खा कर) कहेंगे कि ऐ हमारे रब ! हम को इन ज़ालिम लोगों के साथ अज़ाब में शामिल न कीजिए।'

फिर आराफ़ वालों का दोज़ख़ वालों को मलामत करने का ज़िक्र फ़रमाया—

وَنَادٰى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى
عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ
اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝

व नादा अस्हाबुल आराफ़ि रिजालंय्यअ् रिफ़ू न हुम बिसीमाहुम क़ालू मा अग़्ना अन्कुम जम्अुकुम व मा कुन्तुम तस्तक्बिरून अ हाउला-इल्लज़ी न अक़्सम्तुम ला यनालुहुमुल्लाहु बिरह्मतिन उद्ख़ुलुल् जन्न त ला ख़ौफ़ुन अलैकुम व ला अन्तुम तह्ज़नून०

'और आराफ़ वाले (दोज़ख़ियों में से) बहुत से आदमियों को जिनको कि वे उनकी निशानियों से पुकारेंगे और कहेंगे कि तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम न आया। (अब देखो) क्या ये (जो जन्नत में मज़े उड़ा रहे हैं) वही (मुसलमान) हैं जिनके बारे में तुम क़समें खा कर कहा करते थे कि इन पर अल्लाह (अपनी) रहमत न करेगा। (हालांकि इन पर रहमत यह हुई कि) इनसे कह दिया गया कि जाओ जन्नत में, तुम पर न कुछ डर है, न तुम रंजीदा होगे।'[1]

आराफ़ वाले आख़िर में जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।[2]

जन्नत और दोज़ख़ दो ही जगहें आमाल के बदले के लिए अल्लाह तआला ने मुक़र्रर फ़रमाए हैं। जन्नत में जाना सच्ची कामियाबी है और दोज़ख़ में जाना असली घाटा और सच्चा नुक़्सान है, जिससे बड़ा कोई नुक़्सान नहीं। इस दुनिया में लोग कामियाबी और बा-मुरादी की कोशिश करते हैं और तरह-तरह की मुसीबतों को अलग-अलग इरादों में कामियाब होने के लिए ख़ुशी-ख़ुशी बरदाश्त करते हैं। अल्लाह तआला ने अपने रसूलों और किताबों के ज़रिए हश्र व नश्र और हिसाब व

१. बयानुल क़ुरआन, २. बयानुल क़ुरआन,

क़िसास, मीज़ान, पुलसिरात, जन्नत-दोज़ख़ के हालात से और सच्चे नफ़ा-नुक़सान और वाक़ई कामियाबी से ख़बरदार फ़रमा दिया है और नेक आमाल के अच्छे बदले से कभी तफ़्सील से, कभी बे-तफ़्सील और इसी तरह बुरे अमल के बुरे बदले से कभी तफ़्सील से, कभी बे-तफ़्सील बताकर भले कामों के करने पर उभारा और उसकी ताकीद फ़रमा दी है, दुनिया में जो आता है, ज़रूर मेहनत व कोशिश और अमल करता है, भले-बुरे सभी दौड़-धूप करते और जान व माल और वक़्त ख़र्च करते हैं। उससे ज़्यादा बद-क़िस्मत कोई नहीं है, जिसने ज़िंदगी की बेहतरीन पूंजी और जान व माल के सरमाए को दोज़ख़ के कामों में ख़र्च करके बे-इंतिहा टोटा-घाटा ख़रीदा और अपनी जान को आख़िरत के अज़ाब में डाला, मरना तो सब ही को है, मगर बेहतर मरने वाले वे हैं जो जन्नत के लिये जीते और मरते है। यही बन्दे कामियाब और बा-मुराद हैं।

सूरः आले इम्रान में फ़रमाया—

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ
إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ط

कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौति व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ न उजू र कुम यौमल क़ियामति फ़ मन ज़ुह्ज़ि ह अनिन्नारि व उद्ख़िलल जन्न त फ़ क़द फ़ा ज़ व मल हयातुद्दुन्या इल्ला मताअुल ग़ुरूरि०

'हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुमको पूरे बदले क़ियामत ही के दिन मिलेंगे, सो जो आदमी दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया, पस वह कामियाब हुआ और दुनिया की ज़िंदगी धोखे के सौदे के सिवा कुछ भी नहीं है।'

अल्लाह तआला ने जब हज़रत आदम व हज़रत हौवा अलै० को ज़मीन में भेजा था, तो फ़रमा दिया था कि जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, सो वह गुमराह न होगा, न बद-क़िस्मत होगा और यह फ़रमा दिया था कि जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा तो ऐसों पर न कुछ डर होगा, न ऐसे लोग दुखी होंगे और जो कुफ़्र करेंगे और झुठलाएंगे हमारे हुक्मों को, ये दोज़ख़ वाले होंगे, उसमें हमेशा रहेंगे। सूरः ताहा और सूरः बक़रः में यह एलान मौजूद है। जिसने दुनिया में इस एलान पर कान धरा और अल्लाह की हिदायत को माना, बे-शुब्हा न यहां राह से भटका हुआ है, न आख़िरत में ना-मुराद और बद-क़िस्मत होगा और जिसने अल्लाह

की हिदायत को पीठ पीछे डाला, उसने हुक्मों को झुठलाया, दोज़ख़ में जा कर अपने किरदार (चरित्र) का बदला पाएगा।

أَدْخَلَنَا اللّٰهُ الْجَنَّةَ دَارَ النَّعِيْمِ وَأَعَاذَنَا مِنْ عَذَابِ الْجَحِيْمِ إِنَّهٗ
هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ط سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

अदख़ ल नल्लाहुल जन्न त दारन्न ओमि व अआ ज़ ना मिन अज़ाबिल जहीमि इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम० सुब्हा न रब्बि क रब्बिल अिज़्ज़ति अम्मा यसिफ़ू न व सलामुन अलल मुर्सली न वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ ल मीन०

मुकम्मल तारीख़े इस्लाम

आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लेकर उस्मानी खलीफ़ा सुलतान सलीम तक के मुकम्मल हालात

तस्नीफ़
अकबर शाह नजीबाबादी

तल्ख़ीस
कौसर यज़दानी नदवी एम.ए

سَابِقُوٓا۟ إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ

साबिक़ू इला मग़्फ़िरतिम मिर्रब्बिकुम व जन्नतिन अर्ज़ुहा क अर्ज़िस्समाइ वल अर्ज़ि०

मरने के बाद क्या होगा? (४)

ख़ुदा की जन्नत

जिसमें क़ुरआन मजीद और हदीसों की रोशनी में जन्नत और जन्नतियों के तफ़्सीली हालात जमा किए गये हैं

लेखक :
मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्द शहरी

अनुवादक :
कौसर यज़दानी नदवी एम. ए.

प्रकाशक :
फ़ानी बुक डिपो
425/3, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फ़ोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272836 (घर) 25702399

विषय-सूची

क्या?	कहां?
१. जन्नत किस चीज़ से बनी है ?	२५१
२. जन्नत का फैलाव	२५१
३. जन्नत के दरवाज़े	२५२
४. जन्नत में दाखिल होने वाले लोगों की दो जमाअतें	२५५
५. दाखिले के बाद मुबारकबादी	२५६
६. जन्नतियों के शुक्रिए के लफ़्ज़	२६०
७. जन्नतियों का पहला नाश्ता	२६१
८. जन्नितयों का जिस्म और खूबसूरती	२६३
९. जन्नतियों की तन्दुरुस्ती और जवानी	२६५
१०. जन्नतियों की उम्रें	२६६
११. जन्नतियों के बाग़ और पेड़	२६६
१२. जन्नत के फल और मेवे	२७०
१३. जन्नत में खेती	२७५
१४. जन्नत की नहरें	२७५
१५. नहरे कौसर	२७७
१६. जन्नत के चश्मे	२७८
१७. जन्नत में पीने की चीज़ें	२७९
१८. जन्नत के परिन्दे	२८२
१९. जन्नती पूरी इज़्ज़त से खाएं-पिएंगे	२८२
२०. जन्नतियों के बर्तन	२८४
२१. जन्नत की शराब से नशा न होगा	२८५
२२. जन्नतियों की सवारियां	२८७
२३. जन्नतियों की आपस में मुहब्बत	२८७
२४. जन्नतियों की दिल्लगी	२८९
२५. जन्नतियों का कपड़ा-गहना	२८९
२६. जन्नतियों के ताज	२९२
२७. जन्नतियों के बिछौने	२९३
२८. जन्नतियों के तख्त	२९४
२९. विल्दान और ग़िल्मान	२९६
३०. जन्नत में पाकीज़ा बीवियां	२९८
३१. जन्नती बीवियों की खूबसूरती और दूसरी बातें	२९९

क्या?	कहां?
३२. हूरे ईन	३०२
३३. जन्नत में हूरों का तराना	३०५
३४. मर्दों के लिए बहुत सी बीवियां	३०५
३५. मर्दाना क़ूवत	३०६
३६. जन्नत का बाज़ार	३०८
३७. जन्नत की सबसे बड़ी नेमत	३११
३८. गुनाहगार मुसलमानों का दोज़ख से निकलना	३१३
३९. जन्नत में सबसे आखिर में जाने वाला	३१६
४०. जन्नत में हमेशा रहेंगे	३२१
४१. जन्नत में वह सब कुछ होगा, जिसकी चाह होगी	३२३
४२. जन्नती न जन्नत से निकाले जायेंगे	३२३
४३. अल्लाह की तरफ़ से रज़ामन्दी का एलान	३२४
४४. जन्नत के दर्जे	३२५
४५. जन्नत के बालाखाने	३२७
४६. जन्नत के खेमे और कुब्बे	३२८
४७. जन्नत का मौसम	३२९
४८ जन्नत में आराम ही आराम है	३३१
४९. जन्नतियों की मज्लिसें	३३२
५०. तहीयतुहुम फ़ीहा सलाम	३३४
५१. जन्नत की नेमतों को दुनिया में नहीं समझा जा सकता	३३५
५२. जन्नत की खुश्बू	३३७
५३. क्या कोई जन्नत के लिए तैयारी करने वाला है ?	३३७

ख़ुदा की जन्नत

जन्नत किस चीज़ से बनी है?

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैं ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के (रसूल)! जन्नत किस चीज़ से बनी है? इसके जवाब में आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक ईंट सोने की है और एक ईंट चांदी की है और उस का मसाला (जिस से ईंटें जोड़ी गयी हैं) तेज़ ख़ुश्बूदार मुश्क है, उसकी कंकारियां मोती और याक़ूत हैं और उस की मिट्टी ज़ाफ़रान है। जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा, हमेशा नेमत में रहेगा और (कभी किसी चीज़ का) मुहताज न होगा, हमेशा (ज़िंदा) रहेगा, और मौत न आएगी, न जन्नतियों के कपड़े बोसीदा (फटे-पुराने) होंगे, न उन की जवानी ख़त्म होगी।'[1]

जन्नत का फैलाव

सूरः हदीद में इर्शाद है—

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ
اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

साबिक़ू इला मग़फ़िरतिम मिर्रब्बिकुम व जन्नतिन अर्ज़ुहा व अर्ज़िस्समाइ वल अर्ज़ि उअिद्दत लिल्लज़ी न आ म नू बिल्लाहि व रुसुलिही॰

'अपने परवरदिगार की मग़फ़िरत की तरफ़ और जन्नत की तरफ़ दौड़ो जिसका फैलाव आसमान व ज़मीन के फैलाव के बराबर है, उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं।'

जन्नत बहुत बड़ी जगह है, इस के फैलाव का अन्दाज़ा छोटे दर्जे के

---

१. अहमद व तिर्मिज़ी शरीफ़.

जन्नती को जो कुछ मिलेगा, उसके फैलाव के सामने रख कर लगाया जा सकता है। कुछ रिवायतों में है कि छोटे दर्जे के जन्नती को जो जगह मिलेगी, पूरी दुनिया और दुनिया जैसी दस गुनी जगह के बराबर होगी। यह सब सामने के लोगों के समझाने के लिए हैं।

सूरः हदीद में है, आम इंसानों के ज़ेहन और समझ के क़रीब लाने के लिए जन्नत के फैलाव को आसमान व ज़मीन के फैलाव के बराबर बताया गया है और सूरः आले इम्रान में 'अर्ज़ुहुस्समावातु वल अर्ज़ु', फ़रमाया है, जिसमें समाअ (एक आसमान की जमा इस्तेमाल की गयी है (यानी जन्नत का फैलाव तमाम आसमानों और ज़मीन के बराबर है)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं, सारी दुनियाएं अगर उनमें से एक में जमा हो जाएं तो सब समा जाएं।[2]

जन्नत के दरवाज़े

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से जो भी कोई मुसलमान वुज़ू करे और अच्छी तरह पानी पहुंचावे (और) फिर (वुज़ू के बाद) यों कहे—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्हदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी क लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, जिससे चाहे दाखिल हो जाए।[3]

इस हदीस से जन्नत के आठ दरवाज़े मालूम हुए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि

१. इसकी और ज्यादा तश्रीह और इसके बारे में सवाल व जवाब कम दर्जे के जन्नती के ज़िक्र में देखें,

२. तिर्मिज़ी शरीफ़, ३. मुस्लिम शरीफ़,

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने अल्लाह के रास्ते में (यानी अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए) एक क़िस्म की दो चीज़ें (जैसे दो दिरहम, दो दीनार, दो रुपये, दो कपड़े) ख़र्च किए, तो जन्नत में उसको बुलाया जाएगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे ! यह बेहतर है। जो शख़्स नमाज़ वाला[1] था, उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स जिहाद वाला था, वह जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स सद्क़ा वाला था, उसे सद्क़े के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स रोज़े वाला था, वह बाबुर्रय्यान से बुलाया जायेगा। यह सुन कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, सब दरवाज़ों से किसी को पुकारा जाए, इसकी ज़रूरत तो है नहीं (क्योंकि असल मक़सद यानी जन्नत में दाख़िला तो एक दरवाज़े से दाख़िल होने में हासिल हो जाता है, लेकिन फिर भी पूछता हूं कि) क्या कोई ऐसा भी होगा जिसे (इज़्ज़त देने के लिए) तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाये।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हां ! (ऐसे भी लोग होंगे) और मैं उम्मीद करता हूं कि तुम उन ही में से होगे।[2]

साहिबे फ़त्हुल बारी लिखते हैं कि इस हदीस से चार दरवाज़ों का इल्म हुआ—

१. बाबुस्सलात (नमाज़ का दरवाज़ा),
२. बाबुस्सद्क़ा (सद्क़ा का दरवाज़ा),
३. बाबुल जिहाद (जिहाद का दरवाज़ा),
४. बाबुर्रय्यान। इसके बाद लिखते हैं कि एक बाब (दरवाज़ा) अल-हज्ज यक़ीनी तौर पर होगा और एक दरवाज़ा उन लोगों के लिए होगा जो ग़ुस्से को पी जाते हैं, जिसके बारे में मुस्नद अहमद में एक हदीस आयी है और एक दरवाज़ा (अल-बाबुल ऐमन) तवक्कुल (अल्लाह पर पूरा भरोसा) करने वालों के लिए होगा, जो बग़ैर हिसाब और बग़ैर

१. यानी वह शख़्स जो फ़र्ज़ों के अदा करने के साथ-साथ नमाज़ (फ़र्ज़, नफ़्ल सुन्नत) का ख़ास ध्यान और एहतमाम रखता था, उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, यह मतलब नहीं है कि सिर्फ़ नमाज़ पढ़ता था और बाक़ी फ़र्ज़ छोड़े हुए था, इसी तरह 'जिहाद वाले' और 'सद्क़े वाले' और 'रोज़ों वाले' का मतलब समझ लो,

२. तिर्मिज़ी शरीफ़,

अज़ाब उस दरवाज़े से दाखिल होंगे। और एक बाबुज़्ज़िक्र (ज़िक्र यानी अल्लाह की याद का दरवाज़ा) होगा जिसकी तरफ़ तिर्मिज़ी (की एक हदीस) में इशारा है और यह भी हो सकता है कि बाबुज़्ज़िक्र न हो, बल्कि बाबुल इल्म हो। (ख़ुदा ही बेहतर जानता है।)[1]

फिर लिखते हैं कि (यह भी) हो सकता है कि हज़रत अबू बक्र की बड़ाई में जिन-जिन ख़ूबियों का ज़िक्र है, ये जन्नत के असल (शुरू के बड़े) फाटकों के अलावा अंदर के दरवाज़े हों, क्योंकि नेक अमल आठ से बहुत ज़्यादा हैं। हर (नेक अमल) का अगर एक दरवाज़ा हो तो बहुत दरवाज़े होने चाहिएं, इसलिए ज़्यादा सही अन्दाज़ा यही होता है कि नेक अमलों के दरवाज़े अंदरूनी दरवाज़े हों।

एक बार बसरा के अमीर (गवर्नर) हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वान रज़ि० नें ख़ुत्बा देते हुये इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा तुम ऐसी दुनिया की तरफ़ कूच करने वाले हो, जहां से और कहीं जाना न होगा, इसलिये तुम यहां से बेहतरीन अमल लेकर रवाना होना। फिर फ़रमाया कि हमको यह बताया गया है कि जन्नत के किवाड़ों में से दो किवाड़ों के दर्मियान चालीस साल के सफ़र की दूरी है और यह यक़ीनी बात है कि एक दिन ऐसा आयेगा कि दाखिल होने वालों की भीड़ की वजह से इतना बड़ा दरवाज़ा (भी) तंग पड़ जायेगा।[2]

बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के किवाड़ों में से दो किवाड़ों के दर्मियान इतनी दूरी है, जितनी शहर मक्का और हिज्र के दर्मियान है।[3]

साहिबे मज्मउल बिहार लिखते हैं कि हिज्र बहरैन की राजधानी है।

दोनों हदीसों से जन्नत के दरवाज़ों का फैलाव और चौड़ाई मालूम हुई। पहली हदीस में दोनों किवाड़ों के दर्मियान की दूरी चालीस साल की दूरी बतायी जाती है और दूसरी हदीस में मक्का और हिज्र की दूरी बतायी है। मौजूद लोगों की समझ के क़रीब लाने के लिये उन ही के मुहावरे और बोल-चाल में कभी इस तरह फ़रमाया और कभी उस तरह समझाया। इससे यह बात पक्की है कि दरवाज़ों का फैलाव बहुत ही ज़्यादा है। जैसा मकान है, वैसे ही दरवाज़े हैं।

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि रसूले

१. फ़त्हुल बारी, २. मुस्लिम, ३. अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब,

अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ज़रूर ही ऐसा होगा कि मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार या (फ़रमाया) सात लाख आदमी आपस में एक दूसरे को पकड़े हुये दाखिल होंगे। उनकी (लाइन) का पहला शख़्स दाखिल न होगा, जब तक कि उसका आख़िरी शख़्स न दाखिल हो जाये (मतलब यह कि एक ही वक़्त में उनकी पूरी लाइन की लाइन दाखिल होगी) फिर फ़रमाया कि उनके चेहरे इस तरह चमकते होंगे जैसे चौदहवीं का चांद होता है।[1]

जन्नत में दाखिल होने वाले लोगों की दो जमाअतें

सूरः वाक़िअः में तीन जमाअतों का ज़िक्र फ़रमाया है यानी यह बताया है कि क़ियामत के दिन तीन जमाअतों में लोग बंट जाएंगे—

१. अस्हाबुल यमीन या अस्हाबुल मैमनः (दाहिने हाथ वाले),

२. मुक़र्रबीन (ख़ुदा के ख़ास क़रीबी बन्दे यानी नबी, और सच्चे वली, शहीद और तक़्वा वाले लोग),

३. अस्हाबुश्शिमाल या अस्हाबुल मश्अमः (बांये हाथ वाले), जिन के बांये हाथ में आमाल नामे दिये जाएंगे।

पहले दो गिरोह तो जन्नती होंगे, लेकिन उनके दर्जों में फ़र्क़ होगा। 'मुक़र्रबीन' ख़ास बड़े दर्जों वाले होंगे और 'अस्हाबुल यमीन' यानी आम मोमिन उनसे कम दर्जे में होंगे और तीसरा गिरोह यानी 'अस्हाबुश्शिमाल' दोज़ख़ियों का गिरोह होगा।

पहले अल्लाह तआला ने 'मुक़र्रबीन' के बदले का ज़िक्र फ़रमाया है और यह बताया है कि उनमें का एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और एक छोटी सी जमाअत पिछले लोगों में से होगी। ये 'अगले लोग' कौन हैं और 'पिछले लोगों' का मतलब क्या है ? इसके बारे में साहिबे 'बयानुल क़ुरआन' लिखते हैं कि अगलों का मतलब पहले वाले लोग हैं यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक और पिछलों से मुराद हुज़ूरे अक़्दस के उम्मती (यानी आपके ज़माने से लेकर क़ियामत तक आने वाले मुसलमान) मुराद हैं।[2]

फिर लिखते हैं कि—

शुरू के लोगों में भलाई में आने जाने वालों की ज़्यादती और बाद

१. बुख़ारी व मुस्लिम (तर्ग़ीब के हवाले से) २. दुर्र,

के लोगों में आगे जाने वालों की कमी की वजह यह है कि खास लोग हर ज़माने में कम होते हैं और शुरू के लोगों का ज़माना बेशक उम्मते मुहम्मदिया के ज़माने से बहुत लंबा है, पस जितने खास लोग उस लम्बे ज़माने में हुए है, जिनमें लाख या दो लाख या कम व ज़्यादा नबी भी हैं, इसलिए होना भी यही चाहिए कि छोटी मुद्दत में उनसे कम ही होंगे।

मुफ़स्सिर (तफ़्सीर लिखने वाले) इब्ने कसीर ने अगलों और पिछलों के बारे में दूसरा क़ौल भी नक़ल फ़रमाया है।

अब क़रीबी लोगों का बदला मालूम कीजिए। खुदा का इर्शाद है—

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ ثُلَّةٌ
مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا
مُتَقٰبِلِيْنَ ۝ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۝
وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝ وَفَاكِهَةٍ
مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝
كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۝ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝.

वस्साबिक़ूनस्साबिक़ून॰ उलाइकल मुक़र्रबून फ़ी जन्नातिन्नईमि सुल्लतुम मिनल अव्वलीन व क़लीलुम मिनल आख़िरीन अला सुररिम मौज़ूनतिम मुत्तकिईन अलैहा मु त क़ाबिली न यतूफ़ु अलैहिम विल्दानु-म्मुख़ल्लदून बिअक्वाबिंव्व अबा री क़ व कासिम मिम् मअीनिल्ला युसद्दअ़ू न अन्हुमा व ला युन्ज़िफ़ू न व फ़ाकिहतिम मिम्मा य त खय्यरून व लहिम तैरिम्मिम्मा यश्तहून व हूरुन अीनुन क अम्सालिल लु अ्लु इल मक्नून जज़ाअम बिमा कानू यअ् मलू न ला यस्मअ़ू न फ़ीहा लग्वंव्व ला तासीमा इल्ला क़ौलन सलामन सलामन॰

'और सब्क़त ले जाने वाले, वे तो सब्क़त ले जाने वाले हैं। वे (खुदा से खास) क़ुर्ब रखने वाले हैं। ये लोग आराम के बाग़ों में होंगे। उनका एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और छोटी सी जमाअत उन में पिछले लोगों में से होगी। वे लोग (सोने के तारों से) बने हुए तख्तों पर तकिया लगाये आमने-सामने बैठे होंगे, उनके पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। ये चीज़ें लेकर आया जाया करेंगे, आबख़ोरे और आफ़्ताबे और ऐसी शराब का जाम जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा, न इससे उनको सर-दर्द होगा और न अक्ल में फ़तर आएगा और मेवे,

जिनको वे पसन्द करेंगे और परिंदों का गोश्त जो उनको पसन्द हो और उनके लिए बड़ी आंखों वाली हूरें होंगी जैसे छिपा कर रखा हुआ मोती, यह उनके अमल के बदले में मिलेगा। वहां न बक-बक सुनेंगे और न कोई और बेहूदा बात, बस सलाम ही सलाम की आवाज़ आयेगी।'

इसके बाद 'असहाबुल यमीन' का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद है—

اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝ فِيْ سِدْرٍ
مَّخْضُوْدٍ ۝ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۝ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝
وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۝ وَّفُرُشٍ
مَّرْفُوْعَةٍ ۝ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۝ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۝ عُرُبًا اَتْرَابًا ۝
لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝

व अस्हाबुल यमीनि मा अस्हाबुल यमीनि फ़ी सिद्रिम्मख़्ज़ू दिंव्व तल्हिम मंज़ू दिंव्व ज़िल्लिम मम्दूदिंव्व माइम मस्कूबिंव्व फ़ाकिहतिन कसीर-तिल्ला मक़्तूअतिंव्व ला मम्नूअतिंव्व फ़ुरुशिम मर्फ़ूअः इन्ना इन्शाहुन्न इन्शाअन फ़ जअ़ल्न हुन्न अब्कारन उरुबन अत्राबल्लि अस्हाबुल यमीनि सुल्लतुम मिनल अव्वलीन व सुल्लतुम मिनल आख़िरीन॰

'और जो दाहिने हाथ वाले हैं, वे दाहिने हाथ वाले कैसे हैं, वे उन बाग़ों में होंगे, जहां बेकांटे की बेरियां होंगी और तह-ब-तह केले होंगे और लम्बा-लम्बा साया होगा और चलता हुआ पानी होगा और खूब ज़्यादा मेवे होंगे, जो ख़त्म न होंगे और न उनकी रोक होगी और ऊंचे-ऊंचे बिछौने होंगे। हमने इन औरतों को खास तौर पर बनाया है कि वे कुंवारियां हैं, शौहरों के लिए प्यारी हैं और उन की हम-उम्र हैं। ये सब कुछ 'अस्हाबुल यमीन' के लिए है, उनका एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और एक बड़ा गिरोह पिछले लोगों में से होगा।'

इसके बाद क़ुरआन शरीफ़ में 'अस्हाबुश्शिमाल' (यानी दोज़ख़ वालों) का और उनकी सज़ा का ज़िक्र है।

फ़ायदा—मुक़र्रबीन (क़रीबी लोगों) के बदले में आराम के उन सामानों का ज़्यादा ज़िक्र किया गया है जो शहर वालों को ज़्यादा पसन्द हैं और 'अस्हाबुल यमीन' के बदले में आराम के उन सामानों का ज़्यादा ज़िक्र है, जो देहात वालों को ज़्यादा पसन्द हैं, पस इशारा इस तरफ़ हो गया कि उनमें इतना फ़र्क़ हो, जैसा शहर वालों और गांव वालों में होना है।'[1]

---

१. बयानुल क़ुरआन (रूहुल मआनी से).

यानी यह मतलब नहीं कि 'मुक़र्रबीन' के बदले में, जिन नेमतों का ज़िक्र है, उन से 'अस्हाबुल यमीन' महरूम रहेंगे और 'अस्हाबुल यमीन' के बदले में जिन चीज़ों का ज़िक्र है, वे 'मुक़र्रबीन' के लिए न होंगी, क्योंकि नेमतों में तो सभी शरीक होंगे और विल्दान और ग़िल्मान[1] और शराब का जाम, फल, मेवे वग़ैरह सभी को मिलेंगे, हां, मगर 'मुक़र्रबीन' और 'अस्हाबुल यमीन' के दर्जे और रुत्बे में अलग-अलग तरीक़ों में फ़र्क़ होगा, जिसकी तरफ़ बयान के अन्दाज़ में इशारा फ़रमाया गया है।

दूसरा फ़ायदा —आम जन्नती मोमिनों को 'अस्हाबुल यमीन' फ़रमाया है, क्योंकि उन के दाहिने हाथ में आमालनामा दिया जाएगा और चाहे यह मतलब 'मुक़र्रबीन' के लिए भी हो, लेकिन आम मोमिनों को ख़ास तौर से इस नाम से ज़िक्र करने में इशारा है कि उन में 'अस्हाबुल यमीन' होने की ख़ूबी से ज़्यादा कोई ख़ूबी 'ख़ास नज़दीकी' की नहीं पायी जाती।[2]

जन्नत में इज़्ज़त के साथ दाख़िला और फ़रिश्तों की तरफ़ के सलाम और मुबारकबाद, साथ ही अम्न व सलामती के साथ हमेशा-हमेशा के लिए ठहरने का सलाम

सूरः हिज्र में फ़रमाया—

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ۝

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी जन्नातिव्व उयूनिन उद्ख़ुलूहा बिसलामिन आमिनीन०

'बिला शुब्हा ख़ुदा से डरने वाले बाग़ों और चश्मों में होंगे। उनसे कहा जाएगा कि तुम उन में सलामती और अम्न व अमान के साथ दाख़िल हो जाओ।'

सूरः ज़ुमर में इर्शाद है—

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ۝

हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत अब्वाबुहा व क़ा लहुम ख़ ज़ न तुहा

1. जन्नती लड़के और सेवा करने वाले. 2. बयानुल क़ुरआन,

सलामुन अलैकुम तिब्तुम फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन०

'यहां तक कि जब वह जन्नत के पास पहुंचेंगे और उस के दरवाज़े (पहले से स्वागत के लिए) खुले होंगे और वहां के हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते उन से कहेंगे कि तुम पर सलाम हो। ख़ूब-ख़ूब मज़े से रहो, पस हमेशा के लिए दाख़िल हो जाओ।'

यानी जन्नतियों को जन्नत में क़ियाम करने के लिए पूरी इज़्ज़त के साथ दाख़िल किया जाएगा, उन के स्वागत के लिए पहले से दरवाज़े खुले होंगे और जन्नत के हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते सलाम करेंगे और आराम की ज़िंदगी की मुबारकबादी देंगे और यह सुना देंगे कि आप लोग ऐसी जगह ठहर रहे हैं जहां अम्न व अमान और सलामती ही सलामती है। यहां हमेशा और चैन के साथ रहोगे, न डर होगा, न किसी तरह की घबराहट होगी। रंज व ग़म, दुखन, घुटन और थकन का नाम न होगा।

दाख़िले के बाद मुबारकबादी

सूरः राद में इर्शाद है—

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ۝ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝

वल्लज़ी न स व रुब्तिग़ा अ वज्हि रब्बिहिम व अक़ामुस्सला त अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम सिर्रं व्व अलानियतन व यद्रऊन बिल ह स न तिस्सय्यिअ त उलाइ क लहुम उक़्बद्दारि जन्नातु अद्निय्यद्‌ ख़ुलू न हा व मन स ल ह मिन आबाइहिम व अज़्वाजिहिम व ज़ुर्री यातिहिम वल् मलाइकतु यद्ख़ुलू न अलैहिम मिंन कुल्लि बाबिन सलामुन अलैकुम बिमा सबर्तुं म फ़निअ् म उक़्बद्दारि०

'और ऐसे लोग हैं (जिनका ऊपर से आयत में ज़िक्र है) कि जिन्होंने अपने रब की ख़ुशी हासिल करने के लिए सब्र किया और नमाज़ क़ायम किया और यह हमने जो उन को दिया, उस में से खुले और छिपे तरीक़े

पर खर्च करते हैं और अच्छे सुलूक के ज़रिए बुरे सुलूक को दूर करते हैं, उनके लिए इस दुनिया में अच्छा अन्जाम है यानी हमेशा रहने की जन्नतें हैं, जिनमें वे दाखिल होंगे और उनके मां-बाप और अज़्वाज (यानी बीवियां) और औलाद में से जो लायक़ होंगे, वे भी दाखिल होंगे और हर दरवाज़े से उनके पास फ़रिश्ते (यों) कहने को आएंगे कि तुम पर सलाम हो, इसकी वजह से कि तुम ने दुनिया में सब्र किया, सो इस दुनिया में तुम्हारा अंजाम बहुत अच्छा है।'

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर रह० इस आयत की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं कि जन्नत वालों को जन्नत में दाखिले की मुबारकबादी देने के लिए हर तरफ़ से फ़रिश्तों की जमाअतें सलाम करती हुई दाखिल होंगी, उनको अल्लाह के क़रीब होने, इनाम पाने में और सुकून के घर (दारुस्सलाम) में ठहरने और नबियों और सिद्दीक़ों (सच्चों) के पड़ोस में रहने की जो बड़ाई हासिल होगी, उस पर मुबारकबादी देंगे।

जन्नत में दाखिले पर जन्नतियों के शुक्रिए के लफ़्ज़

सूरः ज़ुमर में फ़रमाया—

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ
مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ط

व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स द क़ ना वअ्‌ द हू व औ र स नल अर्ज़ न त बव्वउ मिनल जन्नति हैसु नशाउ फ़ निअ्‌ म अजरुल आमिलीन०

'और जन्नती (जन्नत में दाखिल होकर) कहेंगे कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जिसने हम से अपना वायदा सच्चा किया और हम को इस धरती का मालिक बनाया कि जन्नत में जहां चाहें, ठहरें, सो अच्छा बदला है अमल करने वालों का।'

'जहां चाहें जन्नत में ठहरें' इसका मतलब यह है कि अल्लाह पाक ने हर जन्नती को बहुत बड़ी लंबी-चौड़ी जगह दी, जिसमें पूरा-पूरा अख्तियार हासिल है कि जहां चाहे ठहरे, कोई रोक टोक नहीं है और कोई जगह ऐसी भी नहीं है जो ठहरने के क़ाबिल न हो और अपनी जगह से जब किसी दूसरे जन्नती से मिलने का इरादा करेंगे तो उस का भी अख्तियार होगा।

सूरः आराफ़ में फ़रमाया—

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُوْرِهِمْ مِنْ غِلٍّ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهَارُ ج وَقَالُوا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي هَدٰنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا اَنْ هَدٰنَا
اللّٰهُ ج لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ط وَنُوْدُوْا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ
اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ط

व नज़अ्‌ ना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन तज्री मिन तह्‌ति-हिमुल अन्हारु व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा व मा कुन्ना लिन ह्तदि य लौ ला अनहदानल्लाहु लक़द जाअत रुसुलु रब्बिना बिल हक़्क़ि व नूदू अन तिल्कुमुल जन्न तु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम तअ्‌ मलून०

'और उनके दिलों में (जो एक दूसरे की तरफ़ से कुछ) ग़ुबार (द्वेष भाव) था, उसे हम निकाल देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे कहेंगे कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने हमको इस जगह तक पहुंचाया और हमारी पहुंच न होती, अगर हम को अल्लाह तआला न पहुंचाते। वाक़ई सच तो यह है कि हमारे रब के पैग़म्बर हक़ लेकर आए थे और उनको पुकार कर कहा जाएगा कि जन्नत तुम को तुम्हारे आमाल के बदले दी गयी है।'

दाखिले के बाद जन्नतियों का पहला नाश्ता

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमया कि क़ियामत के दिन ज़मीन एक रोटी बन जाएगी जिसको जब्बार (व क़ह्हार) अपने ताक़त भरे हाथ में लेकर उलटे-पलटेगा, जैसे तुम में से कोई शख़्स सफ़र में रोटी को उलटता-पलटता है, (उलट-पलट हमवार बना कर) अल्लाह तआला ज़मीन को जन्नत वालों की पहली मेहमानी क़रार देगा।

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया था कि एक यहूदी आ पहुंचा और कहने लगा, ऐ अबुल क़ासिम![1] खुदा आप पर बरकत नाज़िल फ़रमाये, क्या आप को यह बताऊं कि क़ियामत के दिन जन्नतियों की पहली मेहमानी किस से होगी? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हां बता दे, उस ने इसी तरह बयान

१. अबुल क़ासिम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहते हैं।

किया, जिस तरह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि ज़मीन की एक रोटी बन जाएगी (जिसे जन्नत वाले सबसे पहले नाश्ते की जगह खाएंगे) रिवायत करने वाले कहते हैं कि उस यहूदी की बात सुनकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम हमारी तरफ़ देखकर इस तरह हंसे कि आपकी आख़िरी दाढ़ें ज़ाहिर हो गयीं (यह हंसना इस ख़ुशी में था कि अल्लाह तआला ने जो इल्म पिछले नबियों को दिए थे, मुझे भी दिए, जिनमें से कुछ चीज़ें नक़ल पर नक़ल होकर यहूदियों में मशहूर हैं।) इसके बाद उस यहूदी ने कहा, क्या आपको यह (भी) बताऊं कि जन्नतियों का सालन क्या होगा? (जिससे पहली मेहमानी की वह रोटी खाएंगे जो ज़मीन से बनी हुई होगी) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया (वह भी) बता दे। उस यहूदी ने कहा कि बैल होगा और मछली होगी, जिसकी कलेजी के ज़्यादा हिस्से से सत्तर हज़ार आदमी खाएंगे।[1]

जन्नत में खाने-पीने के लिए बे-इंतिहा नेमतें होंगी, जब जन्नत में रहने लग जाएंगे, तो बराबर खाते-पीते रहेंगे, मगर सबसे पहले शुरू के मेहमान के तौर पर जो नाश्ता पेश किया जाएगा। वह ज़मीन की रोटी का होगा और उस नाश्ता के खिलाने में यह मस्लहत है कि ज़मीन में तरह-तरह के मज़े दे रखे हैं जो अलग-अलग इलाक़ों और मुल्कों में फलों, ग़ल्लों, तरकारियों और दूसरी चीज़ों में पाये जाते हैं और चूंकि किसी भी आदमी ने ज़मीन से पैदा होने वाली हर नेमत नहीं खायी है, बल्कि कोई इस फल से महरूम है और किसी को वह फल नसीब नहीं हुआ है, इसलिए ज़मीन की रोटी बनाकर जन्नत वालों को पहले उसके तमाम मज़े मिला कर एक साथ चखा दिए जाएंगे, ताकि जन्नत की नेमतों को जब खाएं-पिएं तो हर आदमी का यक़ीन इस तरह का यक़ीन हो जाए कि दुनिया में जो कुछ भी मैंने या किसी दूसरे ने खाया-पिया है, वह सब जन्नत की हर नेमत के सामने कुछ भी नहीं।

फ़ायदा—यहूदी ने जो रोटी के साथ मछली और बैल का नाश्ता बताया, हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे कुछ नहीं फ़रमाया, जिससे मालूम हुआ कि उसने सही बात कही है। यह जो कहा कि मछली की कलेजी के बढ़े हिस्से से सत्तर हज़ार आदमी खाएंगे। इसके बारे में मुस्लिम की शरह लिखने वाले अल्लामा नववी रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं कि जिगर में एक टुकड़ा लटका हुआ होता है जो खाने में बेह-

---

१. जमउल फ़वाइद (बुख़ारी व मुस्लिम),

तरीन हिस्सा है। कलेजी का ज़्यादा हिस्सा इसी को फ़रमाया है।

सवाल—ज़मीन की रोटी किस तरह खाई जा सकेगी, हम तो देखते हैं कि ज़मीन के ज़र्रे (कण) खाने में मिल जाते हैं, तो खाया नहीं जाता और किरकिरापन ज़ाहिर हो जाता है?

जवाब—दुनिया में जितने भी ग़ल्ले, फल, मेवे, सब्ज़ियां, तरकारियां और खाने हैं, सब ज़मीन ही से निकलते हैं। जिस क़ुदरत वाले ने ज़मीन से ऐसी लज़्ज़तदार चीज़ें निकाल दीं, उसको क़ुदरत है कि ख़ास ज़मीन ही को खाने की चीज़ बना दे और उसमें ऐसी बात भर दे, जिससे ज़ुबान भी मज़ा ले और हलक़ में भी आसानी से उतर जाए।

इन्नहू अला कुल्लि शैइन क़दीर०

जन्नतियों का जिस्म और खूबसूरती

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा, उन की शक्लें चौदहवीं रात के चांद की तरह (चमकती-दमकती) होंगी और जो लोग उनके बाद (दूसरे नम्बर पर) दाख़िल होंगे, उनकी शक्लें बहुत ज़्यादा रोशन सितारे की तरह से (रोशन) होंगी। सब जन्नतियों के दिल एक ही दिल पर होंगे। (यानी उन के आपस में ऐसी मुहब्बत होगी जैसे जिस्म बहुत हों और दिल एक हो) उन में आपस में इख़्तिलाफ़ होगा, न कपट होगा। हर एक के लिए (बड़ी आंखों वाली हूरों में से कम से कम) दो बीवियां होंगी। उन में से हर बीवी की पिंडली का गूदा ख़ूबसूरती की वजह से (हड्डी और) गोश्त के बाहर से नज़र आएगा। ये लोग सुबह-शाम अल्लाह की तस्बीह बयान करेंगे, न बीमार होंगे, न नाक से रेंट आएगा और न थूकेंगे। उनके बर्तन सोने-चांदी के होंगे और उन की कंघियां सोने की होंगी, उनकी अंगीठियों में ख़ुश्बू फैलने के लिए जो चीज़ जलेगी वह ऊद होगी और उन का पसीना मुश्क (की तरह ख़ुश्बूदार) होगा।[1]

इस हदीस से जन्नतियों के हुस्न व जमाल और उनकी बीवियों की ख़ूबसूरती का हाल मालूम हुआ, साथ ही उन की सफ़ाई-सुथराई का भी पता चला कि उन को न नाक साफ़ करने की ज़रूरत होगी और न थूकने

---

१. बुख़ारी शरीफ़,

की ज़रूरत होगी।

दूसरी रिवायतों में यह भी है कि 'ला यबूलू न व ला य त ग़व्व त न' (यानी जन्नती न पेशाब करेंगे, न पाख़ाने की ज़रूरत होगी) पसीना जो आएगा, वह गर्मी की वजह से न होगा, बल्कि खाना हज़्म हो जाने का ज़रिया होगा (जिस का बयान आगे आयेगा) और वह पसीना ख़ुश्बूदार और ख़ुशगवार होगा।

ऊपर की हदीस में है कि जन्नतियों की अंगीठियों में जलने वाली ऊद होगी। ज़ेहन में लाने के लिए 'ऊद' को अगर की लकड़ी समझ लीजिए जिस के बुरादे से अगरबत्तियां बनती हैं। चूंकि अगर क़ीमती चीज़ है, इस लिए दूसरी लकड़ी की पतली पतली सलाइयों पर उसका बुरादा लपेट कर अगर बत्ती बनायी जाती है। जन्नत में किसी चीज़ की कमी न होगी, इसलिए ख़ुश्बू के लिए ऊद ही सुलग रहा होगा (उसके बुरादे की बत्तियां बनाने की ज़रूरत न होगी और यह वहां का ऊद होगा। यहां के ऊद पर इसे न सोचें। ये अंगीठियां आग से जल रही होंगी या किसी दूसरी चीज़ से? इस के बारे में कोई तश्रीह' नहीं देखी।

फ़ायदा —बुख़ारी शरीफ़ में है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया तो उन का क़द साठ हाथ का था और जन्नत में जो भी दाख़िल होगा, आदम अलैहिस्सलाम की शक्ल पर साठ हाथ का होगा।[2]

सवाल —इतने लंबे-लंबे आदमी भला अच्छे क्या मालूम होंगे?

जवाब —जब सब ही एक ही क़द के होंगे तो किसी का क़द भी दर्मियानी क़द से बाहर मालूम न होगा और सब ही को पसंद आएगा।

दूसरा फ़ायदा —हदीस में जो लफ़्ज़ 'बुक्रतंव्व अशीया' (सुबह व शाम) फ़रमाया, उस के मुताल्लिक़ हदीस की शरह (टीका) लिखने वाले लिखते हैं कि इस से सच्ची सुबह व शाम मुराद नहीं है, क्योंकि वहां न निकलना होगा, न डूबना होगा, बल्कि एक ही तरह का मंज़र होगा, रात-दिन का आना-जाना न होगा। फ़त्हुल बारी में एक कमज़ोर रिवायत नक़ल की है कि अर्शे इलाही के नीचे एक परदा लटका हुआ होगा, उस का लपेट दिया जाना शाम का निशान होगा और उसका फैल जाना सुबह की निशानी होगी, यानी मुक़र्रर की हुई मुद्दत गुज़र जाने पर उस परदे से सुबह व शाम की निशानी ज़ाहिर हुआ करेगी और यह अल्लाह की तस्बीह में लगे रहने के वक़्त होंगे। और अगरचे जन्नत में हर

१. ... २. बुख़ारी शरीफ़ बाब ख़ुल्क़ि आदम,

वक़्त बे-अख़्तियार सांस की तरह तस्बीह जारी होगी, मगर अपने अख़्तियार से भी सुबह व शाम तस्बीह में लगे रहने को पसंद करेंगे।'

जन्नतियों के दाढ़ी न होगी और उन की सुरमई आंखें होंगी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नती 'अजरद और अमरद' होंगे। उन की आंखें ऐसी ख़ूबसूरत होंगी, कि (बग़ैर सुर्मा लगाये ही) सुर्मई मालूम होंगी, न उनकी जवानी ख़त्म होगी, न कपड़े पुराने होंगे।[2]

जन्नती 'अजरद व अमरद' होंगे, यानी उन के जिस्म पर बाल न होंगे और सब (मर्द व औरत) बे-दाढ़ी होंगे। जिस्म पर बाल न होने के दो मतलब हो सकते हैं—एक तो यह कि सर के बालों के अलावा किसी भी जगह बाल न हों और दूसरा मतलब यह कि जिन जगहों के बालों को दूर करना पड़ता है (जैसे नाफ़ के नीचे के बाल और बग़लें, वहां तो बिल्कुल ही बाल न होंगे और सीने और पिंडलियों वग़ैरह पर जो बाल होंगे, बहुत हल्के होंगे, ख़ूब भरे हुए न होंगे, जिन से खाल की ख़ूबसूरती दब जाए। सर के बालों का अलग से ज़िक्र किसी रिवायत में नहीं पाया गया, लेकिन बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में जो यह फ़रमाया कि उन की कंघियां सोने की होंगी, इससे साफ़ ज़ाहिर है कि उन के सर पर बाल होंगे।

चेहरे पर दाढ़ी न होने की तमन्ना जन्नत में पूरी हो जाएगी। हमारे एक बुज़ुर्ग से किसी ने सवाल किया कि दाढ़ी न होने से क्या फ़ायदा होगा? फ़रमाया कि इस का जवाब उनसे मालूम करो जो दाढ़ी मुंडाते हैं। बहरहाल जन्नत में तो हर चीज़ ख़ूबसूरत होगी दाढ़ी न होने पर भी मर्दों की ख़ूबसूरती बढ़ी हुई होगी और अंदर से बाल निकल कर न आएंगे, जिनको मूंडना पड़े और उसकी वजह से खाल ख़राब हो।

जन्नतियों की तंदुरुस्ती और जवानी

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु

१. हाशिया बुख़ारी, २. तिर्मिज़ी,

तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि एक (ख़ुदाई) मुनादी (जन्नतियों में) पुकार कर एलान कर देगा कि ऐ जन्नत वालो! तुम्हारे लिए यह बात तै है कि हमेशा तंदुरुस्त रहोगे, कभी बीमार न होगे और यह (भी) तै है कि हमेशा ज़िंदा रहोगे, कभी मौत न आएगी और (यह कि) हमेशा जवान रहोगे, कभी बूढ़े न होगे और (यह कि) हमेशा नेमतों में रहोगे, कभी मुहताज न होगे।'[1]

जन्नतियों की उम्रें

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में जाने वाला जो शख़्स इस दुनिया से विदा होगा, छोटा हो या बड़ा (जन्नत में दाख़िले के वक़्त) सब तीस साल के कर दिए जाएंगे, इस से कभी आगे न बढ़ेंगे।[2]

तीस साल की उम्र दर्मियानी उम्र है, उसमें न बचकाना नादानी होती है, न जवानी दीवानी होती है, न बुढ़ापा आता है, न बुढ़ापे की निशानियां होती हैं। उस उम्र में पूरी जवानी और पूरी समझ दोनों होते हैं। होश-हवास बजा और अंग सही-सालिम होते हैं। इसी लिए यह उम्र जन्नतियों के लिए रखी गयी है, छोटा हो या बड़ा, हर शख़्स तीस साल का कर दिया जाएगा यानी तीस की उम्र की जो ख़ूबियां व हालात होते हैं (जिन का ज़िक्र ऊपर हुआ) तमाम जन्नत वाले उनके मालिक होंगे, हमेशा-हमेशा जन्नत में रहेंगे, मगर न बुढ़ापा आएगा, न जवानी में कमज़ोरी आएगी, न होश व हवास में खलल पैदा होगा, न दांत उखड़ेंगे, न रोशनी में फ़र्क़ आएगा। कुछ रिवायतों में जन्नतियों की उम्र ३३ साल भी आयी है।

जन्नत के बाग़ और पेड़

सूरः नबा में फ़रमाया—

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا وَكَأْسًا دِهَاقًا

१. मुस्लिम शरीफ़, २. तिर्मिज़ी,

इन्न लिल मुत्तीक़ी न मफ़ाज़न हदाइ क़ व अअ्नाबंव्व क वाअ्रि व अत्राबंव्व का सन दिहाक़ा०

'बे शक परहेज़गारों के लिए बड़ी कामियाबी है, बाग़ हैं और अंगूर हैं और नयी हम-उम्र औरतें हैं और लबालब भरे हुए शराब के जाम हैं।'

और सूरः ज़ारियात में इर्शाद है—

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ

इन्नल मुत्तीक़ी न फ़ी जन्नातिंव्व अयूनिन आख़िज़ी न मा आता-हुम रब्बुहुम इन्नहुम कानू क़ब्ल ज़ालि क मुह्सिनीन०

'बेशक परहेज़गार लोग बाग़ों और चश्मों में होंगे। उन के रब ने उन को जो अता फ़रमाया होगा, वे इसे ले रहे होंगे। बिला शुब्हा वे इस से पहले (दुनिया) में अच्छे काम करने वाले थे।'

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जन्नत में एक पेड़ है, जिस के साए में बेहतरीन तेज़ रफ़्तार हल्के-फुल्के घोड़े पर सवार हो कर गुज़रने वाला सौ वर्ष तक चलता रहेगा, तो उसके साए को तै न कर सकेगा।'[1]

इसके बाद फ़रमाया, 'व ज़ालि कज़्ज़िल्लुल मम्दूद,' यानी सूरः वाक़िअः में 'वज़िल्लिम मम्दूद' (फैला हुआ साया) फ़रमाया है, वह यही (पेड़ वाला साया है) है।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में कोई पेड़ ऐसा नहीं जिस का तना सोने का न हो।'[3]

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैं हज़रत सल्मान फ़ारसी रज़ि० के पास गया। उन्होंने बात जारी रखते हुए एक बहुत छोटा सा लकड़ी का टुकड़ा लिया, जो उनकी उंगलियों के बीच में ठीक तरह दिखायी भी न देता था। उस को हाथ में ले कर फ़रमाया कि ऐ जरीर! अगर तुम जन्नत में इतनी-सी लकड़ी भी तलाश करोगे तो न पाओगे। मैं ने अर्ज़ किया कि नख़्ल[4] और शजर[5] कहां जाएंगे (जिन का क़ुरआन व हदीस में ज़िक्र है?) फ़रमाया, नख़्ल व शजर तो

१. बुख़ारी व मुस्लिम, २. अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, ३. तिर्मिज़ी शरीफ़,
४. खजूर का पेड़, ५. पेड़,

वहां होंगे, लेकिन लकड़ीके न होंगे, उनके तने मोतियों के और सोने के होंगे और ऊपर खजूरें लगी होंगी ।[1]

सूर: रहमान के तीसरे रुकूअ के पहले आधे में दो बाग़ों का ज़िक्र है जो ख़ास मुक़र्रिबीन के लिए होंगे यानी हर मुक़र्रिब के लिए दो-दो बाग़ होंगे, फिर दूसरे आधे में दूसरे बाग़ों का ज़िक्र है जो आम ईमान वालों के लिए होंगे और हर आदमी को दो-दो मिलेंगे, मगर मुक़र्रिबीन के बाग़ों से दर्जे में कम होंगे । चुनांचे इर्शाद है—

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ
ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ فِیْهِمَا عَیْنٰنِ
تَجْرِیٰنِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ فِیْهِمَا مِنْ كُلِّ
فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ مُتَّكِئِیْنَ
عَلٰی فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَیْنِ دَانٍ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ فِیْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ یَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ
وَلَا جَآنٌّ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ كَاَنَّهُنَّ الْیَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۚ
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۚ
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ

व लिमन ख़ा फ़ मक़ा म रब्बिही जन्नतानि फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबा निवा ता अफ़्नानि फ़बि अय्यि अलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबानि फ़ी हिमा ऐनानि तज्रियानि फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान फ़ीहिमा मिन कुल्लि फ़ाकिहतिन ज़ौजानि फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान मुत्तकिई न अला फ़ुरुशिम बताइनुहा मिन इस्त-ब्रक़िन व जनल जन्नतैनि दानिन फ़बिअय्यि अलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़-बान फ़ीहिन्न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम्यत्मिस हुन्न इन्सुन क़ब्लहुम व ला जान्न फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान क अन्न हुन्न ल याक़ू त वल मर्जानु फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान हल जज़ाउल एह-सानि इल्लल एहसानु फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०

'और जिस ने अपने रब के सामने खड़े होने से ख़ौफ़ रखा, उस के लिए (यानी हर परहेज़गार के लिए) दो बाग़ होंगे, सो ऐ इंस व जिन्न

---
१. बैहक़ी,

तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे । वे दोनों बाग़ ज़्यादा शाख़ों वाले होंगे, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओग, इन दोनों बाग़ों में दो चश्मे होंगे जो बहते चले जाएंगे, सो ऐ जिन्न व इंस! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? इन दोनों बाग़ों में हर मेवे की दो-दो क़िस्में होंगी, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? वे लोग तकिया लगाये हुए ऐसे बिछौनों पर बैठे होंगे, जिन के अस्तर ख़ूब मोटे रेशम के होंगे और इन दोनों बाग़ों का फल नज़दीक होता, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? उन में नीची निगाह वालियां होंगी, जिन पर इन लोगों से पहले न किसी इंसान ने तसर्रुफ़[1] किया होगा, न किसी जिन्न ने, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे । गोया वे याक़ूत और मरजान हैं, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे? भला एहसान का बदला एहसान के सिवा क्या है ? सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन से नेमतों के इंकारी हो जाओगे ।'

यह जो फ़रमाया कि इन बाग़ों में हर मेवे की दो क़िस्में होंगी । इन के मुताल्लिक़ 'मआलिमुत्तंज़ील' में कुछ उलेमा का क़ौल नक़ल किया है कि एक क़िस्म तर मेवों की (यानी फलों की) और एक क़िस्म सूखे मेवों की होगी ।

इसके बाद आम मोमिनों के बाग़ों का ज़िक्र है । चुनांचे इर्शाद है—

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ مُدْهَآمَّتٰنِ ۚ
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ فِیْهِمَا عَیْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۚ فِیْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ
فِیْهِنَّ خَیْرٰتٌ حِسَانٌ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ
فِی الْخِیَامِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ لَمْ یَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا
جَآنٌّ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ مُتَّكِئِیْنَ عَلٰی رَفْرَفٍ
خُضْرٍ وَّعَبْقَرِیٍّ حِسَانٍ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ تَبٰرَكَ

---
१. उपभोग,

اسْمُ رَبِّكَ ذِی الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ.

व मिन दूनिहिमा जन्नतानि फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान मुद् हाम्मतानि फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान फ़ीहिमा ऐनानि नज्ज़ाख़तानि फ़बिअय्यि अलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान फ़ीहिमा फ़ाकिहतुंव्व नख़्लुंव्व रुम्मान फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान फ़ीहिन्न ख़ैरातुन हिसान फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान हूरुम मक़्सूरातुन फ़िल ख़ियामि फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान लम यत्मिस्हुन्न इन्सुन क़ब्लहुम व ला जान्न फ़बिअय्यि आलाइ रब्बि मा तुकज़्ज़िबान मुत्तकिईं न अला रफ़रफ़िन ख़ुज़्रिंव्व अब्क़रीयिन हिसान फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान तबारकस्मु रब्बि क ज़िल जलालि वल इक्रामि०

'और उन बाग़ों से कम दर्जे के दो बाग़ और होंगे, सो ऐ जिन्न व इंस ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? वे दोनों बाग़ गहरे हरे होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? इन दोनों बाग़ों में मेवे और खजूरें और अनार होंगे। सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? इन में अच्छे अख़्लाक़ वाली ख़ूबसूरत औरतें होंगी, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? वे हूरें होंगी, जो ख़ेमों में हिफ़ाज़त से होंगी, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? इन लोगों से पहले इन पर न तो किसी इंसान ने तसर्रुफ़ किया होगा, न किसी जिन्न ने। सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? वे लोग बेल-बूटे वाले अजीब ख़ूबसूरत हरे कपड़ों पर तकिए लगाए होंगे, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? बड़ा बरकत वाला नाम है तेरे रब का जो जलाल और इक्राम वाला है।'

जन्नत के फल और मेवे

जन्नती मज़े और स्वाद लेने के लिए फल और मेवे खाएंगे। क़ुरआन शरीफ़ में जगह-जगह इसका ज़िक्र आया है। सूरः स्वाद में इर्शाद है—

مُتَّكِئِيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ o

मुत्तकिईं न फ़ीहा यद्ऊ न फ़ीहा बिफ़ाकिहतिन कसीरतिंव्व शराब०

'वे उन बाग़ों में तकिए लगाए होंगे (और) वहां बहुत मेवे और पीने की चीज़ें मंगायेंगे।'

सूरः यासीन में फ़रमाया—

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ o.

लहुम फ़ीहा फ़ाकिहतुंव्व लहुम मा यद्दऊ न०

'उनके लिए वहां मेवे हैं और जो कुछ तलब करें, वह सब है।'

यानी हर क़िस्म के मेवे उनके लिए मौजूद होंगे और लज़्ज़त व ख़्वाहिश की चीज़ों में से जो कुछ भी तलब करेंगे सब हाज़िर कर दिया जाएगा।'

सूरः वाक़िअः में मेवे का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद है—

وَفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ.

व फ़ाकिहतिन कसीरतिल्ला मक़्तूअतिंव्व ला मम्नूअः०

'और (अस्हाबुल यमीन) अक्सर मेवों में होंगे, जो न ख़त्म होंगे, न उनकी रोक-टोक होगी।'

सूरः दह्र में इर्शाद है—

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا

व दानियतन अलैहिम ज़िलालुहा व ज़ुल्लिलत क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला०

'और वहां यह हालत होगी कि उन पर साए झुके होंगे और जन्नत के फल उनके अख़्तियार में दे दिए जाएंगे।'

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु ने 'व ज़ुल्लिलत क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला' का मतलब बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जन्नती लोग जन्नत के फल खड़े और बैठे और लेटे खाएंगे।'

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर रह० लिखते हैं कि जब कोई जन्नती फल लेना चाहेगा तो फल उसके क़रीब आ जाएगा और टहनी से इस तरह लटक आयेगा कि गोया वह सुनने वाला फ़रमांबरदार है। जन्नती खड़ा होगा तो फल उसके साथ ऊपर को उठ जाएंगे और अगर बैठे या लेटेगा तो उसके साथ चले आएंगे।

साहिबे मआलिमुत्तंज़ील 'व जनल जन्नतैनि दान' की तफ़्सीर में लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने

---

१. बैहक़ी,

फ़रमाया कि जन्नत में फल का पेड़ अल्लाह के दोस्तों (यानी जन्नतियों) के क़रीब ख़ुद आ जायेगा, चाहेंगे तो खड़े होकर फल तोड़ेंगे चाहेंगे तो बैठे ही बैठे ले लेंगे।

हज़रत क़तादा रज़ि० ने फ़रमाया कि जन्नतियों के हाथ न तो दूरी की वजह से फलों से महरूम होंगे, न कांटों की वजह से (क्योंकि पेड़ ख़ुद क़रीब आ जायेंगे) और कांटेदार भी न होंगे 'ला युरद्दु ऐदीहिम अन्हा बुअ्दुन व ला शौकुन। क़ुरआन शरीफ़ में जन्नती खजूरों, अंगूरों, अनारों, केलों और बेरों का ज़िक्र तो नाम लेकर आया है, और इनके अलावा बे-इंतिहा फलों की किस्में होंगी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि दुनिया का कोई मीठा और खट्टा फल ऐसा नहीं जो जन्नत में न हो, यहां तक कि हंज़ल (यानी ईन्दराइन का फल जो सख़्त कड़वा होता है) वह भी होगा, मगर वह वहां मीठा होगा।'[1]

सूरः मुहम्मद में इर्शाद है—

وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ

व ल हुम फ़ीहा मिन कुल्लिस्स म राति व मग़्फ़ि र तुम मिर्रब्बिहिम०

यानी उनके लिए वहां हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी।

सूरः बक़रः में इर्शाद फ़रमाया—

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا ۙ قَالُوا هَٰذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۖ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ؕ

वबश्शिरिल्लज़ी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति अन्न लहुम जन्नातिन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन स म रतिन रिज़्क़न क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना मिन क़ब्लु व उतू बिही मु तशाबिहा व लहुम फ़ीहा अज़्वाजुम मुतह्हतुंव्व लहुम फ़ीहा ख़ालिदून०

'और आप ख़ुशख़बरी सुना दें ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए, इस बात की (ख़ुशख़बरी) कि इनके लिए बहिश्तें हैं, जिन के नीचे नहरें चलती होंगी, जब भी कोई फल इन बहिश्तों में से

१. बरवी,

उनको खाने को मिलेगा, तो हर बार कहेंगे कि यह (तो) वही है जो इससे पहले हमको मिल चुका है और इनके पास (शक्ल व सूरत में) मिलते-जुलते फल लाए जाएंगे और इनके लिए वहां पाकीज़ा बीवियां होंगी और वहां वे हमेशा रहेंगे।

साहिबे बयानुल क़ुरआन लिखते हैं कि अक्सर मज़े के लिए ऐसा होगा कि दोनों बार के फलों की शक्ल एक जैसी होगी, जिस से वे यों समझेंगे कि यह पहली ही क़िस्म का फल है, मगर खाने में मज़ा दूसरा होगा, जिस से लज़्ज़त, और मस्ती कई गुना होगी।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर रह० ने इसकी तफ़्सीर में हज़रत इब्ने अब्बास और दूसरे सहाबा रज़ि० से यह क़ौल भी नक़्ल किया है कि जन्नती हज़रात फल की शक्ल देख कर कहेंगे कि यह फल तो हमने दुनिया में देखा है, लेकिन जब इसको खाएंगे तो मालूम होगा कि सिर्फ़ शक्ल व सूरत में मिलते-जुलते हैं और मज़ा कुछ और ही है।

मिश्कात शरीफ़ में 'सलातुल ख़ुसूफ़ के बाब में' बुख़ारी व मुस्लिम के हवाले से नक़्ल किया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सूरज गरहन हो गया। आप ने गरहन की नमाज़ पढ़ायी जो बहुत लंबी नमाज़ थी। जब आपने सलाम फेरा तो सूरज साफ़ हो चुका था। सलाम के बाद फ़रमाया कि बेशक सूरज और चांद अल्लाह की निशानियों में से हैं। किसी के मरने-जीने की वजह से उनको गरहन नहीं होता है, पस जब तुम चांद-सूरज का गरहन देखो तो अल्लाह का ज़िक्र करो। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम ने देखा कि (नमाज़ पढ़ाते में) आपने अपनी उसी जगह (खड़े-खड़े) कुछ लेना चाहा। फिर हमने देखा कि आप पीछे हटे (यह क्या बात थी) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि मैंने (यहीं खड़े-खड़े) जन्नत देखी, इसलिए मैंने उसमें से एक ख़ोशा लेने का इरादा किया और अगर मैं एक ख़ोशा ले लेता तो जब तक दुनिया बाक़ी रहती तुम उस में से खाते रहते।'[1] इस हदीस से अन्दाज़ा हो सकता है कि जन्नत के फल कितने बड़े-बड़े हैं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे सामने जन्नत पेश की गयी तो मैंने तुमको दिखाने के लिए अंगूर का एक ख़ोशा लेना चाहा, पस (ख़ुदा की हिक्मत) ऐसी हुई कि मेरे और ख़ोशे के दर्मियान

१. अल-हदीस,

आड़ लगा दी गई, इसलिए मैं न ले सका। एक शख्स ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! (जन्नत के) अंगूर के एक दाने का रस कितना होगा? फ़रमाया कि तेरी मां ने सबसे बड़ा डोल जो (कभी) चमड़ा काट कर बनाया हो (उसको ज़ेहन में ला कर ग़ौर करले) यानी एक दाना से बहुत बड़ा डोल भर सकता है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबिल हुज़ैल रज़ि० का बयान है कि हम हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मुल्क शाम में या अमान में थे। आपस में जन्नत का ज़िक्र होने लगा तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया कि बेशक जन्नत के अंगूरों में से एक अंगूर इतना बड़ा है जितनी दूर यहां से सुनआ (शहर) है।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि जन्नत की खजूरों की लम्बाई बारह हाथ है (और) इनमें गुठली नहीं है।[3]

एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक सहाबी आये जो देहात के रहने वाले थे। उन्होंने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! (क़ुरआन शरीफ़ में) अल्लाह तआला ने एक ऐसे पेड़ के बारे में जो तक्लीफ़ देने वाला है, यह ख़बर दी है कि वह जन्नत में होगा। आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि वह कौन सा पेड़ है ? उन्होंने अर्ज़ किया कि बेरी का पेड़ (जिसका सूरः वाक़िअः में ज़िक्र है) चूंकि बेरी के पेड़ में कांटे होते हैं, इसलिए तक्लीफ़ देता है और फल तोड़ने में मुसीबत होती है ! यह सुनकर सय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या अल्लाह तआला ने 'फ़ी सिद्रिम मख़्ज़ूद' (बग़ैर कांटों की बेरियां) नहीं फ़रमाया ? बिला शुब्हा इन बेरियों से ऐसे फल निकलते हैं जिनके फट जाने से बहत्तर रंग के खाने निकल पड़ते हैं, एक रंग दूसरे से मिलता नहीं।[4]

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर सूरः राद की आयत 'उकुलुहा दाइमुंव्व ज़िल्लुहा' की तफ़्सीर में लिखते हैं 'ऐ फ़ीहल फ़वाकिहु वल मुताअिमु वल मशारिबु ला इन्क़िता अ वला फ़ना अ०' यानी जन्नत में मेवे और खाने-पीने की चीजें हमेशा रहेंगी, न ख़त्म होंगी, न फ़ना होंगी। फिर एक रिवायत तबरानी के हवाले से नक़ल की है कि जब कोई जन्नती जन्नत से फल लेगा तो उसकी जगह दूसरा फल लग जाएगा।

---

१. २. ३. तर्गीब,

४. इब्ने अबिद्दुन्या,

जन्नत में खेती

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गांव के रहने वाले एक सहाबी बैठे हुए थे और आप यह बात बयान फ़रमा रहे थे कि जन्नतियों में से एक शख्स अपने परवरदिगार से खेती करने की इजाज़त तलब करेगा। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि क्या तू उन (भरपूर) नेमतों में नहीं है जो ख़्वाहिश के मुताबिक़ तुझे मिली हुई हैं ? वह अर्ज़ करेगा कि हां (है तो सब कुछ) मगर मेरा दिल चाहता है (चुनांचे उसको इजाज़त दे दी जाएगी) वह ज़मीन में बीज डालेगा तो पलक झपकने के पहले ही सब्ज़ा उग जाएगा और बढ़ जाएगा और खेत तैयार हो जाएगा और कट भी जाएगा और पहाड़ों के बराबर अंबार लग जाएंगे। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि ऐ आदम के बेटे ! यह ले ले। तेरे लोभ का पेट कोई चीज़ नहीं भरती। हुज़ुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद सुनकर गांव वाले सहाबी रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम वह शख्स क़ुरैशी या अंसारी होगा, इसलिए कि यही लोग खेती-पेशा हैं। हमारा पेशा तो खेती नहीं है। भला हम क्यों ऐसी दर्ख़्वास्त करने लगे ? यह बात सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हंसी आ गयी।[1]

जन्नत की लहरें

सूरः मुहम्मद में अल्लाह तआला का इर्शाद है—

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ط فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ ط
وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ ط وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ
لِّلشَّارِبِينَ ط وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ط وَلَهُمْ فِيهَا
مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ہ

मसलुल जन्नतिल्लती वुअिदल मुत्तक़ू न० फ़ीहा अन्हारुम मिम माइन ग़ैरि आसिन व अन्हारुम मिल्ल व निल्लम य त ग़य्यर तअमुहू व

---

१. बुख़ारी शरीफ़,

अन्हारुम मिन खमरिल्लज्जतिल लिश्शारिबीन व अन्हारुम मिन अ स लिम मुसफ़्फ़ा व लहुम फ़ीहा मिन कुल्लिस्स म राति व मग़्फ़ि र तुम मिर्रब्बिहिम०

'जिस जन्नत का मुत्तक़ियों से वायदा किया जाता है, उसकी हालत यह है कि उसमें बहुत नहरें ऐसे पानी की हैं जिन में ज़रा भी तब्दीली न होगी और बहुत सी नहरें दूध की हैं जिसका स्वाद ज़रा न बदला होगा और बहुत सी नहरें शराब की हैं जो पीने वालों के लिए बहुत लज़ीज़ होंगी और बहुत सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल साफ़ होगा और उनके लिए हर क़िस्म के फल होंगे और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी।

हज़रत उबादः बिन सामित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं। हर दो दर्जों के दर्मियान इतना फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान है और फ़िर्दौस सबसे ऊपर है, उसी से जन्नत की चारों नहरें निकली है और उसके ऊपर अल्लाह का अर्श होगा, इसलिए जब तुम अल्लाह से (जन्नत का) सवाल करो तो जन्नतुलफ़िर्दौस मांगो।[1]

इस हदीस से मालूम हुआ कि चार नहरें जन्नतुलफ़िर्दौस से निकली है। फिर हर नहर से बहुत सी नहरें निकलती चली गई हैं जिनका सूरः मुहम्मद की आयत में ज़िक्र हुआ। इन चार बड़ी नहरों को एक हदीस में चार नदी बताया गया है। चुनांचे मिश्कात शरीफ़ में तिर्मिज़ी के हवाले से हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है कि बेशक जन्नत में पानी का दरिया है और शहद का दरिया है और दूध का दरिया है और शराब का दरिया है, फिर उनसे और नहरें फूटी हैं।

क़ुरआन मजीद में जगह-जगह जन्नत और जन्नत वालों के ज़िक्र में 'तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु' और 'तज्री मिन तह्ति हिमुल अन्हारु' फ़रमाया है, जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि जन्नत में बहुत ज़्यादा नहरें होंगी जो जन्नत वालों के बाग़ों और कोठों में बह रही होंगी।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत की नहरें मुश्क के पहाड़ों के नीचे से निकलती हैं।[2] यानी नहरों का मर्कज़ और निकलने की जगह मुश्क के पहाड़ों की जड़ है।

हज़रत सिमाक रज़ि० (अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० के शागिर्द) फ़रमाते है कि मैंने मदीना में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु

१. तिर्मिज़ी शरीफ़, २. तर्ग़ीब,

तआला अन्हु से मुलाक़ात की और अर्ज़ किया कि जन्नत की ज़मीन कैसी है? उन्होंने फ़रमाया कि चांदी की ज़मीन है जो ख़ूब सफ़ेद है, गोया कि आईना है। मैंने सवाल किया कि उसकी रोशनी कैसी है? फ़रमाया, क्या तूने वह वक़्त नहीं देखा, जिस वक़्त सूरज निकलने (के क़रीब) होता है (उस वक़्त जो दर्मियानी रोशनी होती है) बस वही रोशनी जन्नत में है, लेकिन उस रोशनी में न धूप का असर है, न ठंडक है। मैंने अर्ज़ किया, उसकी नहरों का क्या हाल है? क्या वह गढ़ों के अंदर चलती हैं? फ़रमाया नहीं, (गढ़ों में नहीं चलती हैं) बल्कि वे (हमवार) ज़मीन पर चलती हैं और बिना निचान के अपनी जगह पर इस तरह जारी है कि (अपनी हद से) इधर उधर नहीं फैलती हैं। अल्लाह तआला ने इन नहरों से फ़रमाया कि (तैयार) हो जाओ। पस जारी हो गयी। मैंने पूछा कि जन्नत में कपड़ों के जोड़े कैसे हैं? फ़रमाया, जन्नत में एक पेड़ है, जिसमें अनार की तरह के फल हैं। जब अल्लाह तआला का दोस्त (यानी जन्नती) उसमें से लिबास लेने का इरादा करेगा तो उसमें से टहनी उसके पास आकर फट जाएगी, जिसमें से रंग-बिरंग के सत्तर जोड़े निकल आएंगे। फिर वह टहनी जुड़ जाएगी और अपनी जगह लौट जाएगी।[1]

नहरे कौसर

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि (मेराज की रात को) मैं जन्नत में गुज़र रहा था, एक ऐसी नहर सामने आयी जिसके दोनों किनारों पर मोतियों के क़ुब्बे थे। फ़रिश्ता (जो मेरे साथ था), उससे मैंने पूछा, यह क्या है? उसने जवाब दिया कि यह कौसर है, जो अल्लाह ने आप को इनायत फ़रमायी है। इसके बाद फ़रिश्ते ने उस की मिट्टी में अपना हाथ मार कर मुश्क नि...ला, फिर मेरे सामने 'सिद्-रतुल मुंतहा'[2] बुलंद किया गया। पस मैंने उसके पास बहुत बड़ा नूर

१. तर्ग़ीब

२. 'सिद्रः' कहते हैं बेरी के पेड़ को और 'मुंतहा' के मानी हैं इन्तिहा की जगह। हदीस में आया है कि यह एक पेड़ है बेरी का सातवें आसमान में, ऊपरी दुनिया से जो (हुक्म व रोज़ियां वग़ैरह) आती हैं, वे पहले सिदरतुल मुंतहा तक पहुंचते हैं, फिर वहां से फ़रिश्ते ज़मीन पर लाते हैं, इसी तरह जो आमाल

देखा।'[1] हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से यह भी रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया गया कि कौसर क्या है ? आप ने फ़रमाया कि वह एक नहर है जो अल्लाह तआला ने मुझे इनायत फ़रमायी है—दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठी है।[2]

जन्नत के चश्मे

सूरः मुर्सलात में इर्शाद है—

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَّعُيُونٍ ۙ وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी ज़िलालिंव्व उयूनिंव्व फ़वाकिह मिम्मा यश्तहून०

यहां से चढ़ते हैं, वे भी सिद्रतुल मुंतहा तक पहुंचते हैं, फिर वहां से उठाये जाते हैं।' (बयानुल क़ुरआन)

हदीसे मेराज में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं सिद्रतुल मुंतहा की तरफ़ उठाया गया तो देखता हूं कि उसके फल (यानी बेर) हिज्र के मटकों के बराबर हैं और उसके पत्ते हाथी के कानों के बराबर हैं (मिश्कात पृ० ५२७) साथ ही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सिद्रतुल मुंतहा की शाख के साए में सौ वर्ष सवार चल सकता है या यों फ़रमाया कि उसके साए में सौ सवार साया ले सकते हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़ बाब 'मा जा अ फ़ी सिफ़ति सिमारि जन्नति')

१. तिर्मिज़ी, २. तिर्मिज़ी,

फायदा—नहरे कौसर अल्लाह पाक की ख़ास देन है जो जन्नत में है और सिर्फ़ आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मिला है और किसी नबी को नहरे कौसर नहीं मिली। हां, तिर्मिज़ी शरीफ़ की कुछ रिवायतों में है कि क़ियामत के मैदान में हर नबी के लिए हौज होगा, जिससे अपनी-अपनी उम्मत को पिलाएंगे। उलेमा-ए-किराम ने लिखा है कि क़ियामत के मैदान में हौज़ का होना आंहजरत सल्ल० के लिए कोई नयी बात नहीं है, क्योंकि हर नबी के लिए हौज़ होने की रिवायत मौजूद है, हां, जन्नत में नहरे कौसर सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल० ही के लिए ख़ास है। साथ ही यह भी लिखा कि आंहजरत सल्लम के हौज़ के लिए जो कौसर कहा गया है, वह इसलिए है कि जन्नत की नहर कौसर से उसमें पानी आएगा।

'बेशक मुत्तक़ी लोग सायों में और चश्मों में और ख़्वाहिश के मुताबिक़ मेवों में होंगे।'

सूरः ग़ाशियः में फ़रमाया—

وُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۙ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۙ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ۙ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۘ

वजूहुंय्यौ म इज़िन नाअिमतुल्लि सअ्यिहा राज़ियतुन फ़ी जन्नतिन आलियतिल्ला तस्मअु फ़ीहा लाग़ियः फ़ीहा अैनुन जारियः०

'बहुत से चेहरे उस दिन रौनक़ वाले होंगे, अपने आमाल की वजह से ख़ुश होंगे, ऊंची जन्नत में होंगे, जिसमें कोई बकवास न सुनेंगे, उसमें बहते हुए चश्मे होंगे।'

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर 'अैनुन जारियः' की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं, 'इन्नमा हाज़ा जिंसुन, यानी फ़ीहा अयूनिन जारियात'। मतलब यह हुआ कि जन्नत में बहुत ज़्यादा चश्मे जारी हैं। अैन वाहिद (एक वचन) जो आया है, इससे जिंस मुराद है, जो कम व ज़्यादा सब के लिए बोला जाता है। जन्नत के चश्मों का ज़िक्र जन्नत के बाग़ों के तज़्किरे में गुज़र चुका है और अभी 'पीने की चीज़ों के बयान' में भी आता है।

फायदा— सूरः ग़ाशियः की आयत में फ़रमाया है कि जन्नत में कोई बकवास न सुनेंगे। यह मज़मून दूसरी आयतों में भी आया है। सूरः नबा में है—'ला यस्मअू न फ़ीहा लग़्वंव्व ला तासीमा' (कि वहां न कोई बेहूदा बात सुनेंगे, न झूठ) और सूरः वाक़िअः में इर्शाद है, 'ला यस्मअू न फ़ीहा लग़्वंव्व ला तासीमा०' (यानी वे हज़रात न वहां बकबक सुनेंगे, न कोई बेहूदा बात)। हासिल सब का यह है कि जन्नतियों का दिल व दिमाग़ और जिस्म के तमाम हिस्से हर तरह के अम्न में होंगे। ना-गवारी लाने वाली कोई भी चीज़ न नज़रों के सामने आएगी, न कानों में पड़ेगी, न वहां बक-बक, झक-झक का कुछ काम होगा, न लड़ाई-झगड़े का मौक़ा आएगा, आपस में न तू-तू, मैं-मैं होगी, न कोई किसी पर जुम्ले कसेगा, न ताने करेगा।

जन्नत में पीने की चीज़ें

सूरः दह्र में फ़रमाया है—

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۚ عَيْنًا

يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝

इन्नल अब्रा र यश्रबू न मिन कासिन का न मिज़ाजुहा काफ़ूरा अैनंय्यशरबु बिहा अिबादुल्लाहि युफ़ज्जिरू न हा तफ़्जीरा०

'बेशक नेक लोग ऐसे जाम से (शराबें पिएंगे, जिस में काफ़ूर की मिलावट होगी, ऐसे चश्मे से, जिस से ख़ुदा के (ख़ास) क़रीबी बन्दे पिएंगे और जिस को वे (ख़ुदा के ख़ास बन्दे जहां चाहेंगे) बहा कर ले जाएंगे।'

तफ़्सीरे दुर्रे मंसूर में इब्ने शौज़ब से रिवायत है कि जन्नतियों के हाथ में सोने की छड़ियां होंगी और इन छड़ियों से जिस तरफ़ इशारा करेंगे, नहरें उसी तरफ़ को चलेंगी।'

तफ़्सीर मआलिमुत्तंज़ील में 'युफ़ज्जिरू नहा तफ़्जीरा०' की तफ़्सीर करते हुए लिखा है 'अय यक़ूदू न हा हैसु शाऊ मिम् मनाज़िलिहिम व क़ुसूरिहिम' यानी जन्नती हज़रात अपनी मंज़िलों और मुहल्लों में जहां चाहेंगे, ले जाएंगे।

यह जो फ़रमाया है शराब के जाम में काफ़ूर की मिलावट होगी, उस से दुनिया की काफ़ूर न समझ लिया जाए, वह जन्नती काफ़ूर होगा, जो दिल व दिमाग़ को तफ़रीह करने और क़ूवत पहुंचाने के लिए और शराब में एक तरह की ख़ास हालत और लज़्ज़त लाने के लिए मिलाया जाएगा। फिर कुछ आयतों के बाद इर्शाद है—

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۝ عَيْنًا
فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝

व युस्क़ौ न फ़ीहा कासन का न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला अनन फ़ीहा तुसम्मा सल्सबीला०

'और वहां उन को ऐसा जाम पिलाया जाएगा, जिसमें सोंठ की मिलावट होगी यानी ऐसे चश्मे से उन को पिलाया जाएगा, जिसका नाम 'सलसबील' है।

इस आयत से मालूम हुआ कि जन्नतियों की शराब में सोंठ की भी मिलावट होगी, लेकिन इस से दुनिया की सोंठ न समझ ली जाए, यह वहां की सोंठ होगी जो शराब के मज़े को दोगुना कर देगी और इससे शौक़ व ख़ुशी की हालत पैदा होगी। यहां एक चश्मे का नाम 'सल्सबील'

१ ुल क़ुरआन,

फ़रमाया है। क़तादा रह० का क़ौल है कि उस को सल्सबील कहने की वजह यह है कि जन्नतियों की मर्ज़ी के मुताबिक़ जिधर को वे चाहेंगे, जारी होगा। हज़रत मुजाहिद रह० ने फ़रमाया कि ख़ूब तेज़ी के साथ बहने की वजह से उस का नाम यह तज्वीज़ हुआ। ज़ुज्जाज का क़ौल है कि उस को सलसबील इस लिए कहा जाएगा कि उस की शराब निहायत ही आसानी और रवानी से सलामती के साथ हलक़ में उतर जाएगी। (मआलिमुत्तंज़ील) मुफ़स्सिर इब्ने कसीर 'तुसम्मा सलसबीला' की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं कि 'अय अज़्ज़ंजबीलु ऐनुन फ़िल जन्नति तुसम्मा सल्सबीला' यानी ज़ंजबील जन्नत में एक चश्मा है, जिसे सल्-सबील कहा जाता है।

सूरः तत्फ़ीफ़ में इर्शाद है—

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُوْنَ ۝ تَعْرِفُ
فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۝
خِتَامُهٗ مِسْكٌ ۚ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ۝ وَ
مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ۝

इन्नल अब्रा र ल फ़ी नअीमिन अलल अराइकि यन्ज़ुरू न तअ-रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम नज़्रतन्नअीम युस्क़ौ न मिर्रहीक़िम मख़्तूम ख़ितामुहू मिस्क व फ़ी ज़ालि क फ़ल् य त नाफ़ सिल मु त नाफ़िसू न व मिज़ाजुहू मिन तस्नीम अैनंय्यश्रबु बिहल मुक़र्रबून०

'बिला शुब्हा नेक लोग नेमतों में होंगे, मसहरियों पर देखते होंगे। ऐ मुख़ातब ! तू उन के चेहरों में नेमतों की बशाशत (ख़ुशी) पहचानेगा। उन को पीने के लिए ख़ालिस शराब सर ब-मुहर मिलेगी, जिस पर मुश्क की मुहर होगी, और लालच करने वाले को ऐसी चीज़ का लालच करना चाहिए और इस शराब की मिलावट तस्नीम से होगी यानी ऐसे चश्मे से जिस से मुक़र्रब बन्दे पिएंगे।'

'रहीक़िम मख़्तूम' यानी ख़ालिस शराब में तस्नीम की मिलावट होगी। तस्नीम जन्नतियों की सब से ज़्यादा बेहतर और उम्दा शराब होगी। उस का चश्मा बहता होगा, उस चश्मे से मुक़र्रिबीन पिएंगे और 'अस्हाबुल यमीन' की शराब में उस चश्मे से मिलावट की जाएगी।'

१. मआलिमुत्तंज़ील,

जन्नत के परिंदे

जन्नतियों के खाने के लिए परिंदों का गोश्त भी मिलेगा, जैसा कि सूरः वाक़िअः में 'व लह्मि तैरिम्मिम्मा यश्तहून०' फ़रमाया है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में लंबी-लंबी गरदनों वाले ऊंटों के बराबर परिन्दे हैं जो जन्नत के पेड़ों में चलते-फिरते हैं। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! वह तो बड़ी ही अच्छी ज़िन्दगी में हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया कि उन के खाने वाले उन से ज़्यादा बेहतरीन ज़िन्दगी में होंगे। तीन बार यों ही फ़रमाया (फिर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को बशारत देते हुए इर्शाद हुआ कि) मैं उम्मीद करता हूं कि तुम उन लोगों में से होगे जो इन परिन्दों को खाएंगे।'[1]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि (जब) किसी जन्नती को परिन्द (खाने की) भूख होगी, तो (खुद-ब-खुद) परिंद आ कर उस के सामने गिर जाएगा जो पका हुआ होगा और उस के टुकड़े बने हुए होंगे। एक हदीस में है कि परिंद जन्नती के दस्तरख्वान पर खुद-ब-खुद गिर पड़ेगा, जो बग़ैर आग और धुएं के (भुना और पका हुआ) होगा, जन्नती उस में से इतना खाएगा कि उस का पेट भर जाएगा। बाद में वह परिंद उड़ जाएगा।[2]

जन्नती पूरी इज़्ज़त के साथ खाएं-पियेंगे, खाने-पीने में भरपूर लज़्ज़त महसूस करेंगे और उनके खाने-पीने का पेशाब-पाखाना न बनेगा

सूरः साफ़्फ़ात में फ़रमाया—

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۝ فَوَاكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ۝ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝

उलाइ क लहुम रिज़्क़ुम मअ्लूमुन फ़ वाकिहु व हुम मुक्रिमून फ़ी जन्नातिन्न ओम अला सुरुरिम मु त क़ाबिलीन०

'उन के लिए रोज़ी मालूम है यानी मेवे और वे बड़ी इज़्ज़त से आराम के बाग़ों में आमने-सामने तख़्तों पर होंगे।'

१. अहमद ,२. तर्ग़ीब अन अबिद्दुन्या,

सूरः तूर में फ़रमाया—

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ۝ فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी जन्नातिंव न ओम फ़ाकिही न बिमा आता-हुम रब्बुहुम व वक़ाहुम रब्बुहुम अज़ाबल जहीम० कुलू वश्रबू हनीअम बिमा कुन्तुम तअ्मलून०

'बिला शुब्हा मुत्तक़ी लोग बाग़ों में और ऐश के सामानों में होंगे। उन का परवरदिगार जो कुछ उन को इनायत फ़रमाएगा, इस से खुश होंगे और उन का रब उन को दोज़ख के अज़ाब से बचाए रखेगा। (उन से कह दिया जाएगा) कि मज़े के साथ खाओ-पियो, उन (नेक) आमाल के बदले जो तुम दुनिया में करते थे।'

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नती जन्नत में खाएंगे, पिएंगे, और न थूकेंगे, न पेशाब-पाख़ाना करेंगे, न नाक साफ़ करने की ज़रूरत होगी। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, खाने का क्या होगा ? (यानी जब पेशाब-पाखाना न होगा तो हज़्म होकर फ़ुज़्ला (गंदा हिस्सा) कैसे निकलेगा ?) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि डकार आएगी और मुश्ककी तरह (खुश्बूदार) पसीना आएगा। (इस डकार और पसीना से पेट खाली हो जाएगा), अल्लाह की तस्बीह और तारीफ़ इस तरह बे-अख़्तियार जारी होगी, जैसे तुम को बे-अख़्तियार सांस आता है।'[1]

कुछ रिवायतों में तस्बीह के साथ तक्बीर का भी ज़िक्र है।[2]

यानी जिस तरह दुनिया में सांस लेने के लिए तुम को न कोई तक्लीफ़ होती है, न सांस लेने का इरादा करना पड़ता है और न दूसरे कामों में लगा रहना सांस लेने से रोकता है, इसी तरह जन्नती लोग अल्लाह की तस्बीह और तह्मीद में हर वक़्त लगे होंगे। नेमतों और लज़्ज़तों में लगा रहना उन को अल्लाह की तस्बीह व तह्मीद से ग़ाफ़िल

१. मुस्लिम शरीफ़, २. ज म उल फ़वाइद,

न करेगी, बे-अख्तियार तस्बीह और तह्मीद जारी होगी और तस्बीह व तह्मीद से न थकेंगे, न मन को बोझ होगा।

साहिबे फ़त्हुल बारी लिखते हैं कि जन्नतियों की ज़िंदगी का ज़रिया अल्लाह की तस्बीह को बना दिया गया है। जिस तरह दुनिया में सांस लेकर जीते हैं, इसी तरह वहां खुदा की तस्बीह से ज़िंदा रहेंगे और वजह इस की यह है कि जन्नती लोगों के दिल अल्लाह तआला की मारफ़त से रोशन होंगे और उस की मुहब्बत से भरपूर होंगे। यह मुहब्बत महबूब की याद का ऐसा नशा पिलाएगी कि बे-अख्तियार ज़िक्र में लगे रहेंगे।

फ़ायदा——बुखारी शरीफ़ की एक रिवायत में है (जो पहले गुज़र चुकी है) कि 'युसब्बिहूनल्ला ह बुक्रतंव्व अशीया०' यानी जन्नती सुबह व शाम अल्लाह की तस्बीह बयान करेंगे और यहां फ़रमाया कि सांस जी तरह हर वक्त तस्बीह जारी होगी। इसके बारे में हदीस के कुछ शरह लिखने वालों से यह नक़ल किया गया है कि सुबह-शाम के ज़िक्र करने से हर वक्त ज़िक्र करना ही मुराद है। इसलिए दोनों का मतलब यही हुआ, लेकिन हदीस के बयान का ढंग बताता है कि अपने अख्तियार से तो सुबह-शाम तस्बीह में लगे होंगे और बे-अख्तियार तस्बीह हर वक्त जारी रहेगी और इस की ताईद व तस्दीक़ इस से होती है कि जहां सुबह व शाम का ज़िक्र है, वहां फ़ेल (क्रिया) 'युसब्बिहून' इस्तेमाल फ़रमाया है, जिस का फ़ाअिल (कर्त्ता) जन्नती हैं और जहां बे-अख्तियार सांस की तरह तस्बीह का ज़िक्र है, वहां 'युल् हमून' फ़ेले मज्हूल (कर्मवाच्य) ज़िक्र किया गया है।

यों समझिए कि गो बे-अख्तियार भी तस्बीह जारी होगी, लेकिन खुद अपने अख्तियार से भी सुबह-शाम में लगे होंगे, ताकि अपनी तबियत से अपनाई गई तस्बीह की लज़्ज़त से महरूम न रहें और अगरचे वहां इबादत और ज़िक्र व फ़रमांबरदारी के जिम्मेदार न होंगे, मगर उन की शराफ़त और सआदत (सौभाग्य) यह गवारा न होने देगी कि अपने महबूब और इनाम देने वाले और एहसान करने वाले की याद के लिए बा-क़ायदा, जान-बूझ कर वक्त न निकालें।

जन्नतियों के बर्तन

सूरः ज़ुख्रुफ़ में फ़रमाया——

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ

الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خَالِدُوْنَ ۝

युताफ़ु अलैहिम बिसिहाफ़िम मिन ज़ ह बिंव्व अक्वाबिन व फ़ीहा मा तश्तहीहिल अन्फ़ुसु व तलज़्ज़ुल अअ्युनु व अन्तुम फ़ीहा खालिदून०

'उन के पास सोने के प्याले और गिलास लाए जाएंगे (जिन में खाने-पीने की चीज़ें होंगी और वहां वे चीज़ें होंगी दिलों को जिन की ख्वाहिश हो और जिन से आंखों को लज़्ज़त हो और (उन से कह दिया जाएगा) कि तुम यहां हमेशा रहोगे।'

सूरः दह्र में फ़रमाया——

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ
قَوَارِيْرَا ۙ قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۝

व युताफ़ु अलैहिम बिआनियतिम मिन फ़िज़्ज़तिंव्व अक्वाबिन कानत क़वारीरा क़वारीर मिन फ़िज़्ज़तिन क़द्दरूहा तक़्दीरा०

'और उन के पास (खाने-पीने की चीज़ें पहुंचाने के लिए) चांदी के बर्तन लाए जाएंगे और आबखोरे (भी लाए जाएंगे) जो शीशे के होंगे (और) वे शीशे-चांदी के होंगे, जिन को भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ से भरा होगा।'

यानी इन आबखोरों में इस ढंग से पीने की चीज़ें भर कर पेश की जाएंगी कि उस वक्त की ख्वाहिश के बिल्कुल मुताबिक़ होंगी, न कुछ बचेगा, न कमी पड़ेगी।[1]

ऊपर की आयत से मालूम हुआ कि जन्नतियों के बर्तन सोने और चांदी के होंगे।

फ़ायदा——सूरः ज़ुख्रुफ़ की आयत से मालूम हुआ कि जन्नत में जो भी कुछ होगा, उस का अंदर-बाहर नफ़ीस और हसीन होना। दिलों को खुशगवार और आंखों के लिए मज़ेदार होगा, कोई भी ऐसी चीज़ न होगी, जिस की शक्ल आंखों को भली न लगे।

जन्नत की शराब से नशा न होगा और न सर-दर्द होगा

जन्नती हज़रात लज़्ज़त के लिए शराब पिएंगे, लेकिन यह शराब वहां की शराब होगी, जो साफ़ सुथरी होगी और जिस से न अक़्लों में

१. मआलिमुत्तंज़ील,

ख़राबी आएगी, न नशा होगा, न पेट में दर्द होगा, न गाली-गुफ़्तार की नौबत आएगी। सूरः साफ़्फ़ात में इर्शाद है—

يُطَافُ عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ط
لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ۝

युताफ़ु अलैहिम बिकासिम मिम मअ़ीन बैज़ा अ लज़्ज़तिल्लिश्शारिबीन ला फ़ीहा ग़ौलुन व ला हुम अन्हा युन्ज़फ़ून०

'उन के पास शराब का ऐसा जाम लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा हुआ होगा। वह शराब सफ़ेद होगी, पीने वालों के लिए लज़्ज़तदार होगी, न उसमें सरदर्द होगा और न उस से अक़्ल में खराबी आएगी।'

सूरः तूर में 'ला लग़्वुन फ़ीहा व ला तासीम' फ़रमाया है, यानी इस शराब की वजह से न बक-बक करने और बेकार की बकवास करने की नौबत आएगी, और न गुनाह के काम होंगे।

सूरः दह्र में फ़रमाया—

وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ط

व सक़ाहुम रब्बहुम शराबन तहूरा०

'और उन का रब ख़ूब पाकीज़ा शराब पिलायेगा।'

साहिबे मआलिमुत्तंज़ील 'तहूरा' की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं कि—

طاهر من الاقذار والاقذار لم تدنسه الايدى والارجل كخمر الدنيا

ताहिरुम मिनल अक़्ज़ारि वल् अक़्ज़ारि लम तदनसुहुल्ऐदी वल अर्जु ल क ख़म्रिद्दुन्या०

यानी 'वह शराब घिनौने और नापाक हिस्सों से पाक होगी और दुनिया की शराब जो हाथ वग़ैरह पड़ने से मैली हो जाती है, इस मैलेपन से वह शराब महफ़ूज़ होगी।'

फिर अबूक़ुलाबा और इब्राहीम का क़ौल नक़्ल करते हैं कि जन्नत की शराब को 'तहूर' इस लिए फ़रमाया कि उसका पेशाब न बनेगा, बल्कि मुश्क की तरह ख़ुश्बूदार पसीना बन जाएगी और इस की शक्ल यह होगी कि जन्नतियों के पास खाना लाया जाएगा, उसे खा कर फ़ारिग़ हो जाने के बाद शराब तहूर लायी जाएगी, उस को पी कर उन के पेट पाक व साफ़ हो जाएंगे और उस वक़्त का खाया हुआ खाना उन की खालों से पसीना

बन कर निकल जायगा जो तेज़ ख़ुश्बूदार मुश्क से ज़्यादा उम्दा होगा, जिस से उन के पेट खाली हो जाएंगे और ख़्वाहिश फिर वापस आ जाएगी। मुक़ातिल कहते हैं कि शराब तहूर जन्नत के दरवाज़ों के बाहर पानी का एक चश्मा है, जो शख़्स इस में से पीएगा अल्लाह जल्ल शानुहू उसके दिल को कीना, कपट, खोट, गंदगी और जलन से पाक व साफ़ फ़रमा देंगे।

जन्नतियों की सवारियां

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या जन्नत में घोड़े होंगे ? आप ने फ़रमाया, अगर अल्लाह तआला ने तुझ को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया और तू ने वहां सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पर सवार होने की ख़्वाहिश की तो ऐसा ही कर दिया जाएगा, वह घोड़ा तुझे ले कर जन्नत में उड़ेगा, जहां तू जाना चाहेगा, ले जाएगा, फिर एक शख़्स ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत में ऊंट भी होंगे ? आप ने उस शख़्स को वह जवाब नहीं दिया जो पहले सवाल करने वाले को दिया था, बल्कि यह फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला ने तुझ को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया तो तुझ को हर वह चीज़ मिलेगी जिस को तेरा दिल चाहेगा और जिस से तेरी आंखों को लज़्ज़त हासिल होगी।[1]

देहात के रहने वाले एक सहाबी रज़ि० ने हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं घोड़ों को बहुत पसंद करता हूं, क्या जन्नत में घोड़े होंगे ? आप ने फ़रमाया अगर तुझ को जन्नत में दाख़िल किया गया तो तुझ को याक़ूत का घोड़ा दिया जाएगा जिस के दो बाज़ू होंगे, फिर तुझ को उस पर सवार किया जाएगा और जहां तू जाना चाहेगा, यह घोड़ा तुझ को उड़ा कर ले जाएगा।[2]

जन्नतियों की आपस में मुहब्बत

सूरः हिज्र में फ़रमाया—

१. तिर्मिज़ी शरीफ़, २. तिर्मिज़ी, अबूअय्यूब की रिवायत,

وَنَزَعْنَا مَا فِیْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰی سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِیْنَ ہ

व नज़अ़ना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन इख़्वानन अ़ला सुरुरिम मु त क़ाबिलीन०

'और उन के दिलों में जो दुनिया का कपट था, हम उस को निकाल देंगे, सब भाइयों की तरह रहेंगे, तख़्तों पर आमने-सामने बैठा करेंगे।'[1]

यानी दुनिया में अगर किसी वजह से आपस में कपट था, तो जन्नत में दाख़िले से पहले ही निकाल कर अलग कर दिया जाएगा ताकि जन्नत जैसी पाक जगह कपट और जलन से पाक व साफ़ रहे। बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि—

قُلُوْبُهُمْ عَلٰی قَلْبِ رَجُلٍ وَّاحِدٍ لَا اخْتِلَافَ بَیْنَهُمْ وَلَا تَبَاغُضَ

क़ुलूबुहुम अ़ला क़ल्बि रजुलिन वाहिदिन ला इख़्तिला फ़ बैन हुम व ला तबाग़ुज़०

'यानी जन्नतियों के दिल एक ही शख़्स के दिल की तरह होंगे, आपस में न कोई इख़्तिलाफ़ होगा और न कपट होगा।'

दिल अलग-अलग होंगे, मगर दिल की हालत एक ही जैसी होगी यानी सब एक दूसरे को चाहते होंगे और आपस में बे-मिसाल एका व मुहब्बत होगी। हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब तक अल्लाह तआ़ला सीनों का कपट न निकाल देगा, कोई मोमिन जन्नत में दाख़िल न होगा, जिस तरह हमलावर दरिंदे को हटा कर दूर कर दिया जाता है, इसी तरह अल्लाह तआ़ला मोमिनों के दिलों से कपट को निकाल देंगे।'

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन बंदे (पुलसिरात से पार हो कर) दोज़ख़ से निजात पा जाएंगे, तो जन्नत-दोज़ख़ के दर्मियान एक पुल पर उन को रोक दिया जाएगा और आपस में जो एक दूसरे पर दुनिया में ज़ुल्म किए थे, उन का क़िसास (बदला) दिला दिया जाएगा, यहां तक कि जब ज़ुल्म व ज़्यादती से (बिल्कुल) पाक व साफ़ हो जाएंगे तो उन को जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त दे दी जाएगी, सो क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है इन में से हर आदमी जन्नत वाली जगह को उस से ज़्यादा जानेगा,

१. इब्ने कसीर,

जितना कि अपने दुनिया के घर के रास्ते को जानता था।'[1]

जबकि जन्नत में दाख़िल होने से पहले ही आपस में हक़ों और ज़ुल्म व ज़्यादतियों का फ़ैसला हो जाएगा और दिलों में जो खोट और कपट था, वह बाहर निकाल दिया जाएगा, तो दुश्मनी की कोई वजह बाक़ी न रहेगी और जबकि मामूली जन्नती भी इस ख़्याल में होगा कि मुझे वह कुछ मिला है, जो किसी को भी न मिला, तो जलन की कोई वजह न होगी।[2]

जन्नतियों की दिल्लगी

सूरः तूर में फ़रमाया—

یَتَنَازَعُوْنَ فِیْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِیْهَا وَلَا تَاْثِیْمٌ ہ

य त ना ज़ अ़ न फ़ीहा कासल्ला लग़्वुन फ़ीहा व ला तासीम०

'वहां आपस में शराब के जाम की छीना झपटी करेंगे, उस शराब में (नशा न होगा, इस लिए उस के पीने से) बक-बक न होगी और न कोई बेहूदा बात (अ़क़्ल व संजीदगी के ख़िलाफ़ निकलेगी)।'

यह छीना झपटी हंसी-मज़ाक़ के तौर पर होगी, क्योंकि वहां किसी के लिए कुछ भी किसी चीज़ की कमी न होगी। दोस्तों में छीन-झपट कर खाने से मज़ा दो गुना हो जाता है, जिसे एक साथ मिल कर रहने वाले ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं।

जन्नतियों का कपड़ा-गहना

सूरः कहफ़ में इर्शाद फ़रमाया—

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ط
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ یُحَلَّوْنَ فِیْهَا
مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّیَلْبَسُوْنَ ثِیَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّ
اِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕیْنَ فِیْهَا عَلَی الْاَرَآئِكِ ط نِعْمَ الثَّوَابُ ط وَ
حَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ط

१. बुख़ारी शरीफ़,
२. जैसा कि मुस्लिम की एक रिवायत में है कि जो जन्नत में आख़िर में पहुंचेगा, वह रुत्बे के एतबार से सबसे मामूली होगा।

इन्नल्लज़ी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीअु अज्र मन अह्सन न अ म ला उलाइ क लहुम जन्नातु अ़द्निन तज्री मिन तह्तिहिमुल अन्हारु युहल्लौ न फ़ीहा मिन अ सावि र मिन ज़ ह बिंव्व यल्बसू न सियाबन खुज़्रम मिन सुन्दुसिंव्व इस्तब्रक़िम मुत्तकिईं न फ़ीहा अ़लल अराइकि निअ्मस्सवाबु व हसुनत मुर्त फ़ क़ा०

'बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए तो ऐसे लोगों का बदला हम बरबाद न करेंगे। जो अच्छे तरीक़े पर काम करे, ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, उन के नीचे नहरें जारी होंगी, उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और ये लोग हरे रंग के कपड़े पहनेंगे जो सुन्दुस और इस्तब्रक़ के होंगे और वहां मसहरियों पर तकिए लगाए बैठेंगे। क्या ही अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी आराम की जगह है।'

इस आयत में एक तो जन्नती बन्दों के कंगनों का ज़िक्र फ़रमाया कि उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे। सूरः दह्र में फ़रमाया, उन को चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। दोनों आयतों को मिलाने से मालूम हुआ जन्नतियों के कंगन सोने के भी होंगे और चांदी के भी। दूसरे जन्नतियों के कपड़े का ज़िक्र फ़रमाया कि सुन्दुस और इस्तब्रक़ के हरे कपड़े पहनेंगे। सुन्दुस बारीक रेशम को और इस्तब्रक़ मोटे रेशम को कहा जाता है यानी दोनों तरह के रेशम के कपड़े होंगे। ख्वाहिश के मुताबिक़ बारीक और मोटे पेश कर दिए जाएंगे, जिस कपड़े को भी चाहेंगे पहन लेंगे।

मुफ़स्सिर बैज़ावी लिखते हैं कि दोनों क़िस्म के कपड़े का ज़िक्र फ़रमाया है ताकि मालूम हो जाए कि वहां नफ़्स की ख्वाहिश और आंखों की लज़्ज़त के मुताबिक़ सब होगा। और यह जो फ़रमाया कि हरे रंग के कपड़े होंगे, उस के बारे में मुफ़स्सिर बैज़ावी लिखते हैं, 'हरे रंग को इस लिए चुना गया कि वह सब रंगों में बेहतर है और उस में दूसरे रंगों के मुक़ाबले में ताज़ापन ज़्यादा मालूम होता है। और यह बात भी ज़िक्र के क़ाबिल है कि दूसरे रंगों का इंकार नहीं किया गया है। एक रंग का ज़िक्र है, बाक़ी रंगों के ज़िक्र से खामोशी है। अगर बंदों की ख्वाहिश होगी तो अल्लाह तआ़ला दूसरे रंगों के कपड़े भी इनायत फ़रमाएंगे।

सूरः हज में फ़रमाया—

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا

وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ۝

इन्नल्ला ह युद्खिलुल्लज़ी न आ म नू व अमिलुस्सालिहाति जन्नातिन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु युहल्लौ न फ़ीहा मिन अ साविर मिन ज़ ह बिंव्व लुअ्लुअंव्व लिबासुहुम फ़ीहा हरीर०

'बेशक अल्लाह तआ़ला उन लोगों को बाग़ों में दाखिल फ़रमायेगा जो ईमान लाये और नेक अमल किए। उन बाग़ों के नीचे नहरें जारी होंगी, उन लोगों को सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उन लोगों का लिबास रेशम का होगा।'

इस आयत से मालूम हुआ कि जन्नती सोने के कंगनों के अलावा मोतियों का ज़ेवर भी पहनेंगे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मोमिन का ज़ेवर वहां तक पहुंचेगा जहां तक वुज़ू का पानी पहुंचता है।[1] मालूम हुआ कि हाथों पर ज़ेवर सिर्फ़ पहुंचे ही पर न होगा बल्कि जहां तक वुज़ू का पानी पहुंचता है, वहां तक होगा।

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत जो में कुछ है, उसमें से अगर इतनी सी मिक़्दार (इस दुनिया में) ज़ाहिर हो जाए जिस को एक नाखून उठा ले, तो इस की वजह से आसमान व ज़मीन के दर्मियान जो कुछ है, रौनक़दार हो जाए और अगर जन्नतियों में से एक मर्द और (दुनिया की तरफ़) झांक ले, जिसकी वजह से उसके कंगन ज़ाहिर हो जाएं तो सूरज की रोशनी को इस तरह बे-नूर कर दे जैसे सूरज-सितारों की रोशनी को बे-नूर कर देता है।[2]

सवाल — कंगन तो औरतों के हाथों में अच्छे लगते हैं, मर्दों पर भला क्या सजेंगे ?

जवाब — किसी भी लिबास या ज़ेवर का सजना और सजाना हर जगह के रस्म व रिवाज पर तै होता है। दुनिया में अगरचे आमतौर से मर्द कंगन नहीं पहनते, मगर जन्नत में ख्वाहिश करके पहनेंगे और सभी को देखने में भले मालूम होंगे। घड़ी की चेन ही को ले लीजिए, तरह-तरह की बनावट और चमक और सजावट वाली पहनी जाती है और मर्दों के हाथों में अच्छी लगती है, बल्कि कुछ क़ौमों में तो ब्याह-शादी के मौक़े पर दूल्हा

१. मुस्लिम शरीफ़, २. तिर्मिज़ी शरीफ़

को कंगन पहनाते हैं और बिरादरी के सब लोग देख कर खुश होते हैं। चूंकि रिवाज है, इस लिए सब की नजर भी क़ुबूल करती है और सब के दिल भी अच्छा समझते हैं और इस रिवाज पर इस क़दर अड़े हुए हैं कि शरीअत के मना करने का भी ख्याल नहीं करते।

सवाल— पहुंचे से लेकर कुहनी तक जेवर ही जेवर होना भी तो अच्छा नहीं मालूम होता ?

जवाब— यह भी दुनिया के रिवाज में बुरा मालूम होता है, वहां सबको पसंद आयेगा और ख्वाहिश करके पहनेंगे। कुछ क़ौमों में यहां भी रिवाज है कि उनकी औरतें कुहनी तक चूड़ियां पहनती हैं, जो उनकी पूरी क़ौम में पसंद की जाती हैं।

फ़ायदा— क़ुरआन मजीद में जन्नती के जेवर के ज़िक्र में फ़रमाया है कि उनको जेवर पहनाया जाएगा (युहल्लौ न फ़ीहा) और लिबास के बारे में मुस्तक़्बिल (मुज़ारेअ) का सेगा (यल्बसू न) लाया गया है यानी वे खुद पहनेंगे। यह तरीक़ा इस बात के समझाने के लिए अपनाया गया है कि जेवर तो उनको खादिम लोग पहनाएंगे, जैसा कि दुनिया के बादशाहों को ताज वग़ैरह खादिम लोग पहनाते हैं और लिबास जन्नती खुद पहनेंगे, क्योंकि वह अपने ही हाथ से पहनना ठीक मालूम होता है, खास तौर से वह लिबास जो छिपाने की जगह को ढांकने के लिए हो।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में जो शख्स दाखिल होगा (हमेशा) नेमतों में रहेगा और (कभी) मुहताज न होगा, न उसके कपड़े पुराने होंगे और न जवानी फ़ना होगी।'

कपड़े न पुराने होंगे, न मैले होंगे, हां जब बदलने को जी चाहेगा, तो बदल लेंगे, लेकिन यह बदलना फटने या मैला होने की वजह से न होगा।

जन्नतियों के ताज

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नतियों के

१. मुस्लिम,

सरों पर ताज होंगे, जिन में से मामूली मोती (की चमक) इतनी ज्यादा होगी कि वह पूरब व पच्छिम के बीच (की खाली जगह) को रोशन कर सकता है।' यानी इन ताजों में से अगर मामूली मोती इस दुनिया में आ जाए तो पूरब से पच्छिम तक पूरी फ़ज़ा को रोशन कर दे।

जन्नतियों के बिछौन

सूरः रहमान में फ़रमाया—

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

मुत्तकिई न अला फ़ुरुशिम बताइनुहा मिन इस्तबरक़ व जनल जन्नतैनि दान फ़ बि अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०

'वे ऐसे फ़र्शों पर तकिया लगाये हुए होंगे जिनके अस्तर मोटे रेशम के होंगे और दोनों बाग़ों का फल नज़दीक होगा, सो ऐ जिन्न व इंस ! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे ?'

इस्तबरक़ मोटे रेशम को कहते हैं। इसके बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इर्शाद फ़रमाया कि 'उख्बिर्तुम बिल बताइनि फ़ कै फ़ बिज़्ज़हाइरि०' (यानी यह तो तुमको बिस्तरों के अस्तर यानी नीचे के कपड़े के बारे में खबर दी गयी है कि वह इस्तबरक़ का होगा, पस इसी पर सोच लो कि उनके अबरे यानी ऊपर के कपड़े कैसे खूबसूरत और ऊंचे होंगे।)

फिर सूरः रहमान के खत्म पर फ़रमाया—

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝

मुत्तकिई न अला रफ़रफ़िन खुज़िरंव्व अब्क़रीयिन हिसान० फ़बि-अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान० त बारकस्मु रब्बि क ज़िल जलालि वल इकरामि०

'वे लोग हरे रंग की चादरों पर (जो पलंग पोश की तरह) बिस्तरों पर होंगी और अजीब खूबसूरत बिछौनों पर तकिया लगायें होंगे, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। बरकत वाला है नाम तेरे रब का जो जलाल और इकराम वाला है।'

१. तिर्मिज़ी शरीफ़,

ऊपर की आयतों में बुलंद दर्जों वाले जन्नतियों के बिस्तरों का ज़िक्र था, इस लिए वहां फ़रमाया कि उनके बिस्तरों के अस्तर इस्तब्रक़ के हों गे और ऊपर के अब्रों का ज़िक्र छोड़ दिया ताकि अस्तर पर सोच करके समझ लें। यहां कम दर्जे वाले बिस्तरों का ज़िक्र है जिनमें अस्तर का ज़िक्र नहीं है, ऊपर ही के कपड़ों को बता दिया है।

सूरः ग़ाशियः में फ़रमाया—

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝ وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝
وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝ وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ۝

फ़ीहा सुरु रुम मर्फ़ू अतुंव्व अक्वाबुम मौज़ू अतुंव्व नमारिक़ु मस्फ़ूफ़तुंव्व ज़राबीयु मब्सूसः०

'इसमें ऊंचे-ऊंचे तख़्त हैं और रखे हुए आबख़ोरे हैं और बराबर-बराबर लगे हुए गद्दे हैं और सब तरफ़ क़ालीन फैले पड़े हैं।'

सूरः वाक़िअः में 'अस्हाबुल यमीन' की नेमतों के ज़िक्र में फ़रमाया है, 'व फ़ुरुशिम मर्फ़ूअः (ऊंचे-ऊंचे बिछौनों में होंगे)। इसकी तफ़्सीर में है, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इन बिछौनों की बुलंदी इतनी है जैसे आसमान व ज़मीन के बीच फ़ासला है, जो पांच सौ वर्ष की दूरी है।'[1]

जन्नतियों के तख़्त

सूरः वाक़िअ में इर्शाद है—

وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۝ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ ثُلَّةٌ
مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۝ مُّتَّكِئِينَ عَلَيْهَا
مُتَقَابِلِينَ ۝

वस्साबिक़ूनस्साबिक़ून उलाइ क ल मुक़र्र बून फ़ी जन्नातिन्नईम सुल्ल तुम मिनल अव्वली न व क़लीलुम मिनल आख़िरीन अला सुरुरिम मौज़ूनतिम मुत्तकिई न अलैहा मु त क़ाबिलीन०

'और सबक़त[2] ले जाने वाले, वे (तो) सबक़त ले जाने वाले हैं, वे

१. तिर्मिज़ी शरीफ़, २. आगे बढ़ना,

मुक़र्रबीन (ख़ास) है, वे नेमतों के बाग़ों में होंगे, उनकी बड़ी जमाअत अगले लोगों में से और थोड़े लोग पिछले लोगों में से होंगे (सोने के तारों से) बुने हुए तख़्तों पर तकिए लगाए आमने-सामने बैठे होंगे।'

सूरः तूर में 'मुत्तकिईन अला सुरुरिम मस्फ़ूफ़तिन' फ़रमाया है यानी सफ़ों के तरीक़े पर बराबर-बराबर बिछे हुए तख़्तों पर तकिए लगाये बैठे होंगे और ये सफ़ें आमने-सामने होंगी जैसा कि 'मुतक़ाबिलीन' से ज़ाहिर है। सुरुरिन 'सरीर' (यानी तख़्त) की जमा (बहुवचन) है। 'मौज़ूनतिन' यानी मंसूजतिन यानी वे तख़्त बुने हुए होंगे।

हज़रत इब्ने अब्बास. रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि उनकी बनावट सोने के तारों से होगी, जैसे दुनिया में कुर्सियां बांस वग़ैरह की खपच्चियों से या चारपाइयां बानों से बुनी हुई होती हैं। मुफ़स्सिर सुद्दी ने फ़रमाया, मर्मूलतुन बिज़्ज़ह बि वल्लुअ लु इ' (यानी वे तख़्त सोने से और मोतियों से बने हुए होंगे)[1]। सूरः यासीन में इर्शाद है—

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ۝ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ
عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ۝

इन्न अस्हाबल जन्नतिल यौ म फ़ी शुग़ुलिन फ़ाकिहून हुम व अज़्वाजुहुम फ़ी ज़िलालिन अलल अराइकि मुत्तकिऊन०

'बिला शुब्हा जन्नती उस दिन अपने कामों में ख़ुशदिल होंगे। वे और उनकी बीबियां पर्दे वाले सजे-सजाए तख़्तों पर तकिए लगाए होंगे।' 'अराइकि' 'अरीकतुन' की जमा (बहुवचन) है। अरीका उस सजे-सजाये तख़्त को कहते हैं, जिस पर परदा लटका हुआ हो। साहिबे तफ़्सीरे मज़्हरी 'अराइक' की तफ़्सीर में लिखते हैं, यानी 'अस्सुरुरु फ़िल हिजालि' (दुल्हन को बिठाने के लिए जो परदा डाल कर ख़ास कोनों की सजावट करते हैं, इसमें जो तख़्त सजा करके बिछाया जाता है, वह अरीका है) दोनों आयतों के मिलाने से मालूम हुआ कि जन्नतियों के बैठने के लिए तख़्त भी होंगे और अराइक भी होंगे। यहां यह बात ग़ौर के क़ाबिल है कि क़ुरआन शरीफ़ में 'सुरुरिम मुत क़ाबिलीन' भी फ़रमाया है जिस में ख़ाली 'तख़्त' का ज़िक्र है। (यह सूरः आराफ़ और सूरः साफ़्फ़ात में है) और 'अला सुरुरिम मौज़ूनतिन' भी फ़रमाया है, जिसमें सुरुर की सिफ़त (गुण) 'मौज़ूनतिन' बयान हुई है। हो सकता है कि 'सुरुरिम मौज़ूनतिन' सिर्फ़ मुक़र्रबीन के लिए ख़ास हों और उनके अलावा दूसरे तख़्त आम जन्नत

१. इब्ने कसीर,

वालों के लिए हों और यह भी मुम्किन है कि सभों के लिए 'सुरुरिम मौज़ूनतिन' हों और एक जगह सिफ़त ज़िक्र कर देने पर बस कर लिया गया हो।

बहरहाल जैसे भी तख़्त हों, अजीब व ग़रीब और पसंद और चाव के होंगे। उनकी ख़ूबसूरती का अन्दाज़ा यहां नहीं लगाया जा सकता। यह जो फ़रमाया 'अला सुरुरिम मुतक़ाबिलीन' कि 'तख़्तों पर आमने-सामने बैठेंगे', इसके बारे में मुफ़स्सिर इब्ने कसीर, हज़रत मुजाहिद (ताबई) से नक़ल फ़रमाते हैं कि 'ला यंज़ुरु बअ्ज़ुहुम फ़ी क़फ़ा बअ्ज़' (यानी जन्नती आपस में एक दूसरे की पीठ न देखने पाएंगे) मतलब यह है कि उठने-बैठने में और साथ देने और मज्लिस जमाने में किसी के पीछे बैठने का मौक़ा न होगा, वहां रहने-सहने का ढंग ऐसा होगा कि किसी को पीठ नज़र न आएगी। आपस में जब किसी को देखेंगे तो चेहरों ही पर नज़र पड़ेगी। मज्लिस में बैठेंगे तो दुनिया वालों की तरह (आगे-पीछे) न बैठेंगे, दुनिया में जगह की कमी है, वहां कमी न होगी और दूरी व नज़दीकी भी बे-हक़ीक़त होगी। हर शख़्स हर जगह से दूसरे की बात सुन लेगा। साहिबे तफ़्सीरे मज़्हरी 'मुतक़ाबिलीन' की तफ़्सीर में लिखते हैं, 'व स फ़ हुमुल्लाहु तआला बिहुस्निल अशीरति व तह्ज़ीबिल अख़्लाक़ि व सफ़ाइल मुअद्दति० (यानी अल्लाह जल्ल शानुहू ने जन्नतियों के अच्छे रहन-सहन ख़ुलूस, मुहब्बत और संवरे अख़्लाक़ का ज़िक्र फ़रमाया है) उनकी मुहब्बत और मेल-जोल की ख़ूबी इसको गवारा न करेगी कि कोई एक-दूसरे के पीछे बैठे।

विल्दान और ग़िल्मान

जन्नतियों की ख़िदमत के लिए ग़िल्मान व विल्दान होंगे, जिन का ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में कई जगह आया है—

सूरः तूर में इर्शाद है—

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ٥

व यतूफ़ु अलैहिम ग़िल्मानुल्लहुम क अन्नहुम लुअ्लुउम मक्नून०

'और उनके पास (मेवे वग़ैरह लाने के लिए) ऐसे लड़के आएं-जाएंगे जो ख़ास उन्हीं की ख़िदमत के लिए होंगे (और बेइंतिहा ख़ूबसूरती की वजह से ऐसे होंगे कि) गोया वह हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं।'

सूरः दह्र में इर्शाद है—

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ٥

व यतूफ़ु अलैहिम विल्दानुम मुख़ल्लदून इज़ा रऐतुहुम हसिब्तहुम लुअ्लुअम मंसूरा०

'और उनके पास (ख़िदमत के लिए) ऐसे लड़के आएं-जाएंगे जो हमेशा एक ही हाल पर रहेंगे। ऐ मुख़ातब! जब तू उनको देखे तो यों समझे कि मोती हैं, जो बिखेर दिए गए हैं।'

'विल्दान' 'वलद' की जमा है और 'ग़िल्मान' 'ग़ुलाम' की जमा है, दोनों लगभग एक ही मानी रखते हैं। जन्नतियों के जोड़े के लिए अल्लाह तआला ने 'हूर ईन' पैदा फ़रमायी हैं जो हैं तो मुअन्नस (स्त्री) मगर उनकी पैदाइश इन्सानों की पैदाइश की तरह नहीं है, बल्कि अल्लाह ने सिर्फ़ अपनी क़ुदरत से उनको पैदा फ़रमाया है। इसी तरह जन्नतियों की ख़िदमत के लिए ग़िल्मान व विल्दान यानी ऐसे लड़के पैदा फ़रमाये हैं (या जन्नत में दाख़िले से पहले पैदा फ़रमायेंगे), जो हमेशा नव-उम्र रहेंगे। यह भी बिल्कुल नयी मख़्लूक़ (जीव) है, जिनकी पैदाइश इन्सान की तरह नहीं हुयी, बल्कि अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से पैदा फ़रमा दिया है। क़ुरआन शरीफ़ में उन लड़कों की सिफ़त 'मुख़ल्लदून' बयान फ़रमायी है। साहिबे तफ़्सीरे मज़्हरी उसकी तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं, 'ला यमूतू न व ला यहरमून व ला य त ग़य्यरू न व यब्क़ून अ ब दन अला शक्लिल विल्दान (यानी वे लड़के न मरेंगे, न बूढ़े होंगे, न उनकी नव-उम्री में तब्दीली आयेगी (बल्कि) हमेशा लड़कों की शक्ल पर रहेंगे। इब्ने कसीर लिखते हैं, 'ला तज़ीदु आआरुहुम अन तिल्कस्सिन्नि' (यानी उनकी उम्रें लड़कपन की उम्र से आगे न बढ़ेंगी)

सूरः दह्र की तफ़्सीर में विल्दान की तश्रीह करते हुए साहिबे मज़्हरी लिखते हैं कि 'यन्शाहुमुल्लाहु तआला लिख़िद मतिल मुअ्मिनीन अव विल्दानुल क फ़ रति यज्अलुहुमुल्लाहु ख़ुद्दामल्लि अह्लिल जन्नति' (यानी उन विल्दान को अल्लाह तआला मोमिनों की ख़िदमत के लिए पैदा फ़रमाएंगे या ये काफ़िरों की ना-बालिग़ औलाद होगी जिनको अल्लाह तआला जन्नतियों का ख़िदमतगार बना देंगे।)

इससे मालूम होगा कि विल्दान के बारे में दो क़ौल हैं, एक यह कि नयी मख़्लूक़ होगी, दूसरे यह कि दुनिया में काफ़िरों के जो नाबालिग़ लड़के मर गये हैं, वे 'विल्दानुम मुख़ल्लदून' होंगे जो जन्नतियों की ख़िदमत में लगा दिए गये हैं, लेकिन इस दूसरे क़ौल को खोज-पडताल करने वालों

ने इसे माना नहीं है, चुनांचे बयानुल क़ुरआन के लिखने वाले लिखते हैं कि 'विल्दान' यानी 'ग़िल्मान' के बारे में तर्जीह देने के क़ाबिल क़ौल, जिसको ख़ाज़िन ने सही और हक़ को उस ख़्याल के तहत शामिल किया है, यह है कि वे एक मुस्तक़िल मख़्लूक़ हैं जैसे हूर और ग़िल्मान में मानी विलादत (पैदा होने) के नहीं और हिक्मत उनके ख़ादिम बनाने में सिर्फ़ सुकून व ख़ुशी है बे-शहत।[1]

सूरः तूर में ग़िल्मान को 'लुअ् लुउम मक्नून' कहा है यानी वे लड़के हुस्न और चमक में और रंग की सफ़ाई-सुथराई में उस मोती की तरह होंगे जो सीपी में छिपा रहता है, जिस पर धूल-मिट्टी का गुज़र नहीं होता और सूरः दह्र में 'लुअ् लुअम मंसूरा' फ़रमाया है यानी वे लड़के बिखरे हुए मोतियों की तरह होंगे, क्योंकि ख़िदमत में लगे हुए हर तरफ़ चल फिर रहे होंगे। हज़रत हसन और क़तादा रज़ि० से रिवायत है कि कुछ सहाबा रज़ि० ने प्यारे नबी सल्ल० से अर्ज़ किया कि ख़ादिम (की ख़ूबसूरती) का यह हाल है तो मख़्दूम (जिसकी ख़िदमत की जाए) का क्या हाल होगा ? इसके जवाब में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मख़्दूम को ख़ादिम पर उस जैसी बड़ाई होगी जैसी चौदहवीं के चांद को तमाम सितारों पर होती है।[2]

जन्नत में पाकीजा बीवियां

सूरः आले इम्रान में फ़रमाया—

لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ
فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝

लिल्लज़ीन त्तक़ौ अिन्द रब्बिहिम जन्नातुन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा व अज़्वाजुम मुतह्हरतुंव्व रिज़्वानुम मिनल्ल"हि वल्लाहु बसीरुम बिल अिबादि०

'ऐसे लोगों के लिए जो अल्लाह से डरते हैं, उनके रब के पास ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं, इनमें वे हमेशा रहेंगे और (इनके लिए वहां पाकीज़ा बीवियां हैं और अल्लाह की ख़ुशी है और अल्लाह तआला बंदों को देखते हैं।'

१. तफ़्सीर वाक़िअः (बयानुल क़ुरआन), २. तफ़्सीरे मज़्हरी.

'पाकीज़ा बीवियां' यानी ऊपरी मैल-कुचैल और भीतरी बुराइयां (धोखा-फ़रेब) से और हर तक्लीफ़ देने वाली आदत और बात से और हैज़ व निफ़ास वग़ैरह से बिल्कुल पाक व साफ़ होंगी।'

हज़रत मुजाहिद (ताबई) ने पाक बीवियों की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाया कि वे हैज़ से और पाख़ाना-पेशाब से और बलग़म व थूक से और मनी से और बच्चा जनने से पाक होंगी (जब जनना न होगा तो उसके बाद निफ़ास का ख़ून भी न आयेगा) हज़रत क़तादा (ताबई) ने फ़रमाया कि 'मुतह्हरतुम मिनल अज़ा वल मासिम' (यानी वह तक्लीफ़ देने वाली हर चीज़ से और नाफ़रमानी करने से पाक होंगी)[2]

ख़ुलासा यह है कि जन्नत की बीवियां ऊपरी और भीतरी ऐबों से पाक होंगी, उनको न थूक आएगा, न पाख़ाने की ज़रूरत होगी, न पेशाब की, न मनी निकलेगी, न हैज़ आएगा, न निफ़ास होगा, न बदन और कपड़े पर मैल होगा। इस ज़ाहिरी सुथरेपन और पाकीज़गी के साथ उनकी आदतें और उनके अख़्लाक़ भी बहुत ही अच्छे होंगे, दिल व जान से शौहरों पर न्यौछावर होंगी, उनमें नाफ़रमानी का नाम नहीं, बद-तमीज़ी करने का काम नहीं, धोखा-धड़ी, दग़ा, बे-वफ़ाई से ख़ाली होंगी, दुनिया की औरतें, जिनका ईमान पर ख़ात्मा होगा, मोमिनों की बीवियां होंगी और उनके अलावा हूरे ईन में से बीवियां दी जाएंगी, दोनों क़िस्म की बीवियां हुस्न व जमाल और भीतरी-बाहरी अच्छाई, बेहतर अख़्लाक़ और प्रेम व मुहब्बत में और सफ़ाई-सुथराई में (जिसका बयान अभी हुआ) बहुत ही ऊंची होंगी।

जन्नती बीवियों की खूबसूरती और दूसरी बातें

सूरः वाक़िअः में फ़रमाया—

إِنَّا أَنْشَأْنٰهُنَّ إِنْشَاءً فَجَعَلْنٰهُنَّ أَبْكَارًا عُرُبًا أَتْرَابًا لِأَصْحٰبِ الْيَمِينِ ۝

इन्ना अन्शअ् ना हुन्न इन्शाअन फ़ ज अल्ना हुन्न अब्कारन अुरुबन अत्राबल लि अस्हाबिल यमीनि०

'हमने इन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है यानी हमने उनको ऐसा बनाया कि वे कुंवारियां हैं, (शौहरों के लिए) प्यारी हैं, (उनकी) हम-उम्र हैं। (यह सब जो ऊपर बयान हुआ) अस्हाबुल यमीन के

१. २. इब्ने कसीर,

लिए है।'

दुनिया वाली मोमिन औरतें जिस हाल और जिस उम्र में भी दुनिया से इंतिक़ाल कर गयी हों बहर हाल जन्नत में जवान उम्र और कुंवारी बना दी जाएंगी और वहां के हुस्न व जमाल से सजा दी जाएंगी। हदीस शरीफ़ में है कि एक बड़ी बी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई। और अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल। दुआ फ़रमा दीजिए, अल्लाह जल्ल शानुहू मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे। आपने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ फ़्लां की मां ! जन्नत में कोई बुढ़िया दाखिल न होगी। यह सुन कर वह रोती हुई रवाना हो गयीं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हाज़िर लोगों से फ़रमाया, उससे कह दो कि मेरा मतलब यह नहीं है कि तुम जन्नत में न जाओगी, बल्कि बात यह है कि वह जन्नत में दाखिल होते वक़्त बूढ़ी न होगी (क्योंकि उस वक़्त जवानी दे दी जाएगी) बिला शुब्हा अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि, 'इन्ना अन्शअ्ना हुन्न इन्शाअन फ़ जअ्लनाहुम अब्कारा' आंहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दिल्लगी के तौर पर ऐसे लफ़्ज़ फ़रमाये, जिससे वह दूसरा मतलब समझ गयीं। कभी-कभी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मज़ाक़ भी फ़रमा लेते थे, जिसका एक वाक़िआ यह भी है जो ऊपर बयान हुआ। मज़ाक़ में भी आप सही और सच बात फ़रमाते थे। 'अब्का-रा' बिक्र की जमा है, यानी कुंवारी जब भी उनके शौहर क़रीब होंगे, हम-बिस्तर होंगे तो हमेशा कुवांरी ही पाएंगे।[1]

साहिबे बयानुल क़ुरआन लिखते हैं कि क़रीब होने के बाद फिर कुंवारी हो जाएंगी,[2] हसीन व जमील और प्यरी औरतें। यह 'ऊरूब' की जमा है। 'अत्राबा' हम उम्र और हमजोली औरतें मुराद हैं, इसका वाहिद (एक वचन) तुरुब है। जिस तरह मर्द सब तीस-तैंतीस वर्ष के होंगे, (जिसका मतलब बयान हो चुका है) इसी तरह उनकी बीवियां भी उन ही की उम्र की होंगी। क़द और जिस्म में और उम्र में बराबर होंगी, दोनों तरफ़ से दिल मिले हुए होंगे। शक्ल व सूरत में एक तरह के होंगे, दुनिया में लोग अपने से कम उम्र वाली लड़की से विवाह करना पसंद करते है, क्योंकि कमसिन में हुस्न व जमाल और प्यार का अन्दाज़ ज्यादा होता है, लेकिन चूंकि जन्नत बीवियों में (चाहे वे दुनिया की मोमिन औरतें हों, चाहे वे हूरे ईन हों, हुस्न व जमाल और प्यार की हालतें पूरी होंगी,

१. शमाइले तिर्मिज़ी, २. मिर्क़ात,

३. इसी तरह अबूसईद से दुर्रे में भी रिवायत आती है।

इस लिए हम उमरी महबूब बनाने में रुकावट न डालेगी, बल्कि ज्यादा प्यार व मुहब्बत की वजह बन जाएगी। शौहर व बीवी बचकानापन से भी खाली होंगे और बुढ़ापे से भी बचे रहेंगे, हमेशा दर्मियानी उम्र रहेगी, जिस में समझ-होश पूरा होता है। मुफ़स्सिर सुदी ने अत्राबा की तफ़्सीर बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि वे आपस में अख़्लाक़ और प्यार व मुहब्बत के एतबार से बराबर होंगे, बहनों की तरह मेल से रहेंगी। आपस में जलन, कपट नाम को न होगा, सौकनों वाला तनाव और लड़ाई व दुश्मनी न होगी।'[1]

सूरः साद में फ़रमाया—

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ

व अिन्दहुम क़ासिरातुत्तर फ़ि अत्राबुन०

'और उनके पास निगाह को रोक रखने वाली हम उम्र बीवियां होंगी,' यानी उनकी नज़र सिर्फ़ शौहरों ही पर पड़ेगी और दिलबर शौहरों ही से लगा हुआ होगा। शौहरों के अलावा किसी ग़ैर की तरफ़ ज़रा नज़र उठा कर भी न देखेंगी।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि एक सुबह या एक शाम को अल्लाह के रास्ते में निकल जाना सारी दुनिया से, और जो कुछ दुनिया में हैं, उस सबसे बेहतर है और अगर जन्नत की औरतों में से कोई औरत ज़मीन की तरफ़ को झांक ले, तो आसमान व ज़मीन के दर्मियान जो कुछ है, उसको रोशन करदे और खुश्बू से भर दे। फिर फ़रमाया कि हां, उसके सर का दोपट्टा सारी दुनिया से और दुनिया में जो कुछ है, उस सबसे बेहतर है।'[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि बेशक जन्नत की औरत की पिंडली की सफ़ेदी सत्तर जोड़ों के अन्दर से नज़र आएगी, यहां तक कि पिंडली के अन्दर का गोला तक नज़र आएगा और यह (बात) इसलिए (हक़) है कि अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाते हैं, 'क अन्नहुन्नल याक़ूतु वल मर्जानु' (वे औरतें इतनी चमकीली और रंग की साफ़ होंगी कि गोया वे याक़ूत हैं या मर्जान हैं) फिर फ़रमाया कि याक़ूत तो ऐसा पत्थर है कि अगर तू उसमें लड़ी दाखिल करदे और फिर उसको साफ़ तरीक़े पर देखना चाहे, तो पत्थर के बाहर देख सकता हैं।'

हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि

१. इब्ने कसीर, २. बुख़ारी शरीफ़, ४. तिर्मिज़ी,

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 'क अन्न हुन्नल याक़ूतु व ल मर्जानु' की तशरीह फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि जन्नती मर्द (जो जन्नती औरत का शौहर होगा) उसके चेहरे पर नज़र डालेगा तो उसका गाल आईने से ज़्यादा साफ़ नज़र आएगा और जन्नती औरत पर जो मोती होंगे, उनमें यह मामूली मोती पूरब-पच्छिम के दर्मियान को रोशन कर सकता है और उस पर सत्तर जोड़े होंगे (जो इतने साफ़-सुथरे और चमकदार होंगे) कि उनके अन्दर को नज़र पार हो जाएगी और जन्नती मर्द उसके कपड़ों के बाहर से उसकी पिंडली का गूदा देख लेगा।[1]

हूरे ईन

हूर जमा है हौराउ की यानी वह औरत जिसकी आंख की सफ़ेदी और स्याही ख़ूब गहरी और तेज़ हो। ईन जमा है ऐनाउ की यानी वह औरत जिसकी आंखें बड़ी-बड़ी और चौड़ी हों। क़ुरआन और हदीस की ज़ुबान के लिए लफ़्ज़ हूर बोला जाता है। जिनको अल्लाह पाक ने अपनी क़ुदरत से जन्नती मर्दों की बीवी के लिए पैदा फ़रमाया है। ये औरतें दुनिया वाली मोमिन औरतों के अलावा होंगी। सूरः दुख़ान में फ़रमाया है—'वज़व्वज्नाहुम बिहूरिन ईनुन' (और हूरे ईन के साथ हम उनका ब्याह कर देंगे)।

सूरः रहमान में फ़रमाया—

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

फ़ीहिन्न ख़ैरातुन हिसानुन फ़ बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान हूरुम मक़्सूरातुन फ़िल ख़ियामि फ़ बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान लम यत्मिस्हुन्न इन्सुन क़ब्लहुम व ला जान्न फ़ बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०

'इन (बहिश्तों के मुहल्लों) में ख़ूबसूरत, अच्छे अख़्लाक़ वाली औरतें होंगी, सो ऐ इन्स व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? वे हूरें ख़ेमों में हिफ़ाज़त से होंगी, सो ऐ इंस व जिन्न

1. अहमद, इब्ने हब्बान, बैहक़ी,

तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? (वह जिनके लिए चुनी जाएंगी) उनसे पहले किसी इंसान या जिन्न ने उनको न छुआ होगा। सो ऐ इंस व जिन्न! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

सूरः वाक़िअः में फ़रमाया—

وَحُورٌ عِينٌ ۝ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝

व हूरुन ईनुन क अम्सालिल्लुअ्लुइल मक्नून०

'और उनके लिए हूरे ईन होंगी छिपे रखे हुए मोती की तरह।'

सूरः साफ़्फ़ात में फ़रमाया—

وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ۝ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ۝

व अिन्दहुम क़ासिरातुत्तर्फ़ि ईनुन क अन्न हुन्न बीज़ुम मक्नून०

'और उनके पास नीचे निगाह रखने वाली बड़ी-बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी (जिनकी रंगत इतनी साफ़ होगी कि) गोया अन्डे हैं छिपे हुए।'

पहली आयत में छिपे मोती की तरह फ़रमाया, यानी वे औरतें सफ़ाई और सफ़ेदी में ताज़ा मोतियों की तरह चमकती होंगी और दूसरी आयत में छिपे हुए अंडे से तश्बीह (उपमा) दी गई है जो धूल-गर्द और दाग़ से बिल्कुल हिफ़ाज़त में रहता है। मुफ़स्सिर इब्ने कसीर रह० ने हज़रत हसन रह० से 'बैज़ुम मक्नून' की तफ़्सीर में नक़ल किया है कि 'महसूनुन ला तम्सकुहुल् ऐदी' (यानी वह अंडा जो हाथों में पहुंचने से पहले हिफ़ाज़त से होता है।)

मुफ़स्सिर बैज़ावी लिखते हैं कि अंडे से तश्बीह जो दी गई है, वह तश्बीह सफ़ाई में भी है और ज़रदी मिली हुई सफ़ेदी में भी है, जिस सफ़ेदी में किस क़दर ज़रदी मिलाई गई हो, वह बदन का बेहतरीन रंग माना गया है।

हूरे ईन की एक ख़ास दुआ और शौहरों से हमदर्दी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रहमत के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बे-शुब्हा रमज़ान के लिए शुरू साल से ख़त्म साल तक जन्नत सजायी जाती है। पस रमज़ान का पहला दिन होता है तो अर्श के नीचे हूरे ईन पर जन्नत के पत्तों की हवा चलती है, जिसका असर लेकर वे यों दुआ करती हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! अपने बन्दों से हमारे लिए ऐसे शौहर मुक़र्रर

फ़रमा, जिनसे हमारी आंखें ठंडी हों और हम से उनकी आंखें ठंडी हों।

हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु का यह बयान है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया में जो कोई औरत अपने शौहर को तक्लीफ़ देती है तो हूरे ईन में से उसकी बीवी दुनिया की बीवी से कहती है कि तेरा बुरा हो, उसको तक्लीफ़ न दे, क्योंकि वे तेरे पास कुछ दिनों तक का मेहमान है, बहुत जल्द तुझसे जुदा हो कर हमारे पास पहुंच जाएगा।[1]

इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि जिस तरह जन्नत और उसकी दूसरी नेमतें उस वक्त मौजूद व मख़्लूक़ हैं। हाफ़िज़ मुंज़िरी रह० ने 'अत्तर्ग़ीब व त्तर्हीब' में उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से एक लम्बी रिवायत नक़ल किया है, जिसमें यह भी है कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! (जन्नत) में दुनिया वाली (मोमिन) और ये अफ़ज़ल होंगी या हूरे ईन? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया वाली (मोमिन) औरतें हूरे ईन से इतनी अफ़ज़ल होंगी जैसे (लिहाफ़) का ऊपर का कपड़ा उसके अंदर वाले अस्तर से बेहतर होता है। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! यह किस वजह से? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इसलिए कि दुनिया वाली औरतें नमाज़ें पढ़ती हैं और रोज़े रखती हैं और अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) की इबादत करती हैं। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! कभी-कभी एक औरत दुनिया में (एक के बाद एक) दो या तीन या चार मर्दों से निकाह कर लेती है, फिर उसे मौत आ जाती है, वह जन्नत में दाख़िल होगी और उसके शौहर भी उसके साथ जन्नत में होंगे तो (इस शक्ल में) उनमें से उनका शौहर कौन होगा? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया कि ऐ उम्मे सलमा रज़ि०! उस को अख़्तियार दे दिया जाएगा जिसके साथ चाहे रहे, इसलिए वह उसको अख़्तियार कर लेगी जो उनमें अख़्लाक़ के एतबार से सबसे अच्छा होता था और कहेगी, ऐ रब! दुनिया के अंदर यह उन सबसे ज़्यादा मेरे साथ अख़्लाक़ वाला था, उसी को मेरा जोड़ा बना दीजिए। यह फ़रमा कर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे सलमा! अच्छा अख़्लाक़ दुनिया व आख़िरत की भलाई ले उड़ा।[2]

---

१. तिर्मिज़ी शरीफ़, २. मुंज़री,

जन्नत में हूरों का तराना

यह रिवायत सनद के एतबार से मज़बूत नहीं है। कुछ रिवायतों में यह भी मिलता है कि दुनिया में जिस औरत ने शौहर के बाद निकाह कर लिया वह जन्नत में आख़िरी शौहर को मिलेगी, जो भी शक्ल हो, बहरहाल यह हक़ है कि जन्नती मर्दों और औरतों में कोई ऐसा न होगा जो बग़ैर जोड़े के रह जाए। कुछ लोग अक्सर पूछते-फिरते हैं कि दो शौहरों वाली का क्या होगा? इस मस्अले पर ईमान तो टिका हुआ है नहीं जो बहस बनाया जाए। अल्लाह तआला जो तज्वीज़ फ़रमाएंगे, सब के हक़ में बेहतर ही होगा।

मर्दों के लिए बहुत-सी बीवियां

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में हूरे ईन के जमा होने की एक जगह है, जिसमें आवाज़ें बुलंद करती हैं और यह कहती हैं कि हम हमेशा रहने वाली है, कभी हिलाक न होंगी, हम हमेशा आराम व चैन में रहेंगी, कभी मुहताज न होंगी। हम (अपने शौहरों से हमेशा) ख़ुश रहेंगी, कभी नाराज़ न होंगी, उसके क्या कहने जो हमारे लिए है और हम उसके लिए हैं (यह तराना ऐसे मन भावन अंदाज़ में गाती हैं कि) ऐसी आवाज़ें मख़्लूक़ में किसी ने नहीं सुनी हैं।[1]

जन्नत में एक मर्द को कितनी बीवियां मिलेंगी, इसके बारे में बहुत सी रिवायतें आयी हैं। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है, 'लि कुल्लिम रिइन ज़ौज तानि मिनल हूरिल ऐन०' (यानी हूरे ईन में से हर शख़्स की दो बीवियां होंगी।)

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़त्हुलबारी में इस पर तफ़्सील से बहस की है और बहुत सी रिवायतें जमा की हैं। मुस्नद अहमद की एक रिवायत नक़ल की है कि मामूली जन्नती के लिए दुनिया की बीवियों के अलावा बहत्तर बीवियां होंगी। अबू यअ्ला की एक रिवायत में है कि दो बीवियां बनी आदम में से होंगी और बहत्तर बीवियां वे होंगी जिन्हें अल्लाह तआला (इस दुनिया में) पैदा फ़रमाएंगे।

---

१. तिर्मिज़ी शरीफ़,

इब्ने माजा रह० की एक रिवायत में है कि बहत्तर बीवियां हूरे ईन से और बहत्तर दुनिया की औरतों में से मिलेंगी। इनके अलावा और भी रिवायतें साहिबे फ़त्हुलबारी ने नक़ल की हैं। इस सिलसिले की रिवायतें सनद के एतबार से मजबूत भी हैं और कमज़ोर भी हैं। कुल मिलाकर यह ज़रूर मालूम होता है कि जन्नतियों को दूसरी नेमतों के साथ ज्यादा बीवियों की नेमत से भी नवाज़ा जाएगा और ऐसा तो कोई भी न होगा जिसको कम से कम दो बीवियां न मिलें। बाक़ी रही तायदाद में इख़्तिलाफ़ की बात, तो यह अमल की बड़ाइयों के एतबार से सोचा जा सकता है यानी यों कह सकते हैं कि अपने-अपने भले कामों के हिसाब से दर्जों में जो इख़्तिलाफ़ होगा, दर्जों के इस इख़्तिलाफ़ की वजह से बीवियों की तायदाद भी मुख़्तलिफ़ होगी।

कुछ लोग यह भी सवाल किया करते हैं कि एक मर्द को बहुत सी बीवियां मिलेंगी तो एक बीवी को कितने मर्द मिलेंगे? यह सवाल बहुत बेहूदा है, क्योंकि मर्द के लिए बहुत सी बीवियां होना नेमत है और औरत के लिए बहुत से शौहर होना शरीफ़ों, शरमदारों और ग़ैरत वालों के नज़दीक बहुत ऐब की बात है, जबकि ऐसी बे-इज़्ज़ती दुनिया में नहीं की जाती तो जन्नत में कौन गवारा करेगा? जन्नती औरतों की ख़ूबी क़ुरआन शरीफ़ में 'क़ासिरातुत्तरफ़ि' बयान हुई है। वे नज़रें पस्त रखने वाली और अपने शौहर के अलावा दूसरे पर नज़र डालने से बचने वाली होंगी। यों कहिए कि वह तो एक ही शौहर पर राज़ी होंगी और दिल व जान से निछावर हो रही होंगी और यहां के लोग ख़्वामख़्वाह उनको ज्यादा शौहर दिलाने की वकालत कर रहे हैं, जबकि एक शौहर से जी भरा हुआ है और दिल लगा हुआ है तो दूसरे की ज़रूरत ही क्या? अफ़सोस कि नादान एतराज़ करने वालों ने जन्नती औरतों को गंदी औरतों पर और यूरोप की नई तहज़ीब वाली हरजाई लौंडियों पर सोच लिया। चाहिए तो यह था कि जन्नती औरतों के ढंग पर अपने यहां की औरतों को परदे में बिठा कर 'क़ासिरातुत्तरफ़ि' और 'मक़्सूरातुन फ़िल-ख़ियामि' बनाते मगर नादानों ने हूरों से परदे का सबक़ लेने के बजाए उल्टा यह किया कि जन्नती औरत के लिए बे-इज़्ज़ती तज्वीज़ कर दी।

मर्दाना ताक़त

जन्नतियों की बीवियां, चूंकि बहुतसी होंगी, इस लिए उनकी मर्दाना

ताक़त भी बढ़ा दी जाएगी। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु से रिवायत है कि किताब वालों (यानी यहूदियों) में से एक शख़्स रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने सवाल किया कि ऐ अबुल क़ासिम![1] क्या आप फ़रमाते हैं कि जन्नत वाले खाएंगे और पिएंगे? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हां, क़सम उस ज़ात की, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, एक जन्नती को खाने-पीने और (बीवियों से) हम-बिस्तर होने में सौ मर्दों की ताक़त दे दी जाएगी। यह सुन कर उस यहूदी ने सवाल किया कि जो खाता-पीता है, उस को (पेशाब-पाख़ाने की) ज़रूरत होती है इसलिए जब जन्नती खाएं, पिएंगे तो पेशाब-पाख़ाना की ज़रूरत होती होगी, हालांकि जन्नत ऐसी जगह नहीं है, जिसमें कोई चीज़ तक्लीफ़ देने वाली हो। (फिर वहां पेशाब-पाख़ाना जैसी घिनौनी चीज़ कैसे होगी) इसके जवाब में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया (खाने-पीने के बाद) उन को पाख़ाना-पेशाब करने की ज़रूरत न होगी, बल्कि भरे हुए पेट को ख़ाली करने की ज़रूरत पसीने से (पूरी) हो जाया करेगी (यानी) उन के खालों से मुश्क की तरह पसीना बहेगा जिस से पेट हल्का हो जाएगा।[2]

इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नतियों को सौ मर्दों की ताक़त दे दी जाएगी। तिर्मिज़ी शरीफ़ में भी इस मज़मून की एक हदीस रिवायत की गयी है, जिस को इमाम तिर्मिज़ी ने सहीह हदीस फ़रमाया है और साथ ही हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० की हदीस का भी हवाला दिया है (जो अभी गुज़र चुकी है) जन्नत चूंकि पाकीज़ा जगह है और वहां के मर्द व औरत सब पाकीज़ा होंगे, इसलिए हर तरह गंदगी और घिनौनी चीज़ से बचे होंगे। जिस तरह पेशाब-पाख़ाना की ज़रूरत न पड़ेगी, उसी तरह मनी भी न निकलेगी। जमउल फ़वाइद में मुहद्दिस तबरानी ने मुअजमुल कबीर से नक़ल किया है कि जन्नती हमबिस्तर भी होंगे (लेकिन) न तो ख़ास अंग में कमज़ोरी आयेगी, न शहवत ख़त्म होगी और न मर्द की मनी निकलेगी, न औरत की।

इस दुनिया की लज़्ज़तों में कदूरतें[3] मिली हुई हैं। जन्नत की लज़्ज़त में चूंकि कदूरत न होगी, इस लिए बिस्तर और जिस्म को लथेड़ देने वाला माद्दा[4] निकलेगा नहीं और इंज़ाल के वक़्त जो लज़्ज़त यहां महसूस होती है, उस से कहीं ज्यादा बढ़-चढ़ कर बग़ैर इंज़ाल के जन्नत में लज़्ज़त

१. यानी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम,
२. अहमद, नसई, ३. गंदगी, गदलापन, ४. पदार्थ.

महसूस होगी और चूंकि जन्नत में हर चीज़ नफ़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगी, इस लिए जब तक जी चाहेगा मुबाशरत (हमबिस्तरी करेंगे और जब जी चाहेगा छोड़ देंगे।

फ़ायदा—हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन जब जन्नत में बच्चे की ख़्वाहिश करेगा तो उसका हमल और बच्चे की पैदाइश और उस की (पूरी) उम्र जो (जन्नत वालों के लिए) मुक़र्रर है यानी ३० साल या ३३ साल, यह सब कुछ ख़्वाहिश के मुताबिक़ एक घड़ी में हो जाएगा।[1]

कुछ इल्म वालों ने फ़रमाया कि जन्नत में जिमाअ होगा (मगर) औलाद न होगी। ताऊस, मुजाहिद और इब्राहिम नख़्ई रह० से यही रिवायत है। इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने ऊपर की हदीस नक़ल करके फ़रमाया जन्नती औलाद की ख़्वाहिश न करेगा। हज़रत अबूरिज़ीन अक़ीली रज़ियल्लाहु अन्हु से रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद रिवायत किया गया है कि जन्नत में जन्नतियों की औलाद न होगी। (तिर्मिज़ी)

मतलब यह है कि जन्नत हर ख़्वाहिश के पूरा होने की जगह है। अगर जन्नतियों में से किसी की ख़्वाहिश औलाद होने के लिए होगी, तो ख़्वाहिश का क़ानून के मुताबिक़ पूरा हो जाना ज़रूरी होगा, लेकिन चूंकि जन्नत में बच्चों के पैदा होने का सिलसिला मुनासिब न होगा इसलिए जन्नत वालों के दिलों में अल्लाह तआला औलाद की ख़्वाहिश पैदा न फ़रमायेंगे। रही यह बात कि जन्नत में बच्चों का पैदा होना क्यों मुनासिब नहीं है, इस की वजह वहीं मालूम हो सकेगी।

जन्नत का बाज़ार

जिसमें दीदीरे इलाही होगी और हुस्न व जमाल में बढ़ती होगी

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० (ताबई) का बयान है कि मैं ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात की, उन्होंने कहा कि मैं अल्लाह से सवाल करता हूं कि मुझे और तुझे जन्नत के बाज़ार में इकट्ठा

१. तिर्मिज़ी शरीफ़,

कर दे। हज़रत सईद रह० ने पूछा, क्या जन्नत में बाज़ार (भी) होगा ? हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हां, रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बताया है कि बिला शुब्हा जन्नती जब जन्नत में दाख़िल होंगे, तो अपने-अपने आमाल के मुताबिक़ दर्जों और मंज़िलों में उतरेंगे। उसके बाद दुनिया के दिनों में से जुमा के दिन की मिक़दार में उनको इजाज़त दी जाएगी कि अपने रब की ज़ियारत करें। पस वे अपने परवरदिगार की ज़ियारत करेंगे। उस वक्त अल्लाह तआला अपने अर्श को ज़ाहिर फ़रमा देगा और अपना दीदार कराने के लिए जन्नत के एक बड़े बाग़ में ज़ाहिर होगा (जोलोग दीदारे इलाही के लिए जमा होंगे) उनके लिए नूर के और मोतियों के और याक़ूत के और ज़बरजद के और सोने के और चांदी के मिंबर बिछाए जाएंगे (और रुत्बों के हिसाब से जन्नती उन पर बैठेंगे (नेमतों और नवाज़िशों की वजह से उन में कोई घटिया और कम दर्जे का तो) न होगा (लेकिन) रुत्बे के एत्बार से जो सब से कमतर होंगे, मुश्क और ज़ाफ़रान के टीलों पर बैठेंगे और ये टीलों पर बैठने वाले कुर्सियों पर बैठने वालों को अपने से बेहतर ख़्याल न करेंगे (क्योंकि अगर ऐसा ख़्याल आ गया कि हम घटिया हैं तो रंज होगा और जन्नत में रंज का नाम नहीं।)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या हम अपने परवरदिगार को देखेंगे ? फ़रमाया, हां, क्या सूरज को और चौदहवीं रात के चांद को देखने में कोई शुब्हा रखते हो ? हमने अर्ज़ किया, नहीं, फ़रमाया, इसी तरह तुम अपने परवरदिगार को देखने में कोई शक न करोगे और उस मज्लिस में कोई शख़्स ऐसा बाक़ी न होगा, जिस से आमने-सामने होकर अल्लाह तआला की बात-चीत न हो, यहां तक कि हाज़िर लोगों में से कुछ को मुख़ातब कर के अल्लाह तआला फ़रमायेगा ऐ फ़लां के बेटे फ़लां ! क्या तुझे याद है कि फ़लां दिन तूने ऐसा-ऐसा कहा था। इस तरह अल्लाह तआला उस की कुछ वायदा-ख़िलाफ़ियां याद दिला देंगे, जो उसने दुनिया में की थीं। वह शख़्स अर्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार ! क्या आपने मुझे बख़्श नहीं दिया ? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, हां, मैं ने बख़्श दिया और मेरी बख़्शिश ही के फैलाव की वजह से आज तू इस रुत्बे को पहुंचा है ? सब लोग इसी हाल में होंगे कि एक बादल आएगा और उन पर छा जाएगा और ऐसी ख़ुश्बू बरसाएगा कि उस जैसी ख़ुश्बू उन्हों ने कभी न पायी होगी। अल्लाह तआला का इर्शाद होगा कि उठो और उस चीज़ की तरफ़ चलो जो मैं ने इज़्ज़त को बढ़ाने के लिए तैयार की है और जो तुम को पसंद आये, उस को ले लो, फिर हम

एक बाज़ार में आएंगे, जिसको फ़रिश्तों ने घेर रखा होगा। उस बाज़ार में वे चीज़ें होंगी कि उन जैसी चीज़ों को न आंखों ने देखा, न कानों ने सुना, न दिलों पर उन का गुज़र हुआ, बस जिस चीज़ को हमारा जी चाहेगा, हमारे लिए उठा लिया जाएगा (और यह सब कुछ बग़ैर मोल-तोल और बग़ैर क़ीमत के होगा), क्योंकि वहां न बेचा जाएगा, न खरीदा जाएगा।

बात आगे जारी रखते हुए इर्शाद फ़रमाया कि इस बाज़ार में जन्नती एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे। ऊंचे रुत्बे का (एक आदमी) किसी कम रुत्बे वाले से मुलाक़ात करेगा, हालांकि अपने-अपने एहसास के मुताबिक़ उन में कोई कमतर न होगा, तो उस शख़्स को बुलंद मर्तबे वाले का लिबास बहुत पसंद आ जाएगा लेकिन अभी उसकी बात खत्म न होने पायेगी कि उसका लिबास उस बुलंद मर्तबा वाले के लिबास से अच्छा मालूम होने लगेगा और यह इस वजह से कि जन्नत में यह मौक़ा नहीं रखा गया है कि कोई शख़्स (ज़रा भी) रंजीदा हो। इस के बाद हम अपने-अपने मकानों को रवाना हो जाएंगे। वहां पहुंचने पर हमारी बीवियां हमारा स्वागत करेंगी और 'मरहबा व अह्लन'[1] के बाद कहेंगी कि तुम उस हुस्न व जमाल को ले कर वापस हुए हो, जो कि उस वक़्त न था, जबकि तुम हम से जुदा हुए थे। हम जवाब में कहेंगे कि आज हम ने अपने परवरदिगार के साथ हम नशीनी[2] की इज़्ज़त हासिल की है और हम उसी शान के साथ आने के लायक़ हैं।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में एक बाज़ार है जिस में जन्नती हर जुमा को जाया करेंगे वहां उत्तरी हवा चलेगी जो जन्नतियों के चेहरों और कपड़ों को खुश्बू से भर देगी और उनके हुस्न व जमाल में बढ़ती हो जाएगी। पस वे खूब ज़्यादा हसीन व जमील हो कर अपने घर वालों के पास वापस जाएंगे। घर के लोग कहेंगे कि क़सम है खुदा की, हमसे जुदा होने के बाद तुम्हारा हुस्न व जमाल बढ़ गया। इसके बाद वे कहेंगे कि खुदा की क़सम! हमारे बाद तुम्हारे हुस्न व जमाल में (भी) बढ़ती हो गयी है।[4]

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बिला

१. मुबारक हो, मुबारक हो, २. साथ बैठना,
३. तिर्मिज़ी शरीफ़, ४. मुस्लिम शरीफ़,

शुब्हा जन्नत में एक बाज़ार है जिसमें न खरीद है, न फ़रोख़्त है। इस में बस मर्दों और औरतों की शक्लें हैं। उन को देख कर जब कोई आदमी चाहेगा कि फ़्लां शक्ल मेरी शक्ल हो जाती तो (उसी वक़्त) उसकी वह शक्ल बन जाएगी।[1]

जन्नत की सबसे बड़ी नेमत

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब जन्नती जन्नत में दाखिल हो जाएगा तो (उनसे) अल्लाह तआला सवाल फ़रमाएंगे, क्या तुम और कुछ चाहते हो, जो मैं तुम को दूं ? वे अर्ज़ करेंगे कि (हम को और क्या चाहिए, जो आप ने दिया है बहुत कुछ है) क्या आप ने हमारे चेहरे रोशन नहीं कर दिए ? और क्या आप ने हम को जन्नत में दाखिल नहीं फ़रमा दिया ? और क्या हमको दोज़ख से निजात नहीं दे दी ? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उन के इस जवाब के बाद परदा उठाया जाएगा, इसलिए वह अल्लाह तआला का दीदार न करेंगे। जो कुछ उन को दिया जा चुका होगा, उस सब से बढ़ कर उनके नज़दीक अपने परवरदिगार की तरफ़ देखना प्यारा होगा। इस के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमायी—

लिल्लज़ी न अह्सनुल हुस्ना व ज़ियादतुन[2]

हज़रत अबूरिज़ीन अक़ीली रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! क्या क़ियामत के दिन हम में से हर शख़्स अपने रब को इस तौर पर देखेगा कि (इतनी भारी भीड़ में एक साथ सब के देखने की वजह से) किसी के देखने में फ़र्क़ न आये ? आप ने फ़रमाया, हां, (हर शख़्स) खूब अच्छी तरह से देखेगा ! मैं ने अर्ज़ किया कि दुनिया की मख़्लूक़ में इस की कोई मिसाल है ? फ़रमाया कि ऐ अबू रिज़ीन ! क्या चौदहवीं के चांद को तुम में से हर शख़्स (पूरी भीड़ में) बे रोक-टोक नहीं देखता है ? मैं ने कहा, हां, देखता है। फ़रमाया, चांद अल्लाह तआला की मख़्लूक़ में से एक मख़्लूक़ है, (जिस को एक साथ सब देख लेते हैं और किसीको देखने में कोई रुकावट नहीं होती) और अल्लाह (तो) बहुत ही बुज़ुर्गतर और बड़ा है (उस को एक ही वक़्त में सब क्यों न देख सकेंगे)[3]

१. तिर्मिज़ी शरीफ़, २. मुस्लिम शरीफ़, ३. अबूदाऊद,

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस बीच में कि जन्नती अपनी नेमतों में होंगे, अचानक ऊपर से एक नूर रोशन होगा, चुनांचे सरों को ऊपर उठाएंगे। अचानक क्या देखते हैं कि उन के ऊपर परवरदिगारे आलम (जल्लमज्दुहू) हैं। इन हज़रात के देखने पर रब तबारक व तआला फ़रमाएंगे कि 'अस्सलामु अलैकुम या अह्लल जन्नति, (ऐ जन्नतियो! तुम पर सलाम हो!) बात आगे बढ़ाते हुए फ़रमाया कि (क़ुरआन में) जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने 'सलामुन क़ौलम मिर्रब्बिरहीम' फ़रमाया है। इस में इसी का ज़िक्र है। इसके बाद फ़रमाया कि (सलाम के बाद) अल्लाह तआला शानुहू जन्नतियों को और जन्नती अपने परवरदिगार को देखते रहेंगे, यहां तक कि अल्लाह तआला परदे में हो जाएंगे और उसका नूर बाक़ी रह जाएगा।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया कि जन्नती जब तक अपने रब को देखते रहेंगे, दूसरी किसी भी नेमत की तरफ़ ध्यान न देंगे।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जन्नत में रुत्बे के एतबार से मामूली शख़्स वह होगा जो अपने बाग़ों और तख़्त और बीवियों और खिदमत गुज़ारों और (दूसरी) नेमतों को एक साल की दूरी में फैला हुआ देखेगा (यानी ये चीज़ें इतनी दूरी में फैली हुई होंगी कि दुनिया में कोई आदमी चीज़ों को देखने के लिए निकले तो हज़ार वर्ष तक चलता रहे) और अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे बड़े रुत्बे का जन्नती वह होगा जो सुबह-शाम दीदार इलाही का शर्फ़ हासिल करेगा। इसके बाद आप ने यह तिलावत फ़रमायी 'वुजूहुंय्यौ म इज़िन नाज़िर तुन इला रब्बिहा नाज़िरतुन' (बहुत से चेहरे उस दिन (तरोताज़ा) खुश होंगे, अपने रब की तरफ़ देखते होंगे।[2]

यह सूर: क़ियाम: की आयत है। इस की तिलावत से दीदारे इलाही को क़ुरआन शरीफ़ से साबित करना मक़सूद है। एक हदीस में है कि मामूली दर्जे का जन्नती अपने मुल्क को दो हज़ार साल की दूरी में फैला हुआ देखेगा और उसके आखिरी हिस्से को (बे-तेकल्लुफ़ बिल्कुल) उसी तरह देखता होगा जिस तरह उसके क़रीब वाले हिस्से को देखता होगा।[3]

हदीस शरीफ़ में छोटे और ऊंचे जन्नती के मर्तबे का ज़िक्र है, उसके

१. इब्ने माजा, २. तिर्मिज़ी शरीफ़, ३. अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब,

दर्मियान में और खुदा जाने कितने दर्जे होंगे और मर्तबों के एतबार से कितनी नेमतों से माला माल होंगे। दीदारे इलाही तो सब ही जन्नतियों को नसीब होगा, लेकिन सबसे ज़्यादा एज़ाज़ व इकराम जिसका होगा, उसको यह सआदत नसीब होगी कि सुबह-शाम दीदारे इलाही से नवाज़ा जाएगा (जअल्लाहु मिन्हुम)

फ़ायदा—अल्लाह तआला को दुनिया में नहीं देख सकते, जन्नत में मोमिन लोग देखेंगे और काफ़िर व मुनाफ़िक़ इस नेमत से मह-रूम होंगे, जिससे बढ़ कर कोई नेमत नहीं, यहां यह जान लेना ज़रूरी है कि अल्लाह तआला जिस्म और जेहत (दिशा) से पाक है। अल्लाह को जन्नती देखेंगे, यह हक़ है, जिस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है, लेकिन कैफ़ियत[1] मालूम नहीं।

गुनाहगार मुसलमानों का दोज़ख से निकल कर जन्नत में दाखिल होना

भारी तायदाद में वे मुसलमान भी दोज़ख में चले जाएंगे, जो बड़े बड़े गुनाह करते थे। यह तो ज़रूरी नहीं है कि बड़े गुनाहों का हर करने वाला दोज़ख में ज़रूर ही जाए, क्योंकि अल्लाह तआला बहुतों को बख़्श देंगे और दोज़ख में डालने से बचाये रख लेंगे और यह भी ज़रूरी नहीं है कि सब ही बख़्श दिए जाएं, क्योंकि रिवायतों से साबित होता है कि बहुत से गुनाहगार मुसलमान दोज़ख में जाएंगे और-फिर सज़ा भुगत कर दोज़ख से निकाल कर जन्नत में दाखिल कर दिए जाएंगे। जन्नत से कभी कोई न निकलेगा, न निकाला जाएगा और दोज़ख से गुनाहगार मुसलमानों को निकाल कर जन्नत में दाखिल कर दिया जाएगा। और दोज़ख में सिर्फ़ मुश्रिक व काफ़िर ही रह जाएंगे, जो हमेशा दोज़ख में रहेंगे—

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

वल्लज़ी न क फ़ रू व कज्ज़बू बिआयातिना उलाइ क अस्हाबुन्नारि हुम फ़ीहा खालिदून०

बुखारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख की पीठ पर पुल सिरात रख दी जाएगी और रसूलों में से अपनी उम्मत को लेकर सबसे पहले मैं उसके ऊपर से गुज़रूंगा। उस

१. स्थिति,

दिन रसूलों के सिवा कोई न बोलता होगा और उनका बोलना उस दिन यह होगा कि 'अल्लाहुम्म सल्लिम-सल्लिम' (ऐ अल्लाह ! सलामत रख, सलामत रख) और दोज़ख़ में सादान[1] के कांटों की तरह बड़ी-बड़ी संडासियां होंगी, जिनकी बड़ाई का अल्लाह ही को इल्म है। (इन संडासियों के सर ज़ंबूर की तरह मुड़े हुए होंगे और दोज़ख़ से निकल-निकल कर) लोगों को उनके (बद) आमाल की वजह से उचक रही होंगी, पस उनके उचकने की वजह से कोई तो (पुल सिरात से दोज़ख़ में गिर कर) हलाक हो जाएगा, (ये काफ़िर होंगे) और कोई कट कर दोज़ख़ में गिर जाएगा, फिर बाद में निजात पाएगा (ये गुनाहगार मुसलमान होंगे)। यहां तक कि जब अल्लाह तआला अपने बंदों के दर्मियान फ़ैसला फ़रमा कर फ़ारिग़ हो जाएगा और 'ला इला ह इल्लल्लाहु' की गवाही देने वालों को दोज़ख़ से निकालने का इरादा फ़रमाएगा, तो फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि जो शख़्स अल्लाह को पूजता था, उसको निकाल लो। चुनांचे ऐसे लोगों को फ़रिश्ते निकाल लेंगे और उनके सज्दों के निशानों से पहचानेंगे (क्योंकि) अल्लाह तआला ने दोज़ख़ की आग पर यह हराम फ़रमा दिया है कि सज्दे के निशानों को जलाए (जो माथे पर होते हैं)।

चुनांचे ये लोग दोज़ख़ से निकाल लिए जाएंगे, जो जल-भुन चुके होंगे। दोज़ख़ से निकाल कर उन पर आबेहयात (जीवन-अमृत) डाल दिया जाएगा, जिसकी वजह से वे इस तरह उग जाएंगे जैसे बहते हुए पानी के घास-तिन्के पर (जल्द से जल्द) बीज उग जाता है।[2] मतलब यह है कि यकायकी उनकी हालत ही बदल जाए और एक दम भले-चंगे ख़ूबसूरत हो जाएंगे।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर (भी) ईमान हो, उसको दोज़ख़ से निकाल लो, चुनांचे निकाल लिए जाएंगे, जो जल कर कोयला हो चुके होंगे, इसलिए उनको फिर नहरुल हयात[3] में डाल

१. सादान अरब के एक पेड़ का नाम है, २. मिश्कात शरीफ़,

३. नहरुल हयात पानी ज़िंदगी की नहर। पहली रिवायत से मालूम हुआ कि उन पर 'आबे हयात' डाला जाएगा और इस रिवायत से मालूम हुआ कि वे 'नहरुल हयात' में डाल दिए जायेंगे, लेकिन यह इख़्तिलाफ़ हक़ीक़ी नहीं है। दोनों बातें एक ही हैं, जब नहर में पूरा ग़ोता दे दिया जाएगा तो उनका नहर

दिया जाएगा।[1]

एक हदीस में है कि वे हज़रात मोती की तरह नहरुल हयात से निकल कर जन्नत में दाख़िल होंगे।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि गुनाह करने की सज़ा में बहुत से लोगों को (दोज़ख़ की आग) के झुलसने का असर पहुंचेगा, फिर अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे, पस उनको 'जहन्नमियों' कहा जाएगा।

इन हज़रात को जहन्नमियों कहना इनकी बुराई करने के लिए न होगा, बल्कि अल्लाह तआला की रहमत और मेहरबानी याद दिलाने के लिए होगा ताकि दोज़ख़ की तक्लीफ़ को याद करके जन्नत के लुत्फ़ में बढ़ती होती रहे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों में से दो शख़्स बहुत चीख़ व पुकार शुरू कर देंगे। अल्लाह तआला हुक्म देंगे कि इनको निकाल लो, फिर उनसे फ़रमायेंगे कि तुम दोनों इतना ज़्यादा क्यों चीख़ रहे हो ? वे अर्ज़ करेंगे कि हमने इसलिए किया कि आप हम पर रहम फ़रमाएं। अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद होगा कि बेशक मेरी रहमत तुम्हारे लिए यह है कि दोज़ख़ में जिस जगह थे, वहीं (वापस) जाकर अपनी जानों को डाल दो। चुनांचे उनमें से एक अपनी जान को दोज़ख़ में डाल देगा, जिस पर अल्लाह तआला दोज़ख़ को ठंडा और सलामती वाला बना देगा और दूसरा शख़्स रह जाएगा जो अपने को दोज़ख़ में न डालेगा। उससे अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि तुझे इस चीज़ से किसने रोका कि तू अपने को दोज़ख़ में डाले ? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब ! मैं उम्मीद करता हूं कि जब मुझे आपने दोज़ख़ से निकाल दिया तो अब उसमें वापस न करेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, (जा) तेरी उम्मीद पूरी कर दी गई। इसके बाद दोनों शख़्स अल्लाह की रहमत से जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे।[3]

में डाला जाना भी सही हुआ और उन पर पानी का पड़ना भी सही हुआ।

१. अल-हदीस, बुख़ारी व मुस्लिम, २. वही, ३. तिर्मिज़ी,

जन्नत में सबसे आख़िर में जाने वाला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं उस शख़्स को अच्छी तरह जानता हूं जो सबसे आख़िर में दोज़ख से निकलेगा और जन्नत में जाने वालों में सबसे आख़िरी होगा। यह शख़्स पेट के बल घसीटता हुआ दोज़ख से निकलेगा। पस हक़ तआला फ़रमाएगा कि जा, जन्नत में दाख़िल हो जा। वह जन्नत के पास आएगा तो उस को ऐसा मालूम होगा कि भरी हुई है, (कहीं जगह नहीं), अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! मैंने इसे भरी हुई पाया (जगह तो नहीं फिर अंदर कैसे जाऊं?) हक़ तआला फ़रमाएगा कि जा जन्नत में दाख़िल हो जा। (तुझे) दुनिया के बराबर जगह दी गई और उसी क़दर दस गुना ज़मीन और दी। यह सुनकर वह अर्ज़ करेगा, क्या आप मुझ से मज़ाक़ फ़रमाते हैं, हालांकि आप (सबके) बादशाह हैं। (हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु का बयान है कि) मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा (कि यह फ़रमाकर) हंसे, यहां तक कि आप की आख़िरी दाढ़ें ज़ाहिर हो गयीं, (कि बेचारा इतनी भारी देन को, जिसका उसने कभी सपना भी नहीं देखा था, मज़ाक़ समझा) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के माहौल में यह बात कही जाया करती थी कि यह शख़्स सबसे कम दर्जे का जन्नती होगा, जो सबसे आख़िर में दाख़िल होगा और दुनिया और दुनिया जैसी दस गुनी जगह पा ली।[१]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से आख़िरी जन्नती के दाख़िले का वाक़िआ इससे ज़्यादा तफ़्सील के साथ भी रिवायत किया गया है, फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे आख़िरी शख़्स जो जन्नत में जाएगा, वह होगा, जो दोज़ख से निकलने की हिम्मत करके (कभी) पांव चलेगा और कभी गिर पड़ेगा और कभी उसको आग की लपट झुलसेगी। पस जब (गिरता-पड़ता) दोज़ख़ से निकल कर आगे बढ़ जाएगा, तो उसकी तरफ़ देख कर कहेगा कि बरकत वाला है (वह सबसे बड़ा ख़ुदा), जिसने मुझे तुझ से

१. बुख़ारी शरीफ़,

निजात बख़्शी। सच तो यह है कि अल्लाह तआला ने मुझे वह नेमत दी है जो पहलों-पिछलों में से किसी को भी न दी। इसके बाद एक पेड़ के क़रीब कर दीजिए, ताकि उसका साया हासिल करूं और पानी पियूं (जो इसके नीचे बह रहा है)। हक़ तआला फ़रमाएगा, अजब नहीं, अगर मैं तुझे यह नेमत दे दूं तो इसके बाद तो और कोई दरख़्वास्त करने लगे? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! नहीं ऐसा न करूंगा और अह्द करेगा कि इसके बाद और कुछ न मांगूंगा और अल्लाह उसको मजबूर समझेगा (कि इस वक़्त उसकी नीयत यही है, मगर निबाह न सकेगा) क्योंकि उसको वह चीज़ नज़र आएगी, जिसके बिना सब्र ही न कर सकेगा, चुनांचे उसको पेड़ के क़रीब कर दिया जाएगा, वह उसके साए में बैठेगा और पानी पिएगा। इसके बाद उसकी नज़र के सामने दूसरा पेड़ बुलंद कर दिया जाएगा जो पहले पेड़ से बहुत अच्छा होगा। पस (उस पर नज़र पड़ेगी तो) अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! मुझे उसके नज़दीक पहुंचा दे, ताकि उसके नीचे बहने वाला पानी पियूं और उसके साए में बैठूं (और उसके अलावा आप से कुछ न मांगूंगा।) इर्शाद होगा कि ऐ इब्ने आदम! क्या तू ने मुझ से अह्द नहीं किया था कि और कुछ मांगूंगा और अजब नहीं, अगर मैं तुझे उसके क़रीब कर दूं तो फिर और कुछ मांगने लगे? पस वह अह्द करेगा कि इसके सिवा और कुछ न मांगूंगा। अल्लाह तआला उसको मजबूर कहेगा, क्योंकि इसके बाद उस चीज़ पर नज़र पड़ेगी, जिस के बग़ैर सब्र ही न कर सकेगा, पस उस पेड़ के पास अल्लाह तआला पहुंचा देगा और वह उसका साया लेगा, और पानी पिएगा। इसके बाद जन्नत के दरवाज़े के क़रीब एक पेड़ उस के सामने कर दिया जाएगा, जो पहले दोनों पेड़ों से ज़्यादा ख़ूबसूरत होगा। पस वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! मुझे उस पेड़ के क़रीब पहुंचा दीजिए ताकि उस का साया ले लूं और पानी पी लूं। इसके सिवा आप से कुछ न मांगूंगा। इर्शाद होगा कि ऐ इब्ने आदम! क्या तूने मुझ से पक्का वायदा न किया था कि और कुछ न मांगूंगा। अर्ज़ करेगा, बेशक! ऐ रब अह्द किया था (मगर इस बार और सवाल पूरा कर दीजिए) इसके सिवा आपसे कुछ न मांगूंगा और हक़ तआला उसे मजबूर कहेगा, क्योंकि उसे वह चीज़ नज़र आयेगी जिसके बग़ैर सब्र कर ही न सकेगा। चुनांचे उस पेड़ के क़रीब कर दिया जायेगा, जब उसके क़रीब हो जायेगा तो जन्नतियों की आवाज़ें सुनाई देंगी (फिर ललचाएगा) और कहेगा कि ऐ रब! मुझे इसके अंदर पहुंचा दीजिए। इर्शाद होगा कि ऐ इब्ने आदम! आख़िर

तेरा सवाल करना किसी तरह खत्म भी होगा ? क्या तू इससे राज़ी होगा कि तुझे दुनिया के बराबर और दे दूं और उसके साथ उतना ही और दे दूं । वह अर्ज़ करेगा, आप मुझ से मज़ाक़ फ़रमा रहे हैं, हालांकि आप रब्बुल आलमीन हैं ? इस वाक़िए को बयान करते हुए हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० हंसे और (हाज़िर लोगों से) फ़रमाया कि तुम मुझ से मालूम नहीं करते कि मैं किस लिए हंसा ? हाज़िर लोगों ने अर्ज़ किया, फ़रमाइए आप क्यों हंसे ? फ़रमाया कि इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (इस हदीस को बयान करके) हंसे थे । सहाबा रज़ि० ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप क्यों हंसे ? फ़रमाया कि अल्लाह के हंसने पर मुझे हंसी आ गयी, जबकि बन्दे ने कहा, क्या आप मुझसे मज़ाक़ फ़रमाते हैं, हालांकि आप पूरी दुनिया के रब हैं । हक़ तआला फ़रमाएंगे कि मैं तुझ से मज़ाक़ नहीं करता (बल्कि वाक़ई तुझे इतना ही दिया) मैं जो भी चाहूं उस पर क़ुदरत रखता हूं ।'

यह वाक़िआ क़रीब-क़रीब इसी तरह हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा से भी रिवायत है । हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत के आख़िर में है कि (वह शख़्स बार-बार अपने अह्द तोड़कर आख़िरकार जब जन्नत में दाख़िल हो जाएगा तो) अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जो तेरी आरज़ू हो, ले ले (वह आरज़ूएं ज़ाहिर करता जाएगा और मुराद पाता जाएगा) यहां तक कि उसकी आरज़ूएं ख़त्म हो जाएंगी । अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे कि (और) तमन्ना कर ले (देख) फ़्लां नेमत रह गयी है (उस) की आरज़ू कर ले (और) फ़्लां चीज़ (बाक़ी है उस) की तमन्ना कर लें । इस तरह से अल्लाह तआला उसको आरज़ूएं याद दिलाते जाएंगे (और हर आरज़ू पूरी करते रहेंगे) यहां तक कि (जब) आरज़ूएं ख़त्म हो जाएंगी (तो) अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जो कुछ तूने तमन्नाएं की हैं, वह सब तुझको दिया, और इतना ही और दिया ।'

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि अल्लाह जल्ल शानुहू उससे फ़रमाएंगे कि तू ने जो-जो कुछ तमन्नाएं की हैं, वह सब तुझे दिया और उसका दस गुना और दिया । इसके बाद अपने (जन्नती) घर में दखिल होगा तो हूरे ईन में से उसको दो बीवियां उस के पास आएंगी और कहेंगी 'अल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्या क लना व अह्याना ल क' सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमारे लिए

१. मुस्लिम शरीफ़, २. मिश्कात (बुख़ारी और मुस्लिम से)

तुझको जन्नत दी, हमेशा की ज़िंदगी बख़्श दी और जिसने हम को तेरे लिए ज़िन्दगी दी, वह शख़्स कहेगा कि जो कुछ मिला है, किसी को भी नहीं मिला ।'

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा सब से आख़िरी शख़्स जो जन्नत में जाएगा, उससे परवरदिगार फ़रमायेंगे कि खड़ा हो, जन्नत में दाख़िल हो जा ! यह सुन कर वह शख़्स ग़ुस्से की तरह मुंह बना कर कहेगा कि (जन्नत में जगह है कहां कि दाख़िल हो जाऊं ?) मेरे लिए आपने कुछ बाक़ी रखा भी है ? अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाएंगे कि हां (तेरे लिए बहुत कुछ है) जितने फैलाव और दूरी पर सूरज निकलता या छिपता है, उतना ले ले ।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे कम दर्जे का जन्नती वह होगा, जिसके लिए अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर बीवियां होंगी और इसके लिए मोतियों और ज़बरजद व याक़ूत से बनाया हुआ एक क़ुब्बा होगा, जिस की लंबाई-चौड़ाई इतनी होगी, जितनी जाबिया की जगह से सुनआ तक की दूरी है । इन दोनों जगहों में मीलों का फ़ासला है ।'

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा मैं उस शख़्स को जानता हूं जो सबसे आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा और सबसे आख़िर में दोज़ख़ से निकलेगा, इस शख़्स को क़ियामत के दिन लाया जाएगा और कहा जाएगा कि उसके सामने उसके छोटे गुनाह पेश करो और बड़े गुनाहों को छिपाए रखे रहो, चुनांचे उसके छोटे गुनाह उस पर पेश किए जाएंगे और कहा जाएगा कि तूने फ़्लां दिन फ़्लां-फ़्लां अमल किया था । वह इक़रार करेगा, इंकार न कर सकेगा और (दिल ही दिल में) डरता रहेगा कि कहीं मेरे बड़े गुनाह न पेश कर दिए जाएं । पस उससे कहा जाएगा कि (जा) तेरे लिए हर गुनाह के बदले एक नेकी है (यह बख़्शिश और नवाज़िश देख कर) वह कह उठेगा कि ऐ रब ! मैंने और बहुत से गुनाह किए हैं जिन को यहां (फ़िहरिस्त में) नहीं देख रहा हूं (उनके बदले में भी एक-एक नेकी मिलना चाहिए) । रावी बयान करते हैं कि मैंने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि इस बात को बयान फ़रमाते हुए आपको हंसी आ गयी जिससे आपकी मुबारक दाढ़ें ज़ाहिर हो गयीं ।'

१. मिश्कात (मुस्लिम), २. तिर्मिज़ी, ३. मुस्लिम शरीफ़,

ऊपर की रिवायतों से छोटे दर्जे के जन्नती की इज़्ज़त और शान मालूम हुई। जब छोटे जन्नती की यह इज़्ज़त है और उसके लिए नेमत व दौलत की यह नवाज़िश है तो छोटे से बड़े तक के दर्मियान के दर्जे वालों को और खुद सबसे बड़े जन्नती को क्या मिलेगा, इसका अंदाज़ा इसी से कर लिया जाए। छोटे जन्नती को जो कुछ मिलेगा, उसका ज़िक्र रिवायतों में कहीं इस तरह है कि एक हज़ार साल की दूरी में अपनी नेमतों को देखेगा और किसी रिवायत में है कि दो हज़ार साल की दूरी में उसकी नेमतें फैली हुई होंगी और किसी रिवायत में है कि छोटे जन्नती को जो जगह मिलेगी, पूरी दुनिया और दुनिया जैसी दसगुनी जगहों के बराबर होगी और किसी रिवायत में दूसरे तरीक़े पर छोटे जन्नती की नेमतों का ज़िक्र फ़रमाया है। यह सब सामने के लोगों को समझाने के लिए है। यह फ़र्क़ हक़ीक़तों का फ़र्क़ नहीं है। हाज़िर लोगों में से उनकी अपनी क़ाबिलियत के मुताबिक़ जिन लफ़्ज़ों में मुनासिब समझा, इर्शाद फ़रमा दिया और यह भी कहा जा सकता है कि 'छोटे' से वाक़ई 'छोटा' मुराद नहीं है, बल्कि चूंकि छोटे दर्जे में भी बहुत से दर्जे होंगे, इस लिए रुत्बे के मुताबिक़ फैली जगह और बड़ी नेमतों का ज़िक्र फ़रमा दिया।

यहां यह बात ज़िक्र के क़ाबिल है कि दुनिया वाले दुनिया में जो कुछ देखते और समझते हैं, उसी के मुताबिक़ समझाने ही से कुछ ग़ैब की चीज़ों का अन्दाज़ा लगा सकते हैं, इसलिए उन्हीं की बात-चीत के अंदाज़ में बात समझायी गयी है। असल हक़ीक़त तो वहीं जा कर मालूम होगी जिसे हर शख़्स अपनी आंख से देख लेगा और ख़्याल व गुमान और अंदाज़ से बढ़कर और सुन कर जो कुछ समझता था, उससे कहीं ज़्यादा पाएगा।

खुदा का इंकार करने वाले जन्नत के फैलाव के बारे में शक करते हैं और पूछते हैं कि इतनी बड़ी जन्नत कहां होगी ? हम कहते हैं कि वह तो अब भी मौजूद है और अल्लाह पाक की मख़्लूक़ है। हमारे बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम उस में रह कर आए हैं, कम इल्म और कम नज़र लोगों के इल्म और पकड़ के दायरे से अगर बाहर है तो क्या अजब है। अभी तो इल्म व अक़्ल का दावा करने वाले तो पूरी ज़मीन की मख़्लूक़ का पता नहीं चला सके और सय्यारों (ग्रहों) तक नहीं पहुंच सके, अगर ऐसी मख़्लूक़ का इल्म नहीं जो ज़मीनी व आसमानी निज़ाम से बाहर है तो ताज्जुब की कोई बात नहीं है। कुछ सौ साल पहले तक तो इंसान को अमरीका तक का पता नहीं था। जब कायनात के पैदा करने वाले ने ज़ाहिर कर दिया तो इंसान यहां अपनी दुनिया बसाने लगा। वह क़ादिर (अल्लाह) 'कुन' (हो जा) से सब कुछ बना सकता है, उसके बारे में यह

राय रखना कि सिर्फ़ आसमान व ज़मीन के अंदर ही पैदा फ़रमा सकता है, यह बड़ी नादानी की बात है। दुनिया के इल्म के दावेदारों पर कुएं के मेंढक की मिसाल पूरी होती है, जिस तरह मेंढक अपने इल्म के मुताबिक़ सिर्फ़ कुएं ही को सबसे बड़ी जगह समझता है और बड़े-बड़े समुद्रों को नहीं जानता, इसी तरह कायनात की खोज लगाने वाले इन चीज़ों के इंकारी हैं जो उनके इल्म से बाहर हैं। जन्नत के इंकारी अपनी बद-बख़्ती की वजह से जन्नत से महरूम होंगे और दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। 'ला यस्लाहा इल्लल अश्क़ल्लज़ी कज़्ज़ व व न वल्ला०' (बेशक जन्नत बहुत बड़ी जगह है, ज़मीन और आसमान और उनके अंदर की तमाम कायनात उसके फैलावों और नेमतों के सामने कुछ भी नहीं है, वहां के फैलाव का क्या ठिकाना है ?

क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया—

وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ط (الدہر)

व इज़ा र ऐ त सम्म र ऐ त नअ़ीमंव्व मुल्कन कबीरा०

'और (ऐ मुख़ातब !) जब तू वहां देखेगा तो बड़ी नेमत और बड़ा मुल्क देखेगा।'

इस मुल्क की लम्बाई-चौड़ाई कितनी होगी, छोटे जन्नती की जगह का ख़्याल करके इसका अंदाज़ा लगा लो।

जन्नत में हमेशा रहेंगे

क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है—

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۔ جَزَآؤُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ۔ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ط ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِیَ رَبَّهٗ ۝

इन्नल्लज़ी न आम नू व अमिलुस्सालिहाति उलाइ क हुम ख़ैरुल बरीय: जज़ाउहुम अिन्द रब्बिहिम जन्नातु अद्निन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा अ ब दा रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु ज़ालि क लिमन ख़शि य रब्बहू०

'बिला शुब्हा जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और भले काम अंजाम दिए, ये लोग बेहतरीन मख़्लूक़ हैं। उनका बदला उनके रब के

पास हमेशा रहने की जन्नतें हैं, जिन के नीचे नहरें जारी होंगी। इन में वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी और वे अल्लाह से राज़ी रहेंगे। (यह जन्नत व रजामंदी) उस के लिए है जो अपने रब से डरता है।)

यह जो फ़रमाया कि वे अपने रब से राज़ी होंगे, उस का मतलब यह है कि अपने परवरदिगार की दी हुई नेमतों में मगन होंगे, हर ख्वाहिश पूरी होगी। अल्लाह जल्ल शानुहू की देन पर दिल की गहराई से खुश और शुक्र गुज़ार होंगे, किसी चीज़ की कमी न होगी।

सूरः दुख़ान में इर्शाद फ़रमाया—

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ
الْأُولَىٰ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝

यद्‌अू न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकिहतिन आमिनी न ला यज़ूक़ून फ़ीहल मौ त इल्लल मौततल ऊला व वक़ाहुम अज़ाबल जहीमि॰ फ़ज़्लम मिर्रब्बि क ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अज़ीम॰

'उस में अम्न-चैन से हर क़िस्म के मेवे मंगाते होंगे (और) वहां मौत का मज़ा न चखेंगे। वह पहली मौत जो दुनिया में आ चुकी (उस के बाद मौत न होगी) और अल्लाह उनको दोज़ख के अज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा यह मेहरबानी है तेरे रब की तरफ़ से, बड़ी कामियाबी यही है।'

एक हदीस में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (जब) अल्लाह तआला जन्नतियों को जन्नत में और दोज़खियों को दोज़ख में दाखिल फ़रमा चुकेगा (और दोज़ख में ऐसा कोई शख्स न रहेगा, जिसे सज़ा भुगतने के बाद जन्नत में जाना हो) तो एक एलान करने वाला ज़ोर से पुकार कर एलान कर देगा कि ऐ जन्नत वालो! मौत नहीं और ऐ दोज़ख वालो! मौत नहीं! हर एक को उसी में रहना है, जिसमें अब है।'[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख्स ने सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नती सोएंगे? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया कि नींद मौत का भाई है और जन्नतियों को मौत न आयेगी (इस लिए नींद भी न आयेगी)[2]

रोग या कमज़ोरी या थकन और मेहनत करने की वजह से नींद

१. तर्ग़ीब (बुखारी व मुस्लिम), २. मिश्कात शरीफ़,

आती है, चूंकि जन्नत में न मेहनत है, न मर्ज़, न थकन है, न कमज़ोरी, इस लिए नींद आने की ज़रूरत न होगी, न नींद का तक़ाज़ा होगा, दुनिया में भी नींद असली मक़्सद नहीं है, चूंकि थकन के बाद सो जाने से तबियत हल्की हो जाती है और इंसान मुस्तैद हो जाता है, इसलिए नींद को पसंद करता है। अगर नींद न आये तो दवा खा कर नींद लाने की कोशिश की जाती है, लेकिन जहां थकन ही न होगी, वहां सोना पसंद न होगा, क्योंकि अगर सो जाएं तो जितनी देर सोएंगे, खामखाह उतनी देर नेमतों से महरूम रहेंगे।

जन्नत में वह सब कुछ होगा, जिसकी चाह होगी

सूरः ज़ुख़रुफ़ में फ़रमाया—

وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

व फ़ीहा मा तश्तहीहिल अन्फ़ुसु व त लज़्ज़ुल अअ्युनु व अन्तुम फ़ीहा ख़ालिदून॰

'और वहां वह है नफ़्सों को जिसकी ख्वाहिश होगी और जिससे आंखों को लज़्ज़त होगी और उन से कह दिया जाएगा, तुम उस में हमेशा रहने वाले हो।'

जब सब कुछ नफ़्स की ख्वाहिश के मुताबिक़ होगा, तो किसी तरह की रूह या जिस्म की तक्लीफ़ का नाम भी न होगा। दुनिया में कोई शख्स जितना भी बड़ा हो जाए, बहरहाल उसको तबियत के ख़िलाफ़ बातें पेश आती हैं, कोई कैसा भी दौलतमंद हो और कितना ही बड़ा बादशाह हो, हर ख्वाहिश पूरी नहीं होती, न यह दुनिया इस क़ाबिल है कि इसमें हर ख्वाहिश पूरी हो जाए, पाखाना जाने को किस की ख्वाहिश होती है, मगर मजबूर हो कर हर शख्स को जाना पड़ता है।

यह जन्नत ही में नवाज़िश होगी कि नफ़्स की ख्वाहिश के ख़िलाफ़ कुछ भी न होगा। 'व लकुम फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम व लकुम फ़ीहा मा तद्दअून॰' का एलान कर दिया जाएगा।

जन्नती न जन्नत से निकाले जाएंगे न खुद वहां से कहीं पसंद करेंगे

सूरः हिज्र में इर्शाद है—

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۝

ला यमस्सुहुम फ़ीहा न सबु व्ब मा हुम मिन्हा बिमुख़्रजीन०

'न उन को ज़रा कोई तक्लीफ़ पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे।'

सूरः कह्फ़ के आख़िर में फ़रमाया—

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ
الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۙ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝

इन्नल्लज़ी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति कानत लहुम जन्नातुल फ़िर्दौसि नुज़ुलन ख़ालिदी न फ़ीहा ला यब्ग़ू न अन्हा हि व ला०

'बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, उन की मेहमानी के लिए फ़िर्दौस (यानी बहिश्त) के बाग़ होंगे, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, वहां से कहीं जाना न चाहेंगे।'

चूंकि कोई तक्लीफ़ ही न होगी और हर ख़्वाहिश पूरी की जाएगी, इस लिए वहां से कहीं जाने को जी न चाहेगा और न कहीं जाने की ज़रूरत होगी। सब कुछ वहीं मौजूद होगा, करोड़ों और अरबों मील जन्नत का फैलाव होगा, आपस में मिलना-जुलना होगा, और बे-तकल्लुफ़ी होगी, नाते-रिश्तेदार दोस्त-अह्बाब सब वहीं मौजूद होंगे, कायनात का पैदा करने वाला राज़ी होगा, फिर इस शक्ल में वहां से बाहर जाने का इरादा करना बेकार है।

अल्लाह की तरफ़ से रज़ामंदी का एलान

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियाल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक अल्लाह जन्नत वालों से फ़रमाएंगे कि ऐ जन्नत वालो ! वे अर्ज़ करेंगे कि लब्बैक रब्बना व सअदैक वल ख़ैरु फ़ी यदैक (ऐ रब ! हम हाज़िर हैं और हुक्म पूरा करने के लिए मौजूद हैं और सब भलाई आप ही के क़ब्ज़े में है) इस के बाद अल्लाह जल्ल शानुहू उन से मालूम करेंगे, क्या तुम राज़ी हो ? वे अर्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार ! जब कि आप ने हम को वह-वह नेमतें दी हैं जो अपनी मख़्लूक़ में से और किसी को नहीं दीं, तो इस के बावजूद हम राज़ी क्यों नहीं होते ? अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाएंगे, क्या तुम को इस से (भी) अफ़्ज़ल नेमत दे दूं ? वे अर्ज़ करेंगे कि (या अल्लाह !) इस से अफ़्ज़ल और क्या होगा ? इस के जवाब में अल्लाह शानुहू फ़रमा-

एंगे कि ख़ूब समझ लो, मैं हमेशा के लिए तुम पर रज़ामंदी का ऐलान करता हूं, पस कभी भी तुम से नाराज़ न हूंगा।'

जन्नत में जो कुछ होगा, उस से बढ़ कर यह होगा कि अल्लाह तआला उन से राज़ी होंगे और हमेशा के लिए अपनी रज़ामंदी का एलान फ़रमा देंगे। एक शरीफ़ ग़ुलाम के लिए सबसे बड़ी नेमत यह है कि आक़ा उस का राज़ी हो, अगर सब कुछ मौजूद हो और आक़ा नाराज़ हो या उस की नाराज़ी का डर हो, तो नेमतों के इस्तेमाल से कुढ़न होती है और तबियत में परेशानी रहती है। अल्लाह जल्ल शानुहू अपनी रज़ामंदी का एलान फ़रमा कर जन्नतियों को हमेशा के लिए मुत्मइन फ़रमा देंगे कि हम तुम से हमेशा के लिए राज़ी हैं। इस एलान पर जो ख़ुशी होगी, इस दुनिया में उसकी मिसाल नहीं दी जा सकती है। 'व रिज़्वानुम मिनल्लाहि अक्बरु०' क़ुरआन शरीफ़ में जगह-जगह 'रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु' का एलान फ़रमाया है, जिस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला जन्नतियों से राज़ी होंगे और जन्नती अल्लाह तआला से राज़ी होंगे यानी वहां किसी भी चीज़ की कोई कमी न होगी, दिलों पर किसी बात का ज़रा भी मैल न आएगा, जो कुछ भी मिला होगा, उस से नफ़्स राज़ी होगा, अल्लाह तआला की देन और इनाम व इक्राम पर दिल व जान से ख़ुश होंगे। जअल्लाहु मिन्हुम०

जन्नत के दर्जे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स ईमान लाया और नमाज़ क़ायम की और रोज़े रखे, तो उस के लिए यह ज़रूरी है कि अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे, अल्लाह के रास्ते में हिजरत करे या उसी ज़मीन में क़ियाम किए रहे जहां पैदा हुआ है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! क्या हम इस की ख़ुशख़बरी लोगों को सुना दें ? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह ने अपने रास्ते में जिहाद करने वालों के लिए तैयार फ़रमाए हैं। हर दो दर्जे के दर्मियान इतना फ़ासला

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम.

२. तिर्मिज़ी की रिवायत में हज और ज़कात का भी ज़िक्र है.

है, जितना कि आसमान व ज़मीन के दर्मियान है, पस जब तुम अल्लाह से सवाल करो तो फ़िर्दौस का सवाल करो, क्योंकि वह जन्नत का सब से बेहतर और बुलंद दर्जा है और उस के ऊपर रहमान का अर्श है और इस से जन्नत की (चारों) नहरें फूटती हैं।'

साहिबे फ़त्हुल बारी लिखते हैं कि इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत में सौ दर्जे अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों के लिए हैं, (लेकिन) इस में उस का इंकार नहीं है कि ग़ैर-मुजाहिदों के लिए इस सौ दर्जों के अलावा दूसरे दर्जे हों जो मुजाहिदों के दर्जों से कम हों।' इस हदीस को बुख़ारी ने 'किताबुत्तौहीद' में भी ज़िक्र किया है। वहां साहिबे फ़त्हुल बारी लिखते हैं कि मिअतु दर जतन (यानी सौ दर्जे) जो फ़रमाया है, उस के कहने का ढंग यह नहीं है कि जन्नत के दर्जे सौ ही हैं, क्योंकि सौ दर्जों के ज़िक्र से सौ से ज़्यादा का इंकार नहीं होता है और इस की ताईद इस हदीस से होती है, जिस की रिवायत अबू दाऊद और तिर्मिज़ी और इब्ने हब्बान ने की है कि—

يقال لصاحب القرآن اقرأ وارتق ورتل كما كنت ترتل في الدنيا

فان منزلتك عند آخر آية تقرأها (قال الترمذي حديث حسن صحيح)

युक़ा लु लि साहिबिल क़ुरआनि इक़्रअ् व इर्तक़ि व रत्तिल कमा कुन्त तुरत्तिलु फ़िद्दुन्या फ़ इन्न मंज़िलत क अिन्द आख़िरि आयतिन तक़्रउहा (क़ालत्तिर्मिज़ी हदीसुन हसनुन सहीहुन)

'क़ुरआन वाले से (क़ियामत के दिन) कहा जाएगा कि पढ़ता जा और इस तरह तर्तील के साथ तिलावत करता जा, क्योंकि तेरी मंज़िल वही है जहां तू आख़िरी आयत पढ़ कर ख़त्म करे।'

इस हदीस से मालूम हुआ कि साहिबे क़ुरआन (यानी क़ुरआन की तिलावत से लगाव रखने वाला) जितनी आयतें पढ़ता जाएगा, उतना ही चढ़ता जाएगा और क़ुरआन शरीफ़ की आयतें ६२०० तो सब के यहां है और वक़्फ़ व वस्ल के मौक़ों में इख़्तिलाफ़ होने की वजह से) इस तायदाद पर जो ज़्यादती है, उस में इख़्तिलाफ़ हो गया है। बहरहाल यह तो मालूम हुआ कि जन्नत के दर्जे क़ुरआन की आयतों के बराबर ज़रूर हैं।

———

१. बुख़ारी शरीफ़,
२. फ़त्हुल बारी, किताबुल जिहाद,

जन्नत के बालाख़ाने

सूरः फ़ुर्क़ान में इर्शाद है—

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۝ خَالِدِينَ
فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝

उलाइ क युज्ज़ौनल ग़ुर्फ़ त बिमा स ब रू व युलक़्क़ौ न फ़ीहा तहीयतंव्व सलामन ख़ालिदी न फ़ीहा हसुनत मुस्तक़र्रंव्व मुक़ामा०

'ऐसे लोगों को (जिन का शुरू रुकूअ से ज़िक्र चला आ रहा है, बालाख़ाने (कोठे) मिलेंगे, उन के जमे रहने की वजह से और (फ़रिश्तों की तरफ़ से) बक़ा की दुआ और सलाम मिलेगा और इस में वे हमेशा रहेंगे। वह क्या ही अच्छा ठिकाना है और ठहरने की जगह है।'

सूरः ज़ुमर में फ़रमाया—

لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّن فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ

ला किनिल्लज़ी नत्तक़ौ रब्बहुम लहुम ग़ु र फ़ुम मिन फ़ौक़िहा ग़ु र फ़ुम मब्नीयतुन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु०

'लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं, उन के लिए कोठे हैं, जिन के ऊपर और कोठे हैं जो बने-बनाये तैयार हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं।'

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जन्नती अपने ऊपर कोठे वालों को इस तरह देखेंगे जैसे तुम उस रोशन सितारे को देखते हो जो (सुबह को पौ फटने के बाद) आसमान के पूर्वी या पच्छिमी किनारे पर बाक़ी रह जाता है और यह मंज़िलों का फ़र्क़ उन के आपसी मर्तबों के फ़र्क़ की वजह से होगा (कि बुलंद मर्तबे वाले हज़रात ऐसे ऊंचे कोठों में होंगे कि आम जन्नती को बहुत दूर ही पर नज़र आने वाले सितारे की तरह नज़र आएंगे) सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! ये तो नबियों ही की जगहें होंगी जहां उन के अलावा कोई न पहुंच सकेगा। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हां, क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है (नबियों के अलावा) बहुत से लोग (भी उन कोठों में) होंगे जो अल्लाह पर ईमान लाये और

रसूलों की तस्दीक़ की,[1] लेकिन इस से यह न समझा जाए कि नबियों को बरतरी न होगी, क्योंकि कोठों में भी दर्जों का फ़र्क़ होगा, इस लिए कि कोठों पर भी कोठे होंगे, जैसा कि सूरः ज़ुमर की आयत में गुज़रा।

सूरः फ़ुर्क़ान में पहले नेक लोगों और अल्लाह के डरने वालों की ख़ूबियां बयान फ़रमायी हैं। आख़िर में इन हज़रात के बारे में बालाख़ानों की ख़ुशख़बरी दी है और सूरः ज़ुमर में भी मुत्तक़ियों के लिए कोठों का ज़िक्र फ़रमाया है। मालूम हुआ कि बालाख़ाने बड़े मर्तबे वाले हज़रात को नसीब होंगे।

हज़रत अबू मालिक अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि बिला शुब्हा जन्नत में बालाख़ाने हैं (जो ऐसे चिकने हैं कि) उनका ज़ाहिरी हिस्सा अंदर से और अंदरूनी हिस्सा बाहर से नज़र आता है। (ये बालाख़ाने) अल्लाह तआला ने उसके लिए बनाये हैं जो नर्मी से बात करे और मेहमानों और ज़रूरतमंदों को खाना खिलाए और अक्सर रोज़े रखा करे और रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़े जबकि लोग सो रहे हों।[2]

जन्नत के ख़ेमे और क़ुब्बे

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में मोमिन का ऐसा ख़ेमा होगा कि एक ही मोती से बना हुआ होगा (मोती बहुत बड़ा होगा) जो अंदर से खोल की तरह होगा। इस ख़ेमे की लंबाई (और एक रिवायत में है कि इस की चौड़ाई) साठ मील की होगी। इसके हर कोने में मोमिन से मुताल्लिक़ लोग (बीवियां, नौकर-चाकर) होंगे (और कोनों के दर्मियानी फ़ासले की वजह से) इस कोने के लोग दूसरे कोनों के लोगों को नज़र न आएंगे। उनके पास मोमिन आया-जाया करेंगे। (इसके बाद फ़रमाया कि मोमिन के लिए) दो बाग़ ऐसे होंगे कि उन के बर्तन और जो कुछ उन में है, वह सब सोने का है।[3]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मामूली जन्नती वह होगा, जिसके अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर बीवियां होंगी और

---

१. बुख़ारी व मुस्लिम, २. बैहक़ी फ़ी शोबिल ईमान, ३. बुख़ारी व मुस्लिम,

उसके लिए एक क़ुब्बा नसब किया जाएगा, जो मोतियों से और ज़बुर्जद और याक़ूत से बना होगा और जितना फ़ासला जाबिया[1] से सुनआन तक है, उतनी ही दूरी में उस की लंबाई-चौड़ाई होगी।[2]

जन्नत का मौसम

सूरः दहर में इर्शाद है—

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا مُتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا

व जज़ाहुम बिमा स ब रू जन्नतंव्व हरीरम मुत्तकिईन फ़ीहा अलल अराइकि ला यरौ न फ़ीहा शम्संव्व ला ज़म्हरीरा०

'और उन का रब सब्र व (जमाव) के बदले में उन्हें बाग़ और रेशमी लिबास अता फ़रमाएगा और वहां मसहरियों पर तकिया लगाये होंगे। वहां न गर्मी महसूस करेंगे, न सर्दी।'

साहिबे तफ़्सीर मज़्हरी इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं—

لاحر فیها ولا برد لیدوم فیها هواء معتدل

ला हर्र फ़ीहा व ला बर्द लियदू म फ़ीहा हवाउ मुअ्तदिल०

यानी 'जन्नत में सर्दी-गर्मी न होगी, ताकि फ़िज़ा (वातावरण) मोतदिल (समान) रहे।

फिर लिखते हैं कि—

ان الجنة مضيئة بنفسها ومشرقة بنورها لا يحتاج الى الشمس ولا الى القمر

इन्नल जन्न त मुज़ीअतुन बिनफ़्सिहा व मुश्रिक़तुन बिनूरिहा ला यह्ताजु इला शम्सिन व ला इला क़मर०

'बेशक जन्नत ख़ुद रोशन है और अपने रब के नूर से मुनव्वर है, रोशनी के लिए वहां चांद-सूरज की ज़रूरत नहीं।'

इसके बाद बैहक़ी के हवाले से शुऐब बिन जैहान का बयान नक़ल किया है कि मैं और अबुल आलिया रह० (फ़ज्र की नमाज़ के बाद) सूरज

---

१. जाबिया शाम देश में एक जगह है और सुनआ यमन में एक जगह है, दोनों में मीलों का फ़ासला है, २. तिर्मिज़ी शरीफ़,

उगने से पहले आबादी से बाहर गये, उस वक़्त का मंज़र देख कर हज़रत अबू आलिया रह० ने फ़रमाया कि 'यन्सबु इलल जन्नति हाकज़ा' यानी इस वक़्त जो फ़िज़ा में मस्ती, एतदाल और रोशनी है, जन्नत के बारे में इसी तरह की फ़िज़ा बयान की जाती है, यह बात कह कर हज़रत अबू आलिया रह० ने 'व ज़िल्लिम मम्दूद०' की तिलावत की।

साहिबे मज़्हरी लिखते हैं कि हज़रत अबुल आलिया रह० ने जो जन्नत की फ़िज़ा को सुबह का नूर कहा है, तो यह असल रोशनी से मिलाना नहीं हुआ, क्योंकि सुबह की रोशनी कमज़ोर होती है, जिसमें अंधेरी मिली हुई होती है, बल्कि हज़रत अबुल आलिया रह० के इर्शाद का मतलब यह है कि, 'जिस तरह सुबह की रोशनी हर तरफ़, जहां तक नज़र जाये वहां तक फैली हुई होती है (ख़ास तौर से जबकि आबादी से बाहर निकल करदेखा जाये) इसी तरह जन्नत का नूर बराबर हर तरफ़ फैला होगा।'

लेकिन सही यह है कि यह तश्बीह (उपमा, बराबरी) सुबह के वक़्त से है, सुबह की रोशनी से नहीं है और हज़रत अबुल आलिया रह० के इर्शाद का मतलब यह है कि जिस तरह सुबह के वक़्त में (निकलने से पहले-पहले) एक सुहानापन और मस्ती होती है और अच्छी दर्मियानी हवा के झोंके आते हैं और हर तरफ़ रोशनीदार साया ही साया नज़र आता है, मगर रोशनी ऐसी नहीं होती जो आंखों को चुंधिया दे, इसी तरह हर वक़्त जन्नत में गहरा साया रहेगा और फ़िज़ा दर्मियानी रहेगी और एक अजीब तरह का सुहानापन और मस्ती महसूस होती रहेगी, रोशनी में गर्मी और जलन न होगी और वह रोशनी जितनी भी तेज़ हो, उसकी वजह से साया ख़त्म न होगा और न आंखों को तक्लीफ़ होगी।

सूरः रअ्द में इर्शाद है—

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا
دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۭ

म सलुल जन्नतिल्लती वुअ़िदल मुत्तक़ून तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु उकुलुहा दाइमुंव्व ज़िल्लुहा०

'जिस जन्नत का मुत्तक़ियों से वायदा किया गया है, उस का हाल यह है कि उसकी (इमारतों व पेड़ों) के नीचे नहरें जारी होंगी, उसका फल और साया हमेशा रहेगा।'

इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि जन्नत में हमेशा साया रहेगा। सूरा निसा में जन्नत के साए को 'ज़िल्ल ज़लील' फ़रमाया। चुनांचे

इर्शाद है—

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۡ وَّنُدْخِلُهُمْ
ظِلًّا ظَلِيْلًا ۭ

वल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति सनुद् ख़िलुहुम जन्नातिन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा अ ब दा लहुम फ़ीहा अज़्वाजुम मुतह्ह र तुंव्व नुद् ख़िलुहुम ज़िल्लन ज़लीला०

'और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, बहुत जल्द हम उन को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें हमेशा रहेंगे, वहां उनके लिए पाकीज़ा बीवियां होंगी और हम उन को गंजान साए में दाख़िल करेंगे।'

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर 'ज़िल्लन ज़लीला' की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं कि 'अय ज़िल्लन अमीक़न कसीरन अज़ीज़न तय्यिबन अनीक़ा' यानी ऐसा साया जो बहुत गंजान, अच्छा और रौनक़दार होगा।

जन्नत में आराम ही आराम है, थकन और दुखन का कुछ काम नहीं

सूरः फ़ातिर में इर्शाद है—

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ
ۨالَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا
فِيْهَا لُغُوْبٌ ۝

व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह ब अ़न्नल हज़न इन्न रब्बना लग़फ़ूरुन शकूरु-नि-ल्लज़ी अहल्लना दारल मुक़ामति मिन फ़ज़्लिही ला यमस्सुना फ़ीहा न स बुंव्व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब०

'और जन्नती कहेंगे कि सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए ख़ास हैं, जिसने हमसे ग़म को दूर फ़रमाया। बिला शुब्हा हमारा रब बड़ा बख़्शने वाला (और) बड़ा क़द्रदां है, जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से रहने की जगह उतारा, जहां हमको न कोई तक्लीफ़ पहुंचेगी और न ज़रा थकन महसूस हो सकेगी।'

मआलिमुत्तंज़ील में लिखा है कि जन्नत में दाख़िल होकर जन्नती यह बात कहेंगे, जिसका अभी ऊपर ज़िक्र हुआ।

'अल्लाह ने हमसे रंज व ग़म दूर फ़रमा दिया, यानी दुनिया में जो रंज व ग़म आने की वजहें थीं, वे सब ख़त्म हो गयीं। यहां कभी किसी वजह से कोई रंजीदा करने वाली वात और चिंता व परेशानी में डालने वाली चीज़ पेश न आएगी, दुख-तक्लीफ़ के ख़तरे और उनके मौक़े सब ख़त्म हो चुके। अव न रोज़ी कमाने की चिंता है, न रोज़ी की खोज है, न मौत का डर है, न बुढ़ापे का ख़ौफ़ है, न हरज है, न मर्ज़ है, न क़ब्र का मरहला सामने है, न हश्र के मैदान का हौल है, न बुरे ख़ात्मे का ख़तरा है, न नेमतों के ख़त्म होने का तरद्दुद है, न दुनिया संवारने के लिए कुछ करना है, न अंजाम वनाने के लिए इबादत में लगने का हुक्म है, बस हर तरह से आराम ही आराम और अम्न व इत्मीनान है। दुनिया व आख़िरत से मुताल्लिक़ जो डर व चिंता और नागवारी और परेशानी की वजहें, मौक़े और मंज़िलें थीं, इन सब से गुज़र कर 'दारुल मुक़ामः' में आ गये, जहां न कोई मुसीबत है, न परेशानी है, न मेहनत है, न मशक़्क़त है, न थकन है, न दुखन है। सच तो यह है कि यही जगह इस क़ाबिल है जिसे 'दारुल मुक़ामः' (रहने की जगह) कहना मुनासिब है, जहां से न कभी कोई निकलेगा, न निकलने को कभी दिल चाहेगा। हर एक इज़्ज़तदार है, भरपूर लज़्ज़तें हैं, बे-इंतिहा नेमत हैं, जो किसी भी ख़रावी से पाक हैं।

जन्नतियों की मज्लिसें

सूरः साफ़्फ़ात में इर्शाद है—

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ٥ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّىْ كَانَ لِىْ قَرِيْنٌ يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ
لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ٥ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ٥

फ़ अक़्व ल बअ़्ज़ुहुम अ़ला बअ़्ज़िन य त साअलून० क़ालू क़ाइलुम मिन हुम इन्नहू का न ली क़रीनुन यक़ूलु अ इन्न क ल मिनल मुसद्दिक़ीन० अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुरावन व अ़िज़ामन अ इन्ना ल मदीनून०

'पस (जव वे एक मज्लिस में बैठेंगे तो) एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात-चीत करेंगे। उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि (दुनिया में) मेरा एक मुलाक़ाती था, जो मुझ से (ताज्जुब के साथ यों) कहता था कि क्या तू भी क़ियामत के मानने वालों में से है ? क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां बन जाएंगे तो क्या अपने कामों के बदले पाएंगे ?'

قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِىْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ٥

क़ा ल हल अन्तुम मुत्तलिअू न फ़त्त ल अ. फ र आ हु फ़ी सवाइल जहीमि०

'(फिर) वह जन्नती अपने साथ बैठने वालों से कहेगा, क्या तुम उसे (दोज़ख़) में झांक कर देखना चाहते हो ? फिर (ख़ुद ही) झांकेगा और अपने मुलाक़ाती को दोज़ख़ में देख लेगा।'

हज़रत अ़ब्दुल्लाह विन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया है कि जन्नत में रोशनदान की तरह झरोखे होंगे जिनमें जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को देखेंगे और जन्नती शख़्स अपने मुलाक़ाती को दोज़ख़ में देख कर कहेगा कि—

قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ٥ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ٥

क़ा ल तल्लाहि इन कित्त लतुर्दी न व लौ ला निअ़्मतु रब्बी लकुन्तु मिनल मुह्ज़रीन०

'ख़ुदा की क़सम ! तू तो मुझ को तबाह ही करने को था और अगर मेरे रब का फ़ज़्ल न होता तो मैं (भी तेरी तरह) दोज़ख़ में हाज़िर कर दिए जाने वालों में होता।'

सूरः तूर में जन्नतियों की एक बात-चीत इस तरह नक़ल फ़रमायी है—

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ٥ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِىْٓ اَهْلِنَا
مُشْفِقِيْنَ ٥ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ٥ اِنَّا
كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ٥

व अक़्बल बअ़्ज़ुहुम अ़ला बअ़्ज़िय्य त साअ लू न क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी अह्लिना मुश्फ़िक़ीन फ़ मन्नल्लाहु अ़लैना व क़ाना अ़ज़ाबस्समूमि इन्ना कुन्ना मिन क़ब्लु नद्अूहु इन्नहू हु वल बर्रु रहीम०

'और वह एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह हो कर बात-चीत करेंगे, कहेंगे कि हम इससे पहले (दुनिया के) घर-बार में रहते हुए (अंजाम-कार से) वहुत डरा करते थे, सो अल्लाह पाक ने हम पर एहसान फ़रमाया और हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया, इससे पहले हम उससे दुआएं मांगा करते थे। सच में वह बड़ा मुह्सिन (एहसान करने वाला) और मेहरबान है।'

तहीयतुहुम फ़ीहा सलाम[1]

सूरः यूनुस में इर्शाद फ़रमाया—

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۚ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ (سورۂ یونس ع١ پ ١١)

इन्नल्लज़ी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति यह्दीहिम रब्बुहुम बिई-मानिहिम तज्री मिन तह्तिहिहुमुल अन्हारु फ़ी जन्नातिन्नईम दअ्वाहुम फ़ीहा सुब्हा न कल्लाहुम्म व तहीयतुहुम फ़ीहा सलामुन व आखिरु दअ्वाहुम अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन न०

'बिला शुब्हा जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किए, उन के ईमान की वजह से उन का रब उन्हें उन के मक़्सद को (यानी जन्नत में) पहुंचा देगा। उनके नीचे नहरें जारी होंगी, आराम के बाग़ों में। (और वे जन्नत में) दाख़िल होंगे तो यकायक जन्नत की अजीब-अजीब चीज़ों को देख कर वहां (बे-अख़्तियार) यों कहेंगे कि सुब्हानल्लाह! क्या नेमतें हैं और कैसी उम्दा जगह है और फिर एक दूसरे को वहां (देखेंगे) तो उनका आपसी सलाम 'अस्सलामु अलैकुम' होगा और जब इत्मीनान से वहां जा बैठेंगे और पुरानी मुसीबतों और परेशानियों का उस वक़्त के साफ़-सुथरे हमेशा वाले आराम से मुक़ाबला करेंगे तो (उन की उस वक़्त की) आख़िरी बात यह होगी कि 'अल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन' (यानी सब तरीक़े अल्लाह ही के लिए खास हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है)'

तर्जुमे से इस आयत की जो तफ़्सीर मालूम हो रही है, यह सहिबे बयानुल क़ुरआन की तफ़्सीर है और साहिबे मआलिमुत्तंज़ील इसकी तफ़्सीर में लिखते हैं कि जन्नती जब खाने की ख़्वाहिश करेंगे तो 'सुब्हान कल्लाहुम्मा' कह देंगे। इस कलमे को सुन कर उन के ख़ादिम दस्तरख़्वानों पर खाने लगा देंगे, जब खा कर फ़ारिग़ हो जाएंगे तो वे 'अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन' कहेंगे और तहीयतुहुम फ़ीहा

१. आपस में मुबारकबादी होगी और सलाम होगा,

सलाम' की तफ़्सीर करते हुए लिखा है कि जन्नती हज़रात मुलाक़ात के वक़्त एक दूसरे को सलाम करेंगे और यह क़ौल भी नक़ल किया है कि फ़रिश्ते जन्नतियों को सलाम करेंगे और यह भी नक़ल किया है कि फ़रिश्ते उनके पास अल्लाह का सलाम लेकर आएंगे और तीनों तरह 'तहीयतुहुम फ़ीहा सलाम' की तफ़्सीर हो सकती है।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर इब्ने जुरैज से नक़ल फ़रमाते हैं कि जन्नतियों के पास जब कोई परिंदा गुज़रेगा तो वे 'सुब्हानकल्लाहुम्म' कहेंगे, इस पर फ़रिश्ते उन की ख़्वाहिश के मुताबिक़ (परिंदे को) लेकर आएंगे और सलाम करेंगे, जिस का वे जवाब देंगे, 'तहीयतुम फ़ीहा सलाम' में इसी का ज़िक्र है। जब खाकर उठेंगे तो 'अल हम्दु लिल्लाह' कहेंगे, जिस का 'आखरुदअवाहुम अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन' में ज़िक्र है। इसके बाद इब्ने कसीर लिखते हैं कि सुफ़ियान सूरी रह० ने फ़रमाया है कि जन्नती जब किसी चीज़ को मंगाने का इरादा करेंगे तो 'सुब्हान कल्लाहुम्म' कह देंगे (पस वह हाज़िर हो जाएगी) इससे मालूम हुआ कि इब्ने जुरैज ने आयत की तफ़्सीर फ़रमाते हुए जो परिंदे का ज़िक्र किया है, मिसाल के तौर पर है, वरना हर नेमत की ख़्वाहिश के ज़ाहिर करने के लिए जन्नती लोग 'सुब्हान कल्ल हुम्म' कहेंगे। यह जो फ़रमाया कि परिंदे को फ़रिश्ता ले कर हाज़िर होगा, मालूम होता है कि यह कभी-कभी की बात है, क्योंकि रिवायतों में पहले गुज़र चुका है कि परिंदा खुद जन्नतियों के सामने आ गिरेगा।

जन्नत की नेमतों को दुनिया में नहीं समझा जा सकता

जन्नत के बारे में जो कुछ सुन कर और पढ़ कर समझ में आता है, जब जन्नत में जाएंगे तो इस से बहुत बुलंद और बाला पाएंगे। एक तो इस वजह से कि जन्नत की जिन नेमतों का ज़िक्र क़ुरआन व हदीस में मौजूद है, वहां इन के अलावा बहुत ज़्यादा नेमतें हैं। दूसरे इस वजह से कि किसी चीज़ के देखने और इस्तेमाल करने से जो पूरी जानकारी होती है, वह सिर्फ़ सुनने से नहीं होती। इसलिए इस दुनिया में रहते हुए जन्नत की नेमतों की सच्ची हक़ीक़त को समझा नहीं जा सकता है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू इर्शाद

फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने नेक बंदों के लिए वे-वे चीजें तैयार की हैं, जिन को न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी इंसान के दिल पर उन का गुज़र हुआ। फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (क़ुरआन) से इस बात की तस्दीक़ करना चाहो तो यह आयात पढ़ लो, 'फ़ ला तअ्लमु नफ़्सुम मा उख़्फ़ि य लहुम मिन क़ुर्रति अअ्युनिन०'[1]

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊपर वाला मज़मून इर्शाद फ़रमा कर आख़िर में फ़रमाया कि 'बल ह मा अत ल अ कुमुल्लाहु अलैहि' यानी अल्लाह तआला ने क़ुरआनी आयतों के ज़रिए या नबी अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबानी जिन जन्नत की नेमतों का ज़िक्र फ़रमा दिया है, इनके अलावा जो नेमतें हैं बहुत ज़्यादा हैं।

क़ालन्न व वी फ़ल्लज़ी लमयुत्लिअ् कुम अलैहा अअ्ज़म०

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में एक घोड़े की जगह सारी दुनिया से और दुनिया में जो कुछ है, सब से बेहतर है।[2] साथ ही यह भी इर्शाद फ़रमाया कि जितनी जगह आधी कमान रखी जाती है, जन्नत में उतनी सी जगह उन सब चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज उगता या डूबता है।[3]

जब सवारी से सवार उतरने लगता है तो जगह पर क़ब्ज़ा करने के लिए पहले अपना घोड़ा ज़मीन पर गिरा देता है और पैदल चलने वाला जब बैठने लगता है, तो पहले अपनी कमान डाल देता है, फिर बैठता है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जन्नत की बड़ाई और क़ीमत समझाने के लिए इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत की इतनी सी जगह जिस में एक कोड़ा या आधी कमान रखी जा सके, सारी दुनिया की लंबी-चौड़ी और फैली जगह से अफ़्ज़ल है, कहां यह कि पूरी जन्नत, जिसके फैलाव के सामने हज़ारों दुनियाएं भी छोटी और कम हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि दुनिया की चीज़ों में से कोई चीज़ भी जन्नत में नहीं है, सिर्फ़ नाम मिलते-जुल्ते हैं।[4]

मतलब यह है कि जन्नत की नेमतों के तज़्किरे में जो सोना-चांदी, मोती, रेशम, पेड़, फल, मेवे, तख़्त, गद्दे, कपड़े वग़ैरह आये हैं, ये चीज़ें

१. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़, २. बुख़ारी व मुस्लिम,
३. बुख़ारी शरीफ़, ४. बैहक़ी,

वहां की चीज़ें होंगी और इसी के एतबार से उनकी ख़ूबी और बेहतरीन होगी। दुनिया की कोई भी चीज़ जन्नत की किसी भी चीज़ के पासंग के बराबर नहीं है।

जन्नत की ख़ुश्बू

जन्नत ख़ुश्बू से भरपूर है और उस की ख़ुश्बू की हालत इस दुनिया में समझ में नहीं आ सकती है, वहां की ख़ुश्बू बे-मिसाल है, और उम्दा, बढ़िया और ख़ूब तेज़ है।

एक हदीस में इर्शाद है कि जन्नत की ख़ुश्बू सौ साल की दूरी से सूंघी जाती है। दूसरी हदीस में है कि पांच सौ बरस की दूरी से महसूस होती है। दूसरी रिवायतों में इससे कम व बेश दूरी का भी ज़िक्र आया है।[1]

हदीस के आलिमों ने लिखा है कि दूरी कम व बेश लोगों के रुत्बों व मंज़िलों के फ़र्क़ के एतबार से है।

सुब्हानल्लज़ी बियदिं ही म ल कूतु कुल्लि शैइन०

क्या कोई जन्नत के लिए तैयार करने वाला है?

जन्नतके हालात आपने पढ़ लिए। वहां की नेमतों की तफ़्सीलात मालूम कर लीं, वहां रहने को दिल भी चाहता होगा। जन्नत में दाख़िले के लिए बार-बार अल्लाह तआला से आप ने दुआ भी की होगी और बिला शुब्हा हर मुसलमान के दिल में जन्नत का शौक़ और वहां ठहरने की जगह मिलने की तड़प होना ज़रूरी है। लेकिन तड़प और तलब और ज़ौक़ व शौक़ के साथ भले कामों की पूंजी का एहतमाम करना भी ज़रूरी है। जन्नत जैसी चीज़ की तलब रखने वाला भले कामों से ख़ाली नहीं हो सकता। बेवक़ूफ़ हैं वे लोग जो जन्नत की तमन्ना करते हैं मगर गुनाहों में लथ-पथ हैं और भले कामों की पूंजी से ग़ाफ़िल हैं। क़ुरआन मजीद के मुताबिक़ अल्लाह तआला ने जन्नत के बदले मोमिनों से उन की जानों और मालों को ख़रीद फ़रमा लिया, इस लिए मोमिन बन्दों पर लाज़िम है कि शरीअत के तक़ाज़ों पर जान व माल लगा कर जन्नत के हक़दार बनें।

१. अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब,

इन्नल्ला ह श्तरा मिनल मुअ् मि नी न अन्फ़ुसहुम व अम्वा ल हुम वि अन्न लहुमुल जन्नत॰'

नमाज़ के लिए अज़ान देने वाला पुकारे तो सोते रह जाएं या कारोबार पर नमाज़ को क़ुर्बान कर डालें। ज़कात का हुक्म लागू हो तो जान चुराने लगें, रमज़ान आये तो रोज़े खा जाएं, हज फ़र्ज़ हो तो माल की मुहब्बत में बे-हज किए मर जाएं, कारोबार में हराम व हलाल का ज़रा ख्याल न करें, तेरा-मेरा रुपया मार लेने को कमाल जानें, क़ुरआन व हदीस पढ़ने-पढ़ाने को ऐब का काम समझें, बूढ़ों-कमज़ोरों पर ज़ुल्म करें, तंगदस्तों से बेगारें लें, रिश्वतों के लेन-देन को फ़र्ज़ समझें,, यतीमों का माल खा जाएं और मीरास शरीअत के मुताबिक़ तक़्सीम न करें, नफ़्लों की अदाएगी से घबराएं और अल्लाह के ज़िक्र से बचें और फिर जन्नत के बुलंद दर्जों की तमन्ना करें, यह बहुत बड़ी नादानी है। जन्नत के बुलंद मर्तबों के लिए नफ़्स को क़ाबू में करना पड़ता है, शरीअत के हुक्मों पर अमल करने में जो नफ़्स को नागवारी होती है, उसे सहना पड़ता है। हदीस शरीफ़ में इर्शाद है कि—

حُفَّتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ وَحُفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ۔

हुफ़्फ़तिन्नारु बिश्शहवाति व हुफ़्फ़तिल जन्नतु बिल मकारिहि॰

'दोज़ख को ख्वाहिशों से घेर दिया गया है और जन्नत को नागवारियों से घेर दिया गया है।'

मतलब यह है कि इबादतों में मेहनत करने और बराबर अल्लाह का फ़रमांबरदार रहने और हराम ख्वाहिशों से परहेज़ करने में जो नफ़्स को नागवारी होती है, इसी नागवारी के पीछे जन्नत है। नागवारी को बरदाश्त करना जन्नत में पहुंचने का ज़रिया है और इस के खिलाफ़ जो शख्स नफ़्स की ख्वाहिशों का पाबंद बन गया और हराम व हलाल के सवाल से बे-नियाज़ हो गया तो शहवतें और ख्वाहिशें उसे दोज़ख में पहुंचता देंगी।

एक हदीस में इर्शाद है—

اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهٗ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَاجِزُ مَنْ
اَتْبَعَ نَفْسَهٗ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللّٰهِ۔ (ترمذی)

१. बिला शुब्हा अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानों और मालों को जन्नत के बदले में खरीद लिया है,

अल कय्यसु मन दा न नफ़्सहू व अमि ल लिमा बअ्दल मौति वल आजिज़ु मन अत् ब अ नफ़्सहू हवाहा व तमन्ना अलल्लाहि॰ —तिर्मिज़ी

'होशियार वह है जो अपने नफ़्स पर क़ाबू करे और मौत के बाद के लिए अमल करे और बेवक़ूफ़ वह है जो अपने नफ़्स को ख्वाहिशों के पीछे लगाये रहे और बे-अमल बन, अल्लाह से उम्मीद रखे।'

जिसे दोज़ख से बचने और जन्नत में पहुंचने का फ़िक्र हो, दुनिया को आखिरत पर तर्जीह नहीं देगा और जान व माल को जन्नत के मुक़ाबले में प्यारा न जानेगा, जितनी नेकियां करेगा, कम समझेगा। और बदलों व दर्जों के बढ़ाने के लिए फ़र्ज़ों व नफ़्लों का एहतमाम करेगा, हक़ीक़त में आखिरत की फ़िक्र रही ही नहीं, जन्नत जैसी बे-मिसाल और अनमोल चीज़ का यक़ीन होते हुए ताअत व इबादत में कोताही करना बड़ी नासमझी है। फ़रमाया रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने कि—

مَا رَأَيْتُ مِثْلَ النَّارِ نَامَ هَارِبُهَا وَلَا مِثْلَ الْجَنَّةِ نَامَ طَالِبُهَا۔ (ترمذی)

मा रऐतु मिस्ल न्नारि नाम हारिबुहा व ला मिस्लल जन्नति ना म तालिबुहा॰ —तिर्मिज़ी शरीफ़

'दोज़ख जैसी चीज़ मैं ने नहीं देखी, जिस के (अज़ाब व मुसीबत से) भाग कर बचने वाला सो रहे और (इसी तरह) जन्नत जैसी चाल और मज़े की चीज़ मैं ने नहीं देखी जिस का तलबगार सोता रहे।'

मतलब यह है कि दोज़ख की मुसीबतों व तक्लीफ़ों का यक़ीन करने पर दोज़ख ही के काम करता चला जाए और जन्नत की नेमतों का चाव रखने वाला ग़फ़लत की नींद सोया करे और नेक कामों की फ़िक्र न करे यह बड़े ताज्जुब की बात है। यों दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो सुस्ती की वजह से तक्लीफें उठाते हैं और अपनी चाव की चीज़ों को हासिल कर लेने से महरूम हैं, लेकिन दोज़ख से बचने का इरादा रखने वाला ग़फ़लत में पड़ा रहे, और जन्नत का तलब करने वाला सुस्ती में उम्र गुज़ार दे, यह बहुत ज़्यादा ताज्जुब की चीज़ है।

दुनिया की ज़िंदगी एक सफ़र है, जिस की आखिरी मंज़िल मोमिन बन्दों के लिए जन्नत है, मगर जन्नत के लिए मेहनत की ज़रूरत है, क्योंकि जो चीज़ जितनी उम्दा और बेहतरीन होती है, उनकी ही क़ीमत होती है। हदीस शरीफ़ में इर्शाद है कि—

مَنْ خَافَ اَدْلَجَ وَمَنْ اَدْلَجَ بَلَغَ الْمَنْزِلَ اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ غَالِيَةٌ
اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ الْجَنَّةُ۔ (ترمذی)

मन खा फ़ अद् ल ज व मन अद् ल ज व ल ग़ल मंज़ि ल अला इन्न सिल्अतल्लाहि ग़ालियतुन अला इन्न सिल् अतल्लाहिल जन्नतु०—तिर्मिज़ी

'जिस शख़्स को (सफ़र की दूरी और कठिनाई से) खतरा हो, वह शुरू रात ही में रवाना हो जाता है और जो शख़्स शुरू रात में रवाना होता है, मंजिल को पहुंच जाता है। खबरदार अल्लाह का सौदा मंहगा है। खबरदार अल्लाह का सौदा जन्नत है (जिस के खरीदार बन्दे हैं)

दुनिया की जरूरतों के लिए जब किसी अहम सफ़र पर जाना होता है, तो काफ़ी पहले से चल देते हैं और आराम व राहत को क़ुर्बान करके ठीक वक्त पर, बल्कि वक़्त से पहले मंज़िल को जा लेते हैं। आखिरत के मुसाफ़िर को इस से सबक़ लेना चाहिए और नफ़्स की फ़रमांबरदारी के बजाए शरीअत के हुक्मों की खूब अच्छी तरह पाबंदी करके अखिरत के सफ़र को ज्यादा से ज्यादा कामियाब बनाना चाहिए ताकि मंहगा सौदा (यानी जन्नत) हाथ से जाने न पाए। दुनिया के साज व सामान मकान व दूकान पर कितनी रक़में लगती हैं और कैसी कैसी जवानियां फ़ना होती हैं और कैसे-कैसे तदुरुस्त इंसान बरबाद होते हैं। एक औरत से निकाह करने के लिए खटराग किए जाते हैं और कितनी दौलतें लुटायी जाती हैं। जब इस बे-क़ीमत दुनिया के लिए धन व दौलत, सेहत व जवानी बरबाद हो रही है और बड़ी-बड़ी कोशिशें की जा रही हैं, हालांकि वह फ़ानी है और उसे छोड़ कर चल देना है तो जन्नत जैसे 'दारुल मुक़ाम:' के लिए और वहां की नेमतों और मज़ों के पाने के लिए तो बहुत ज्यादा जानी व माली क़ुर्बानी और हिम्मत व मेहनत की ज़रूरत है—

बह्रे ग़फ़लत यह तेरी हस्ती नहीं,
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं।
रहगुज़र दुनिया है यह बस्ती नहीं,
जाए ऐश व इश्रत व मस्ती नहीं।

—मज्ज़ूब

(यह तेरी जिंदगी ग़फ़लत करने के लिए नहीं है। समझ ले, जन्नत इतनी सस्ती नहीं है कि तू ग़फ़लत करे। यह दुनिया एक रास्ता है, इसे आबादी न समझो, यह आराम, सुख और मस्ती की जगह नहीं है।)

व आख़िरु दअ्वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

अब हम किताब को खत्म करते हैं और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं जिस की मेहरबानी और देन से यह किताब पूरी हुई।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें और हमारे मां-बाप और हमारे पीर व उस्ताद और तमाम मुस्लिम मर्दों और औरतों को जन्नत में दाखिल फ़रमा दे और इस किताब को क़ुबूल फ़रमाएं, आमीन !

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ
عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

व मा ज़ालि क अलल्लाहि बिअज़ीज़ सुब्हा न रब्बि क रब्बिल अिज़्ज़ति अम्मा यसिफ़ून व सलामुन अलल मुर्सली न वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आल मीन०

End

وَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَآتُوا الزَّكَوٰةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ

'और क़ायम करो नमाज़ और अदा करो ज़कात और रुकूअ करो रुकूअ करने वालों के साथ'

तब्लीगुस्सलात
यानी
आईना-ए-नमाज

जिस में

नमाज़ की शर्तें, फ़र्ज़ और उसके फ़ज़ाइल, मसअले, तफ़सील के साथ आसान हिंदी ज़ुबान में दर्ज कर दिए गये हैं, साथ ही नमाज़ के अलावा रोज़ा,हज, ज़कात के मस्अले और ज़रूरी बातें इसमें शामिल कर दी गई हैं। यह किताब तमाम मुसलमानों के पढ़ने की चीज़ है।

लेखक :

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्द शहरी

प्रकाशक

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272836 (घर) 25702399

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम॰

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

क़ुल इन-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आ-ल मीन॰

मौलाना मुहम्मद इल्यास साहिब की तब्लीग़ी तह्रीक पर दूसरा नम्बर

अक्सी
मेरी नमाज़ (हिंदी)
अरबी के साथ

तर्कीबे नमाज़ हिंदी मतन

जिस में

नमाज़ की फ़ज़ीलतें, नमाज़ छोड़ने पर अज़ाब की धमकियां, नमाज़ के अर्कान का फ़ल्सफ़ा, नमाज़ पढ़ने का पूरा तरीक़ा मुहावरेदार आसान हिंदी में लिखा गया है।

लेखक

मौलाना मुहम्मद इद्रीस अन्सारी

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272836 (घर) 25702399